आशय

सूचीपत्र

आशय	पत्र
पहिलाखण्ड	१
गरमीकी पहचान	
सरदीकी पहचान	२
तरीकी पहचान	२
खुश्कीकी पहचान	
दूसराखण्ड	३
दवाऔरखानेके बिषयमें	
अध्यायपहिला १	४
बिगाड पित्तका पाँचप्रकारका रखेहै।	५
बनीहुई दवाईयाँजोपित्तको फायदाकरतीहैं।	५
कफका बिगाडभीपाँचप्रकार काहै।	५
दवायेंजोकफको अच्छाकरें।	५
बनीहुईदवाईजोकफकेलिये दीजातीहै।	६

आशय	पत्र
बिगाड़सौदाकाभीपप्रकारकाहै	६
वहदवायें जोसौदाको अच्छा करतीहैं।	६
बनीहुईदवायेंसौदाकेलिये।	६
वेउपाय जिन्में सिवायखिलाने पिलानेके दवाबाहरलगानेऔर सूंघनेआदिसेबदनमें असरकरे	७
दूसराअध्याय	
फस्दके बिषयमें	११
तीसराअध्याय	
सींगी औरजोंकके बिषयमें	१५
चौथाअध्याय	
मुञ्जिसके बिषयमें	१६
पांचवांअध्याय	
जुल्लाबऔरमुलय्यनकेबि.	१७
पित्तकेजुल्लाबकीदवायें	२०
जुल्लाबपित्तकेनिकालनेकेलिये	
कफकेजुल्लाबकीदवायें	२०
जुल्लाबकीदवायें	२०
दूसराजुल्लाबबलगमका	२२

आशय	पत्र
फंकीवलग़मकेजुल्लायकी।	२२
दवायेंजोसौदाकोनिकालतीहै।	२३
जुल्लाबसौदाका	२३
सौदाकादूसराजुल्लाव।	२३
छठाअध्याय	
कैलानेवालीऔषधियोंकेविषयमें।	२५
वहदवायेंजोकैमेंपित्तकोनिकालतीहै।	२६
कैमेंवलग़मकोनिकालनेवालीऔषधयहहैं।	२७
औषधेंजोसौदाकोकैमेंनिकालतीहैं।	२७
औषधेंजोपित्तऔरवलग़मकोकैमेंनिकालतीहैं।	२७
औषधेंजो पित्तवलग़मऔरसौदाकोकैमेंनिकालतीहैं।	२७
सातवांअध्याय	
उनऔषधोंकेवर्णनमेंजोमवादकोपैशावकीराहसेनिकालतीहै।	२८
पैशाबलानेवालीदवाइयें ठण्डीहैं।	
गरमऔषधेंयहहैं।	२८
मौतदिलअर्थातवहऔषधेंजिनमेंसरदीगरमीबराबरहैं।	२९
मोतदिलऔषधेंजोपेशावबहुतलातीहै	२९
औषधजोबन्दहैज़कोजारीकरे।	२९
जोशौदाजोहैज़कोजारीकरेऔरपुरुपकावीर्य्यजोठण्डसेरुकरहाहोउसेनिकालदे।	३०
आठवांअध्याय	
उनऔषधोंकेवर्णनमेंजोदिलऔरसिरऔरजिगरऔरमेदेको पुष्टकरतीहैं।	३०
तीसराखंड	
रोगोंऔरउनकेउपायकेवर्णनमें।	३२
पहिलाअध्याय	

	आशय	पत्र
	सिरकेरोगोंकेवर्णनमें	३१
१	पा सिरकेदर्दकेविषयमें।	३२
२	पा.सरसामकेविषयमें।	३४
३	पा.नूमूदकेविषयमें।	३६
४	पा.सक्तेकेविषयमें।	३६
५	पा.सबातकेविषयमें।	३७
६	पा.सहरकेविषयमें।	३८
७	पा.सबातसुहरीऔरसहर सबातीकेविषयमें।	३९
८	पा.काबूसकेवर्णनमें	३९
९	पा.सुर्गीकेविषयमें	४०
१०	पा मालीखोलियाकेवर्णनमें।	४१
११	पा.जुनूनकेविषयमें	४१
१२	पा.सदरऔरदव्वारकेविषयमें।	४२
१३	पा.निसयान अर्थात भूल जानेकेरोगकेवर्णनमें।	४२
१४	पा.फालिजकेविषयमें।	४३
१५	पा.खदरकेविषयमें।	४३
१६	पा.लुकवेकेविषयमें।	४४
१७	पा तशन्नुजकेविषयमे।	४५

	आशय	पत्र
१८	पा.तमद्दुदकेविषयमें।	४६
१९	पा.कज़ाज़केवर्णनमें।	४७
२०	पा.राशेकेवर्णनमें।	४६
२१	पा.इस्तल्लाजकेविषयमें।	४६
२२	पा.क्लवीकेविषयमें।	४७
२३	पा.हिसकेवर्णनमें।	४७
२४	पा.अ सार्बकेवर्णनमें।	४८
२५	पा.जुकामऔरनजलेकेविषयमें।	४८
	दूसराअध्याय	
	आँखकेरोगोंकेवर्णनमें	४९
१	पा.रमद अर्थात आंखआनेकेविषयमें।	५०
२	पा.तुरफाकेवर्णनमें।	५१
३	पा.जुफरा अर्थात नाखूनेकेविषयमें।	५२
४	पा.आंखमेंजालापडजानेकेविषयमें।	५२
५	पा.सबलकेवर्णनमे।	५२
६	पा.मुलतहिमाकेफूलजानेकेविषयमें।	५३
७	पा.मुलतहिमाकीखुजली	

	आशय	पत्र
	केवर्णनमें।	५४
८	पा-सोसनुल्मुल्तहिमा केवर्णनमें।	५४
९	पा-दोक्नुल्मुल्तहिमा केविषयमें।	५४
१०	पा-दमआअर्थातआँसूबहनेकेविषयमें।	५५
११	पा-ज़िक्नुल्ऐन अर्थातआँखमेंजलन होनेकेविषयमें	५५
१२	पा-कुज़ाअर्थातआँखमेंकिसीवस्तुकेपड़जानेकेविषयमें	५५
१३	पा-आँखपरचोटलगनेके विषयमें।	५६
१४	पा-आंखकेघावके विषयमें।	५७
१५	पा-कामनाकेवर्णनमें।	५८
१६	पा-रतोंदीकेविषयमें।	५८
१७	पा-दिनौंदीके विषयमें।	५९
१८	पा-सुदाहिद्दकाऔरश्रकीकाःचश्मकेविषयमें।	५९
१९	पा-इत्तुज़ुलऐनके विषयमें।	५९
२०	पा-क़ारनियाँकेऊभरआने	
	केवर्णनमें।	६०
२१	पा-क़ारनियाँपरफुन्सीहोजानेकेविषयमें।	६०
२२	पा-मोरसिरचकेवर्णनमें।	६०
२३	पा-भेंगाहोनेके विषयमें।	६१
२४	पा-इतलिसाऔरइन्तशारकेवर्णनमें।	६२
२५	पा-अनबीयाकेछेदकेसकड़ाहोजानेकेविषयमें।	६३
२६	पा-ग़यालातकेवर्णनमें	६३
२७	पा-मोतियाबिन्दके विषयमें।	६४
२८	पा-आंखमेंसुद्दा पड़जानेकेविषयमें।	६६
२९	पा-आंखकेकंआडोजाने विषयमें।	६६
३०	पा-ज़ोफ़बसरअर्थातकमदृष्टीकेविषयमें।	६६
३१	पा-बतलानबसारतकेवि-	६७
३२	पा-चुन्धाहोनेके विषयमें	६७
३३	पा-कुसूरअर्थातदृष्टिकेथकजानेकेवर्णनमें।	६८
३४	पा-आंखकेदुचलाहोनेके	

	आशय	पत्र
	विषयमें।	६८
३५	पा.खुग़जुलअैनकेवर्णनमें।	६८
	आँखके मिज़ाजपहिचाननेकी रीति	६९
	तीसरा अध्याय	
	पपोटे औरपलकके रोगोंके विषयमें।	
१	पा.कमनाके विषयमें	६९
२	पा.पपोटेकेढीलाहोजानेकेविषयमें।	६९
३	पा.पलकोंके आपसमेंचिमटजानेके विषयमें।	७०
४	पा.पलकके छोटेहोजानेकेविषयमें।	७०
५	पा.शिरनाकके विषयमें।	७१
६	पा.पपोटेके ऊपरगांठपडजानेकेविषयमें।	७१
७	पा.शेरमुनक़लिब औरशोरज़ायदकेविषयमें।	७१
८	पा.पलकोंकेगडजानेकेविषयमें।	७२
९	पा.पलकोंके सफ़ेदहोजानेके विषयमें।	७२
१०	पा.पलकमें खुजलीऔर फुंसियांहोनेके बिषयमें	७३
११	पा.बरदाकेविषयमें।	७३
१२	पा.पलकके मोटेऔरकडेहोजानेके विषयमें।	७३
१३	पा.पलकके मोटे औरलाल होजानेकेविषयमें।	७४
१४	पा.पलकोंमेंजूऐंपडनेके बिषयमें।	७४
१५	पा.गुहांजनीके बिषयमें	७५
१६	पा.तोसतुलअज़फ़ानके बिषयमें।	७५
१७	पा.तक़्स्सुरज़फ़ानके बिषयमें।	७५
१८	पा.पलकमें घाव पडनेके विषयमें।	७६
१९	पा.पपोटोंके फूलजानेके बिषयमें।	७६
२०	पा.पपोटोंमेंमस्सेपडजानेकेविषयमें।	७६
२१	पा.पपोटोंपर पित्तीउछल	

	आशय	पत्र
	नेकेविपयमें।	७६
२२	पा-चमलमपलकके विषयमें।	७७
२३	पा-पलकपरसेभूसी उड़नेके विषयमें।	७७
२४	पा-सुलाकेविषयमें।	७७
२५	पा-चोटसेपपोटेकानोलायाड़राहोजानेके विषयमें।	७८
२६	पा-कोयेकेपासनाकाकी औरनासूरहोजानेके विषयमें।	७८
२७	पा-कोयेऔरपलकमेंबिनाजलनऔरदानोंकेखुजलीहोनेकेविषयमें।	७८
२८	पा-कोयेमेंनाककीओरअधिकमांसहोजानेके विषयमें।	७९
	चौथाअध्याय	
	कानकेरोगोंकेविषयमें	
१	पा-कानकेदर्दकेविषयमें	७९
२	पा-कानकीसूजनकेविषयमें।	८०
३	पा-कानके घावकेविषयमें।	८१
४	पा-तरशऔरचकरऔरसमके विषयमें।	८२
५	पा-किसीवस्तुकेकानमेंपड़जानेके विषयमें।	८२
६	पा-तिनीनऔरदवीके विषयमें।	८३
७	पा-कानसेरुधिरनिकलनेकेविषयमें।	८३
८	पा-कानकेटूटजानेके विषयमें।	८३
९	पा-जड़सेकानकेउखड़जानेकेविषयमें।	८४
१०	पा कनकटीके विषयमें।	८६
११	पा-कानमेंखुजलीहोनेके विषयमें।	८४
१२	पा-कानमेंचीरवकीसीआवाजमालूमहोनी।	८४
	पांचवांअध्याय	
	नाकके रोगोंके विषयमें	
१	पा-खशमकेविषयमें।	८५

	आशय	पत्र		आशय	पत्र
२	पा-सूंघनेकीइन्द्री बिगड़ जानेके बिषयमें।	८५	३	पा-जीभकाबदलजाना और निकलआना।	६१
३	पा-नाकमेंबुरामांसउत्पन्न होनेके विषयमें।	८६	४	जीभकेदीलेहो जानेके बिषयमें।	६१
४	पा-नाकके घावके विषयमें।	८७	५	पा-जीभके फटजानेकेविषयमें।	६१
५	पा-नाककीफुंसियोंके बिषयमें।	८७	६	पा-जीभकीखुश्कीके विषयमें।	६२
६	पा-नकसीरके विषयमें।		७	पा-जीभकीजलन के बर्णनमें।	६२
७	पा-नाकमेंबुरीगंधआना।	८८	८	पा-जीभमें खुजली होनेके विषयमें।	६३
८	पा-नाककुचलजानेकेविषयमें।	८८	९	पा- जिफदउलळिसानके विषयमें।	६३
९	पा बहुतसीछींकें आना।	८६	१०	पा-फिसादजोंकके बिषयमें।	६४
१०	पा नथनोंकासूखारहना।	८६	११	पा-अतलाजोंकमें।	६४
११	पा-नाकके भीतरखुजली होनेकेविषयमें।	८६	१२	पा-तकशशुरजुबानके विषयमें।	६४
	छठवाँअध्याय।		१३	पा- मुखकेभीतरफुंसियें होनेकेविषयमें।	६५
	मुंहऔरजीभकेरोगोंके विषयमें।		१४	पा-मुंह आनेके विषयमें।	६५
१	पा-जीभकीसूजनकेबर्णनमें।	६०	१५	पा ताळिलतुळ्ळपाभके	६५
२	पाजीभकावोझलहोना।	६१			

	आशय	पत्र
	विषयमें।	
१६	पा-जागते औरसोतेमें मुंहसे बहुतसीराळबहना	९६
१७	पा-मुखसेदुर्गंधआनेके विषयमें।	९६
१८	पा-तालूकीसूजनके विषयमें।	९७
	सातवाँअध्याय७	
	होठोंकेरोगोंके विषयमें।	
१	पा-होठोंपरसफेदीहोजानेके विषयमें।	९७
२	पा-होंठकीखुश्कीऔरफटनेऔरछिलकेउतरनेके विषयमें।	९७
३	पा-होंठकेफड़कनेके विषयमें।	९८
४	पा-होंठकेछोटाहोजानेऔर सुकड़जानेके विषयमें।	९८
५	पा-नीचेकेहोठपरअधिक मांसउत्पन्नहोजानेके विषयमें।	९८
६	पा-होंठकीसूजनके विषय	९९
	में।	
७	पा-होंठपरफुंसियाँहोजानेके विषयमें।	९९
८	पा-होंठमेंघावपड़केपीपबहना।	९९
९	पा-होंठमेंघावपड़केफटतेजाना।	९९
	आठवाँअध्याय	
	दांतोंऔरमसूड़ोंकेरोगोंमें	
१	पा-दांतोंकी पीड़ाके विषयमें।	१००
२	पा-दांतोंकेकुन्दहोजानेके विषयमें।	१०१
३	पा-दांतोंकीआबजातेरहनेके विषयमें।	१०२
४	पा-दांतोंके टूटनेऔरखोखले होजानेके विषयमें।	१०२
५	पा-ड़फ़रके विषयमें।	१०२
६	पा-दांतकेरंगबदलजानेके विषयमें।	१०२
७	पा-दांतोंके हिलनेके विषयमें।	१०२

	आशय	पत्र
८	पा. दाँतकालम्बाऔरमोटाहोजाना।	१०४
९	पा. दाँतोंमेंखुजलीहोनेकेविषयमें।	१०४
१०	पा. सोतेमेंदाँतरगडनेकेविषयमें।	१०५
११	पा. मसूदोंकीसूजनकेविषयमें।	१०५
१२	पा. मसूदोंसेरुधिरबहनेकेविषयमें।	१०५
१३	पा. मसूदोंमेंघावऔरनासूरहोजानेकेविषयमें।	१०६
१४	पा. दाँतोंकीजडमेंकमजोरीहोनेसे दाँतहिलनेकेविषयमें।	१०६
१५	पा. मसूदोंपरबुरामांसउत्पन्नहोनेकेविषयमें।	१०६
	नवाँअध्याय९	
	गलेऔरकव्वेऔरमरीऔरकुसवैंरयाकेरोगोंकेबर्णनमें।	१०७
१	पा. कव्वेकीसूजनकेविषयमें।	१०७
२	पा. कव्वेकेलटकआनेकेविषयमें।	१०७
३	पा. खुन्नाककेविषयमें।	१०८
४	पा. गलेऔरमरीऔरकुसवैंरयामेंफुंसियांहोनानेकेविषयमें।	११०
५	पा. गलेमेंजोंकचिमटरहनेकेविषयमें।	१११
६	पा. सुईनिगलजानेकेविषयमें।	११२
७	पा. मरीकेभिंचजानेकेविषयमें।	११२
८	पा. नरखरेकेढीलेहोजानेकेविषयमें।	११२
९	पा. मरीमेंखुजलीहोनेकेविषयमें।	११३
१०	पा. कुसवैंरयाकेफडकनेऔरकांपनेकेविषयमें।	११३
११	पा. डूबेहुयेकेउपायमें।	११३
१२	पा. गलाघोंटेहुयेऔरफाँसीदियेहुयेका उपाय।	११४

	आशय	पत्र
१३	पा. वसरउलचलाके बिषयमें।	११४
१४	पा. मरीकी सूजन के बिषयमें।	११४
१५	पा. मरीमेंघावपड़जानेके विषयमें।	११५
१६	पा. आवाज़बन्द होजाने औरपड़जानेके विषयमें।	११५
	दसवाँअध्याय	
	छाती औरफेंफडेकेरोगोंकेविषयमें।	
१	पा. दमकेवर्णनमें।	११६
२	पा. खांसीकेबिषयमें।	११८
३	पा. मुखसेरुधिरनिकलनेकेविषयमें।	१२०
४	पा. मुखसेपीवनिकलनेकेविषयमें।	१२२
५	पा. फेफडेकीसूजनकेवि.	१२३
६	पा. सिलकेबिषयमें।	१२६
७	पा. छातीके परदों औरझिल्लियों औरबंधनों औरउजलों औरउसकेआसपासके जोड़ोंकी सूजनोंके बिषयमें।	१२९
८	पा. छातीकेआसपासपीप रुक रहनेके विषयमें।	१२९
९	पा. छातीकाउंडयाजाना औरजकड़जाना।	१३१
	ग्यारहवांअध्याय	
	दिलकेरोगोंके बिषयमें।	
१	पा. दिलकेमिज़ाजके बिगाड़में।	१३१
२	पा. खफ़कानअर्थात् दिलघबरानेके बिषयमें।	१३२
३	पा. मूर्च्छाकेबिषयमें।	१३३
४	पा. दिलकेदोनोंकानोंके सूजनेके बिषयमें।	१३४
५	पा. दिलसेधूआंउठनेके बिषयमें।	१३५
६	पा. जगतलकल्बके बिषयमें।	१३५
७	पा. तकश्शरकल्बके बिषयमें।	१३६
८	पा. वाज़ाफुलकल्बके बिषयमें।	१३९

	आशय	पत्र
९	पा. दिलके बैठनेके बिषयमें।	१३६
१०	पा. दिलपरतरीछाजानेके बिषयमें।	१३६
	बारहवांअध्याय	
	स्त्रीकीछातीकेरोगोंके बि-	१४०
१	पा. दूधकामहोनेके बिषयमें।	१४०
२	पा. दूधबढ़जानेके बिषयमें	१४२
३	पा. छातियोंके सूजने औरतन्नेके बिषयमें।	१४२
४	पा. छातीमेंदूधजमजानेके बिषयमें।	१४३
५	पा. छातीके पिसजानेके बिषयमें।	१४४
	तेरहवांअध्याय	
	मेदेकेरोगोंके बिषयमें ॥	
१	पा. मेदेके मिज़ाज बिगड़जानेके बिषयमें।	१४४
२	पा. पेटकी पीड़ाके बिषयमें	१४५
३	पा. ज़ोफहज़्म और सूयेहज़्म औरतुखमेके बिषय में।	१४६
४	पा. हैज़ेके बिषयमें।	१४६
५	पा. भूखकेघटजानेयाजातेरहनेके बिषयमें।	१५०
६	पा. भूखके बिगड़जानेके बिषयमें।	१५२
७	पा. भोजनकाहोकाहोजानेके बिषयमें।	१५३
८	पा. जूउलबक़रके बिषयमें	१५४
९	पा. भूखकी सहारनहोनेके बिषयमें।	१५४
१०	पा. अधिकप्यास होनेके बिषयमें।	१५४
११	पा. मेदेकीसूजनके बिषयमें।	१५६
१२	पा. दुर्बलतुलमेदेके बिषयमें।	१५७
१३	पा. मेदेकेघाव औरफुंसियोंके बिषयमें।	१५८
१४	पा. पेट फूलनेके बिषयमें।	१५८
१५	पा. डकारजंभाई और अंगड़ाई अधिकआनेके बिषयमें	१५६

	आशय	पत्र
१६	पा-चलटीउचाकीगौरमतलीऔरतवाल्लुचनफ्तकेवि	१५१
१७	पा-उलटीमेंरुधिरआनेकेविषयमें।	१६१
१८	पा-मेदेमेंरुधिरयादूधकेजमजानेकेविषयमें।	१६२
१९	पा-अधिकहिचकीआनेकेविषयमें।	१६३
२०	पा-इंकिलाबमेदेके विषयमें।	१६४
२१	पा-फ़लफुल्लमेदे के विषयमें।	१६४
२२	पा-मेदेकेफड़कनेकेविषयमें।	१६५
२३	पा-वजउलफ़वादकेविषयमें।	१६५
२४	पा-पेटमेंजलनहोनेकेवि	
२५	पा-मेदेकेढीलाहोजानेकेवि	१६६
२६	पा-मेदेकीबुनावटकेढीलाहोजानेकेविषयमें।	१६६
२७	पा-मेदेकेसिंचजानेकेवि	१६७
२८	पा-मेदेकेकड़ाहोजानेकेवि	१६७
२९	पा-मेदेकेऊपरकेपट्ठोंकेक	१६८

	आशय	पत्र
	डाहोजानेकेविषयमें।	१६९
३०	पा-पेटचलने के विषयमें।	१६९
३१	पा-मेदेकेछोटाहोनेकेवि	१६९

चौथवाँअध्याय

जिगरकेरोगोंके वर्णनमें।

	आशय	पत्र
१	पा-जिगरकेबिगाडकेविष	१७०
२	पा-जिगरकेकमज़ोरहोजानेकेविषयमें।	१७१
३	पा-जिगरकेसुद्देकेविषयमें	१७३
४	पा-मासारीकाकेसुद्देके वि-	१७३
५	पा-जिगरकेफूलनेकेविषय	१७४
६	पा-जिगरकीपीडाकेविषयमें	१७४
७	पा-शिरक़ाकेविषयमें।	१७५
८	पा-जिगरकीसूजनकेविषयमें।	१७५
९	पा-पेटकेपट्ठोंकीसूजनकेविषयमें।	१७६
१०	पा-जिगरकेफाड़केविषय	१७८
११	पा-जिगरकीफुंसियोंकेवि-	१७८
१२	पा-जिगरकेफड़कनेकेविमें	१७९
१३	पा-जिगरकीपथरीकेविमें	१७९

	आशय	पत्र
१४	पा-जिगरकेछोटाहोनेकेबि	१७९
१५	पा-जिगरसेदस्तआनेकेबि	१८०
१६	पा-सूवलकिनीआकेबिषय	१८२
१७	पा-जलंधरकेविषयमें।	१८२
	पन्द्रहवाँअध्याय	
	यरक़ान और तिल्ली और पित्तेकेरोगोंकेविषयमें	
१	पा-यरक़ानकेबिषयमें।	१८६
२	पा-तिल्लीके विगाडके बिषयमें।	१९१
३	पा-तिल्लीकीसूजनके विषयमें।	१९२
४	पा-तिल्लीकीसूजनमेंबैठजानेकेविषयमें।	१९३
५	पा-तिल्लीकीकमज़ोरीकेवि	१९४
६	पा-तिल्लीकेसुद्देके विषय	१९५
७	पा-तिल्लीकीउससूजनकेविषयमेंजोवायसेहो।	१९५
८	पा-तिल्लीमेंपथरीपडजानेकेविषयमें।	१९५
	सोलहवाँअध्याय	

	आशय	पत्र
	आंतोंकेरोगोंके विषयमें	
१	पा-जलकुलअमआकेवि-	१९६
२	पा-आंतोंसेदस्तोंमेंरुधिरआनेकेविषयमें।	१९९
३	पा-आंतोंसेपीपआनेकेबि	२०१
४	पा-चूंथकरदस्तआनेकेविषयमें।	२००
५	पा-मरोडके बिषयमें।	२०२
६	पा-आंतोंकेफूलने औरबोलनेकेविषयमें।	२०२
७	पा-कूलंजके बिषयमें।	२०३
८	पा-विनापीडाकेचावज़ाहोनेकेविषयमें।	२०४
९	पा-पेटमेंकेचुऐपडनेकेवि	२०५
	सत्तरहवाँअध्याय	
	उनरोगोंकेविषयमेंजोपैखानेकीजगहहोतेहैं।	२०७
१	पा-ववासीरके बिषयमें।	२०८
२	पा-बादीववासीरकेचि-में	२०९
३	पा-पैखानेकेस्थानपरनासूरहोजानेकेविषयमें।	२०९
४	पा-पैखानेकीजगहसूजन	

	आशय	पत्र
	होजानेके विषयमें।	२१०
५	पा. पैखानेकीजगह फटजानेके विषयमें।	२१०
६	पा. शिश्नकेढीलाहोजानेके विषयमें।	२११
७	पा. कांच निकलनेके वि. में	२११
८	पा. पैखानेकीजगह गहराघावहोजानेके विषयमें।	२११
९	पा. पैखानेकीजगह खुजलीहोनेके बिषयमें।	२१२
	अठारहवाँ अध्याय	
	गुरदेके रोगोंके विषय में	२१२
१	पा. गुरदेके बिगाडके वि. में	२१३
२	पा. गुरदेके दुबलाहोजानेके विषयमें।	२१३
३	पा. गुरदेकीकमज़ोरीके वि. में	२१४
४	पा. गुरदेमेंवायकीपीडाहोनेकेविषयमें।	२१४
५	पा. गुरदेकीपीडाके विषयमें	२१५
६	पा. गुरदेकी सूजनके विष. में	२१५
७	पा. गुरदेके घावके विषयमें	२१६
८	पा. गुरदेमें खुजलीहोनेके	२१६

	आशय	पत्र
	विषयमें।	
९	पा. ज़ियाबितुसके वि. में	२१७
१०	पा. गुरदेमेंपथरीपडनेऔर सूत्रमे रेतआनेके विषय में।	२१७
	उन्नीसवाँ अध्याय	
	मसानेके रोगोंके विषयमें	
१	पा. मसानेकी सूजनके वि.	२१८
२	पा. मसानेके घावके वि. में	२१९
३	पा. मसानेकी खुजलीके वि.	२२०
४	पा. मसानेमें रुधिरजमजानेकेविषयमें।	२२१
५	पा. मसानेकी पीडाकेवि	२२१
६	पा. मसानेकेटलजानेके वि	२२२
७	पा. मसानेकेफूलनेके वि. में	२२३
८	पा. मसानेमें पथरीपड़नेके विषयमें।	२२३
९	पा. मूत्रमेंजलनहोनेकेवि	२२४
१०	पा. मूत्रबंदहोजानेके वि.	२२५
११	पा. मूत्रखुलकेनहोनेके विषयमें।	२२५
१२	पा. अचानकमूत्रनिकल	२२५

	आशय	पत्र		आशय	पत्र
	कारनेकेबिषयमें।	२२८		य अचानकपैरवानोहोजा नेकेविषयमें।	२३९
१३	पा.सोतेमेंमूत्रनिकलजाने केबिषयमें।	२२६	९	पा-पुरुषकोबिषयकराने कीचाहनाउत्पन्नहोनेके बिषयमें।	२३६
१४	पा.मूत्रमेंरुधिरनिकलने केबिषयमें।	२२६	१०	पा.खुसियोंकीसूजनकेबि	२३६
	बीसवांअध्याय		११	पा.खुसियोंकेबढ़जानेके	२४१
	उन्नरोगोंकेबिषयमेंजोकेवलपुरु षोंकेहोतेहैं।		१२	पा.लिंगमेंरहमकेमुंहके फाड़कनेकेबिषयमें।	२४१
१	पा.विषयकीचाहनाघटजा नेकीविषयमें।	२३१	१३	पा.खुसियोंकीपीडाकेबि	२४२
२	पा.वीर्य्यजल्दीनिकल नेकेबिषयमें।	२३४	१४	पा.खुसियोंकेछोटाहो जानेकेबिषयमें।	२४२
३	पा.बिषयकीचाहनाअधि काहोनेकेबिषयमें।	२३४	१५	पा.खुसियोंकेचढ़नानेके	२४३
४	पा.वीर्य्यनिकलाकरनेके	२३६	१६	पा.रगोंउभरआनेकेविमें	२४३
५	पा.बीर्य्यकेबदलेरुधिर निकलनेकेबिषयमें।	२३७	१७	पा.ऊपस्कीखालढीली होजानेकेविषयमें।	२४४
६	पा-सोतेमेंवीर्य्यनिकल जानेकेविषयमें।	२३८	१८	पा.लिंगआदिकेघावके विषयमें।	२४४
७	पा.लिंगकेहरसमयज़ोर कारनेकेविषयमें।	२३९	१९	पा.लिंगकेसूजजानेके बिषयमें।	२४५
८	पा.वीर्य्यनिकलनेकेसम	२३९	२०	पा.लिंगआदिकीखुजली केबिषयमें।	२४५
			२१	पा.लिंगकेफटजानेकेवि	२४५

	आशय	पत्र		आशय	पत्र
२२	पा. लिंगपर औरउसकेआसपासकड़ीफुंसियांऔरमससेहोजानेके विषयमें।	२४६		मेंबद्याभरजानेके विषयमें	२५६
२३	पा. मूत्रके छिद्रबंदहोजानेके विषयमें।	२४६	५	पा. रुधिरजननेकेपीछेनिकलताहैउसके रुकारहनेके विषयमें।	२५७
२४	पा. लिंगकेटेढ़ाहोजानेके विषयमें।	२४७	६	पा. रिजाके विषयमें।	२५८
	इक्कीसवाँ अध्याय		७	पा. हैज़की अधिकताके वि	२६०
	सिराक़ सिफ़ाक़ औरसर्व के विषयमें।		८	पा. रेह्मकेघाव के वि. में	२६१
१	पा. कीलके विषयमें	२४८	९	पा. रह्मके फटजानेकेवि	२६२
२	पा. पेटऔरचट्टोंकीफ़ितक़के विषयमें।	२५०	१०	पा. रह्मकीखुजलीके वि.	२६२
३	पा. टूंडीके उभरनेके विषे	२५१	११	पा. रह्मकीबबासीरकेवि	२६२
	बाईसवाँ अध्याय		१२	पा. रह्मकीफुंसियोंकेवि	२६३
	उनरोगोंके विषयमेंजोकेवलस्त्रियोंकोहोतेहैं		१३	पा. रह्मकेमस्सोंके विषय	२६४
१	पा. बांझहोनेके विषयमें।	२५३	१४	पा. रह्मकेनासूरके विषय	२६४
२	पा. बहुधागर्भगिरनेके वि.	२५४	१५	पा. रह्मसेपानीबहनेकेवि	२६४
३	पा. जन्नेमें कठिनताहोनेके	२५५	१६	पा. रह्मसेबीर्य्यबहनेके-	२६५
४	पा. अशीमाकेरुकनेऔरपेय	२५५	१७	पा. हैज़बंदहोजानेके वि. में	२६५
			१८	पा रतक़के विषयमें।	२६६
			१९	पा. रह्मकेउभरनेके वि.	२६७
			२०	पा. रह्मकेझुकपडनेकेवि	२६८
			२१	पा. रह्मकी एंठनकेवि में	२६९
			२२	पा. रह्मकेढुबेलेहोनेकेवि	२७०
			२३	पा. सरतानरह्मकेविषय	२७०
			२४	पा. रवतिनाकरह्मकेवि.	२७१

	आशय	पत्र
२५	पा-रहस्समेंपत्नीभस्ज्ञानेकेवि	२७२
२६	पा-रहममेंवापभस्ज्ञानेकेवि	२७२
	तेईसवाँअध्याय	
	पीठऔरहाथऔर पाँवकेरोगोंकेवि.	
१	पा-कुभनिकलभानेकेवि.	२७३
२	पा- पीठकींपीडाकेविषय	२७५
३	पा-कोरवकीपीड़ाकेवि-में	२७६
४	पा-गठियाकेविषयमें।	२७७
५	पा- पिंडलीकीरगेंबडीऔर मोटोइोकरउभरआवें	२७८
६	पा-पांवसूजकरहाथीकेसे होजानेके विषयमें।	२७९
७	पा-एेडीकीपीडाकेविषयमें	२८०
८	पा-तलुयेकीपीडाकेविषय	२८२
	चौबीसवाँअध्याय	
	तपकेवर्णनमें ॥१	
१	पा-हुम्मायौमीकेविषयमें।	२८३
२	पा-हुम्मारिवल्तीकेविषय	२८५
३	पा- दिक़केविषयमें	२८६
४	पा-सीतलाकेविषयमें	२८७

	आशय	पत्र
५	पा-हुम्माबबाईकेविषयमें	[illegible]
	पच्चीसवाँअध्याय	
	सूजनोंऔरफुंसियोंऔरउनरोगोंके विषयमेंजोशरीरकेऊपरहोते	
१	पा- सूजनोंआदिकेविषयमें	२९१
२	पा-खालकेरोगोंकेविषयमें	२९२
३	पा-बालोंकेरोगोंकेविषयमें	३१६
४	पा-नाखूनोंकेरोगोंकेविषय	३१८
५	पा-अलगरोगोंकेविषयमें	३२०
६	पा-घावकेविषयमें।	३२४
७	पा-कुष्ठकेविषयमें।	३२५
८	पा-आसनेऔर गिरपडने सेचोटलगनेकेविषयमें।	३२६
९	पा-कोड़ेकीचोटकेविषयमें	३२७
१०	पा-हड्डीकेटूटने और उखड़नेऔरखिसलनेकेविषयमें	३२७
११	पा- विषकेउपायमें	३२८
१२	पा-विषैलेजानवरोंकेकाटने याडंकमारनेकेउपायमें।	३२९
	नाड़ीपरीक्षा	
	नकशासनाड़ीका	३३४
	नकशासलामीका	३३५

आशय	पत्र	आशय	पत्र
नाडीकी मिलीहुईप्रकारें।	३२५	जवारिशजालीनूस।	३५
		ऊदकीमाजून।	३५
मूत्रपरीक्षा		जवारिशखोज़ी।	३५
मूत्रकेरंगकावर्णन।	३५४	हव्बकोकाया।	३५
मूत्रकागाढ़ाऔरपतलाहोना।	३५४	हव्बुल मिस्क	३५
मूत्रकासाफ़औरगदलाहोना।	३५५	हव्बेरावन्द।	३५
मूत्रकाकफ़	३५५	हव्ब सिकबीनज।	३५
मूत्रकीतलछट।	३५५	हव्बखीज़रान।	३६
मूत्रकाथोड़ाऔरघनाहोना।	३५५	हव्बयासली।	३६
बुहरानकावर्णन।	३५५	हव्बमिश्र।	३६
		हव्बइफ़तीमून।	३६
मिलीहुईऔषधोंकेबनानेकी रीति।	३५५	दिवालमिस्क।	३६
		दवायतुर्बुद।	३६
इतरीफलधनियाँका।	३५५	दवाउलकरकम।	३६
इतरीफलगुददी।	३५५	दवाउलतुरंजबीन।	३६
अयारिज़फ़ीक़रा।	३५६	ज़रूरअसफ़र।	३६
अथानासिया।	३५६	मस्तगीकातेल।	३६
वासलीकून।	३५६	कूटकातेल।	३६
वरूदबनफ़सजी।	३५७	केसरकातेल।	३६
बनादिकुलबुज़ूर।	३५७	बिच्छूकातेल।	३६
तिरियाक़।	३५७	सुदाबकातेल।	३६
सोंठकीमाजून।	३५७	नारदीनकातेल।	३६
भिलावेकीमाजून।	३५७	रोग़नमोरचा।	३६

आशय	पत्र	आशय	पत्र
आसकातेल।	३६४	शर्बतनुफ़ा।	३७०
रोगनआमला।	३६४	शर्बतखशखाश।	३७०
सोयेकातेल।	३६४	शर्बतपोदीना।	३७०
गोखरूकातेल।	३६४	शर्बतदीनार।	३७०
गेहूंकातेल।	३६५	शर्बतहब्बुलआस।	३७१
सुर्मोरोशनाई।	३६५	शर्बतअंजवार।	३७१
माजूनजरऔनी।	३६५	शर्बतगावजुबां	३७१
सिरकेकीसिकंजबीन।	३६५	शर्बतबालगू।	३७१
सिकंजबीनबज़ूरीगर्म।	३६६	शर्बतनीलोफ़र।	३७१
सिकंजबीनअनसिली।	३६६	शर्बतसन्दल।	३७२
सिकंजबीनइफ़तीमून।	३६६	शर्बतउन्नाब।	३७२
सिकंजबीनसुफारजली।	३६७	शर्बतफिंजनोश।	३७२
सफ़ूफचारतुख्म।	३६७	शियाफ़कुन्दुर।	३७३
सफ़ूफहबुलरम्मा।	३६७	शियाफ़अबियज़कुन्दुरी।	३७३
सफ़ूफ़ मिकलियासा	३६७	शियाफ़अहमरलीन।	३७३
सफ़ूफ़तीन।	३६८	शियाफ़जंगार- शियाफ़गर्वी।	३७३
सफ़ूफ़ देपतेज़क	३६८	शियाफ़अहमर। शियाफ़दीनार	३७४
मंजनदांतोंका पुष्ट करनेवा		शियाफ़रुधिरकोगलानेवाला	३७४
ला।	३६८	जिमादशोसा।	३७४
कूटकेतेलकीदूसरीरीति।	३६९	फरजजाडायिसा।	३७४
सुरतीजान।	३६९	फलदिफ़ीयून।	३७५
शर्बतवर्दमुकर्रर।	३६९	माजूनफ़लाफली।	३७५
शर्बतइफसतीन।	३६९	फिलोनिया।	३७५

आशय	पत्र	आशय	पत्र
कुर्सअम्बरथारीस	३७५	माजूनफिलासफा	३८४
कुर्समाज़रीयून।	३७६	माजूनकुजाह	३८४
कुर्सअनीसून	३७६	लोहेकेमैलकीमाजून	३८४
कुर्सकिब्र	३७६	लोहेकेमैलकेधोनेकीरीति	३८४
कुर्सकौकब	३७६	माजूनलबूब	३८४
कुर्ससुम्बुल	३७७	माजूनबुसूर	३८४
कुर्सगलाजस	३७७	बिच्छूकीमाजून	३८४
कुर्सकुहल	३७७	बिच्छूकेजलानेकीरीति	३८४
कुर्सगुल	३७७	माजूनहजरलयहूद	३८४
कुर्सकहरुवा	३७८	माजूनकमीला	३८४
कुर्सकाकनज	३७८	मतबूखमुलय्यन	३८४
कुर्सज़ियबितुस	३७८	मुफर्रहमग़ीर	३८४
कुर्सबोलुइम	३७९	मुफर्रहदिलकुशा	३८५
कुर्सनफसुहम	३७९	मुलय्यनमुबारिक	३८५
कुर्सतबाशीरमुलय्यम	३७९	मरहमबासलीकून	३८५
कुर्सतबाशीरकाबिज	३७९	मरहमरसूल	३८५
कुर्सकाफूर	३८०	चूनेकमरहम	३८५
कामूनी	३८०	मरहमकाफूर	३८५
कोहलुलजवाहिर	३८०	सिरकेकामरहम	३८५
कुहलअज़ीज़ी	३८१	मरहमसफेदा	३८५
कालकालानजगम्म	३८१	मसूरकामरहम	३८५
कालकालानजंठी	३८१	मुर्दासंगकामरहम	३८५
काजवर्दकेधोनेकीरीति	३८१	कालामरहम	३८५

आशय	पत्र	आशय	पत्र
मरहमजंगार	३८५	रुधिरकेओटनेकोरोकनेवाली	४०४
नोशदारू	३८५	औषधें।	
नक्काहाभिज़	३८७	गाढेरुधिरकोपतलाकरनेवा	४०५
औषधियोंकीकैफ़ियत		लीऔषधें।	
पहिलेदरजेकीगरमऔ०	३९०	पतलरुधिरकोगाढाकरनेवा	४०७
दूसरेदरजेकीगरमऔ०	३९१	लीऔषधें।	
तीसरेदरजेकीगरमऔ०	३९२	पित्तोंकोठीककरनेवालीऔष	४०७
चौथेदरजेकीगरमऔ०	३९२	धें।	
पहिलेदरजेकीठंढीऔ०	३९२	कफ़कोठीककरनेवालीऔष	४०८
दूसरेदरजेकीठंढीऔ०	३९२	धें।	
तीसरेदरजेकीठंढीऔ०	३९३	सौदाकोठीककरनेवालीऔषधें	४०९
चौथेदरजेकीठंढीऔ०	३९३	गाढेमवादकोपतलाकरनेवा	४१०
पहिलेदरजेकीखुश्कऔष		लीऔषधें।	
धें।	३९३	मुन्जिशें	४१०
दूसरेदरजेकीखुश्कऔषधें	३९३		४११
तीसरेदरजेकीखुश्कऔषधें	३९४	पित्तोंकीमुन्जिशें	४११
चौथेदरजेकीखुश्कऔषधें	३९४	कफ़कीमुन्जिशें	४११
पहिलेदरजेकीतरऔषधें	३९४	सौदाकीमुन्जिशें	४११
दूसरेदरजेकीतरऔषधें	३९५	जुल्लाबोंकीऔ०	४११
दवादेनेकीवर्णन		पित्तोंकेजुल्लाब	४११
		कफ़केजुल्लाब	४११
वहऔषधेंजोरुधिरकेबिगा	४०५	सौदाकेजुल्लाब	४११
डकोठीककरें।			

आशय	पत्र	आशय	पत्र
मूत्रलानेवाली औषधें	४१२	नींदखोनेवाली औ.	४१९
हैज़ःहानेवालीऔ.	४१३	सोतेमेंबुरेस्वप्नदिखलानेवा	
वीर्य्यनिकालनेवालीऔ.	४१३	लीऔ.	४२०
उल्टीलानेवालीऔ.	४१३	बुरेस्वप्नबंदकरनेवालीऔ.	४२०
उल्टीलानेवालीपुष्टऔ.	४१४	पचावकरनेवालीऔरभूखल	
भेजेकीपुष्टकरनेवालीऔषधि	४१४	गानेवालीऔ.	४२०
दिलकीपुष्टऔरप्रसन्नकरने		दांतोंऔरमसूढोंकी पुष्टकरने	
वालीऔ.	४१४	वालीऔ.	४२१
जिगरकीपुष्टकरनेवालीऔ.	४१५	दांतोंऔरमसूढोंकीहानिकारक	
मेदेकीपुष्टकरनेवालीऔ.	४१६	औषधें	४२१
जिगरकीहानिकारकऔ.	४१६	दृष्टिकीपुष्टकरनेवाली औषधें	४२१
मेदेकीहानिकारकऔ.	४१७	वहऔषधेंजोमवादको आंख	
मेदेकीढीलाकरनेवालीऔष		परनगिरनेदें	४२२
धें।	४१७	दृष्टिकीहानिकारकऔ.	४२२
भेजेकीहानिकारकऔरपीडा		विषयकीचाहनाकोपुष्टकरने	
उत्पन्नकरनेवालीऔषधें।	४१७	वालीऔ.	४२२
पेटकीनरमकरनेवालीऔष	४१७	विषयकीचाहनाकोखोनेवाली	
पेटबन्दकरनेवालीऔ.	४१८	औरहानिकारकऔ.	४२३
पेटबन्दकरनेवालीऔ.	४१८	वीर्य्यउत्पन्नकरनेवालीऔ.	४२४
सुद्दाऔरवायदूरकरनेवाली		विषयकरनेसेअधिकठहराने	
औषधें।	४१८	वालीऔ.	४२४
वावलाकरनेवालीऔ.	४१८	विषयकरनेसेमज़ादेनेवाली	
नींदलानेवालीऔषधें।	४१८	औषधें	४२४

आशय	पत्र	आशय	पत्र
लिंगकोबढानेवालीऔ.	४२५	सूजनकीपकानेवालीऔ.	४२७
भगकोतंगकरनेवालीऔ.	४२५	सूजनकीफोड़नेवालीऔ.	४२७
बच्चाजल्दीजननेवाली औषधें।	४२५	बुरेमांसकोगलानेवाली औषधें।	४२८
मरेबच्चेको निकालनेवाली औ.	४२६	साफ़करनेवालीऔ.	४२८
मासीमाको निकालनेवाली औषधें	४२६	कीड़ेमारनेवालीऔ..	४२८
मसाने औरगुर्देकी पथरीको तोडनेवालीऔषधें	४२६	घावकोभरनेवालीऔ.	४२८
सूजनकीपटकानेवालीऔ.	४२७	घावकोसुखानेवालीऔषधें।	४२९
सूजनकीनरमकरनेवालीऔ.	४२७	नाकमुंहऔरदस्तोंके रुधिरको रोकनेवालीऔषधें॥	४२९

इति

भूमिका

सर्ववैद्यविद्यानुरागियोंको विदितहो कि आजकल इस वैद्य बिद्या को प्र
चार सर्वत्र बढ़ा हुआ दृष्टिगोचर होता है तथापि आजतक कोई ऐसी लाभदायक
पुस्तक जिसमें आद्योपांत यथाक्रम रोगों का निदान चिकित्सा आदि हो न छपी इ
स कारण मेरे चित्त में अभिलाषा हुई और विचारने लगा कि अब ऐसी कौनसी पुस्तक
यूनानी में है जिसकी उल्था हिंदी भाषा में होकर प्रचलित हो और जिस्से सब मनुष्यों
को लाभ हो इस बात को सोचते २ यह बात निश्चै हुई कि (मीज़ानुत्तिब्ब) नाम ग्रंथ जि
सको मुहम्मद अकबर नामी यूनानी वैद्य ने अपने सुहृदों के निमित बनाया था
और उसका उल्था उर्दू भाषा में हकीम मुहम्मद हुसेन साहिब ने मुहम्मद
अब्दुलरहमान की आज्ञा से किया था उस पुस्तक को अत्यंत लोकोपकारी
समझकर मेरी इच्छा हुई कि इसका उल्था हिन्दी भाषा में कराकर अपने स्वदेशीय
भाइयों को फ़ायदः पहुंचाना चाहिये-इस हेतु अपने परम प्यारे मित्र हकीम
वारिस अली साहिब से जो मेरे ऊपर सदैव कृपादृष्टि रखते हैं और किसी स
मय लाभ पै लोभी थे उनसे उल्था की प्रार्थना की गई उन्होंने भी प्रसन्नतापूर्व
क इस श्रम को स्वीकार किया-यह एक ही ग्रंथ है जिसके पढ़ने और याद करने से म
नुष्य अच्छी तरह रोगियों से अभीष्ट आदि पा सक्ता है-क्योंकि इस ग्रंथ को ग्रंथ
कर्ता ने ऐसी उत्तमता से निर्माण किया है कि प्रथम रोग का निदान (शनाख़्त) पी
छे उस रोग की चिकित्सा अरु सिर से लगाय पैरों के रोग तक की वर्णन की है-इसी
कारण सब हकीमों ने प्रथम पढ़ने में इसीका आचार कर रक्खा है।

इस पुस्तक का उल्था सन् १८७९ ईसवी में मुन्शी कन्हैयालाल
वैकुंठवासी के लघुभ्राता बन्शीधर ने वारिस अली की सहायता से कि
या और अपने निज शिलायंत्रालय मथुरा में छपवाया-

ठिकाना पुस्तक के मिलने का यह है-बन्शीधर-रामदास की मंडी
में मन्बेउलअलूम नामक छापाखाना मथुरा

श्रीगणेशाय नमः

अथ मीज़ानुत्तिबहिंदी

पहिलाखण्ड

गरमी सरदी तरी और खुशकी की पहचान औ रूह के विषयमें

गरमीकीपहचान

अधिक प्यास होनी, जलन, बदन पर ज़र्दी या सुर्खी, ठंढक का अच्छा मालूम होना, जो गरमी रुधिरकी अधिकता से होतो सिर बोझल होगा, और अंगड़ाई तथा जमाई और नींद बहुत आवेगी, और सुस्ती और मुंह मीठा होगा, बदन और ज़बानपर लाली होगी, फुन्सियां और फोड़े बहुत निकलेंगे, मसूढ़े से खूनका बहना, नक्सीर बहना, हाथ पांव गिरना, और बदन का दुखना। जो गरमी पित्तसे होगी उसकी पहचान यह है, बदन ज़बान और आंख इन तीनों में ज़र्दी होगी-मुंह कड़वा और जबान खुश्क होगी, ज़बान में कांटे पड़ेंगे, नाक में खुश्की का होना, प्यासका होना, भूख की कमी, जी मिचलाना, रोमांच का खड़ा होना, इतने लक्षण से गरमी की पहचान है॥

सरदीकीपहचान

प्यास औरजलन का न होना, बदन का रंग सफेद या काला होना, जो सरदी बलगम से हो पहचान उसकी यह है- बदन की सफेदी और नरमी सुस्ती होना, बदन ठंडा होना- प्यास न होना, ख्वाहिश बार आनी नींद बहुत आनी, इन्द्रियों का सिथल होना, थूक का पतला और बेजल न होना, नाक से पतला पानी बहना, जो सरदी सोदा सेहो पहचान उसकी यह है बदन का काला होना, फस्द से काला और गाढा रुधिर निकलना बदन का दुबला होना सोच में छुपा बैठा रहना कोड़ी की जगह अंठा होना और झूठी भूख होनी ॥

तरी की पहचान

नरम औरढीला होना बदन का, अधिक भूख होना, नींद ज्याद: होना, जोतरी गर्मी के साथ हो उसकी पहचान ऊपर हो चुकी है ॥

खुश्की की पहचान

बदन की सख्ती औरदुबला और कुरूप होना जोगर्मी पित और सोदा के साथ हो पहचान उसकी ऊपर होचुकी है ॥ इति पहचान ॥



अब जानना चाहिये रुधिर, कफ, सोदा और पित्त से आदमी का बदन स्थिर है, जो कोई इनमें से घट बढ जाता है तो रोग उत्पन्न होजाता है- रुधिर गर्म और तर है- पित्त गर्म और खुश्क है- कफ सर्द और तर है- सोदा सर्द और खुश्क है- इनही चारों खिल्तों[1] से एक ठंडा धूआं प्रगट होता है- उस्में गर्मी नहीं रहती- और न मनुष्य के बदन की स्थिरता होती है- उसे वायु कहते हैं- और यह बहुधा कफ और सोदा से उत्पन्न होती है- और इनही सारों में जो धूआं उत्पन्न होता है- और बदन की स्थिरता और जान जिस्से होती है उसको रूह कहते हैं- इति प्रथम खण्ड ॥

दूसरा खण्ड

१- खिल्त अर्थात रुधिर, कफ, सोदा, और पित्त ॥

दवा ओर खाने के विषय में

अध्याय पहिला

उन दवाओं के विषय में जो इन चारों के विगाड़ को खोवें - जान्ना चाहिये कि रुधिर चार प्रकार से बिगड़ता है - एक यह कि अधिक होजाय - दूसरे पतला पड़जाय - तीसरे गाढ़ा होजाय - चौथे सड़जाय ॥ वह दवा जो रुधिर के जोश को थामें यह हैं - कासनी, काहू के बीज, धनियाँ, गुलाब के फूल, नींबू का रस, सिकञ्जबीन, शर्बत उन्नाब, शर्बत सन्दल, शर्बत केवड़ा और जो इन के बराबर ठंढी हों ॥ जो दवा गाढ़े रुधिर को अच्छा करें वे दवा यह हैं - आलू बुखारे का पानी, सोंफ का पानी, शाहतरे का पानी, सिकंजबीन, और शहद, अपने से दूने पानी में औटाया हुआ ॥ और जो दवाइयें सौदा को निकालेंगी वे गाढ़े रुधिर को भी अच्छा करेंगी, क्योंकि सौदा के मिलने से रुधिर गाढ़ा होजाता है - और गाढ़े बलग़म अर्थात कफ के मिलने से भी रुधिर गाढ़ा होजाता है - ऐसे समय में कफ का जुल्लाब और खट्टी दवाइयें दे - कि गाढ़े कफ को काटे - और कफ और सौदा के पतले होने के पीछे खून लाने वाली दवाइयां दे - और जब रुधिर में बलग़म मिला होगा तो फ़स्द में रुधिर सफ़ेद निकलेगा - और जो सौदा मिला होगा तो रुधिर काला होगा ॥

वे उपाय और दवाइयां कि जो पतले रुधिर को अच्छा करें - जब रुधिर बलग़म के मिलने से पतला हो तो बादरंजबोया, रेहां के बीज, हंसराज और जो दवाइयां खुश्क गर्म हों और बलग़म को निकालें - काबली हड़ बलग़म के निकालने को बहुत अच्छी है - और पहचान इस बलग़म जो रुधिर में मिलने की यही है कि रुधिर का रंग सफ़ेदी मिला हुआ होगा - बदन का मलना और महनत करना, कसरत करना, कफ को फायदा देता है - जो रुधिर पित्त के मिलने से पतला होजाय पहचान उसकी यह है - कि फ़स्द से पीला कफ़ रुधिर पर दिखलाई देगा - उपाय इसका निकालना पित्त का है और पीली

हड़ इसलिये बहुत अच्छी है मसूर का पानी, शर्बत उन्नाव और कासनी का पानी फाड़ा हुआ ॥ और जो दवा रुधिर के जोश को फ़ायदा करेंगी वे ही दवा इसको भी फ़ायदा करेंगी - अब जानना चाहिये कि कभी गर्मी पहुंचने से रिवल्त सड़ जाता है । और बुखार ज़रूर होजाता है और बिना गर्मी के कोई रिवल्त नहीं सड़ता - इलाज उसका सर्द और खुश्क दवा से उचित है जो दवा रुधिर के जोश में लिखी गई हैं - रुधिर के गरम होने को जोश रुधिर कहते हैं बिना सड़ने के ॥

बिगाड़ पित्त का पांच प्रकार करके है

एक यह कि पतला बलग़म उसमें मिले - दूसरे गाढ़ा बलग़म मिले - तीसरे थोड़ा सा सौदा उसमें मिलजाय - चौथे पहिला और तीसरा प्रकार दोनों मिलजायँ - पांचवे पहिला और तीसरा प्रकार बहुत जल के उसमें मिले ॥ चौथे और पांचवे प्रकार में यह भेद है - कि चौथे में गरमी कम होती है - और पांचवे में ज़्यादा - नहीं तो दोनों एक हैं ॥

वे दवायें जो पित्त को अच्छा करती हैं - जहां गरमी अधिक हो वहां ठंडी दवायें - या एक दिन में दो तीन बार दें - और जहां गरमी कम हो वहां कम ठंडी दें - वे यह हैं - ईसबगोल, बीदाना, कुलफा, कासनी, खीरे ककड़ी के बीज, हरा धनियां, संदल, काहू के बीज, कपूर, ईसबगोल का लुआब, निकाल कर दें - या फंका दें कूटें नहीं कूटने से ज़हर होजाता है - और बीदाने का भी लुआब निकालें - खांसी में खट्टी मिट्ठी को बीदाना न दें - कुलफे और कासनी के बीजों का शीरा निकालें - और इनके पत्तों को कूटकर रस निकाललें - कासनी के पत्तों को धोना न चाहिये - कि उसका असर जाता रहता है - जो कासनी के पत्तों का पानी फाड़लें और अकेला या कुछ मिठाई या खटाई मिलाकर पीवें तो रुधिर के साफ़ करने में इसके बराबर कोई दवा नहीं है, कुलफे के बीज को पीसकर बहुत छानना कालिक दूर करने के लिये - कुछ अच्छा नहीं है - खीरा ककड़ी के बीज और धनिये का शीरा निकाललें - या पानी में भिगोकर

कूटके पीदें-और यही भिगोयाहुआ बहुत जल्दी असर करताहै ॥

चन्दन पानीमें घिसकर देना बड़ी भारी गरमी को बुझाताहै-और चंदन सुफेद लालसे अच्छा होताहै-कपूर बदन की गरमी को दूर करता है-और जो कि यह बहुत ठंडा है-इस लिये सिवाय जवान आदमी और गरम मिज़ाज वाले के और को न दे-और ठंडे मेवे जैसे खरबूज आदि और सब खटाईयां पित्त को अच्छी हैं-और स्त्री और लड़कों और बूढ़ों को बहुत ठंडी दवाईयां न देनी चाहियें ॥

बनी हुई दवाईयां जो पित्तको फायदा करती हैं वे यह हैं

कुर्स तबाशीर मुलय्यन १ कुर्स तबाशीर काबिज़ २ कुर्स काफूर ३ शर्बत चंदन शर्बत आलूबुखारा, शर्बत बनफ़शा, शर्बत नीलोफ़र, और सूंघना और लगाना भी ठंडी दवाओं का पित्त के लिये अच्छा है-और गर्मी को बुझाता है

कफ़का बिगाड भी पांच प्रकार का है

एक यह कि थोड़ा सा रुधिर कफ़ में मिल जाय और उसके असर थोड़े हलके-उसको मीठा बलगम कहते हैं ॥ दूसरे जला हुआ पित्त थोड़ासा बलगम में मिल जाय उसको खारी कफ़ कहते हैं- और स्वभाव पित्त के बराबर होता है ॥ तीसरे बलगम गरम होजाय तो उसको खट्टा कफ़ कहते हैं ॥ चौथे थोड़ा सा सौदा बलगम में मिल जाय तो कसीला कफ़ कहलाय गा ॥ पांचवें कफ़ पतला पड़जाय उसको फीका कफ कहते हैं और ये सब कफ़ों से अधिक ठंडा होता है ॥

दवायें जो कफ़को अच्छा करें वे यह हैं ॥

सौंफ, अनीसून, मुलहैटी, ज़ीरा, दालचीनी, इलायची, बालछड़, मुनक्का, बिस्फ़ायज, इनके देने की रीति हकीम की राय पर है-कफ़ में दवा को औटाकर देना अच्छा है ॥ और जब बलगम सड़ जाय तो बहुत गरम दवा न देनी चाहिये खास कर खारी बलगम में क्योंकि उसमें तप

बहुत होती है। और इझर के बीज जहाँ कहीं रगों के भीतर बलगम सड़जा य बहुत अच्छे हैं। और वाफ के सड़ने में जो देखें तो कुछ दवायें जो पित्त में बयान हुई हैं मिलाकर दें ॥

बनी हुई दवाई जो कफ़ के लिये दीजाती हैं वे यह हैं ॥

मअजून फिलासफ़ा, सोंठ की मअजून, माजून सोर, नवारिश जालीनूस, इनदवाओं को उस समय में दें जब कि कफ़ सड़ा नहो और बुखार नहो और तप में कुर्स गुल - कुर्स गाफ़िस - सिकंजबीन बजूरी मोतदिल - बजूरी मैं शर्बत बजूरी मोतदिल - और गर्म - और गुलकंद देना चाहिये ॥

बिगाड़ सौदा काभी पाँच प्रकार का है ॥

एक यह कि सौदा अधिक बढ़जाय - दूसरे यह कि सौदा जलकर बिगड़ जाय - तीसरा यह कि रुधिर जलकर सौदा बनजाय - चौथा यह कि वाफ़ जलकर सौदा होजाय - पाँचवाँ यह कि पित्त जलकर सौदा होजाय -

जान लो कि कोई खिल्त जब जल जाता है तो बिगड़ा हुआ सौदा होजाता है और मतलब जलने से यह है कि तरी उसकी गरमी से उड़कर गाढ़ा रहजाता है ॥ और उसकी असल नहीं रहती - और जलने से यह मतलब नहीं है कि जलकर राख होजाय और अगर कोई खिल्त सर्दी से गाढ़ा होकर जमजाय तो वह सौदा न कहलावेगा ॥

वह दवाओं जो सौदा को अच्छा करती हैं सो यह हैं

लहसोड़े, गाविज़बां, खरबूजे के बीज, मुल्हेटी, कनोचे के बीज, इंजीर, मुनक्का, आदि जो गर्म और तर हों - जो सौदा गर्म खिल्त से पैदा होतो दवा ठंडी और तर देनी चाहिये - जैसे कुलफ़ा, बीदाना, खीरे ककड़ी के बीज, आदि और नहीं तो गर्म और तर या वह दवा जो गरमी और सरदी में बराबर और तर हो ॥

बनी हुई दवाओं सौदा के वास्ते यह हैं

सिकंजबीनइसीमूली, नौशादारू, माजूनसुकरात, याकूतीबूअली, मुफर्रह दिलकुशा, शर्बतगावजबां, शर्बतवादरंजबोया, आदि और उचित है कि हरजगह गर्मी और सर्दी काभी ध्यान रक्खें जो सौदा सड़जाय और तप होय तो ये दवायें औटाकरदें - कासनी के बीज, काशूस के बीज तीनतीन दिरम (१ दिरम ३॥ माशे का होता है) मुल्हेटी - जरस्क हर एक दोदो दिरम, गावजबां ५ दिरम, कन्द या सिकंजबीन के साथ और इससे पहिले चाहिये कि मुनज्जिज देकर जुल्लाब दे लिया हो - तो जल्दी गुण करैगा - सौदावी रोगों में बहुत दिनोंदवादेनी चाहिये इस लियेकि सौदा दवा को देर में गुण करने देता है - सड़े हुये सौदा की दवाई या और उपाय तप में लिखेंगे ॥

अथ वह उपाय लिखे जाते हैं जिनमें सिवाय खिलाने पिलाने के दवा बाहर लगाने और सूंघने आदि से बरतने में आसक्यारें ॥

शमूम - उस खुश्क या तर दवा को कहते हैं जो सूंघी जाय ॥

लखलखा - उसको कहते हैं कि पतली खुशबूदार दवायें सीसी या किसी बरतन में डालकर सूंघे ॥

सऊत - उस दवा को कहते हैं जो नाक में डाली जाय ॥

नफूख - वह खुश्क दवा है जो नाक में डाली जावे ॥

वजूर - अर्थात तर दवा को गले में चुआना ॥

सनून - अर्थात मंजन ॥

क़तूर - अर्थात् किसी दवा को बदन के किसी सुराख में टपकावें ॥

नतूल - अर्थात धारना ॥

सकूब - अर्थात बहती हुई दवा को दूर से रह रहकर बदन पर डालना ॥

इंकाबाब—अर्थात भपारा लेना

कुमाद—अर्थात कोई दवा गरम करके बदन को सेक दें चाहे वह दवा खुश्क होयातर ॥

बुखूर—अर्थात दवाओं को जलाकर धूनी उसकी पहुंचाना॥

आबजन—अर्थात दवाओं को औटाकर बीमार को उसमें बिठाना॥

पाशोया—अर्थात गरम पानी में या औटी हुई दवा में बीमार के पांव रक्खें-भूसी गुलखैरू, बनफशा के फूल, बाबूने के फूल, बेद के पत्ते, और बेरी के पत्ते औटावें-यह उपाय सिरदर्द और बुखार के लिये बहुत अच्छा है, पाशोये के समय बीमार को तकिया लगादे, और सिर पीछे झुकारहै, और सुरत के आगे परदा डालदें कि भाप सिर को न पहुंचे इससे लफ़ा वान होजाताहै॥

तमरीख—अर्थात तर दवा को बदन पर मलना॥

तदहीन—अर्थात बदन पर कोई तेल मलना॥

कतूर—अर्थात ठंडी दवायें मिलाकर आंख में लगावें॥

जरूर—अर्थात खुश्क दवायें पीस कर छिडकना॥

जिमाद—अर्थात गाढी और तर दवा को बदन पर लगावें॥

तिला—अर्थात तर और पतली दवा को बदन पर लगावें॥

कुहल—अर्थात अंजन॥

हुकना—अर्थात किसी पतली दवा को पाखाने या मूत्र की राह से भीतर पहुंचावें॥

शाफा—अर्थात दवा की बत्ती बनाकर बदन के किसी सूराख में रक्खें

फतीला—अर्थात कपड़े में दवा लगाकर और बत्ती बनाकर बदन के किसी सूराख में रक्खें॥

लमूल—अर्थात कपड़ा दवा में भिगोकर के किसी जगह रक्खें॥

फरजाजा—अर्थात कपड़े में दवा लगाकर गद्दी की तरह औरतों के

सावकाने की जगह रक्खें॥

शमूम-गर्मबीमारियोंको फायदा करताहै-सफेद चन्दन घिसकर सिरका और धनिये के पत्तोंकारस-औरगुलाव मिलाकर सूंघें और जो लखलखा बनालें तो बहुत अच्छा है और जो नींद न आतीहोतो सिरकाल मिलावें-और जो गरमी बहुतहोयतो कापूरभी मिलादें-औरखीरेको काटकरऔर ठंडे मेवे औरफूलों का सूंघना फायदा करताहै और जिस्कोहरे धनिये की सुगंध अच्छी नलगेतो तरबूज का रसया भुने हुये घीया-अर्थात् लौकी का रस मिलादें॥

शमूम-ठंडी बीमारियोंको फायदा करताहै-मुश्क-अंबर-दालचीनी जुन्दवेदस्तर-लौंग-केसर-कलोंजी-थोड़ीरलें॥

सऊत-सिरकी गर्मीऔरखुश्कबीमारियोंको फायदा करताहै-काहूका रस-नीलोफरकातेल-एक२ हिस्सा,लड़कीकीमाका दूध दो हिस्से-वा दामका तेलया कद्दूका तेल मिलाकर नाक मेंडालें और जो नींद कम आती होतो खश्खश का तेल भी उस्में मिलालें॥

सऊत-सिरकेठंडे औरतररोगोंकोफायदाकरताहै-रालुआ सुरमकी कुंदर-माजू-जुंदवेदस्तर-केसर-दोनामरुवाके पानीमें पीसलें॥

नफूख-मूर्च्छा वालेकोहोशमें लावें और सिरके सुद्दों को खोलें और नकछिकनी-कुटकी-कूट छानकर थोड़ी २ नाकमें फूंकें॥

वजूर-लड़कों के पसली चलनेकेरोगोंको फायदा करताहै-सातर-जुंदवेदस्तर-,जीपकिरमानी सबको बराबरलेकर दूधमें घोलकर लड़के के मुखमें टपकावें॥

वजूर-मिरगी वालेकोहोशमें लावें-हींग-जुन्दवेदस्तर-सिकंजबीन,सरकेमें घोलकर मुखमें टपकावें॥

मंजन-दांतों को मजबूतकरताहै-सुरंजान-लौंग-मोथा-माई पीली हड़ का बक्कल-सफेद चंदन-गुलाबके फूल-सबकोदर,

बरलेकर मंजन बनावे-जोगरमी होतो लोंग न डालें ॥

क़तूर-कान के दर्द को जो गर्मी से हो फ़ायदा करे-रोग़न गुल ६ दिरम् रोग़न बादाम ३ दिरम् अंगूर का सिरका १० दिरम् मिलाकर मंद आंच पर पकावें,जब सिरका जल जाय और तेल रहजाय तो गुनेगुना कान में टपकावें और जो दर्द बहुत होतो थोड़ी अफ़ीम भी मिलावें ॥

क़तूर-सोज़ाक को फ़ायदा करें- क़ासग़री सफ़ेदा-कुन्दर-इंजरूत-बबूल का गोंद-निशास्ता-दम्मुलअख़वैन बराबर लेकर कूट छान्कर लड़की की मा के दूध में घोलकर पेसाव के सूराख़ में टपकावें ॥

नतूल-नींद लावें और गर्म सरसाम को फ़ायदा देती है-बनफ़शे के फूल-काहू के बीज ५ पांच २ दिरम-पोस्त दाने समेत-गुलेव के फूल-नीलोफ़र के फूल-हरे बीयों के छिल्के-बाबूने के फूल दस २ दिरम-जौ छिलेहुए ५० दिरम-इन सब को ऽ५ सेर पानी में पकाकर तरेडादें ॥

नतूल-सिर की ठंडी बीमारियों को फ़ायदा देती है-इकलीलुल्मल्क-नम्माम-मरज़ंजोश-बिरञ्जासफ़-सातर-बरगुलगार-सबको बराबर लेकर पानी में ओटाकर तरेडादें और चद्दर उढ़ाकर भपारा दें ॥

सिर की गर्म बीमारियों में तरेडा न दें जबतक कि जुल्लाब न दियाहो

नतूल-बाई को पचावे-बाबूने के फूल-इकलीलुल्मलक-करफ़स के बीज और पत्ते रज़ीयाना-किरमानी ज़ीरा-मरज़ंजोश-सोया-सातर-बराबर लेकर पानी में ओटावें और तरेडादें ॥

कमाद-फँसी हुई रीह को पचावें-चौंजरा-नमक पोटली में बांधकर मंदी आंच पर गरम करके सेकें-रेह या गेहूं की भूसी या गर्म ईंटसें कपड़े में लपेटकें सेकना भी फ़ायदा करता है ॥

कमाद-बदनको नरम करे और दर्दको आरामदे बनफशेके फूल, बाबूने के फूल-सोयेके बीज-पानीमें औटा के ईस्पंज अर्थात् मराहुआ बादल उस्में भिगोकर सेकें॥ ४

वखूर-अर्थात् **धूनी** सिर और यादको ताकतदे-और खफकान और मूर्च्छा और सुस्तीको दूर करे-अदगरकी-मीठाकूठ-सफेद चंदन एक २ दिरम-कपूर-मुश्क-आधेर दिरम-सबको कूटछानकर गुलाबमेंसा नकर गोलियां बनाकर सुखा रक्खें और आगपर जलाकर धूनीदें॥५

धूनी-जो पसीना लावे और पित्त और कफके बुखारको दूर करे-प हिले मुञ्जिस देना चाहिये-सौंफ की जडकी छाल-सौंफ अंगीठीमें जलावें और चद्दर ओढ़कर धूनीलें इस्से बहुत पसीना आवेगा॥ ६

आबजन-बदनकी खुश्की को और तपेदिक की फायदा करती है घीया-ककडी-कुल्फा-काहू-तरबूज-नीलोफरके फूल-बनफशे के फूल-छिले हुये जौ-इनसबको औटाकर ऐसे बरतन में डालें जिस्में बीमार गले तक बैठ जाय-और एक घडी भर उस्में बैठाल कर निकालें-और रोगने बनफशा-और रोगन कद्दू मलें-और पायशोया जो ऊपर लिखागया है करें-और हाथोंको भी धोवें-पिंडलियों को बांधना-और तलुओं और हथेलियों को मलना भी बहुत फायदा करता है-जब पिंडलियां बांधें तो रान से अर्थात् घुटनों से बांधने का प्रारम्भ करें और जब खोलें तो टखनों की ओर से खोलें इस्से जो मवाद सिरसे उतरा होगा वह फिर सिरको न चढ़ेगा॥

दूसरा अध्याय २ फ़स्द के विषयमें

जानना चाहिये कि फ़स्द से सब प्रकार के मवाद निकलते हैं-अर्थात् रगोंमें रुधिर भरा होता है-उस्में पित्त सौदा कफ भी मिला होता है इस

लिये फ़स्द करने से जो रगों में होगा वही निकलेगा- और मकार के जु
ल्लावों में यह बातें नहीं होती हैं- फ़स्द को कई बातों के निमित्त अच्छा
लिखा है- एक बात तो ऊपर लिखी गई है- और दूसरी यह कि फ़स्द
में मवाद का निकालना अपने वस में है- और जुल्लाव पीने के पीछे
वह मवाद कि जिस्को निकालना चाहते हैं न निकले तो दस्तों के
बंद करने में हानि होगी- तीसरे यह कि फ़स्द में मुंज़िश पीने की
आवश्य कता नहीं है॥

जानना चाहिये कि बारह बरस की अवस्था से पहिले फ़स्द खो
लना न चाहिये- और फिर जबतक चाहें तबतक फ़स्द खोलें- और
भरी हुई सींगी साठ बरस की अवस्था के पीछे लगानी न चाहिये, क
भी ऐसा होता है कि फ़स्द खोल के रुधिर कम लिया गया और फ़स्द
बंद कर दी तो तप होजाती है- ऐसे समय में फिर जल्दी से फ़स्द खो
लना उचित है-॥

जब किसी ने ज़हर खाया हो या किसी ज़हर वाले जानवर ने काटा हो
तो फ़स्द नहीं खोलना चाहिये॥

जरीरा एक बिच्छू है जो धरती पर दुम घसीटता हुआ चलता है उस
कीड़े का मारने से रोम २ से रुधिर बहने लगता है- उसके काटने में
फ़स्द खोलना उचित है॥

ताऊन- एक ज़हरीली सूजन है जोकि वबा के समय में होती है
उसमें जलन बहुत होती है- रंग उस्का लाल- पीलीं हैं या- हरयाली
या कालक लिये हुये होता है- उसमें भी फ़स्द न खोलना चाहिये-
और जो रुधिर अधिक हो और ज़हर ने दिल और जिगर में असर कि
या हो तो फ़स्द खोलना उचित है- जिस्को फ़स्द खोलने से मूर्च्छा
आजाती हो- उस्को फ़स्द से पहिले नींबू का शर्बत- या खट्टे अनार
का शरबत आदि गुलाब में घोलकर पिलादेना उचित है- और फ़स्द

के पीछे जब थोड़ासा ख़ून निकलजाय तो अंगूठे से दबादें - इसीप्रका
र दोतीन बार ठहर २ के रुधिर निकालें तो मूर्च्छान आवैगी - और
मूर्च्छा दूर करने का अच्छा उपाय यह है कि-कै अर्थात उलटी कर
वावें - दवाउल मिस्को को पानी में घोलकर मुखमें टपकावें - जि
सदिन फ़स्द खोलें उसदिन भारी भोजन न दें पानखिलाना - हरी
रा पिलाना और ठंडाई पिलाना फ़स्दसे अच्छा नहीं है जो गरमी की
अधिकता होतो ठंडाई पिलाना उचितहै - इसमें वो पित्त जो कि रु
धिर के निकलने से जोशमें आयाहोगा वह ठहर जायगा और
जो सरदी होतो गरमदवा देंनी उचितहै॥

अब वेरगेंजिनकी फ़स्दखोली जातीहैंलिखीजातीहैं

(१) **क़ीफ़ाल** अथवासरक़ - यह रगहाथके जोड़पर पहोंचे के ऊपर अंगूठे के साम्हने है - इसकी फ़स्द सिर और मुख के रोगों को फ़ायदा करतीहै॥१॥

(२) **अकहल** अथवाहफ़्त अंदाम - यह रग तर्जनी अंगुली की सीधपर क़ीफ़ाल के नीचे है - फ़स्द इस्की सारे बदन के रोगों को फ़ायदा करतीहै॥२॥ २ ३१६

(३) **वासलीक़** - यह रग बीच की उंगली के साम्हने अकहल की तरफ़है - फ़स्द इस्की उनरोगों को फायदा देतीहै जो बदन में गरदन सेनीचे उपस्थित हों॥ इस रग के नीचे एक रग और है जिस का हलना तथा फड़कना मालूम होताहै ऐसा नहोकि इस रगमें नश्तर गहरा लगजाय॥३॥ ४८१

(४) **हबलुल्ज़िरा** - यह रग किसी केहाथमें वासलीक़ से और किसी के हाथ में अकहल से मिली होतीहै - अंगूठे के साम्हने कलाई के ऊपर फ़स्द खोलना उचितहै - इसकी फ़स्द का फायदा और क़ीफ़ाल का बराबर है - और कभी २ वास

कीचड़ के बराबर भी होजाता है ॥४॥

(५) **इबती**- छुंगलिया अर्थात् कनिष्ठका उंगली की सीधपर कोहनी के बराबर है-फ़स्द इसकी भीतर की बीमारियों को और नीचे के बदन के रोगों को फायदा देती है ॥५॥

(६) **उसैलम**-इबती से मिली हुई है-इस्की फ़स्द घाई में खोलते हैं और हाथ को गरमगरम पानी में रखते हैं-यह फ़स्द दाहिने हाथ से जिगर के रोगों को और बायें हाथ से तिल्ली के रोगों को फायदा देती है और फेंफड़े के रोगों को दोनों ओर से फ़ायदा देती है इस रग से रुधिर दिल और जिगर का निकलता है इस वास्ते खून थोड़ा सा ही लेना चाहिये ॥६॥

(७) **साफ़न**-इस रग की फ़स्द टखने के ऊपर पाँव के अंगूठे के सामने खोलते हैं-जो कोई स्त्री कपड़ों से न होती हो उस्के खोलने के लिये और घाव और खुजली के लिये फायदा देती है और सवाद को सिर से निकालती है ॥७॥

(८) **नाविज़**-वह रग है जिस्की फ़स्द घुटने के नीचे खोली जाती है यह साफ़न से अधिक फ़ायदा देती है-पीठ और पाखाने और पेशाब की जगह के रोगों को और भीतर के दर्द को फायदा देती है ॥

(९) **इरकुन्निसा**-यह रग गिरह दार पिंडली पर है-पाँव के कसने से दिखाई देती है-और जो यहां न मिले तो पांव की छिंगुलिया और चौथी उंगली के बीच में खोलें- इसी रग के दर्द के वास्ते इसकी फ़स्द फायदा देती है ॥

(१० **चाररग**-वे चार रगें हैं जो दो ऊपर के होठमें और दो नीचे के होठमें है-फस्द इन की गोल नश्तर से होठ के भीतर खोलीजाती है-यह मुख और मसूड़ों के रोगों को फायदा देती है।

जब नश्तर शिरियान को लग जावे तो उस्की पहिचान यह है कि रुधिर

साफ़ और उछलकर निकले-और दिल तुरंतही सुस्त होता जाय-जबरो सा होतो जल्दी सेरगपर अंगुली रखदें-और१चिप्पी लगाकर और गद्दी रखकर बांधदें-और हाथरग के ऊंचेतकिये पर रखदें और हिलने नदें-दस दिनतक यूं धररक्खे-ग्यारवें दिन होने से खोलकर फिरबांधे इसी प्रकार से जबतक घाव न पुरजावे किया करें-चिप्पी की दवायें यह हैं-द म्मुल अखवैन-इंज़रूत-फिटकरी-किल्किताल-अकीकिये-जलेनार सलुओ कुन्दर-एक२ दिरम-बबूलका गोंद दो दिरम-सब को कूटछान कर अंडेकी सफ़ेदी में मिलाकर-खरगोश के रूयें या मकड़ी के जाले में सानकर सलाई से घाव में भरदें और दूसरी तरफ़ के हाथ और पैरों को बांधरक्खें-इससे रुधिर हट आवेगा-॥

तीसरा अध्याय ३
सींगी और जोंक के विषय में

मरी सींगी और जोंक लड़कों के फ़स्द की जगह लगाते हैं-दो बरस की अवस्था से कममें न चाहिये-और चौथवीं या पंद्रहवी तारीख मुसलमानी महीने की को सींगी न लगानी चाहिये-परंतु सोल्हवीं या सत्रवीं तारीख मुसलमानी महीने की को सींगी लगानी चाहिये-स्नान करने के पीछे सींगी लगाना बुरा है-जिस मनुष्य का रुधिर गाढ़ा हो उस्के स्नान से एक घड़ी पीछे सींगी लगाना चाहिये-और जब किसी जगह मवाद बहुत इकट्ठा होतो पहिले फ़स्द खोलकर सींगी लगाना चाहिये-सींगी के पीछे पछने लगाना सरारू फ़स्द की तुल्य है-जानुों ये को लगाना चाहिये और गरदन के मोहरों पर पछने लगाना अकहल की फ़स्द के समान है-और दोनों मोंढों अर्थात् मुड्ढों के बीचमें लगाना बासलीक का काम देता है-परंतु पेट को और खफ़कान को बुरा है-चाहिये कि ऊपर चढ़ा करए छने लगावें और पिंडली पर पछने लगाना साफ़न की फ़स्द का काम देता है और खाली सींगी बुखार अर्थात् तप और मवाद के निकालने में काम

आतीहै- जोमनुष्यपछनेको नसहसके उस्केजोंकलगानी उचितहैं॥

चौथा अध्याय ४
मुन्जिसके बिषय में-॥

मुन्जिससे काच्चामवाद पक जाताहै - और मवादके पकनेसे यहमयो जनहै- किगाढ़ामवाद पतला होजाय -और जो पतलाहोतो गाढ़ाहोजा यें- जाननांचाहिये कि रुधिर में मुन्जिस नदेना चाहिये - और जब रुधि रमें और मवाद मिले होंतो मुन्जिस फायदा करेगा-॥

वे औषधें जो पित्तको पकातीहैं यह हैं-॥ उन्नाव७दाने- बनफशे के फूल- नीलोफरके फूल- लुसोरा - गुलाबके फूल - हररगकदो२ दिरम- का सनी के बीज३ दिरम- पानीया अरक में चार पहर या आठ पहर भिगो वें- और खाली या सिकंजबीन या तुरंजबीनया कोई और शर्बत मि लाकर पीवें- जुसांदा इन ही दवाओं को औटानेसे बनजाताहै- दवा औटाने से उस्में गरमी आजातीहै- जिसरोगीको गरमी अधिक हो अर्व दवाऔटा करनदें- भिगोकर वांशीरा निकालकर या अकेले ठण्डे वीन दें - जोतोल दवाओं की ऊपर लिखीगई हैं वे जवान मनुष्य के वास्ते हैं- जो बच्चा होतोदवा ओंको कमकरदें- पित्त तीन दिन में पकता है जो उस्में किसी और दूसरे मवादका मिलाव नहीं नहीं तो पांचया अधिक दिनोंमें पकेगा॥० X

मुन्जिस बलगमका- सनक्का५दाने- सौंफकुटी हुई दोदिरम- पासोंप कीजगह अनीसूनहोतो अधिक फायदा करे- मुल्हेटी छिली हुई औरकु चली हुई तीनदिरम- अंजीरकुचली२ दिरम- हंसराज ५दिरम- पीले इंजीर५दाने- गुलाबके फूल३ दिरम- इन सबको औटावे और ७ दिरम् शहदका गुल्कंद डाल कर छानके पिलावें- औरजो २तोले सिकं जवीन डालेंतो अच्छाहोगा- जोरोगी को खांसी होतो सिकंजवीन नमि लावें- खारी बलगममें पित्त और कफ दोनोंको मिलाके मुन्जिसदें-

और यह बात सब मिले हुये मवादों में याद रखनी चाहिये–चने का पानी औटा हुआ कफ़ और सौदा के पकाने को बहुत अच्छा–परंतु तपमें न दें ना चाहिये–और जो तप पुरानी होय तो फायदा करेगा–जो कफ़ गाढ़ा या पतला नहो वह नौदिन में पकेगा और जो गाढ़ा या पतला होतो पांच दिनसे–या नौसे अधिक दिनों में पकेगा।

मुंजिस सौदा का–उन्हसोड़े २० दाने–उन्नाव १० दाने–गाउजवाँ–या दरंजबोया–उस्तखुद्दूस–हंसराज–सौंफ़–स्यातरा–दो दो दिरम–और शाकर कंद या तुरंज चीन–या गुलकंद मिलाकर दें–ये दवायें अकेले सौदा की हैं॥

जो सौदा किसी और मवाद के जलने से पैदा हो–तो उसी मवाद के पकाने वाली दवाईयां थोड़ी थोड़ी मिलाकर दें–अकेला सौदा १५ दिन में या एक दोदिन कमबढ़ में पकता है–और मतलब पकने से यहां यह है–कि मवाद जुल्लाब के जोर में निकल जाय–इस से जाना गया कि मुन्जिसका असर मवाद में होले होले होता है–ऐसे रोगों में कि माद्दा उनका गाढ़ा हो बार बार मुंजिस देकर जुल्लाव दिया जाता है और जब तक मुंजिसका असर अच्छी भांति मालूम नहो–तो दूसरा जुल्लाब न दिया जावे–कभी ऐसा होता है कि बिना मुंजिस के मवाद पकजाता है–और रोग बगैर खाने दवा के जाता रहता है–इस से जाना गया कि उपाय से रोगी के दिलको मदद होती है॥

पांचवां अध्याय

जुल्लाब और मुलय्यन के विषय में

जुल्लाब उसे कहते हैं जो मवाद को रगों और दूर दूर से खेंच लावे॥

मुलय्यन वह है कि केवलयैट और आंतों से मवाद को निकाले- जुल्लाब को देने से मुंजिस पहिले देना जरूर है- मुलय्यन में उसकी ज़रूरत नहीं- और जो मुलय्यन से पहिले मुंजिस देवें तो अच्छा है।

मुलैयन मुबारिक भीतर और बाहर की बहुत सी बीमारियों को फायदा करता है- गर्भवती स्त्री और बच्चों- और बूढ़ों कोभी पिला सकते हैं सिवाय तपोंके और भीतर की सूजन को फायदा करता है- और सब प्रकारके मवाद को अच्छा है- अमलतास लेकर गुलाब या गरम पानी में मलकर छान लें और जो गरमी बहुत होय तो कासनी का रस या ठण्डे बीजों का शीरा उसमें मिलावें- और जो पेट के अन्दर सूजन होतो हरी मकोय का रस उसमें मिलावें- और वाय गोले के वास्ते सौंफ का शीरा और गुलकंद मिलावें- और जो अमलतास की बू दूर किया चाहें- तो सौंफ और गुलाब का मिलाना अच्छा है- जो चाहें कि उसमें ज़ोर अधिक होजाय- तो शीर खिश्त असीरूं और तुरंजबीन मिलादें- उन्नाब- लिहसोड़े- बनफशेके फूल- मुनक्का- गाउज़बां आदि को औटाकर अमलतास को उसमें घोलदें तो बहुत अच्छा है-॥

जानना चाहिये कि जिस मनुष्य की अंतड़ियां कमज़ोर हों- और उसे मरोड़ा होसक्ता हो- तो अमलतासमें मिलाने रोगन बादाम के न दें- औरस्याहीगर्भवतीस्त्रीयों और बूढ़ों कोभी- दूध पीते बच्चों को रोगन बादाम मिलाने की ज़रूरत नहीं- उनकी अंतड़ियां दूध पीनेसे ऐसी नर्म होजाती हैं कि अमलतास उनमें चिपट नहीं सक्ता- और अच्छे तरुण आदमी को सोलह दिरम अमलतास देते हैं- और एक दिरम साढ़े तीन माशे का होता है- इस से अधिक नुक़सान करेगा-॥

अब जुल्लाब का वरणन होता है- जो बड़ी ज़रूरत के समय

जुल्लाब देना पड़ेतो उसके पहिले मुंजिस नहीं दी जाती- जैसे कूलंज के दर्द में रात और बदली और मेह और बहुत हवाका बिचार नहीं करते-जिस जुल्लाब की दवा ओटा करदी जायं या भिगोकर- उसके ऊपर गरम पानी नदेना चाहिये-इस से उसका असर जाता रहता है और जो जुल्लाब पेटमें मरोड़ा करे तो उसके ऊपर थोड़ा सा गरम पानी पिलादेते हैं- और जो दवा जुल्लाबकी गोलियां या फंकी होती गरम पानी पिलाने से उसे मदद मिलती है- और जो जुल्लाब में प्यास लगे तो ठण्डा पानी नपीना चाहिये- ताजा पानी थोड़ा सा पीवें-परंतु गर्म मिज़ाज वाले को ठंडे पानी का डर नहीं है- और कुछ दवाइयां ऐसी हैं कि जिन पर ठंडा पानी पीया जाता है-गर्म पानी के देने से उनका असर जाता रहता है- जैसे शरबत बर्द- और दवायें जुल्लाब की जिन में- जमालगोटा या तुर्बुद और नमक मिलाहो॥ जिस मनुष्य को दवा अच्छीन लगती हो उस की दोनों बांह कस कर बांध दें- और नाक पकड़ कर दवा पिला दें- और कुल्ली करादें- और दवा पिलाने के पीछे-पोदीना चबाना और सूंघना या पान और इलायची खाना अच्छा है-॥

और जो डरहो कि इसपर भी क़य होजायगी- तो पहिले कै करा के जुल्लाब पिलाना चाहिये- और जुल्लाब के बाद सोना न चाहिये-और आबदस्त उस पानी से लेवें-जिससें रेशा खतमी- औटी हुई हो और पानी गुन गुना रहे-॥

जो जुल्लाब अपना असर न करें-तो उसी दिन दूसरा जुल्लाब नदें-और शाफ़ा करें- आलू बुखारे का रस या इसली गुलकंद और तुरंजबीन मिलाकर जुल्लाब पर पिलावें-और अमलतास भी देते हैं- इसी प्रकार मस्तगी को कूट छान कर- ढेढदिरम- बूरा या मिश्री मिलाकर गरम पानी में फंकाना बहुत मदद देता है- और जो जुल्लाब

से मूर्छा आजाय तो जल्दी से कै करादें- और जो इस्से भी फ़ायदा नहो और कोई हानि न देखें तो फ़स्द वासलीक़ और अक्हल की खोल लें- और जो पेट और अंतड़ियों में गरमी लगे तो बीदाने और ईसबगोल का लुआब पिलावें- और जिस मनुष्य का मिज़ाज़-मीत दिल हो उसे तुख्म रैहां शरबत में गुलाब के साथ दें- और एक घड़ी पीछे नर्म भोजन करावें- जानना चाहिये कि ख़राब जुल्लाब और फ़स्द से बड़ी हानि होती है- चाहिये कि बीमार का ज़ोर देख कर दूसरा जुल्लाब दें- जिससे जो मवाद निकलना हो निकल आवे- और जो बीमार कमज़ोर हो उसे थोड़ा थोड़ा जुल्लाब दो दो तीन तीन दिन पीछे दें- जुल्लाब से जो बहुत दस्त आवें और उनको बन्द करना चाहें- और बुखार भी नहो तो चावल छाछ में मिलाकर दें- और जो बुखार हो तो तुख्म रैहां भुना हुआ भुने हुये कुलफे और चार तंग के रस के साथ पिलावें- और वह उपाय जो दस्तों के बिषय में लिखे जायगा करें-॥

पित्त के जुल्लाब की दवायें येहैं

पीली हड़- इमली- तुरंजबीन- बनफशे के फूल- इफ़्सन्तीन- सक़मूनिया भुनी हुई (१) इशक़पेचां- आलूबुखारा- स्यातरे के पत्ते- एलुआ- गुलाब के फूल- शीरखिश्त- इन में से कुछ दवाईयां ज़ोरदार हैं और कुछ कमज़ोर चाहे अकेली दें या मिलाकर- और सकमूनियां वे भुने नदें-॥

(१) सक़मूनियां के भूनने की रीति यह है- कि सेवे या विही का पेट खाली करके उस में गरतंगी के साथ सक़मूनियां रक्खें और उसको बन्द करके किनारों पर आटा लगादें जिस में दरार न रह जाय और मिट्टी की बरतन में रखकर चूल्हे या भाड़ में रख दें जब भुन जाय निकाल कर काम में लावें॥

जुल्लाब वास्ते निकालने पित्त के

पीली हड़ का बक्कल ६ दिरम काले अंगूर १५ दाने- लिह सोड़े २० दाने- सनामक्की- स्याततरा तीन तीन दिरम- उन्नाव ९ दाने- कासनी के बीज २ दिरम- कुसूम के बीज डेढ़ दिरम- और खियार या तुरंज बीन १० दिरम से १५ दिरम तक भिगोकर या ओटाकर पिलावें- और जो दस्त[१] उससे अच्छे न आवें तो अमलतास भी मिलादें- और जब अमलतास मिलाया होतो रोग़न बनफशा या रोग़न बादाम एक दिरम मिलाना चाहिये और कमती बढ़ती दवा की हकीम की बुद्ध पर है-॥
जुल्लाब की कोई दवा ऐसी नहीं जो एकही मवाद को निकाले- जो जुल्लाब ॥

जिस मवाद को बहुधा निकालता है- उसी मवाद के नाम से मशहूर है- तपसें एक परदवाड़े से पहिले पीली हर्ड़ नदेनी चाहिये- इसे इसेहाल कबिदी होजाता है- और जो ज़रूरत होतो रोग़ल बादाम में उसे चिकनालें- और बीदाने और ईसब गोल के लुआब में मिलाकर पिलावें तो हानि नकरें ॥

कफ के जुल्लाब की दवायें

अफ़तीमून के फल का छिलका- कंतूरयून- साहीजु हर्जन- गारीकून- हब्बुलनील- तुर्बुद- इन्द्रायन- कड़बिम फारसी- कालोंजी- शुकाई-॥

जुल्लाब कफ का

अयारिज फ़ैकरा तुर्बुद सफेद- हब्बुल नील एक २ दिरम- गारी

---

[१] इसेहाल कबिदी कलेजे के दस्त आने को कहते हैं ॥

कून- अनीसून डेढ २ दिरम नमक- और बकायन के छिलके डेढ २ दांग- इन सब दवाओं को कूटे- और सौंफ के अर्क में सानें यह एक पूरी खुराक जवान आदमी की है- गारीकून को कूटना न चाहिये- इसमें एक चीज़ नाख़ूनसी होती है- वह कूटे से ज़हर होजातीहै इस वास्ते उसे बालोंकी चलनी में छान लेना चाहिये कि महीन महीन उसका निकल आवे॥

दूसरा जुल्लाब बलग़मका

इस जुल्लाब को तप मेंभी देसकते हैं- और पुरानी खांसी कोभी फायदा देताहै- उन्नाब- लिहसोडे- बीस दाने सूखा हुआ जूफ़ा- नीलोफर- और बनफ़शे के फूल- हंसराज- राज़ियाना कुचला हुआ- तीन तीन दिरम्- मुनक्के १५ दाने- इंजीर७ दाने- मुलहटी छिली हुई और कुचली हुई ४ दिरम- तीन रतल पानी में ओटावें जब एक रतल रहजाय तब छान लें- और अमलतास- तुरंजबीन- गुलकंद- दस२ दिरम मिलाकर मलें फिर छानकर फिर एक दिरम रोग़न बादाम डालकर पीवें॥

फंकी बलग़मके जुल्लाबकी

तीन दिरम तुर्बुद सफेद को- रोग़न बदाम में चिकनाकर कूट छान लें- और सोंठ एक दिरम- सफेद नमक आधा दिरम- पीसकर इसमें मिलाकर ठंडे पानी केसाथ फांके और जो नमक की जगह सफ़ेद बूरा सब दवाईयों के बराबर मिलालें तो अच्छा है- और मस्तंगी भी मिलालें तो अच्छा होगा॥

दवायें जो सौदा को निकालती हैं यहैं

काबली हड - कालीहड - सनामक्की - बालंगू अर्थात् बादरंज बोया - इस्पीसूत - उस्तखुद्दूस - लाजवर्द धुला हुआ (१) हजर अरमनी - आंवला -॥

जुल्लाबसौदाका

अयारिज़ फ़ीकरा पांच दिरम - इस्पीसूत दस दिरम - लाजवर्द धुला हुआ सात दिरम - हजर अरमनी नौ दिरम - सकमूनियां भुनी हुई - बकायन का वक्कल - काली खरबक दो दो दिरम - सुम्बुल तंतीब - अनीसून एक एक दिरम - सब को कूट छानकर करफ्स के पानी में सान कर गोलियां बना रक्खें दाई २॥ दिरम उस में से खावें -॥

सौदाका दूसराजुल्लाब

सौदा की बीमारियों को फायदा देता है - काली हड २) दो तोले ११ माशे - बिस फायज (अर्थात खंबोली) १ तोले ५॥ माशे - इफतीसून (अर्थात आकाश बेल) २ तोले ७॥ माशे - सनाय मक्की २ तोले ४ रत्ती - उस्त खुद्दूस अर्थात रुद्राक्षर २ तोले ४ रत्ती - गुलाब के फूल १ तोला २ माशे - गाउजुबां १०॥ माशे - बालंगू १०॥ माशे - अनीसून अर्थात बादियान रूमी ७ माशे - सौंफ ७ माशे - काली

(१) लाजवर्द के धोने की यह रीति है कि लाजवर्द को महीन पीस कर पानी में भिगोवें और थोड़ा सा ज़ैतून का तेल डालें फिर निथारें इसके पीछे बहुत सा पानी डाल कर होले २ धोलें और रंगीन पानी दूसरे बरतन में निकाल कर उस बरतन को ढक कर थोड़ी देर रहने दें जो लाजवर्द निकल कर बैठ जावे उसे निकाल कर सुखालें इसी प्रकार सब धोलें -॥ (१)

कुटकी २ दांगे-सफेद तुर्बुद ३॥ माशे-सोंठ१॥॥ माशे- इन सबको औटावें और छनी हुई-गारीकून- हजर अरमनी- मिलह निफ़्ती अर्थात् नमक निफ़्ती दोदो दांग कुचलकर पकते में मिलादें- और छान कर पीयें जो अधिक पुष्ट करना चाहेतो- बकायन के बक्कल- और एलुआ- सकोतरी- और बढादें ॥

जिसदवा में आकाश बेल डालें- चाहियेकि दवाओं के औट ने में उस्को पोटली में बांध कर डालें-और जल्दी से उतार व छान कर पिलादें-॥

हुकना और शाफ़ा भी मवाद के निकालने के लिये अच्छा है-परंतु हमारे देशोंमें हुकने का रिवाज़ कम है और जो वह वैद्यक की रीति से नहो तो हानि करता है- इस लिये इसका वर्णन यहां नहीं कीया जाता- और शाफ़ा हुकने की जगह किया जाता है-इसका वर्णन यह हैकि जब जुल्लाब दिया जाए और अपना असर नकरे- तो शाफ़ा करना उचित है- और कूलंज में जब तक शाफे से मुवाद को न निकाल सकें जुल्लाब न पिलावें- और ऐसाही बड़े क़ब्ज़ में जब तक आवश्यकता नहो तब तक शाफ़ा नकरें क्योंकि शाफ़ा बहुत करनेसे बवासीर उत्पन्न होती है इस जगह बहुधा शाफ़े अच्छे अच्छे लिखे जाते हैं-॥

१शाफ़ा- जो कूलंज की बीमारी को अच्छा करताहै- औरदस लाता है इसे तपमें भी देसक्ते हैं- बनफशा के फूल ७ माशे-सनाय ७॥ माशे- हिन्दुस्तानी नमक (अर्थात खारी नोंन) ३॥ माशे अमलतास का लुआब ३५ माशे- लाल शक्कर ३५ माशे-लेकर शाफ़ा बनावें और चाहिये कि लम्बाई शाफ़े की ६ अंगुल रोगीकी हों-॥

(१) खुलके दस्त नहो उस क़ब्ज़ कहते हैं ॥

२ शाफ़ा- जो जुल्लाबके बाद दिया जाता है- जबकि उसके असरमें देर होजाए- और गर्म मिज़ाज वाले को अच्छा है- तुरंजबीन १७॥ माशे- साबुन इराकी ७ माशे-रव नमी ७ माशे- सांभर नमक ७ माशे- लाल शक्कर १७॥ माशे- इन औषधों को कूट छान कर शाफा बनाले-॥-

३ शाफ़ा- जो तुरंत असर करे- एक टुकड़ा साबुन का छुहारे की गुठली की बराबर लेकर पाखाने की जगह में रक्खें- और जो गुल रोग़न से चिकना करलें तो अच्छा होगा-॥

४ शाफ़ा- लड़के और बूढ़ों को फ़ायदा करता है- मोम ७॥ माशे- नमक ५॥ माशे- बूरह अरमनी ५॥ माशे- इन दोनों को मोम में मिलाकर शाफा बनावें और गुल रोग़न में चिकना करके काम में लावें-॥

छठा अध्याय

कै लाने वाली औषधियों के विषय में

पहिले उन उपायों का वर्णन किया जाता है- जो कै (अर्थात उलटी) से पहिले अवश्य है जान लो जब कै का काम पड़े तो उससे एक दिन पहिले नर्म नर्म भोजन करे और जो गरमी या और कोई बात नहोतो सुगंधि वाला तेल मले और जिस दिन कै करें तो पहिले मूंगकी दाल या चावल पतली करके पीवें और थोड़ी देर पीछे कै लाने वाली दवा पीकर कै करें और जिसके मिज़ाज में तरी ज़्यादा हो उस को पहिले दाल चावल खिलाना न चाहिये और जिस को

कठिन तासे कै आती हो उसे तीनतीन दिन गर्म जगह में रक्खें २ ओर बदन पर तेल की मालिश करैं और भांति २ के भोजन करावे इसके उपरांत उलटी करें और उलटी करने के समय सीधा बैठ और पेट तथा कमर को दाबले बहुधा मनुष्य खड़े होकर कै करते हैं ओर ऐसी कै पेटकी जड़से मवाद निकाल लाती हैं और चाहिये कि कै दोबार थोड़ी २ देर के पीछे कीजाय इससे बिलकुल पेटनिर्मल होजायगा और कै के पीछे गरमी में गर्म मिज़ाज वाले को ठंडे पानी से मुंह हाथ धोना चाहिये और गरम पानी में सिकंजबीन या कांनजी मिलाकर कुल्ली करें इसमें जो मवाद मुखमें होगा वह दूर होजायगा ओर जाड़ों के दिनों में ठंडे मिज़ाज वाले को हाथ मुह गर्म पानी से धोना चाहिये ओर शहद की सिकंजबीन से कुल्ली करें ओर कुल्ली के पीछे मस्तगी ३॥ माशे पीसकर शक्कर के साथ या बिना शक्कर के सेवके अर्क के साथ पीवें और जो मस्तगी की जगह गुलकन्द—इतरी फ़रुसगीरे होतो भीडर नहीं है ओरजो औषधों की तेज़ी से हिचकियां आने लगेंतो थोड़ा २ गर्म पानी पिलावें और छीके लाने का उपाय करें और जो कैकेपीछे छाती ओर पसलीमें पीड़ा होजाय यापेटफूलजायतोगुलरोगन याबाबूने के तेल मलें ओर गर्मपानी से धारें ओर जो कैकी तुरंत आवश्यकता होतो इन बातों के विनाही कै करना चाहिये ओरजो विषके खानेपर कै कराना पड़े तो उसे पेटसे अच्छीभांतिनिकालना चाहिये

वह दवायें जो कै से पित्तों को निकालती हैं यह हैं

सिकंजबीन कन्दी १० मिसकाल—पालक का अर्क ४० मिसकाल जो कि ओटायेहुये पानी में याखुब्बाज़ी के पानी में घोलकर गुनगुना पिलावें—॥

१७ मिसकाल ४॥ माशे का होताहै ओर बाज़े ३॥ माशे काही मानतेहैं ॥

कैमें बलगमको निकालनेवाली औषधयहहैं

मूली के बीज ७ माशे– सोये के बीज ३॥ माशे– खारी नमक २॥ माशे– सब को कूट छान कर शहद में मिलाके खिलावें जो कै आपसे आजाय तो अच्छा है नहींतो ऊपर से गरम पानी पिलादें–॥

वह औषधें जो सौदा को कैमें निकालतीहैं यह हैं ॥

मूली को खाली करके कुटकी उसमें भरदें फिर उसको सिकंजबीन में रात भर डाले रक्खें सवेरे खिलादें और ऊपर से सिकंज बीनलोबिये के पानी में घोल कर पिलावें–॥

वह औषधें जो पित्त और बलगमको कैमें निकालतीहैं यहहैं॥

शहद की शिकंजबीन ४० मिसकाल– खारी नमक २ मिसकाल–मूली का अर्क ४० मिसकाल–मिलाकर गुन गुना करके पिलावें–॥

वहऔषधें जोपित्तबलगम औरसौदाकोकै में निकालतीहैं यह हैं ॥

मुलहटी ५ मिसकाल– सोंप के बीज ५ मिसकाल – खुब्बाजी के बीज और जो-हर एक ३ मिसकाल– सब को एक कटोरे पानी में औटावें जब पानी आधा रहजाय तब उसमें आकाशबेल का शरबत १० मिसकाल डालके और अंगूर का सिरका मिलावे और गुन गुना करके पिलावें और कै करादें–॥

जब तक उल्टी कराने की अत्यंत चाहना नहो– तब तक काली कुटकी नदेना चाहिये– क्योंकि वह विष है– और उस्से खुश्की उत्पन्न

होता है- और इसी प्रकार जिसने कै नकी हो उसे बिना जरूरत के कराना न चाहिये-॥

सातवां अध्याय

उन औषधों के वर्णन में जो मवाद को पेशाब की राह से निकालती हैं।

इस प्रकार की औषधें मवाद को रगों के अन्दर से निकालने में बहुत काम आती हैं परंतु जब मवाद बहुत होतो जब तक फस्द या जुल्लाब न देलें इन औषधों को काम में न लावें- हकीमोंने कहा है कि जो मवाद जिगर के पीछे होतो उसका निकालना इन औषधों से अच्छा है पेशाब के जारी होने से पसीना- और पाखाना रुक जाता है इसी प्रकार दस्तों के आने से पेशाब कम आता है क्योंकि मवाद दूसरी ओर से निकल जाता है- इन औषधों से पतला मवाद निकलता है- इस लिये चाहिये कि जब तक तरी का रोग नहो- इन औषधों को न दें- इस लिये- इस्तिसका- (अर्थात् जलंधर)- फालिज- जोड़ों के दर्द में इन्हीं औषधों को देते हैं और मवाद के पकने से पहिले इनको न देना चाहिये-॥

पेशाब लाने वाली दवाइयां जो ठंडी हैं वह यह हैं

कासनी के बीज- खीरे ककड़ी के बीज- शिकजबीन- लौकी अर्थात घीया का अर्क- कुलफे के बीज- गोखरू- काकनज- तरबूज का पानी आदि-॥

गर्म औषधें यह हैं

करफ़स के बीज-सौंफ-जीरा-ख़िरफ़ास्फ़-सुरख़ाहु आजू का-अजवायन-गाजरके बीज-सुदाब-कबाबआदि-॥

मोतदिल अर्थात वह औषधें जिनमें सरदी गरमी बराबर है यह है।

हंसराज-खरबूजे के बीज-ठंडी और गरम औषधों को मिलाकर देने सेभी यही बात होती है-॥

मोतदिल औषध जो पेशाब बहुत लाती है यह है

जीरा-सौंफ-हरएक ७ सात मासे-कुचल कर एक प्याले पानीमें औटावें जब पीने के अनुमान रहजावे तो उसे छान ले-और खीरे ककडीके बीज-और खरबूजे के बीज-हरएक १०॥ साढ़े दस मासे-पीस कर इसमें मिलादे-और मिश्री मिलाकर पिलादे-यह दवा मवाद को बहुत निकालती है और बन्द पेशाब को जारी करती है और जो-जीरा और सौंफ को कूट छान कर पहिले फाकले और ऊपरसे खीरे, ककड़ी औरखर बूजे के बीज पीसके पीवें तोभी यही फ़ायदा होगा-॥

औषध जो बन्द हैज को जारी करे॥

तज-कलौंजीदो मिसकाल-अबहल-जुन्दबेदस्तर-हरएक ३ मासे-सबको कूट छान कर दुगुणे शहद में मिलावे-और एक को मिसकाल से २ दो मिसकाल की गोली बांधले और सातकाल एक गोली निगलकर १४ तोल ६ मासे सौंफ का अर्क पीवे जो बन्द होने का कारण रुधिर की कमी या मिजाज की गर्मी न होगी तो यह औषध लाभ करेगी नहीं तो हानि-॥

जोशांदा:जो हैज़ को जारी करे और पुरुष का बीर्य्य जो ठरह से रुका रहा हो उसे निकाल दे

इफ़ सनतीन (अर्थात् सताऊ) दुरमनी तुर्की - तुरमस - सुदाब - सोंफ़ - करफ़्ल के बीज - हर एक ७ माशे - इंजीर ५ गुलकन्द १० मिसकाल - सबको औटाकर और गुलकन्द मिलाकर बराबर ३ तीन दिन पिलावें - और फिर तीन दिन पीछे फिर पिलावें - जिस्से मवाद अच्छी तरह से निकल जावे और हैज जारी करने वाली औषधों को रजस्वला होने के दिनों में पिलावे इससे बड़ा लाभ होगा -॥

आठवां अध्याय

उन औषधों के बर्णन में जो दिल और सिर और जिगर और मेदे को पुष्ट करती हैं।

सिर की पुष्ट दाता ठंडी औषधें यह हैं - मोती - आमला - बिही - सेव और अमरूद के हरे फूल - गुलाब के फूल - गुलाब - नारंगी -॥

और गर्म यह हैं - बलौसर - फन्दक - बालछड़ - सोंठ - नागरमोथा - बालछड़ - मुश्क - अद - अम्बर - गारीक़ोया - लोंग - कुन्दुर - अवहर कौतल - मेंडी का दूध -॥

दिल की पुष्ट दाता और प्रसन्न करने वाली ठंडी दवाइयां यह हैं - नाशपाती - मीठा अनार - आमला - इमली - सेव - चन्दन - वंसलोचन - गिले मख़तूम - रेशमख़ाम - बेसद - कहरुबा - कपूर - गाउज़ुबां - धनियां - गुलाब के फूल - मोती - नीलोफर - नारंगी - हड़ - याक़ूत - चांदी के वरक़ -॥

गर्म यह हैं- सोनेके वरक़- इतरंज छिलके- उस्तखुद्दूस- अंबरेशम- सफेद वहमन- लाल वहमन- विसफायज- वालंगू- जंगली तुलसी- निरविसी- दारचीनी- नरकचूर- दरूनज- अगफ़रान- सुम्बुल- नागर मोथा- तज- शक़ाकुल अदूगारकी- अम्बर- अशहब- फिरंजन मुशक- गदसलीव- इलायची- पोदीना- लाजवर्द-

जिगर की पुष्टि दाता ठण्डी औषधें यह हैं- कासनी- ज़रिशक- अनार-॥

गर्म यह हैं- छड़ीला- अजफारुत्तीब- जायफल- हंमामा- हब्ब बिलसांन- दार चीनी- गाफ़िस- लौंग- तज- कशूस- रूमी मस्तगी-॥

जानना चाहिये कि जिगर की कम ज़ोरी बहुधा सरदी और तरी से होती है- इसलिये जिगर की पुष्टि दाता औषधें यह हैं॥

मेदे की पुष्टि कारक ठण्डी औषधें यह हैं- आमला- अनारदाना- समाक- बहेड़ा- हर्ड- और हर्डका मुरब्बा- विही वंसलोचन- गुलाबके फूल-॥

गर्म यह हैं- सरकंडे की जड़- नारंगीके छिलके- वालंगू- जाय फल- दारचीनी- ज़रम्बाद- नागर मोथा- तज- सोंठ- जन हिन्दी- लौंग- इलायची- कुन्दुर- रूमी मस्तगी- गाफ़िस- रास शीह- पोदीना- अंदगारकी-॥

जानना चाहिये कि जो वस्तु मेदे की पुष्टि कारक है- वह अंतड़ियों कोभी पुष्टि करती है- और जो औषध दस्त लाती है वह मेदे को कम ज़ोर करती है- परंतु हड़ दस्त भी लाती है- और मेदे की पुष्टि कारक भी है- और सनाय कोभी बहुत से लोग मेदे की पुष्टि कारक कहते हैं-॥

———

तीसराखण्ड ३

रोगों और उनके उपाय के वर्णन में

पहिला अध्याय

सिरके रोगोंके बर्णन में।

पहिला पाठ १

सिरके दर्दकेबिषयमें

जो दर्द रुधिरकी अधिकता से होतो–फ़स्द सरारू कारें–और सिरके पीछे सीगी लगावें–और थोड़ा ही रुधिर निकालें और नीबू का शरबत पिलावे–और रुधिर लेने के पीछे जो कम होतो–तुकूं अहामिज–या मुलय्यन मुबारिक औरजो चीज रुधिर के लिये लाभदायक है–काम में लावें॥

और जो पित्त की अधिकता से होतो पित्त को पकाने वाली और ठीक करने वाली औषधे पिलावें–इस के पीछे जुल्लाब उसीका दें–और सपेद चन्दन को हरे धनियां के साथ पीस कर सिरमें लगावें॥

औरजो बलग़मकी अधिकता से होतो बलग़म को ठीक करें और सौंफ को औटाके शहद डाल कर पिलावें और कुस्तका तेल सिर पर मलें औरमुञ्जस और जुल्लाब बलग़म वादें और–

वेद इन्जीर की जड़ और सोंठ को पानी में घिस कर लगाना अच्छा है ॥

और जो सौदाकी अधिकता से होवे सौदा को ठीक करें और उसकी मुन्जस और जुल्लाबदें बाबूने और बादाम का तेल सिर में मलें ॥

जो दर्द इन मवादों से हो उसमें पाशोया बड़ा लाभ दायक होता है-॥

ऐसी पीड़ा में सिर को दबाना नहीं चाहिये क्योंकि इससे पहिले तो चैन पड़ता है परंतु अंतमें दुखः दायक है इसकी जगह पाव को दबावें और तलुओं को मलें परंतु जो सिरको केवल हाथ से पकड़े तो डर नहीं और जुल्लाब के पीछे होले होले दबाना भी गुण दायक है-॥

जो पीड़ा अकेली गरमी या अकेली सरदी से हो उस में जुल्लाब की आवश्यकता नहीं जो गरमी से हो तो ठंडाई पिलावें और सरदी से होतो गर्म औषधें दें ॥

और जो सिर की पीड़ा किसी और रोग के कारण से होतो पहिले उस रोगका उपाय करें ॥

(आधा सीसी की पीड़ा) आधे सिर में होती है और देर में जाती है उसका उपाय वैसेही करना चाहिये जैसेकि ऊपर लिखा गया है॥

और इस औषधका सिर में लगाना गुण दायक है- बम्बूलका गोंद ३॥ मासे- अफीम १॥ मासे- केसर ७ रत्ती पीस कर गुलाब में मिलाकर कागज़ पर लगावें- और कानपटी पर चिपटादें और इस रोगका जल्दी उपाय करें नहीं तो दृढ होजाने से कठिनता से दूर होता है ॥

बहुतसे लोग सिर की पीडा में अफ़ीम आदि का लेप करते हैं इनसे तो पहिले तुरंत चैन पड़ता है—परंतु हकीमों ने इनका लगाना नहीं बतलाया है— और जो अत्यंत आवश्यकता होतो अफ़ीम के साथ केसर या बाबूना मिलादें—॥

सिर की पीडा में जो गुलाब सिर पर डालें तो इतना डालें कि सिर भीगा रहे नहीं तो हानि करेगा ॥

जो सिर की पीड़ा वाले की नकसीर फूटे तो उसे बन्द न करें क्योंकि वह उसके लिये अच्छी है परंतु जब रुधिर अधिक निकले और उस्से कम ज़ोरी बहुत पैदा हो तब बन्द करना चाहिये सिरके रोगों में नाक या कान से पीप का निकलना बहुत अच्छा है—॥

दूसरापाठ२

सरसाम के विषयमें

सिर के परदों या भेजेकी भिल्ली में सूजन होजाने को सरसाम कहते हैं—॥

जो वह रुधिर की अधिकता से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी के मुख पर हंसी सी मालूम होगी॥

और जो पित्त की विषेषता से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी को गुस्सा हट और चिड़ चिड़ा हट होगी ॥

और जो बलग़म से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी सुस्त और घबराया हुआ होगा—॥

और जो सौदा से होतो रोगी चोकन्ना मालूम होगा सौदा

बहुत कम होता है- और जो जो चिन्ह हर मवाद के लिये इस पहिले लिख आये हैं वह हर प्रकार के सर साम में पाये जाय गे-॥

सरसाम जो रुधिरसेहो उसे करानी तुस कहते हैं और पित्त वा ले को करानी तुस खालिस और वलगमी को लीसर गुंस कहते हैं-॥

जानना चाहिये कि जो सर साम रुधिर और पित्त सेहो उस में तप अधिकता से होती है और बलग़मी और सौदावी में हल की और बेहोश रहना और बकना सब सरसामों में ज़रूर हैं-॥

उपाय उसका वैसेही करें जैसे सिर की पीड़ा में वर्णन कर चुके हैं- और इस रोगमें तप का उपाय अत्यंत अवश्यक है और खूनी और पित्त के सरसाम से पिंडलियों पर सींगी और पछने ल गाना अच्छा है- और दूसरों में खाली सींगी लगाना गुणदायक है और लख लखा सुंघानाभी तुरंत लाभ दायक है सिरसे तप के उ तारने को और सब सिरके रोगों में पाशोया और पांव बांधना औ र मलना अति लाभ दायक है- खूनी सरसाम में फस्द तुरंत कर नी चाहिये जो रातका समय होतो दिन का विचार नकरें उसी समय फ़स्द करादें- पित्तके सरसाम मेंभी फस्द अच्छी है-क्यों कि पित्त रुधिर में मिले रहते हैं- बहुधा मनुष्योंने बलग़मी और सौदावी सरसाम मेंभी फ़स्द को अच्छा लिखा है परंतु इन दोनों में रुधिर कम निकालना चाहिये-॥

बकना और बहकना सरसाम में अवश्य है परंतु कभी र बिना सरसाम ऐसा होता है जैसे विवारी के तपमें बारी के समय और किसी पीड़ा या रोग की अधिकता में इसको सर साम गैरह कीकी कहते हैं जब वह रोग जाता रहता है- तो बकना और-

बहकना भी जाता रहता है इस लिये पहिले उस रोग का उपाय करना चाहिये ॥

तीसरा पाठ ३
जुमूद के विषय में

यह वह रोग है कि मनुष्य बैठा होतो-बैठा रहजाता है, और जो लेटा हुआ हो तो लेटा और सोता होतो सोता और खडा होतो खडा रहजाता है कारण इसका यह है कि सौदा सिरके पीछे गिरता है और वहीं बन्द होके रहजाता है--उपाय इसका यह है कि बेहोशी के समय कोई गरम शाफा या सौदा का निकालने वाला हुकना दें-और शब्बो के फूलोंका तेल और बादाम के तेल में सोंव या-जुन्द बे दस्तर-मिलाकर सिर पर मलें-और जब होश होजाय तो मुञ्जिश और सौदा का जुल्लाब दें-और गर्म और तर वस्तु खिलावें-और सिरके पीछे मोंम रोगन लगावें जो रुधिर की अधिकता से होतो फ़स्द भी करें-और पिंडलियों पर सींगियां लगावें-फ़स्द का नश्तर तो गहरा दें-परंतु रुधिर कम निकालें-॥

चौथा पाठ ४
सकतेके विषयमें

यह एक रोग है कि मनुष्य का हिलना झुलना बन्द होजाता है-और मुर्देकी तरह चित्त पडा रहता है-जो सांस न आतीहो तो इसका कारण यह है कि सिरके सब परदे बन्द होगये होंगे जो यह रुधिरकी अधिकता से होतो फ़स्द सरारू करें-नहींतो

वलगम के निकालने वाले छुकने और शाफे दें- और सिर के बाल काट कर सिरको सेंकें-और नफ़ूख़ और सऊत काम में लावें- और जो किसी प्रकार उलटी होसके तो बहुत अच्छा है-और हाथ पांव का मलना और जोर से बांधनाभी लाभ दायक है-और खोपरीपर पछने लगाकर उसपर पारा मलना या-वछनाग-पीसकर मलना अच्छा है और जब होश आजाय तो मुन्ज़िश और जुल्लाव वलग़म वादें-॥

इस रोग में जब दम आता जाता मालूम नहो तो चंगा होना। असंभव है- परंतु जिस्में दम आता जाता हो उसका अच्छा होनाभी अति कठिन है-इस रोग में और मृत्यु में यह अंतर है कि इस रोग वाले की आंख की पुतली में परछांही दिखाई देती है- और मुर्दे की आंख में नहीं दिखाई देती- चाहिये कि रोगी का तीन दिन गति दाह कर्म न करें- किंतु उसके अच्छे होने की आसा नहीं है- परंतु परमेश्वर की कृपा से अच्छा होजाय तो क्या आश्चर्य है- और जो उसकी देह नीली होजाय तो उसका उपाय नकरें वह मुर्दा है-॥

पांचवां पाठ५ सबात के बिषय में

स्वभाव से अधिक अचेत होके सोना रोग है और इसी को सबात कहते हैं- कारण इसका यह है कि सिर में तरी अधिक। होजाती है- चाहे अकेली तरी हो या उस्से वलग़म और रुधिर का मवाद भी मिला हो इस रोग में जैसा कारण हो वैसाही जुल्लाव दें- और सिरका सुंघावें- सुस्ती लाने वाली वस्तु और इतरी फ़ोल खिलाना बहुत लाभ दायक है- और इसका कारण

मेदाका बुखार होतो चिन्ह इसका यह है- कि पिहिले बदहज़मी हुई होगी- और भूख के समय कमती मालूम होती होगी - उपाय इसको यह है कि पेट को साफ़ करें- और इतरी फल का शीज़ी खिलावें और सूखा धनियां कूट छानकर खाने के पीछे फंकावें-॥

छठापाठ६

सहर के बिषय में

सहर उस रोगका नाम है जिस्में स्वभाव से विशेष मनुष्य जागे और नींद उसे कम आवे कारण इसका सिर में खुश्की-होना है- चाहे वह अकेली हो या उसमें सौदा और पित्त और खारी बलग़म मिला हो जो यह रोग अकेली खुश्की से होतो सिरको तर रक्खें और खाने पीने और सूंघने में तर वस्तुओं को काम में लावें और जो यह मवाद से होतो उसीका जुल्लाब दें और सिरका कभी न सुंघावें क्योंकि यह नींद को बहुत खोता है- निद्रा लाने वाली औषधें यह हैं-हरा सीया सिर हाने रखना औरखरासानी सहर में सिर परसी लपेटना और नाजवू गुलाव में भिगो कर सूंघना और लख लखा हरदम पासरखना अफ़ीम और बनफ़शे के तेलको मिलाकर चंदया पर मलना-॥

जब जागने का कारण तपहोतो पहिले उस्का उपाय करें और सिरपर तेल मलें और पाओंया करके हाथ पांव मलें-॥

सातवांपाठ७

(सबातसुहरी और सहरसबातीके विषयमें

यह वह रोग है जो सहर और सबात के कारणों के इकट्ठे हो जाने से होता है और बहुत से हकीम यह कहते हैं कि यह पित्त और बलगम से दमाग में सूजन होजाने से होजाता है चिन्ह इस रोगका यह है– कि कभी अचेत और घोर निद्रा बहुत काल तक रहती है और कभी रोगी बहुत देर तक जागा करता है और जो मनुष्य इसे भेजे की सूजन बताते हैं उनकी दलील यह है कि इस रोग से बकना और आंखें पथरा जाना अवश्य है जो निद्रा अधिक होतो इसे सबात सहरी कहेंगे और जो जागना विशेष होतो सहर सुबाती कहेंगे और जागना और सोना बराबर बहुत कम देखा गया है जो ऐसा होतो कहने वाला जिस शब्द को चाहे पहिले, वाहे सच्च तो यह है कि इस रोग में भेजे की सूजन जरूर नहीं परन्तु सूजन से यह रोग हो सक्ता है– अपर के दो पाठों में जो उपाय लिखे गये हैं उन दोनों को मिला कर करैं और जब बलगम की अधिकता होतो काम गर्म वस्तु सुंघावें और जिस समय पित्तकी अधिकता से होतो ठंडी वस्तु सुंघावें ऐसे ही और उपाय जानो–॥

और जब यह रोग भेजे की सूजन से होतो वह उपाय करैं जो बलगम और पित्तके सरसाम में ऊपर लिखा गया है–॥

आठवांपाठ

काबूसकेवर्णनमें

यह वह रोग है कि मनुष्य ...

कि कोई भारी चीज उसपर गिर पड़ी ...

वह घबरा कर बर्राने लगता है– ...

फ़स्द सरारू करैं– और पिंडलियों ...

कमदें- और जो वलग़म या सौदा की अधिकता से होती उन्हीं का जुल्लाब दें- और इस रोग का उपाय तुरंत करें नहीं तो मृगी हो जायगी-॥

नवां पाठ २
मृगी के विषय में

यह वह रोग है जिस्में मनुष्य अचेत होकर गिर पड़ता है और मुख और हाथ पांव टेढे और खिचे रहजाते हैं- और वह तड़फाय रता है- इस रोग में सिरका चोफल होना और जीभ की रगों का हरा होना अवश्य है- कभी यह रोग वारी से होता है- जो इस की वारी बहुत होतो बुरा है- परंतु बालकों को कभी २ ऐसा देखा गयाहै- कि एक दिन में आठ २ वार आती है- और फिर ऐसी चली जाती है कि कभी नहीं होती- उपाय इसका यह है- कि वारी के समय वह चिकित्सा करें जो मूर्छा में होती है- और कोई वस्तु या कपड़ा लपेट कर उसके मुख में रखदें- कि वह अपनी जीभ चबा न डालें और हाथ पांव उसके जकड़ दें कि चोट न लगे और जब होश में आवे तो जैसा मवाद हो वैसा ही जुल्लाब दें- और तर मेवे और दूध दही न खिलावें- और- <u>ऊदसलीव</u>- को गले में लटकावें- और-<u>नास</u>- जो दूसरे खण्ड में लिखा गया है सुंघावें-॥

बच्चों को जो पसली का रोग होता है- वह भी इसी प्रकार से है- उपाय उसका मवाद के अनुसार करना चाहिये- और विना कारण के जाने अधिक गर्म और अधिक ठण्डी औषध न दें- और दूध पिलाने वाली की हुशियारी रक्खे- कि हानिकारक वस्तु न खावे अस्से भोग न करें- कि दूध बिगड़ जाता है और बच्चे को कब्ज़ होतो शाफ़ा करें ॥

दसवांपाठ१०

मालीखोलियाकेवर्णनमें

यह वह रोग है कि मनुष्य को अच्छी बातें नहीं सूझती और वह बातें सूझ पड़ती हैं जो केवल बुद्धि के विपरीत हों॥

कुबुद्धि और अहंकार और घमंड और व्यभिचार भी इसी प्रकार के हैं-॥

जैसा मवाद हो उसके अनुसार जुल्लाब दें- और दिलको खुशकरने वाली वस्तु और नोशदारू खिलायें- औरभोजन में हल्की वस्तु खिलाना और थोड़े २ दिन पीछे कई वार जुल्लाब देना- अधिक लाभ दायक है- और जानना चाहिये कि ऐसे रोगों में उपाय का लाभ बहुतकाल के पीछे प्रत्यक्ष होता है घबरावें नहीं॥

ग्यारहवांपाठ११

चरीयो

जुनून के विषय में

यहरोग कई प्रकार का है- जो इसमें क्रोध और क्रोध पाया जाय तो मानिया कहलावेगा- और जोहंसी और खेल और सतान होती उदाउल कल्ब कहेंगे॥

और जो मनुष्यों से न मिले कुले तो कुतरब कहते हैं यह रोग माली खोलिया से बढ़ कर है- उपाय इस का वैसाही करेजो माली खोलिया का है- और स्त्रियों का दूध सिर पर दुहें- और नाक में डालें- और बनफशे और बादाम का तेल सिर पर मलें- और पेट पर गर्म पानी धारें- और मवाद पकजाने के पीछे- माजून नुजाह- खिलावें-॥

बारहवाँपाठ१२

सदरऔरदव्वारके विषयमें

जब मनुष्य खडाहोया चले और आंखो के तले अंधेरा आजाय तो उसको सदर कहते है ॥

और जब यही वढ जाय और सिर घूमने लगे तो वह दव्वार है जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लाबदें– जो मवाद सिर में होगा तो सिरमेंभी कोई रोग मालूम होगा– और जो मवाद पेट में होगा तो जी मचलायगा– और पेट में कोई रोग होगा– जैसा उचितहो वैसाही उपाय करें– और जो कमजोरी के कारण सिर घूमे तोभो जन में हल्की और दिल खुश्क करने वाली वस्तु खिलावें–और मोतीयों को पीस कर– नींबू या चन्दन– या अनार के शरबत में मिलाके चटावें और जो सिर में सरदी पहुंच ने से सिर घूमें तो सेकें– और गर्म लेप लगावें और गर्म मसालह पड़ा हुआ भोजन खिलावें ॥

तेरहवाँपाठ१३

निसयान अर्थात भूल जानेकेरोगके वर्णनमें

बहुधा इस रोगमें सिर में वलगम या सौदा अधिक होजाता है– या मिजाज में अकेली गरमी बहुत हो जाती है– वलगम और सौदा के मवाद में मुनजिश देकर– हब्ब कोकाया– आदि खिलाकर सिर को साफ करें– और मजूनफिलासफा और वज और सोंठ का मुरव्वा– कुन्दर– और शक्कर– मिलाकर खिलावें और ठण्डे पानी से बचतेरहें– और सौदाही में– तेल सिरपर मलें और जो यह रोग अकेली गरमीसे होतोठण्डी औरतरवस्तुकाप्रयोगकरें

चौदहवांपाठ१४

फालिज़के विषयमें

यह वहरोग है कि आधा बदन लम्बाई में हिलता जुलता नहीं है- बहुधा इसका कारण बलगम की अधिकता है- और कभी रुधिर सेभी हो जाता है- बलगमी में चार दिन तक पुष्ट औषधें नदेवें- और खाना पीना बिलकुल बन्द करदें- और जो भूखन रुक सके तो- ज़ीरा- औरदारचीनी- औटाके दें- और पानी की जगह-माउलै अस्ल-पिलावें- फिर चौथे दिन बलगम की मुन्जिश पिलावें- और ९ दिनया चौदह दिन के पीछे जबकि म वाद पकजाय तो जुल्लाब दें- और जुल्लाब के पीछे कूट का तेल मलें और- जवारिशबिलादुर- और तिर्याक कबीर-और मसरोदी तूस- खिलाना बहुत लाभ दायक है- और जुल्लाबके पीछे-मुश्क- और कुन्दश- फ़िलफ़िल- नौशादर- पीसकर सुघावें- और गर्म पानी बदन पर नडालें- क्योंकि वहइसरोग के लिये ठण्डे पानी से अधिक हानि कारक है- जो फालिज के साथ रुधिर की अधिकता होतो- फ़स्द भी खोल सकते हैं- और जो यह रोगग रमी से होतो गर्म औषधें न देना चाहियें पहिले गर्मी को दूर करलें- फिर इसका उपाय करें- और जो फालिज़ रुधिरकी सूजन से होतो पहिले फ़स्द खोलकर उसका उपाय करें॥

और जो बदन में किसी एक जगह का हिलना डुलना बन्द होगया होतो उसको इस्तिरखा कहते हैं॥

पन्द्रहवांपाठ१५

खदरके बिषय में॥

मनुष्य की देह में कोई जगह सुन पड़जाय उसे खदर कहते हैं- जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होतो फस्द खोलें- औरभो जन कमदें- और जो बलगम की अधिकता से होतो बलगम का जुल्लाब दें- और जो खुश्की से होतो उसका चिन्ह और उपाय आगे लिखा जायगा और जो दबजाने और ज़ोरसे बांधने के कारण सेहो तो उस कारण को दूर करें ॥

सोलहवांपाठ १६

लकवेकेबिषयमें

इसरोग में मुख टेढा होजाता है- और कारण इसका खिंचजाना या ढीला होजाना मुंहकी एक ओर का है- ढीला होजाना बलगमसे होता है- चिन्ह उसका सुस्त होना- और जीभ के स्वाद में फर्क पड़ जाना- और नीचे की पलक और तालूका लटक आनाहै- और खिंचजाने का चिन्ह थूक का कम होना और माथे का खिंच जानाहै ढीले होजाने में फालिज का उपाय करें- और खिंच जाने का उपाय आगे लिखा जायगा- जब तक चार दिन या सात दिन न ब्यतीतहो जायं- कुछ उपाय न करें- और भोजन बन्द करदें- और जो होसकै तो पानी भी नदें- और अंधेरी जगह में बिठावें और चीनी आईना आगे रखदें- कि रोगी हरदम उस्में अपनामुख देखा करे- और जायफल मुख में रख वामें और किब्र की जड़ की छालजो- सीउल अर्स्ल में औटी हुई हो उस्से कुल्ली करवावें- और जो रुधिरकी अधिकता से होतो फस्द भी खोल सक्ते हैं- इसरोग के उपायमें देर करनी न चाहिये- जो तीन महीने ब्यतीत होजायंगे तो मुंहसीधा न होगा ॥

चीनी आईना चांदी तांबे और पीतल को मिलाकर बनाते

हैं- इस्में मुख देखने से ज़ोर पड़ता है- इस कारण मुंह सीधा होजाता है ॥

सत्तरहवां पाठ १७

तशन्नुज के विषय में।

तशन्नुज किसी जगह के खिंच जाने को कहते हैं- जो कारण उसका बलग़म की अधिकता होतो उसका नाम- तशन्नुज रतब और इमतिलाई कहते हैं- चिन्ह उसका यह है कि अचानक उत्पन्न होजाय- और चिन्ह बलग़म के दृष्टि पड़ें- और जो खुश्की के कारण पैदा हो उसको- तशन्नुज याबिसे कहते हैं- चिन्ह उसका यह है कि धीरे धीरे पैदा होगा और उसके पहिले कै या दस्त या रुधिर बहुत निकला होगा या तप आई होगी या रोगी बहुत जागा होगा या उसको क्लेश बहुत हुआ होगा- और उसका बदन दुबला होगा- तशन्नुज इमतिलाई का उपाय फालिज के अनुसार करना चाहिये- और तशन्नुज याबिस में बदन को बाहर से और भीतरसे तरी पहुंचाना चाहिये- और मोम को बनफशे या बादाम के तेलमें मिलाकर मलें- औरस्त्री का दूध नाक में डालें ॥

बिच्छू के डंक मारने से और पट्ठेपर घाव लगनेसे या कीड़े पड़ने से जो तशन्नुज हो चाहिये- कि उसकारण को दूर करें और मृगी के समय जो तशन्नुजहोता है वह मृगी के दूर होने से जाता है- और जो नजाय तो रोग़न गुल या कोई और तेल गुनगुना करके मलें- और कभी २ आदमी का मुख जम्हाई लेने में खुला रह जाता है- उस्में किसी तेल कामलना लाभ दायक है- और जो इस्से अच्छा न होतो- तशन्नुज- इमति लाई का उपाय करें ॥

२ रहता

अठारहवाँ पाठ १८

तमद्दुद के विषय में

अङ्ग का कोई भाग लम्बाई में तनकर रहजाता है – और समेट ने से नहीं सिमटता कारण इसका यह है कि कोई पट्ठा दोनों ओर से खिंच जाता है – उपाय इसका वही करें जो तशन्नुज में लिखा गया ॥

उन्नीसवाँ पाठ १९

कज़ाज़ के वर्णन में

तशन्नुज जो गरदन में हो और गरदन इधर उधर न फिरसके उसे कज़ाज़ कहते हैं – जैसा कारण हो वैसा उपाय तशन्नुज के अनुसार करें – और यह रोग सब प्रकार के तशन्नुजों से बुरा है इसका उपाय बहुत जल्दी करना चाहिये ॥

बीसवाँ पाठ २०

राशे के वर्णन में

इस रोग में मनुष्य का शरीर कांपने लगता है – जो यह बलग़म की अधिकता से हो तो निशान और बलग़म के चिन्ह पाये जायंगे – उपाय इसका यह है कि बलग़म को निकालें – और जो विषय की अधिकतासे हो तो – उसको छोड़दें – और ताज़ह दूध पीना और देह पर तेल मलना अति लाभदायक है ॥

इक्कीसवाँ पाठ २१

इस्तेलाज के विषय में

शरीर में किसी जगह के फड़कने को इख्तलाज कहते हैं॥

नितप्रति मुख का फड़कना लकवा आने का चिन्ह है- और पेट का फड़कना मृगी होजाने का- और बगल का फड़कना छाती और बगल की सूजन का चिन्ह है- और सारे शरीर का जगह २ से फड़कना सकता होजाने का चिन्ह है- पेट की रगों का फड़कना माली खोलिया का चिन्ह है- उपाय इसका यह है- कि जगह को गर्म करके उस जगह सेकें- और जो इस्से अच्छा न होती व लग़म को निकाले- और जो हेज़ के बन्द होजाने से यह रोग हो तो- फ़स्द खुलवाने से जल्दी जाता रहता है॥

बाईसवां पाठ २२

लवी के विषय में

इस रोग में देह भारी होजाती है- और मुंह और आंखें लाल होती हैं- और जम्हाई और अंगड़ाई बहुत आती हैं- और ऐसा मालूम होता है कि तप आने वाली है- और थोड़े काल के पीछे यह बात जाती रहती है- या बारबार आती है- जो बार बार आये तो रुधिर और पित्त को कम करें- और भोजन थोड़ासा दें- और गर्म मिज़ाज वाले को ठण्डा पानी पीना और ठण्डे पानी से स्नान करना अति लाभदायक है- और धनियां को कूट छान कर शक्कर के साथ फांकना- या उसको भिगोकर और मिठाई में मिलाकर पीना लाभदाता है॥

तेईसवां पाठ २३

हिसुके वर्णन में

यह वह रोग है कि भेजे में खुजली विना दर्द के होती है- उप

य उसका यह है कि भेजे को ठण्डा और तरी पहुंचा वें- क्योंकि यह रोग पित्त के बुखार के कारण से होता है- और जो इस्से भी अच्छा न होतो- पित्तों का जुल्लाब दें- और जो रुधिर की अधिकाता दे खें तो फ़स्द भी खोल दें ॥

चौबीसवां पाठ २४

असाबा के वर्णन में

यह वह दर्द है जो भों अर्थात् भृकुटी में होता है- जो अकेली गरमी से होतो उसका चिन्ह यह है कि सूरज के निकलने से उत्पन्न हो- और जों जों दो पहर तक दिन चढ़ता जाय गा त्यों त्यों दर्द भी चढ़ेगा और दोपहर पीछे घटता जायगा- यहां तक कि शत को बिलकुल न रहेगा- और फिर सवेरे योंही होगा- उपाय इसका यह है कि- कापूर को रोग़न गुल में घोलकर नाक में टपकावें और बाहर से देह को साफ़ रक्खें- और जो देह की गरमी ऊपर चढ़ने के कारण यह रोग होतो चिन्ह उसका यह है कि रोगी औंधा पड़ा रहेगा- और माथे की खाल खिंची हुई होगी- उपाय इसका यह है कि नाक में कोई वस्तु काड़ी और खुरखुरी डाल कर- या नख औ र अंगुल चुभोकर नकसीर फाड़ें और जो इस्से नकसीर न फूटे तो फ़स्द सयरू करें और कापूर सूंघावें और हाथ पांव मलें ॥

पच्चीसवां पाठ २५

जुकाम और नज़ले के विषय में

जानना चाहिये कि भेजे का मल जो नासिका के द्वारा बहे उसे ज़ुकाम कहते हैं- और जो गले पर गिरे तो नज़ला होगा- गर मी का चिन्ह यह है कि यह मल पतला और जलता निकले गा

और सरदी का चिन्ह इसका गाढ़ा होना या बे जलन होना उपा य इसका यह है - कि मिज़ाज को दुरुस्त करें और जैसा मवाद हो वैसे ही उसे निकाले - चाहिये कि जुकाम में मवाद को साफ़ करने से पहिले वह वस्तु न खांय पीवें जो मवाद को निकलने से रोके - और कब्ज़ को दूर करें - और सिर को ढांके रहें नज़ला चाहें गरम हो या ठंडा बहुत सोने और चित लेटने और बहुत चलने फिरने और सिर झुकाने और खट्टी वस्तु और दूध दही खाने से बचते रहें - और जो जुकाम के साथ खांसी भी होतो उ सका उपाय भी अति अवश्यक है ॥

माशरा और बादशनाम सूजन हैं - जो मुख पर होजाती हैं और जुल्लाब से जाती रहती हैं - इनका वर्णन इस पुस्तक के अंत में आवेगा ॥

दूसरा अध्याय

आंख के रोगों के बर्णन में

नेत्रों में सात परदे और तीन रतूबतें और एक असवा है - जो रुग के सदृश बीच में से खाली है - और इसी असवे में से दि खाई देता है - और आंख की पुतली भी इसे कहते हैं - बीचों बीच में आकर - रतूबत जली दीया तक पहुंची है - इस रतूबत जली दीया में सब चीजें दिखाई देती हैं - और असवे से निक लकर दृष्टिकी इन्द्री तक पहुंचती हैं - वह इन को पहिचा न लेती है - और इसी रतूबत और असवे के बचाव के लिये और सब परदे और रतूबतें आस पास हैं ॥

अब जानलो कि- आंख का परदा जो बाहर की ओर हवा से मिलाहुआ है- और छुवा जाता है वह मुलतहिमा और कर्नियां है- अर्थात सफेदी आंखकी जो दिखलाई देती है वह मुलत्तहिमा है- और गोल और काली वस्तु कारनियां है- यह दोनों परदे आपस में मिले हैं- इनके पीछे परदा इनबीयाहै यह परदा रंगदार है- और कारनिया में जो रंग है वह इसीका है इस परदे के बीचमें एक छिद्र है-रोशनी और चिंबों के निकलने के लिये और आंख में पानी उतरने की जगह भी यही है इस परदे के पीछे रतूबत बैज़िया है- इसका रंग अंडे की सुपेदी के स मान है-इसके पीछेपरदा अनकबूतियाहै यहपरदामकड़ी केजाले कासाहै-इसके पीछे रतूबतजलीदीयाहै-औरइसके पीछेरतूबतज़जाजियाहैजो पिघलीहुई कांचकीसीहै औरइसके पीछे परदा शबकीयाहै जोजालके अनुसारहै-औरइनदोनों रतूबतोंकोघेरेहुये है-औरइसके पीछेपरदा मशीमियाहै -और उसके पीछे परदा सलबियाहै-जोआंखके देलेसे मिलाहुआहै-हर२ परदों और रतूबतों में अलग २ रोगहोतेहैं-उनकावर्णन आगेकरेंगे ॥

पहिला पाठ१

रमद अर्थात आंख आनेके विषयमें

मुलत हिमा पर सूजन आजाने का नाम रमद है- जो यह रुधिर में होतो चिन्ह उसका यह है-कि आंख लाल और भारी होजायगी और दर्द होगा और चीपड़ उससे बहुत निकलेगी- और जो पित्त से होतो- जलन और पीड़ा बहुत होगी परंतु चीपड़ बहुत न होगा- और जो बलग़म से होतो रंग इसका सफेद होगा और आंखें फूल जायंगी और चीपड़ आंसू बहुत बहेंगे- और

जो सौदा से होतो सूजन बहुत होगी और चीपड़ कुछभी न निकलेगी और पलके न चिपकेंगी और आंख कोमल होंगी और सिरमें दर्द रहेगा- और जो रीह से होतो बोझ न होगा न चीपड़ निकलेगा- उपाय इसका यह है कि मवाद के अनुसार उसे साफ़ करें और फ़स्द और जुल्लाव से पहिले कोई औषध आंखमें डालें परन्तु जब यह रोग हलका होतो दो तीन दिन पीछे बिना फ़स्द और जुल्लाव के दवा डालनी चाहिये- गर्मरमद में रसोत को लड़की की मां के दूधमें घोलकर- आंख के अन्दर और ऊपर लगाना अति लाभदायक है- और जब पीड़ा बहुत २ होतो थोड़ी सी अफ़ीम भी उस में मिलालें और चाकसू पीसकर आंखमें डालना सब प्रकार की रमद में अच्छा है- परन्तु इसको थोड़े दिन पीछे डालें रोगके होते ही न डालना चाहिये और गर्म वस्तु न खावें ॥

चाकसू के बनानेकीरीत यहहै- कि उसे छील कर पानी में पकावें और जब गलजाय तो सुखावें- उसके दो हिस्से २ लेकर एक एक हिस्सा मिसरी और चीनी मामीरां का मिलाके पीसलें और आंखमें डालें- लड़कों की आंखमें कभी २ यह रोग बहुत होजाता है- उसको बरदीनज- कहते हैं- इसका उपाय यह है- कि सिरके पीछे पछने लगावें और चुटकी चाकसू २ की आंख में डालें ॥

दूसरा पाठ २

तुरफ़ा के वर्णन में

इस्में मुलतहिमा पर रुधिर की फुटकी पड़ जाती है- उपाय

इसका यह है कि- कबूतर या बतखका कच्चापर उखेड कर उ
सके रुधिर की बूंद अकेली या मिले अरमनी के साथ आंखमें
टपकायें- और कुन्दर को जलाकर उसकी धूनी आंखको दें-
और जो उसका कारण अति पुष्ट होतो पहिले फस्द करें और पछ
ने लगायें और जुल्लाब दें॥

तीसरा पाठ ३

ज़ुफ़रा अर्थात नाखूनेके विषयमें

इसका उपाय यह है- कि लाहोरी नमक की सलाई बनाकर
कई बार दिन में आंखमें लगायें- और जो मवाद बहुत होतो फ़
स्द मशरू करें- और हब्ब अयारिज खिलावें- और बलग़म उत्प
न्न करने वाली वस्तुसे बचें- और जो नाखूना बहुत उभरा हो
तो- किसी अच्छे दस्तकार को बुलाके उसे उठ वालें॥

चौथा पाठ ४

आंखमें जाला पड़ जाने के विषयमें

इसका कारण यह है कि- क़रनिया पर कोई वस्तु उत्पन्न
हुई होगी- उपाय इसका यह है- कि समंद फेन को पानी में
घिसकर आंखमें लगायें- थोड़े दिनों में अच्छा होजायगा-
और जो मवाद पुष्ट होतो भेजे को मवाद से साफ़ करें- और उस
जाले को नहार मुंह जीभ से चाटना अति लाभदायक है॥

पांचवां पाठ ५

सबल के वर्णन में

इस रोग में आंखकी रगें लाल और मोटी होजाती हैं- और

खुजली होती है जो इससे आंसूभी निकलें– और पलकों में पानी भरा रहेतो उसको सवल रतव कहेंगे और जो ऐसा न होतो सवल याबिस कहेंगे– उपाय इसका यह है कि–फ़स्द सराऊ करेंड़ सके पीछे माथे की रग और कोये की रग की फ़स्द खोलें–और जो यह रोग कम होतो–शीयाफ़ दीनार– आंख में लगावें और जो भारी होतो– शियाफ़ अहमर– और वासली कून लगावें और सवल याबिस– में सुरमा और औषधों के लगाने से पहिले और पीछे गर्म पानी से गर्म जगह में बैठकर स्नान करना अवश्यक है– जब रमद और सवल दोनों मिले हुई होतो दोनों के चिन्ह पाये जायंगे– ऐसे समय में न गर्म औषधें देना चाहिये न ठंडी– परंतु मवाद को निकालें और अंडे की सफेदी आंखपर लगावें–यह दोनों रोगों को लाभ दायक हैं– जो इस उपाय से न जावे तो दस्त कारी से उठालें॥

अखीलन की ... पसन... आधा...
अधाई सुजी ...

छठापाठ ६

मुलत हिमा के फूल जाने के विषयमें

जो फूल जाना मुलत हिमा का रोह के कारण से होतो चिन्ह उसका यह है कि– अचानक उत्पन्न होगा– और पहिले आंख के कोनों में– मक्खी या मच्छर के काटने की सी जलन होगी– और जो बलग़म से होतो होले होले उत्पन्न होगा और पीड़ा बहुत न होगी– और अंगुली के दबाने से चिन्ह रह जायगा– और जो मवाद बहुत और पतला होगा तो वह चिन्ह देरतक न रहेगा– उपाय इसका यहहै कि जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लाब दें और ठंडी रसद की औषधें काम में लावें– और जो

यह रोग रीह से होती - तीन दिन तक कुछ उपाय न करें आप से आप जाता रहेगा ॥

सातवां पाठ ७

मुलतहिमा की खुजली के वर्णनमें

इस्में बहुधा पलक भी घायल या लाल होजाते हैं - उपाय इसका यह है - कि निमकीन और चरपैरा भोजन न खावें - और फ़स्द और जुल्लाव लें - और जस्त को नरकुल पर रगड़ कर आंख में लगावें - और गर्म पानी से मुख धोया करें ॥

आठवां पाठ ८

सोसेतुल मुलतहिमा के वर्णनमें

इस रोगमें आंखकी सफ़ेदी पर बड़े कोये की ओर नरम मांस उत्पन्न होजाता है - उपाय इसका यह है कि - कई बार मवाद को साफ़ करें - और फिर दस्तकारी से काट डालें ॥

नवां पाठ ९

दोकातुल मुलतहिमा के विषयमें

यह वह रोग है कि आंख में बहुधा कोये की ओर कड़े और लाल और काले दाने पड जाते हैं - उपाय इस का यह है - कि जो मवाद अधिक हो तो उसे साफ़ करें - नहीं तो गुलाब में कपड़ा भिगो कर आंख पर रखना अच्छा है - और इस से अधिक उपाय की आवश्यकता नहीं ॥



दसवांपाठ१०

दमआ अर्थात् आंसूबहनेके विषयमें

जो गरमी से होतो सुरमा लगावें- और सरदी से होतो वासली कून- और जो आंख की कमज़ोरी से होतो जली हुई पीली हड़ और नमक- और माजू- बराबर बराबर कूट छान कर आंखमें सलाई से लगावें- और जो थोडी देर आंसू बहकर थम रहा करें तो उसको हिन्दी में मतना कहते हैं- उपाय उस्का यह है- कि पहिले मवाद को निकालें- और इसके पीछे आंसू बहाने वा ली दवा लगावें- जैसे वासली कून और शियाफ़ अहमर॥

ग्यारहवांपाठ११

हिरक़तुल ऐन अर्थात् आंख में जलन होने केविषयमें

जो यह गर्म मवाद के कारण से होतो उस मवाद को निकालें और जो कोई मवाद नहो तो- तूतियाको- कच्चे और खट्टे अंगूर के रसमें भिगो के सलाई से आंख में लगावें- और हरी कासनी के पत्ते कूट कर पानी उसका तेल में मिलाकर लगायें- और जो कापूर भी उसके साथ मिलालें तो अति लाभ दायक होगा॥

बारहवांपाठ१२

कुज़ा अर्थात् आंखमें किसी वस्तुके पड़जाने के विषयमें

जब आंख में कुछ पड़जाय तो आंखको कभी नमले- ऐसा नहोवे कि कोई कड़ी वस्तु होतो- मलने से आंख में चुभजाय-

आंख को गर्म पानी से धोवें और स्त्री का दूध आंख में डालें- और जो वह दिखाई देती होतो उसे रुई या नर्म कपडे से उठालें- और वह भीतर चिपटी हुई हो और छुट नसके तो-निशास्ते को पीस कर आंख में भरदें - और थोडी देर ठैरे रहें- इससे वह वस्तु निशास्ते में लिपट जायगी-फिर उसे अलग रुई से उठालें- और जो कोई भुनगा या मच्छर आदि होतो मुलतानी मिट्टी या गेरू आंखमें पीसकर डालें- और थोडी देर आंख में बांधदें- वह उस्से लिपट आवेगा- फिर उसको रुईसे उठालें और जो शीशे का चूरा आंखमें आपडे उस समय वह सीचना जो ऐसे कामों के लिये बनाया गया है काम में लावें- या जिस प्रकार से बनसके निकाल डालें- और निकालने के पीछे स्त्रीका दूध और अंडे की सपेदी मिलाकर आंखमें डालें- इस से बन्द करलेने आंख नहीं चिमटेगी॥

तेरहवांपाठ १३

आंखपर चोट लगने के विषयमें

जो चोट लगनेसे आंखमें लाली या सूजन होतो उपाय इसका यहहै कि- फस्द खोलें- और मुलय्यन नुकूअ फवाके:-का पिलायें और गुद्दीपर पछने लगायें- इसके पीछे अंडेकी सपेदी रोगन गुलमें मिलाके आंखपर लगायें और जो पीडा जाने के पीछे चोट का चिन्ह अर्थात् मिलाहट रह जायतो- धनियां-पोदीना- और काला पत्थर जो मिरचों की थैली में निकलता है- और हरताल पीसकर लेप करें- इससे नीलाहट जाती रहैगी- और जो तलवार या पत्थर का घाव मुलतहिमा पर लगाहो- उसका उपाय यहहै कि फ़स्द और जुल्लाब कईवार दें- और अंडे की ज़रदी का आंखपर लेपकरें- इसके पीछे वही उपाय करें जो आंख के घाव

का उपाय आगे लिखा जायगा॥

चौदहवां पाठ १४

आंख के घाव के विषयमें

आंख के सब परदोंमें घाव होसक्ता है-परंतु जो घाव केवल मुलतह्मा पर लगाहो- और२ परदे बचेहों- उसे सालिम कहते हैं- उसमें पीडा कम होती है-मुलतह्मा-कारनियां- और अनबीया- का घाव आंख से देख सक्ते हैं-परंतु परदों के घावमें केवल अधिक पीडा मालूम होती है-और जबतक पीप नहीं पडती कोई चिन्ह घावका नहीं मालूम होती-उपाय इसका यह है-कि फस्द सरोरू तुरंत करें- और ऐसी ओषधे देते रहें जिनसे कब्ज न होने पावे- और जब पीडा होतो स्त्री का दूध टपकावें और जो वह घाव तुरंत न पके तो धोई हुई मेथी का लुआब टपकावें २ अर्थात् मेथी के बीजों को दो पहर तक पानी में भिगो रक्खें-फिर निकाल कर बीस गुने पानी में पकावें जब वह पानी आधा रह जाय उसको हिलाकर निकाल लें-यही धोई होई मेथी का २ लुआब है-जब घाव पक कर बहने लगे दूध और शहद मिला कर आंख से डालें इस से घाव साफ होजायगा-इस के पीछे शियाफ कुन्दर काम में लावे- और जो असर घाव भर आने पर भी रहजाय तो जो उपाय सीतला के दानों के घाव दूर करने का है-वही काम में लावें- और इस के लिये पुरानी हड़डी २ गुलाब में घिसकर लगाना लाभ दायक है॥



पंद्रहवांपाठ१५

कमना के वर्णन में

यह कई रोगों का नाम है - एक जब पलक रीह से भारी होजाय और फूल जाय और जागने के पीछे ऐसा मालूम हो कि आंखों में धूल पड़गई है ॥

दूसरे जब कारनिया के पीछे पीप इकट्ठा होजाय॥

तीसरे मुलतहिमा पर लाली होवो इस से कम दिखाई दे और सब वस्तु धुंधली मालूम हों॥

वह जो केवल पलक का रोग है - उपाय उसका पलक के रोगों में लिखा जावेगा - और कारनिया के रोग का उपाय यह है कि मेथी और अलसी का लुआब आंख में डालें कर मवाद को पकावें - और कई बार गर्म पानी से स्नान करें - इस के पीछे साफ करने के लिये रूपी मुरदी पीसकर आंख में लगावें - और जो इनसे लाभ न होतो - दस्तकारी करें और नहीं तो इसे छेडे नहीं ऐसा न होकि कोई और रोग उठखड़ा हो और जो मुलतहिमा का रोग है इसका वही उपाय करें जो सौदावी रमद का है - और मेथी - चाबूना - और अकलील उल मुलक - को औटाके आंख को धोवें

सोलहवांपाठ१६

रतोंदी के विषय में

उपाय इसका यह है कि शहद को सौंफ के पानी में घोलकर आंख में लगायें और पीपल को चकरी या बारह सिंगे की कलेजी में चुभोकर आग पर रखदे इस से जो पानी निकले उसको आंख में लगायें - इससे तुरंतही अच्छा होजायगा - और नोमवद

अधिकहोतो जुल्लावदें और फस्द खोलें ॥

सतरहवां पाठ १७

दिनोंदी के विषयमें

उपाय इसका यहहै- कि लड़की की माका दूध सिरपरमैके और नाकमें टपकायें- और ठंडे पानी में गोता लगा कर उसमें आंखें खोलें और उन्नाव का शरबत पीयें ॥

अठारहवां पाठ १८

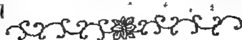
सुदाहिद्काह: और शकीक:चश्मके विषयमें

यह वहरोग है कि आंखके अन्दर धसक होती है और तक लैसे छिदतेहैं -और ऐसा मालूम होताहै- कि आंखको कोई दवोवता है- और कभी पीड़ाजाती रहती है- और फिर होजातीहै जैसे आधासीसी और रमद का कोई चिन्ह नहीं होता जो उपाय आधासीसी का है वही इसका करें- और कनपटी की रगको [illegible]लें- ऐसा नहो कि कोई रोग उत्पन्न होजाय ॥

उन्नीसवां पाठ १९

हजूज उलऔनके विषयमें

इसमें विना सूजनके आंखबाहर निकल आती है- उपाय इसका यहहै- कि जैसा मवाद हो वैसेही उसे साफ़ करें - और हड घिस कर आंखमें लगायें- और भोजन कम खांय ॥



बीसवां पाठ २०

कारनिया के उभर आने के वर्णन में

उपाय इसका यह है - कि मवाद गाढा होतो उसे साफ़ करें - और ज़ुरूर अस्फ़र को सलाई से आंख में लगायें - और गर्म पानी से मुंह धोया करें - और उसकी भाफ़ आंख को दें - कारनिया के उभर आने का यह चिन्ह है - कि कडी होती है - और सलाई से नहीं दबती - और आंसू नहीं होते और उसमें पीडा नहीं होती - और फुन्सियां जो कारनियां में होजाती हैं - वह नर्म होती हैं - और दबायें से दब जाती हैं और उनमें पीड़ा भी होती है ॥

इक्कीसवां पाठ २१

कारनियां पर फुंसी होजाने के विषय में

जानना चाहिये कि कारनिया के चार परदे हैं - कभी सब में फुंसी होती है - और कभी एक में - परंतु फुन्सी पड़ने की जगह किसी में सफेद दिखाई देती है और किसी में नहीं - उपाय इसका यह है कि फ़स्द और जुल्लाब दें - और पहिले ऐसी ठंडी औषधें लगायें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और इसके पीछे - शियाफ़ अहमर लीन लगायें फिर शियाफ़ अबियज़ कुन्दुरी ॥

बाईसवां पाठ २२

मोरसिरच के वर्णन में

यह वह रोग है कि कारनिया का परदा फट जाय और उस के

तले से अनवीया ऊपर को उभर आये - उपाय इसका उससे पहिले करें - जबकि किनारे करनिया के मोटे न पड़जांय और ऐसा उपाय करें जो अधिक उभरने को रोकें और अनवीया को अन्दर दबा दें - वह इस प्रकार है कि धोया हुआ शादना और चांदी की टुकड़ी सीपा जली हुई सीपी पीस के आंख में डालें और धोये हुये शादने का सुरमा आंख में भरें और ऊपर से गद्दी रखकर बांधदें या सीसे का टुकड़ा आंख की बराबर बनाके या सीसे का बुरादा छोटी सी थैली में भरके आंख पर रख दें - और पट्टी से कसदें और जो पिसा हुआ सुरमा छोटी सी थैली में भरके आंख पर रखकर पट्टी से कसदें - तो अति लाभदायक है - और जब किनारे करनिया के मोटे होजायगे तो फिर किसी प्रकार अच्छा नहोगा - इस रोग का उपाय तुरंत करना चाहिये॥

तेईसवां पाठ २३
भेंगा होने के विषय में

इसमें एक वस्तु की दो वस्तु दिखाई देती हैं - जो यह रोग जन्म से होतो - अच्छा नहीं होसकता - परंतु बच्चों को मृगी के रोग से औ रएक कर वट सुलाने से या भयानक शब्द सुनकर अचानक चौंक पड़ने से भी यह रोग होजाता है उपाय इसका यह है कि कोई लाल या चमकदार वस्तु आंख के किनारे उस ओर रखदें जिधर कि आंख का फिराना चाहते हैं - बच्चा हरदम उसे देखेगा इससे आंख उसकी सीधी होजायगी॥

जो यह रोग जवानी में उत्पन्न होतो कारण इसका तशन्नुज इस्तिलाई या याबिस होगा - पहिचान तशन्नुज याबिस की यह है कि इससे पहिले गर्म रोग हुए होंगे - उपाय उसका यह है कि

आंख को तरी पहुंचावें ७६वां सिर पर धारे-
और पहिंचान इमतिलाई की यह है कि पहिले मृगी आई होगी और तशन्नुज इमतिलाई के चिन्ह पाये जायंगे उपाय इसका मवाद का साफ़ करना और निकालना है ॥

जो आंख के ढीले होजाने से यह रोग होतो इसके चिन्ह और उपाय वही हैं जो इस्तिरख़ा में लिखेगये ॥

और ज़रीह के कारण आंख का कोई परदा यारतूबत जाती रही होतो आंख फड़केगी उसका उपाय यह है कि भेजे से बलग़म को निकालें-और हब्ब अयारिज खिलावें और बदहज़मी को दूर करें ॥

चौबीसवांपाठ २४

इतिसा और इन्तशार के वर्णन में

असबे के चौड़ा होजाने या अनबीया के छेद के घटजाने को इतिसा कहते हैं और आंख में रोशनी फैल जाने को इन्तशार कहते हैं ॥

जानना चाहिये कि इतिसा असबे के साथ इंतशार अवश्य होताहै-परंतु ऐसा होसक्ता है कि इतिसा अनबीया के साथ इंतशार नहो-और कभी इतिसा असबा और इतिसा अनबीया दोनों साथ होवे हैं-इतिसा या असबे का अच्छा होना बहुत कठिन है-परंतु इतिसा अनबीया का उपाय कारण के अनुसार होसक्ता है-कारण जान के उपाय करें जैसें चोट लगजाने से होवे फस्द सरारू करें और पिंडलियों पर पछने लगावें ॥

और जो किसी मवाद की अधिकता या रतूबत बैज़िया की

अधिकता से हो- जैसाकि बच्चोंको हुआ करता है-या अनवीया की सूजन से होती फस्द और हुकनाकरें और जो अनवीया की खुश्की से होती- चिन्ह और उपाय इसका जो फ़ाक्सर उक्सीके पाठमें लिखाजायगा॥

पच्चीसवांपाठ२५

अनवीयाके छेद के सकेड़ा होजानेके बिषयमें

यह रोग जन्मसेहोतो बहुत अच्छाहै-इससे दृष्टि तीव्रहोजाती है- और जो किसी रोगसे होतोदृष्टि कम होजाती है- पहिले देखें कि कारण इसका इनवीया की तरी है या खुश्की या रतूबत बैज़िय की कमी खुश्की और तरी के चिन्ह सहज में मालूम होजायगें और रतूबत बैज़िया की कमीका चिन्ह यह है- कि आंख छोटी होजायगी और वस्तु भली भांति दिखलाई न देगी और के सूस अनवीया के कड़े होजाने और बिगड़ जानेसेभी यह रोग होता है- उसका चिन्ह यह है पुतली न दिखाई दे- जबकि अनवीया की खुश्की या रतूबत बैज़िया की कमी के कारण से यह रोग होतो चाहिये कि आंख को तरी पहुंचावें- और जब रतूबत अनवीया की अधिकता सेहोतो उसतरीको दूर करें- और केसूस के बिगड़ जानेमें सवाद को साफ़ करें और तरीभी पहुंचावें॥

छब्बीसवांपाठ२६

ख्यालात के बर्णनमें

इसमें आंख के आगे भुनगे से उड़तेमालूमहोते हैं- यह

अट्ठाईसवां पाठ २८

२/२७

असवे में सुद्दा पड जाने के विषय में

जो यह विना मोतिया विंद के होतो चिन्ह उसका यह है कि पुत ली पूरी अच्छी दिख लाई देगी और सूजन न होगी परंतु दिखला ई न देगा– उपाय इसका यह है कि भेजे से मवाद को निकालें और कोये की रग की फ़स्द लें और कनपटी की रग पर जोंक लगावें और पिंडली पर पछने लगावें और पांव को मलें ॥

उन्तीसवां पाठ २९

२/२१ ...

आंख के कन्ना होने के बिषय में

जो यह रोग जन्म से होतो उपाय इसका नहीं हो सक्ता और जो किसी रोग से होजाय तो इसको अंध कहते हैं– उसका उपाय कारण के अनुसार करें ॥

जो तरी की अधिकता से होतो देह को और आंखों को मवाद से साफ़ करें और जो खुश्की से होतो तरी पहुंचावें ।

यह रोग जो खुश्की से होता है– उसमें सुझाई नहीं देता– इस में और मोतिया विन्द में यह अंतर है कि मोतिया विन्द में पहि ले खयालात का रोग अवश्य होगा और इसमें यह बात नहीं हो ती है– आंख दुबली होजायगी और दस्तकारी से लाभ न होगा यह रोग जो बच्चों की आंख में होतो जवान होने पर जाता रह ता है ॥

तीसवां पाठ ३०

पन्नो ६

ज़ोफ बसर अर्थात् कमदृष्टी के विषय में

जो कारण इसका रुधिरकी अधिकता होतो फ़स्द करें और रुधिर के बदल जाने को रोग कहते हैं और तूतियाको कच्चे और खट्टे अंगूर के रसमें भिगोकर आंखमें लगावें- और जो यह बलग़म के कारण से होतो उसके पकाने के पीछे बलग़मका जुल्लाब दें- और बासलीकून आंखमेंलगावें- औरजो इसका कोई और कारण होतो उपाय उसका करें-बुढ़ापे में यह रोग बहुतहोता है- इसका उपाय नहीं होसक्ता-परंतु बचाव के लिये बलग़मका मवाद निकालें और जवाहरातका सुरमा लगायें ॥

इकत्तीसवांपाठ३१

बतलान बसारत के विषय में

अंधेरी जगह में बहुत बैठने से दृष्टि धुंधली होजाती है - यारतूबत बैज़िया काली पड़जाती है - उस्से यह रोग उत्पन्न होता है ॥

आंखमें बासलीकून लगायें और हल्की हल्की औषधें और भोजन खांय और जो अचानक अंधेरे के बाहर निकल आने के कारण से यह रोग उत्पन्न होतो नीला अस्मानी रंगका कपड़ा आंखोंपर डाले रहें- या आस्मानी रंगकी ऐनक लगायें- और हल्का भोजन खांय और भूखे रहने और मैथुन से बचते रहें-और रातको कुछ न खांय ॥

बत्तीसवांपाठ३२

चुन्धा होने के विषय में ॥

इसरोगमें दिनको कम दिखाई देता है-यह जन्म सेहोतो इसका उपाय नहीं होसक्ता-परंतु पलकोंऔर आंख के परदाने

काला करने का उपाय करें-यह इस प्रकार से होवे- वनफ़शे और बादाम के तेल से काजल बनाकर आंखों में लगाया करें- इस्से दृष्टि पुष्ट होजायगी ॥

तेतीसवां पाठ ३३

क़ुमूर अर्थात दृष्टि के थकजाने के वर्णन में

यह रोग सफ़ेद और चमकीली वस्तुओं पर जैसे सूर्य्य या बरफ़ादिक हैं-दृष्टि जमाने के कारण से उत्पन्न होजाता है-उपाय इस का यह है कि काला कपड़ा आंखों पर लपटावें-और पहनने और बिछाने के कपड़े भी सब काले रक्खें-और दूध में कपड़ा भिगोकर आंखों पर रक्खें या स्त्री का दूध आंखों पर दुहें-और कड़वे बादाम पीसके या कुचले के आंखों पर बांधें ॥

चौंतीसवां पाठ ३४

आंख के दुबला होने के विषय में

इस रोग में दृष्टि कम होजाती है-उपाय उसका यह है कि आंख को तरी पहुंचायें और जो कोई सुद्दा हो उसे निकालें ॥

पैंतीसवां पाठ ३५

५७

ज़ुग़ज़ुल ऐन के वर्णन में

इसमें धूप और रोशनी की ओर देखना बुरा लगता है-जो यह रोग गरमी से होतो-ठंड और तरी पहुंचावें-और जो रमद आदि के कारण से होतो पहिले उसे दूर करें ॥

आंख के मिज़ाज पहिंचान ने की रीति।

आंखका मिज़ाजगर्म औरतर है – औरजो इसके विपरीतहोतोजानलोकि कोई रोग होगा ॥

ऊपर सेछूने में आंख गर्म मालूम हो और डोरे रंगीनहो और आंखजल्दी २ फड़के – तो यह चिन्ह गरमीका है और सरदीके चिन्ह इससे विपरीत हैं ॥

जो आंखसे चीपड और आंसूबहुतनिकलें – और फूली हुई दिखाई दे – तो यह चिन्ह तरीके हैं – और खुश्कीके चिन्ह इससे विपरीत हैं ॥

काली आंखसबप्रकार की आंखों से अधिक गर्म और तर होती है – इसी लिये ऐसी आंख में मोतिया बिन्द और २ गरमी के रोग बहुधा होते हैं – परंतु बहुत मनुष्य यह कहते हैं – कि कंजी आंख में मोतियाबिन्द बहुत होता है ॥

तीसरा अध्याय

पपोटे और पलक के रोगों के विषयमें

पहिला पाठ १

कसना के विषयमें

कसना उसको कहते हैं – कि मनुष्य जब जागे तो आंखमें खटक होजैसे रेत पडगई है और थोडी देर पीछे यह खटक जाती रहै – पहिले इससें जुल्लाच दें और – शियाफ़ अहमरैलीन – और शियाफ़ अहमर हाद लगावें और गरम पानी से स्नानकरना भी लाभदायक है ॥

दूसरा पाठ २

पपोटे के ढीला होजाने के विषय में

पहिले मवाद को निकालें इसके पीछे एलुआ – अक़ाक़िया मुर्र सबको पीसकर पलक और माथे पर लगावें – और जो इससे लाभ न होतो पलक काटनी पड़ेगी – इसकी रीति दस्तकार जानते हैं – और नाक के भीतर की रग की फ़स्द करना बहुत अच्छा है ॥

तीसरा पाठ ३

पलकों के आपस में चिमट जाने के विषय में

यह रमद के पीछे या पलक काटने के पीछे या सबल या नाखूने में होता है – उपाय इसका यह है – कि सलाई से दोनों पलकों को छुटावें और फिर ज़ीरा और नमक चबाकर पानी उसका आंख में डालें – और रुई रोग़न गुल में भिगोके पलकों के बीच में रक्खें – और अंडे की ज़रदी में रोग़न गुल मिलाकर आंख के ऊपर लगावें ॥

चौथा पाठ ४

पलकों के छोटे होजाने के विषय में

इस रोग में ऊपर की पलक सुकड़ जाती है और नीचे की पलक बाहर पलट आती है – और दोनों पलकें बराबर बन्द नहीं होतीं – इस रोग के कारण – पपोटे के ढीला होजाने के कारणों से विपरीत हैं – और अधिक मांस जो पपोटे में होजाता है – उसे काटकर निकालने से भी यह रोग उत्पन्न होता है जो यह किसी मवाद से होतो – पहिले उस मवाद को निकालें फिर कारण के अनुसार इसका उपाय करें और जो दस्तकारी होसके तो उसे भी करें ॥

पाँचवांपाठ५
शिर्नाककेविषयमें

पलकफोला नासूर

इसमें पलक पर नर्म मास होजाने से पलक मोटी होजाती है- और आंखों में पानी भरा रहता है उपाय इसका यह है कि पहिले सवादको निकालें और फिर आंसूलानेवाली औषधें आंखमें डालें- और जो इससे लाभ नहो तो दस्तकारी करें और वे वस्तुन खावें जो हानिकरती हैं॥

छठापाठ६
पपोटेके ऊपर गांठ पडजानेकेविषयमें

उपाय इसका यह है- पहिले नर्म होने के लिये मोमरोग़न लगावें- और फिर मरहम दाखुली यून लगावें- जो काटने के योग्य हो काटे और कोई सवाद निकालना होतो उसे भी निकालें॥.

सातवांपाठ७
शेरसुलकलिब औरशेरज़ायदकेविषयमें

जोबाल पलकके उलटे होकर आंखमें चालगें और चुभाकरें उसे शेर सुलकलिब कहते हैं॥

और जोबाल पलक के सिवाय अपनी जगह को भीतर की ओर निकलें और उनके चुभने से आंख खटका करें उसको शेर ज़ायद कहते हैं॥

उपाय इसका यह है- कि पहिले सवाद को साफ़ करें

फिर वह वाल जो नये उगेहैं सोचनेसे उखेडें और उस जगह पर नोशादूर रगड दें-और चे टीके अंडे और इन्जीर का दूध और उस काँलीली का रुधिर जो कुत्ते या ऊंटके वदन परहोती है या हरे सेंडक का रुधिर या हुदहुद का पित्ता उस जगह पर मलें-और समन्दरफेन इसिव गोलके लुआव में पीसकर लगाना वाल के उत्पन्न होने की जगह को शून्य करदेता है॥

और शेर सुनक्कालिब का उपाय यह है कि-दिवक का लामाल गाकर सीधे वाल के साथ चिमटा दें फिर वाल न चुभें॥

जब वाल को उखाडें तो वारीक सलाई से उस अस्थान को दाग दें और जहां वाल हो उस जगह को काटडालना और सींव देना भी इसका एक बड़ा भारी उपाय है॥

आठवां पाठ

पलकों के झड़ जाने के बिषयमें

जो यह रोग बुरा भोजन खानेसे या पित्तीं या सौदा के अधिक होने में होतो उस मवाद को निकालें-और जो पलक की कमज़ोरी से होतो जैसा-कारनी जैसा-और गर्म रापके पीछे होजाती है तो उस जगह को पुष्ट करना और तरी पहुंचाना चाहिये-और वासली खून और रोशनाई सुरमा आंखमें लगावें-और जो यह रोग बलगम के अधिक होनेसे होतो बलगम को निकालें और पुष्ट करने वाली वस्तु काममें लावें॥

और जो कोई ऐसा कारण हो कि भोजन उस जगह तक न पहुंच सके तो उस कारण को दूर करें॥

नवांपाठ ९

॥ पलकोंके सफ़ेद होजानेके विषयमें

उपायइसका यह है–किपहिले बरलगम कोदूरकरे फिर ज
गली लाले के पत्ते–जैत के तेलमें मिलाकरमले–और सुरमारोश
नाई सफ़ाई से आंखमें लगावे ॥

दसवां पाठ १०

पलकमें खुजली और फुन्सियां होनेके विषयमें

जैसा मवाद हो उसके अनुसार उपाय करना चाहिये–और
वरूद कनफ़ानी–आंखमें सुरमे की जगह लगावे ॥

ग्यारहवां पाठ ११

बरदाके विषयमें

बरदा एक मवाद गाढा और सफ़ेद ओलेकी सदृशपपोटे केऊ
पर उत्पन्न होजाता है उपाय इसका यह है–कि मोमरोगन और
दारवली यून लगाये–इससे नर्म होकर बैठजायगा और नहीं तो
काटकर निकाल ले ॥

बारहवां पाठ १२

पलकके मोटे और कड़े होजानेके विषय में ॥

जब पलक मोटी और कड़ी होजाती है–तो आंख बन्द करना
और खोलना कठिन होजाता है – और यह रोग सौदाके मवादसे
होता है–इसलिये उपाय उसका यहहै–कि पहिले सौदाको प
कावें और मवाद निकाले–और उस जगह को नर्म करें–और

अकलील उल मलक - बाबूना - बनफ़शा - खतमी के पत्ते - पानी में औटाके आंखपर भपारादें ॥

औरजो विना किसी मवाद के इस रोगमें खुजली होती उसको यवू सतुल ऐन चाहते हैं ॥

तेरहवां पाठ १३

पलक के मोटे औरलालहोजाने के विषयमें

इस रोगमें पलक के किनारे बहुधा मोटे होजाते हैं - उपाय इसका यहहै कि - पहिले मेवों का नुकूआ पीवें और सराक को गुलाब में भिगोकर पानी उसका टपकावें - और फ़िटकरी और चुल्फ़ा औरकासनी के पत्तों को रोगन गुल में मिलाकर लेपकरनाला भदायक है ॥

जब यहरोगपुरानाहोजायतो पहिले फ़स्द और जुल्लावदें फिर शियाफ अहमर लीन आंख में लगायें ॥

चौदहवां पाठ १४

पलकों में जूयें पड़ने के विषयमें

यह रोग बलग़म से होताहै - पहिले बलग़म का मवाद निकालें - फिरपलक में से जूयें चुनें - और जो छोटा होने के कारण चुनना कठिन होतो फिटकरी और नमक को औटाके पलक को धोवें - और थोड़ीदेर सलाई को पारे में रखकर होले से हाथसे पोंछले और आंखमें फेरे - यह जूंएंमारने को अति लाभदायक है ॥

पन्द्रहवां पाठ १५
गुहांजनी के विषय में

यह एक सूजन है-जो जौके सदृश पलक पर उत्पन्न होती है जो अवश्य होतो मवाद निकालें-नहीं तो एलोत, और एलुवा और गिले अरमेनी हरी कासनी के पानीमें पीसकर आंखपर लगालें- फिर इस लीयूनु और मोम गरमकरके लगावें; जो इस्से लाभ न होतो नारखूनसे कुरेद डालें या केंची से काट डालें-और थोड़ी देर रुधिर बहने दें जल्दी बंद न करें- फिर ज़रूर असफर उसपर छिड़कदें ॥

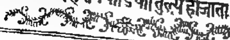


सोलहवां पाठ १६
तोसतुल अज़फ़ान के विषय में

शहतूत के सदृश एक वस्तु नीचे की पलक के अन्दर उत्पन्न होती है- उपाय उसका यह है-कि फ़स्द और जुल्लाब के पीछे दस्तकारी करें- और काट के ज़ीरा और नमक चबाकर उसपर टपकावें ॥

सतरहवां पाठ १७
तहज्जुरजफन के विषय में

इसमें पलक पत्थर के सदृश कड़ी हो जाती है- और यह सौदा के गाढ़े मवाद के जम जाने से होता है - और इसमें वरदे से अधिक पलक मोटी हो जाती है-उपाय इसका यह है-कि पहिले मवाद को निकालें- और रोगन मोम को पिघला के लगावें-और कभी यह रोग फोड़े की तुल्य होजाता है ॥



अठारहवांपाठ१८

पलकमेंघाव पडने के विषयमें

इसमें मसूर अनार और पिस्ते के छिलके सिरके में पकाकर लेप करें-और जब खुरंड गिरने लगे तो अंडे की ज़रदी केसर में मिलाकर लेप करें॥

उन्नीसवांपाठ १९

पपोटोंके फूल जाने केबिषयमें

जो यह जिगर और मेदे की कमज़ोरी के कारण से होतो पहिले उनको पुष्टकरें॥

और जो बलग़म के अधिक होनेसे होतो इतरीफल खिलायें और फ़स्द का फ़ोल करें-और शियाफ मामीरा और चन्दन हरे धनिये के पानी में पीसकर लेप करें॥

बीसवांपाठ२०

पपोटों में मस्से पड़जानेके विषयमें

इसमें पहिले सौदा का मवाद निकालें और कालोंजी और नमक को पीसकर सिरकेमें मिलाकर लगायें-जो इससे लाभ न होयतो-मोचने से दवा के-नाखून गीरी या नश्तर से काटडालें-और रुधिर बहने दें-फिर घावपर फिटकरी छिड़कदें कि रुधिर बन्द होजाय॥

इक्कीसवांपाठ२१

पपोटोंपर पित्ती उछलने के विषयमें

इसमें खुजली और सूजन होजाती है – जैसा कि भिड़ के डंक से हो है – उपाय इसका यह है कि फस्द करे और पित्त का जुल्लाव दे और शादने अदसी – धोया हुआ आंख में लगावें ॥

बाईसवां पाठ २२

निमलय पलक के विषय में

इस रोग में पलक पर फुन्सियां होजाती हैं – और थोड़ीसी सूजन और जलन भी होती है – और घाव पड़के फैलता जाता है – मवाद निकाले – और रसोत और एलुआ घिसकर पलक में ॥

तेईसवां पाठ २३

पलक पर से भूसी उड़ने के विषय में

कभी इससे घाव भी पड़जाता है – जो रंग इस भूसी का मैला होतो सौदा का जुल्लाव दे – और जो सफेद होतो बलराम का फिर शियाफ़ अहमर लगावें – और जो यह रोग पुराना होनाय तो पछने शकर मले – और सुरमा रोशनाई आंख में लगावें ॥

चौबीसवां पाठ २४

सुला के विषय में

यह एक वस्तु चाम और मास से जुदी पलक पर बढ़ जाती है – उपाय इसका यह है – कि मवाद निकालने के पीछे उस को काट कर अलग करले ॥

पच्चीसवां पाठ २५

चोटसे पपोटे का नीला या हरा होजाने के विषयमें

जो घाव भी होजायतो फ़स्द और जुल्लाव दें - और चन्दन और मुर्दासंग को गुलाब में घिसकर मलें और जो घाव नहोतो कोरीठीकरी पानी में घिसकर लगावें - यहसब जगह की नीलाहट को दूर कर देतीहै ॥

छब्बीसवां पाठ २६

कोयेके पास नाक की ओर नासूर होजाने के विषयमें ॥

फ़स्द और जुल्लाव के पीछे शियाफ़ग़र्बुरटपकावें - परंतु पहिले घावको रुई से पोंछलें - और पीप को साफ़ करडालें और औषधके प्रभाव के लिये मुर्दार मांस काटडालें - जो इस से लाभ न होतो दागदें - और मरहम अस्फ़ेदाज लगावें ॥

यह नासूर बन्द होकर फूट जाता है - ऐसे समय में कलोंचे के बीज स्त्री के दूधमें या गधय्या के दूधमें पकाके थोड़ीसी केसर मिलाकर लगायें - इससे फूटकर फिर बहेगा ॥

सत्ताईसवां पाठ २७

कोये और पलक में बिना जलन और दानों के खुजली होने के विषयमें

जो यह रोग रुधिर से होतो फ़स्द करें - और और मवादों से उन्हीं मवादों की निकालने वाली औषधी देकर के करावें और कासनी को कूट के गुल रोग़न में मिलाकर लेप करें - और जो कोये को मवाद से साफ़ किया चाहै - तो वासलीकून और कुहल अज़ीज़ी लगावें ॥

अट्ठाईसवांपाठ२८

कोयेमेंनाककी ओर अधिकमांसहोजानेकेविषयमें ॥

उपाय इसका यह है कि पहिले मवाद को निकालें - फिर शियाफ़ ज़ंगार या मरहम ज़ंगार लगावें - कि अधिक मांस कट जाय जो इस से लाभ न होय तो दस्तकारी से काट डालें - और ज़रूर अस्फ़र छिड़कें और पीड़ा के दूर होने के लिये - अंडे की ज़रदी रोग़न गुल में मिलाके मलें इसके पीछे भरावु की मरहम लगावें ॥

चौथाअध्याय

कानकेरोगोंकेविषयमें

सुनना चाहिये कि कान श्रेष्ट इन्द्री है - और सब इन्द्रीयों से अधिक है - इसके रोग जो मवाद से हों उन में दवा कान में न डालनी चाहियें - और जो डालें भी तो गुनगुनी करके - क्योंकि ठण्डी औषधें हानि देती हैं ॥

पहिलापाठ१

कानकेदर्दकेविषयमें

जो यह पीड़ा या सूजन घाव के कारण से होतो उसका उपाय आगे लिखेंगे - और जो किसी मवाद से या केवल गरमी से होवो - फ़स्द आदि से मवाद निकालें - और जो केवल ठंड से होवें

उसका उपाय करे और मवाद की पीडा में मवाद निकालने के पीछे उसके अनुसार उपाय करे - और कान में पीडा कीड़े के घुस जाने या पानी की बूंद रहजाने से होतो उसे निकालना चाहिये - और एक पांव परखड़ेहोकर कूदना उस कान पर हाथ धरकर जिस्मे पानीहै और सिरको उसी ओर झुकाना पानी को निकाल देता है और जो इस्फंज (अर्थात मराहुआ बादल) की बत्ती बनाकर कान में रक्खे और उसी ओर देर तक लेटे रहे तो सब पानी निकल आवेगा ॥

जो कान में कीड़े उत्पन्न होजाने के कारण से यह पीडा होतो चिन्ह उसका यह है - कि कान में गुदगुदी मालूमहोगी और कभी कीडा आपसे आपभी निकल आवेगा - इस्में शफतालू के पत्तों को औटाके या उसका रस निचोड़ कर कान में टपकावें - या एलवा सिरका में घोलकर टपकावें - इस्से कीड़े मरजायगे - फिर रूई की बत्ती बनाकर उस्में सरेश मलके कान में रक्खे - कि कीड़े उसपर चिमट के निकल आवें - फिर जब घाव साफ होजाय तो उस घावका उपाय करे ॥

दूसरापाठ २

कानकीसूजनके विषयमें

पहिले जुल्लाब दें इसके पीछे देखें - कि सूजन छिद्र के भीतर है या बाहर - भीतर होनेका चिन्ह यह है - सुनाई कमदेगा - और पीडा अधिक होगी और तप भी होगी इस्में दर्द की औषध हरे धनिये के पानी में घिसकर कान के ऊपर और भीतर लेप करें और लड़की की माता का दूध कान में दुहे और जोइस

सेभीनयंभे-तोमेथीया अलसीका लुआवटपकावें। कि पकजा य और पीपपड़े॥

जो सूजन कानमें बाहर होतो आंखसे दिखाई देगी नतप हो गी न अधिक पीड़ा-इससमयऐसी ठंडी औषधें जोमवाद निका लने से रोकें-लगाना न चाहिये-परंतुऐसी औषधें लगायें-जो सूजन को पकावें और बिठादें-औरजो पीड़ा अधिक होतो कपड़ा गर्म पानी में भिगोके या नमक गर्म करके सेकें-और दो दिन पी छे बर्मकल्ले के पत्ते पुराने घी में पकाके सूजन पर बांधें-इससे सूजन बैठजायगी॥

यह उपाय गर्म सूजन का था-परंतु जो चलगमी सूजन हो छिद्र के भीतर या बाहर उसमें कम सुनाई देगा नतप होगी-औ र न पीड़ा अधिक होगी-केवल बोझ और खिंचाव मालूम हो गा-इसमें मूली या सोये का तेल मवाद निकालने के पीछे टप काना लाभदायक है॥

तीसरा पाठ ३
कानके घावके विषयमें

चिन्ह उसका यह है-कि पहले सूजन होगी-फिर पककर फूटेगी और घाव से पीप बहेगी-शहद में अंजरूत को पीसके बत्ती में लगाकर कान में रक्खें-फिर अंजरूत दम्मुलअखवैन कुन्दर पीसकर छिड़के-या रोगन गुल में मिलाके बत्ती में ल गाके कान में रक्खें-और जो पीड़ा विशेष होतो अफीम जला के राख रसकी जुन्दबेदसतर में मिलाके कान में छिड़कें या कि सी तेल में मिलाकर टपकावें॥

चौथापाठ४

तरश और वक़र और समम के बिषयमें

जो कम सुनाई दे उसका नाम तरश है- और जो कुछभी न सुनाई दे तो वक़र और जो कानका छिद्र पूराबन्द होजाय तो समम है- और कभी इनशब्दों को एक दूसरे की जगह भी बोलते हैं- जैसा कारण हो उसीके अनुसार होले होले मवाद को निकालें- और जो बोहरीन के दिन ऐसा होतो उसका उपाय करना चाहिये और जो बुढ़ापेसे या पैदायशके समयसे होतो कभी अच्छा न होगा- परंतु दूधपीतेबच्चेकोयहरोगहोतो सातर और नमक चबावें और एकबूंद उसकी कानमेंडालें ॥

पांचवांपाठ५

किसीवस्तुके कानमें पड़जानेके बिषयमें

जो कोई कंकरया दानाया पाराकानमें पड़जाय तो-रोग़न गुलकानमें डालकर छींक लिवावें और छींक आनेके समय मुख और नासिका बन्दकरलें तो ज़ोर कानकी ओर पड़ेगा और वह वस्तु निकल आवेगी- और जो पानी घुसगयाहोतो बालिश्त भरकी सोंफकी लकड़ी लेकर एक ओर उसके रुई लपेटें- और तेलमें भिगोकर जलावें और दूसराछोर उसका कानमें रक्खें- इससे जितना पानी भीतर होगा निकल आवेगा- और जो कोई छोटा कीड़ा कानमें चलागयाहो उसका उपाय वही है जो कीड़ोंके निकालनेका है ॥

छठापाठ ६

तिनीन औरदवीके विषयमें

जो आपसे आप कानमेंतेज़ औरवारीक आवाज़ मक्खी कीसी भिन्न भिनाहटके अनुसारसुनाई देती है उसेतिनीन कहते हैं ॥

औरजोनर्म औरभारी आवाज़होतो वह दवी कहलाती है-अर्थात् चक्की कीसी आवाज़ पहिलेइसका कारणमालूम करें औरउसीके अनुसार उपाय करें-औरजो श्रवणकी इन्द्री तेज़ होनेके कारणसे यहरोग होतो भारी वस्तु खावें जैसे हरीसा॥

सातवांपाठ ७

कानसेरुधिर निकलनेके विषयमें

जोकारण इसकारुधिरकी अधिकता होतोफ़स्द से वहुतसा रुधिर निकालें-औरजो किसी चोट केलगने से होतो फ़स्द से रुधिरकम निकालें-और फिर माज़ूको सिरके से औटाके कानमें डालें-औरजो वोहरान के दिन कान से रुधिर निकले तोउसे वन्द नकरें-जबतक किरोगीको मूर्च्छा न आजाए॥

जोजुरंका सांप के काटने सेरुधिर निकले उसकाउपाय इस किताव के अन्तमें लिखाजायगा॥

आठवांपाठ ८

कानके टंढेजानेके विषयमें

पहिले फ़स्दकरें-औरनर्मकरनेवाली औषधें पिलावें-औरसेलुवा-सुदाप-अकाकीया-रातीनज़-औरमेंहदीके सूखे

पत्ते पीसकर उसजगह लगावें ॥

नवांपाठ ९

जड़से कानके उखड़जानेके विषयमें

पहिले फ़स्द करें फिर नर्म करने वाली औषधिया दें- और कानको अपने स्थानपर जमाके गद्दी रखकर पट्टी से बांध दें- और जो पीड़ा रहजाय तो-चतख़ की चरबी पिघला के उसमें खतमी के पत्ते और घीये के छिलके मिलाके मलें ॥

दसवांपाठ १०

कानकी टी के विषयमें

यहरोग बहुधा बच्चों को होता है ॥

कंधों के बीच में और कान के तले जड़में पछने या जोकें लगायें-और उस जगहको स्त्री के दूधसे धोवें-और मुर्दासंग और कतीला पीसकर छिड़कें ॥

ग्यारहवांपाठ ११

कानमें खुजली होनेके विषयमें

इफ़सन्तीन को सिरके में औटाके और कड़वे बादाम का तेल उसमें मिलाके कानके अन्दर डालें ॥

बारहवांपाठ १२

कानमें चीख़की सी आवाज़ मालूम होनी

ऐसी औषधें और भोजन खावें और सूंघें जो भेजे को पुष्ट

करें ॥

पांचवां अध्याय ५

नाक के रोगों के विषय में ॥

नाकमें दो रास्ते हैं एक भेजेकी ओर दूसरा गले की-ओर ॥

पहिला पाठ १

खश्म के विषयमें

यहवह रोग है कि सूंघनेकी इन्द्री जाती रहती है-और किसी बस्तुकी बास नहीं आती॥

जो नाक में बुरे मांसके उत्पन्न होजानेसे यह रोग होतो-उसका उपाय तीसरे पाठमें इसी अध्यायकेलिखाजावेगा-और जो सूजन या सुद्दे के कारण से होतो- जानना चाहिये कि किस सवाद से है और जो केवल गरमी या ठंड से होतो उसके चिन्ह सहज से मालूम होजायंगे- कारण के अनुसार इसका उपाय करना चाहिये- और जो यहरोग खुश्की और तशन्नुज के कारण सेहो-औरगर्मरोगों के पीछे होतो उपाय बहुतकम होसकेगा॥

दूसरा पाठ २

सूंघनेकीइन्द्री बिगडजाने के विषयमें

इसमें कुछ २ बासमालूमहोतीहै-यहरोगतीनप्रकार काहै पहिलीप्रकार सबवस्तोंकी बासएकसी मालूमहो-दूसरे१

यह कि एक वस्तु से कई प्रकार की बास सूंघी जाय- तीसरे यह कि किसी वस्तु की बास आवे और किसी की न आवे अर्थात सुगंध मालूम हो और बुरी बास न मालूम हो या बुरी बास मालूम हो और सुगंध न मालूम हो- उपाय इसका यह है- कि भेजेको मवाद से साफ़ करें- और जो नाक के भीतर घाव होतो उसे अच्छा करें। और जब केवल सुगंध मालूम होतो जुन्दबेदस्तर की नास लें और जब केवल बुरी बास आवे तो मुश्क को नाक में टपकावें- और जो यह रोग पुराना होजावे तो सुगंध आने में मुश्क और बुरी बास मालूम होने में जुन्द बेदस्तर नाक में डालें।

तीसरा पाठ ३

नाक में बुरा मांस उत्पन्न होने के विषय में

पहिले फ़स्द खोलें और जोंक लगावें और भयारिज का जुल्लाब दें- फिर अशनान और ज़ंगार और सुरमक्की तीनों बराबर लेकर पीसके मरहम बनावें एक बत्ती में लगाके नाक के भीतर उस मांस पर रक्खें कि वह गल जाय- और जो इससे लाभ नहो तो नश्तर वा चाकू से काट डालें- या घोड़े की दुमके बालों को बटकर और गांठ लगाकर मांस को काटें और फिर मरहम सफ़ेदे का लगावें॥

चौथा पाठ ४

नाक के घाव के विषय में

जो यह तरी से होतो पहिले मुरदासंग- रोगन गुल में मिलाकर लगावें- और जो खुश्की से होतो केवल मोमरोग़न

हीसे अच्छा होजायगा॥

पांचवां पाठ ५

नाक की फुन्सियों के विषयमें

इसमें पहिले फस्द और जुल्लाबदें- और जो वह कडी हो तो नर्म करने के लिये मोमरोगन लगाये- जो इससे भी लाभन हो तो पछने लगावें और मरहम तेजाबीसे उन को गलादें-फि र घाव भर आने के लिये मरहम सफ़ेदा लगावें॥

छठा पाठ ६

नकसीर के विषयमें

बाहें और जांघें और अंडकोश और कान और छातियां और पिंडलियां कसकर बांधे और गुद्दीपर पछने लगावें और सिंगर परसींगी लगाना भी लाभदायक है- जो रुधिर दहने नथने से आवे और तिल्लीके ऊपर बायें नथने से निकले- तो गधे की लीद को निचोड कर उसके पानी की दो तीन बूंदें नाक में डाले और मकडी का जाला स्याही मे मिलाकर और चक्की की गा इन वसमें डाल कर नाकमें टपकावें- और सरेश मुलतानी म ही में मिलाकर सिरपर लेप करें॥

और जो रुधिरकी अधिकता से हो तो फ़स्द लें और रुधिर जितना अवश्य हो निकालें- चाहिएक वार में और चाहे कई वार में- और रुधिर जो पतला पड गया है उसके गाढा करने के लिये उन्नाव का शरबत आदि पिलावें और मसूर की दाल और चांवल नीबू निचोड कर खिलावें॥

जोतपथाभेजे के रोगोंमेंनकसीर फूटेतोदेखना चाहिये कि चोहरानसे है या नहीं जो चोहरान सेहोतो कभी बन्द नक रेंऐसानहोकि कोई कडारोग उठ खडा हो- परंतु मूर्च्छी का डरहोतो बन्द करदें और जोचोहरान से नहो तो उचित उपाय करें- जब भेजे के रोगों में नकसीर फोडने की आवश्यकता होतो भीतर नाक की जड़ में वह औज़ार चुभाएं जो इस काममें आताहै- और जो कुंदश - मवीज़ज और फ़रफ़ियून को कू टकर और वत्ती में लगाकर नाक के भीतर रक्खें तो रुधिर नि कलने लगेगा ॥

सातवांपाठ७
नाकमें बुरी गंधआरना

जो फुन्सियां घाव के कारण से होतो वही उपाय करें -जो ऊपर लिखागया और जो भेजे के मवाद के सडजाने से होतो - पहिचान उसकी यहहै कि सिरमें कोई विगाड होगा -औरजो मेदे में मवाद के सडने सेहो तो मेदे के विगाड से पहिचाना जा यगा उपायइसका यहहै कि मेदे और भेजे को मवादसे साफ़ करें-और शिकंजबीन और राई के फेनसे कुल्ली करें और कोई सुगंध नाकमें डालें ॥

आठवांपाठ८
नाककुचल जानेके विषयमें

जो सूजन होने का डर होतो जल्दी से फस्द लें - और नाक को ठीक करें - परंतु इस प्रकार से कि सांस न रुके - इसका॰

उपाय यह है कि रूई पर मरहम लगाके नथनों में रक्खें - जब वह सीधी होजाय - सरूला - मकाकीया - सुरसक्की - पीसकर बारतंग के पानी में मिलाके कागज पर लगाके ऊपर चिपका दें - और जब तक अच्छी न हो रूई नाक से न निकालें ॥

नवांपाठ ९
बहुतसी छींकें आना

रोगन गुल सुगंधका नाक में डालें और गुनगुने मीठे पानी से सिरको धोवें और गुनगुना तेल कान में टपकावें - और हाथ पांव आंख कान और तालू मलें - और जो यह रोग लड़के को हो तो - बकरी का गुरदा भूनके उसका पसीना नाक में डालें - प्रभाव के अनुसार छींक आना चंगे होने का चिन्ह है - और अधिक छींकें भेजे के बिगाड़ का चिन्ह है ॥

दसवांपाठ १०
नथनों का सूखा रहना

जो केवल गरमी से होतो ठंडी औषधें दें - और जो खुश्की से होतो - तर करने वाली वस्तु - जैसे बादाम का तेल आदि नाक में डालें और इस्त्री का दूध नाक में दुहें - और जो किसी गाढ़े मवाद के चिपट जाने से होतो नर्म करने के लिये रोगन नाक में डालें ॥

ग्यारहवांपाठ ११
नाक में भीतर खुजली होने विषय में

जो ठंडी हवा पहुंचने से होतो - भेजे को ठीक करें और इस्त्री

फाल खिलावें - और जो सीतला या चुकाम या नजले का चिन्ह दीख पड़े तो उक्का उपाय करें - जो बाहर से कोई वस्तु नाक में पड़जाय और फंस रूहेतो - तेल नाक में टपकाके नाक मलें - और मुंह बन्द करके छींक लिवावें - तो वह चीज निकल पड़ेगी और कभी ऐसा करने से मुंह में होकर भी निकल आती है ॥

छठवां अध्याय

मुंह और जीभ के रोगों के विषय में ॥

पहिला पाठ १

जीभ की सूजन के वर्णन में

कारण के अनुसार मवाद को निकालें - और जो रुधिर या पित्त से होतो - तीन दिन के अन्दर काहू कासनी और मकोय के पानी से कुल्ली करें - और तीन दिन पीछे करम कल्ली और मवीय के पानी में अलसी के बीज़ों का लुआब मिलाके कुल्ली करें - और जब सूजन घटने लगे तो - बाबूने नाखूने और बनफशे और अमलतास की कुल्ली करें - और चलगमी में शहद से कुल्ली करें या उस्में सातर और आयारिज और मिलालें - और सौदावी में इन्जीर - मेथी के बीज और अमलतास को औटाके बनफ़शे का तेल मिलाके कुल्ली करें - और कभी २ हराधनियां और हरी कासनी चबाया करें कि संतान का रोग न होजाय - और जो विष खाने से सूजन होतो उसका उपाय आगे आवेगा ॥

दूसरापाठ २

जीभकाबोभलहोना

इसमे ऐसा होता है कि शब्द- मुंहसे भलीभांति नहीं निकल ते- और कभी ऐसाभी होताहै कि रोगी बोलही नहीं सक्ता है- कारण जानके उसका उपाय करें और फस्द और जुल्लाब आदि दे; और जो जीभ ढीली होगई होतो देखें कि सिर में कोई बिगाड़ है या नहीं जो होतो भेजेको मवादसे साफ करे- और वजे और राई आदि पीसके जीभ पर मलें कि राल बहे- और जो सिरमें कोई बिगाड़ नहोतो फालिज का उपाय करें- और ठुड्डी के नीचे पछने लगावे- और जो मकी की रग टूट जाने से या मवाद बहुत सा निकलके नशन्नुज होजाने से यह रोग होतो उपाय नही हो सकता- और जो सरसाम के पीछे हो या पुराना होजाय वहभी अच्छा नहोगा- परंतु पुराना पड़ने से पहिले इन्द्रायनी नमक और नौशादर मलें कि राल बहे॥

तीसरापाठ ३

जीभकाचढ़जाना और निकलआना

जो रुधिर की अधिकता से होतो गरारू और जीभके नीचे फस्द खोलें और खट्टी वस्तु जैसे अनार मलें कि राल बहे और जो बलगम से होतो अयारजें खिलाके बलगम निकाले और नोंन सिरके में मिलाके मलें॥

चौथापाठ ४

जीभके ढीले होजानेके विषयमें

इसका उपाय इस अध्यायके दूसेरे पाठमें लिख चुके हैं॥

पांचवांपाठ५

जीभके फटजाने के विषयमें

जो खुश्की की अधिकतासे होतो तर औषधें काम में लावें और मोमरोगन और बनफ़शे का तेल मलें और भेजे को ठीक करें - और खीरे के मींग जीभ पर लगावें - और जो मेदे के धूएं से यह रोग हो तो पहिचान उसकी यह है - कि भेजेमें खुश्की न होगी इसमें मेदे का मवाद निकालें और लहसोड़े मुख में रक्खें॥

छठापाठ६

जीभकी खुश्की के विषयमें

जो गरमी और खुश्की से हो तो ठंडी और तर वस्तु दें - और बीदानेका लुआब नीलोफ़र के पानी में निकालकर शक्कर मिलाकर कुल्ली करें - और देर तक मुख में लिये रहें और जो लसदार कफ़ जीभ पर जमकर सूख गया हो तो बेद की लकड़ी सिकंजबीन में भिगोकर जीभ पर मलें उससे वह कफ़ छूट जायगा इसकी पहिचान यह है कि थूक लसदार आया करेगा - और जितनी ठंडी वस्तु देंगे उतना लस अधिक होगा॥

सातवांपाठ७

जीभकी जलन के वर्णनमें

ठंडी औषधें दें और जो किसी मवाद से हो तो जुल्लाब भी दें और काफूर मलें - और इसबगोल आदि ठंडी औषधों का लुआब

मुंहमें लेकर जल्दी जल्दी कुल्ली करें और जिसकारण से होतो उसे दूरकरें ॥

आठवांपाठ ८

जीभमें खुजलीहोनेके बिषयमें

पहिचानइसकी यहहै-कि जीभलाल होगी और रोगीदांतो सेजीभको खुजलाया करेगा उपाय इसकायह है-कि पहिले म वाद निकालें-फिर गरमपानी से कुल्ली करें-फिर दूध और श क्कर से कुल्ली करें-इसके पीछे सिरके में कोई तेल मिलाके कुल्ली करें-और पीलीहड़ चबाकर जीभपर मलें ॥

नवांपाठ ९

ज़िफ़द उलिसानके बिषयमें

इसरोगमें गाढ़ा बलगम या रुधिर जीभके नीचे जड़ में जम कर गाढ़ा पड़ जाता है-उपाय इसका यह है-कि मवाद को नि कालें के-नौशादर-फिटकरी-जंगार-सुर्ममक्की-सिरके में पीसकर मलें-और जो इससेनजाय तो काटकर निकाललें-प रंतु सावधानी से काटें ऐसा नहो कि जीभ के नीचे जो रगें हैं वह कटजांय-कभी मवाद इसरोग का पथरी बनजाता है-जब ऊपरकी खाल चीरते हैं तो वह पथरी निकल आती है-और क भी सूजन होजाती है उसके छेदने से गाढ़ा पानी निकलता है-और फिर इकट्ठा होजाता है-उपाय उसका यहहै-कि पहि ले छेद के पानी निकालें-और फिर चमड़े को कैंची से कतर डालें ॥

दसवां पाठ १०
फ़िसाद ज़ोक़ के विषय में ॥

इस रोग में एक नया स्वाद स्वाभाव के विपरीत मालूम होता है- चाहे कुछ खावें या न खावें- जिस मवाद से होगा उसका चिन्ह उसके मज़े से मालूम होजायगा- उसी मवाद को फ़स्द और जुल्लाब दे निकालें और शिकंजबीन से कुल्ली करें ॥

ग्यारहवां पाठ ११
बतलान ज़ोक़ में

इस रोग में जीभ को न तो स्वाद आता है- और न गरमी न ठंड मालूम होती है- इसका कारण यह है कि जीभ में तरी अधिक होती है- पहिले मवाद को पकाके मेंज से निकालें- और अक़रकरा- मुनक्के- और राई को औटाके कुल्ली करें- और जो गरमी हो तो गुलाब के फूल और ससाक़ औटाके शिकंजबीन मिलाकर कुल्ली करें ॥

बारहवां पाठ १२
तक़शशुर ज़बान के विषय में

इस रोग में जीभ और मुख से छिलके उतरते हैं- और सलने में अधिक हो जाता है- इसमें पहिले फ़स्द और जुल्लाब से पित्त को निकालें- और आंस और गुलाब के फूल और गुलनार सिरके में औटाके कुल्ली करें ॥

तेरहवां पाठ १३

मुखके भीतर फुन्सियां होनेके विषयमें

फ़स्द खोलें और जुल्लाब दें- और धनिया-मसूर-मकोयके पत्ते सिरके में औटाके कुल्ली करें ॥

चोदहवांपाठ १४

मुंह आने के विषय में

यह रोग भीतरके मवाद से होताहै- इसका कारण जानकर मवाद निकालें- इसके पीछे जो पित्त या रुधिर अधिक होतो उन औषधों से कुल्ली करें जो तेरहवें पाठ में लिखगये हैं- और वंसलोचन-गुलनार-माजू-कपूर-सबको पीसकर मुंह के भीतर छिड़कें- और जो घाव होजाय तो- सिरके और नमक से कुल्ली करें- कि मवाद ऊपरका निकल जाय- और जो सिरके की सहार नहोतो- केसर को पानी में औटालें- और जो यह रोग कफ़ की अधिकता से होतो- सामीरां- हड़- अकरकरा- सिरके में औटाके कुल्ली करें- और जो सोदा से होतो- मेंहदी की पत्ती चबावें- और माजू- धनियां अनार के छिलके- सिरके में औटाके कुल्ली करें ॥

बच्चों के मुंह आने में शीरखिश्त को मकोय के पानी में घोलकर कुल्ली करावें- और गावज़बां जलाके छिड़कें ॥

पन्द्रहवांपाठ १५

आकिलतुलफ़म के विषयमें

यह रोग बहुत ही बुरा है- इसमें घाव सारे मुंह में फैल जाता है- इसका उपाय यह है कि- जले हुये मवाद को निकालें-

और उन औषधों से कुल्ली करें जो चौदहवें पाठ में वर्णन हो चुके हैं- और जब घाव फैलने से ठहर जाय तो- फिल्द फियून- या सुरतीजान- घाव पर लगावें- और जो इनसे न अच्छा होतो- लुआबों से या ताज़ह दूध में शक्कर मिलाकर कुल्ली करें॥

सोलहवां पाठ १६

जागते और सोते में मुंहसे बहुतसी राल बहना

इसका कारण यह है कि मेदे में गरमी और तरी होगी- या ठंढ और तरी विशेष होगी- पहिचान गरमी और तरी की यह है- कि खाली पेट में राल बहुत बहेगी- और ठंढ और तरी की पहिचान यह है- कि पेट भरे पर राल अधिक आवेगी- और मुख का स्वाद खट्टा होगा और भोजन न पचेगा- जो मवाद अधिक होय निकालें- और गरमी में हरी कासनी को नमक के साथ कूट कर चबावें और रस उसका निगलें- और ठंढ में कुन्दुर और मस्तंगी चबावें॥

सत्तरहवां पाठ १७

मुखसे दुर्गन्ध आने के विषय में

जो इसका कारण केवल मुख ही में होतो उस मवाद से साफ़ करें- और जो मेदे से मवाद गिरता हो या मेदे में गरमी होतो भेजे और मेदे से मवाद को निकालें- और इव्वुल मिस्क मुख में रक्खें और दंतधन किया करें- और तिली का तेल या रोग़न गुल की कुल्ली कभी २ नहार मुख कर लिया करें॥

अठारहवांपाठ१८

तालूकीसूजनकेविषयमें

यहरोगयातोरुधिरकीअधिकतासेहोताहै या बलग़म की अधिकता से - जोरुधिरकीअधिकतासे होगातो - तालू में पीडा औरलाळीहोगी - और जो बलग़म से होगा तो - सफेदी होगी पीडा न होगी - पहिलेमवादको निकालें और जो कुल्ली ऊपर के पाठ में लिखी गई हैं मवाद के अनुसार करें ॥

ॐ

सातवांअध्याय

होठोंकेरोगों के विषय में

पहिलापाठ१

होठोंपरसफेदीहोजानेकेविषयमें

यहरोगकोढ़से अलग है - इसमें बलग़म निकालें और भारी वस्तु न खावें - और चमेली और बेरीका तेलनाक में डालें ॥

दूसरापाठ२

होठकी खुश्की औरफटने और छिलके उतरने के विषय में

वह उपाय करें जो मुखके रोगों में लिखागया है - और होठ को हवा न लगने दें - और माजू - निशास्ता - कतीरा कूट छान कर लगावें - और जो घाव लगावें उसके ऊपर अंडे का पतला

छिलका जो भीतर होता है चिपकादें - कि हवा से फटे नहीं ॥

तीसरा पाठ ३

होठ के फड़कने के विषय में

जो रुधिर रगों से होठ में आकर रीह बन जाय और उस से होठ फड़के तो सराररू फस्द खोलें और भोजन कम खावें - और जो वह रीह बहुतर गाढ़ी होतो सिर के फड़कने का जो उपाय है करें और जो मेदे का विगाड़ होतो जी मचलावेगा और हिचकियां आवेंगी और कै आने में नीचे का होठ फड़केगा - इससें कै बहुतसी कराडालें॥ और जो भेजे के विगाड़ से होतो - उसके पीछे लकावा और मिरगी होगी - उपाय इसका यह है - कि तर वस्तु न खावें और पानी थोड़ा पीवें - और ऐसा उपाय करें कि लकावा और मिरगी न होने पावे ॥ मेरे ३/१ अना ६ नि ५ ली

चौथा पाठ ४

होठ के छोटा होजाने और सुकड़जाने के विषय में

जो तशन्नुज तरी से हो तो मवाद को निकालें और गर्म तेल मलें - और जो खुश्की से होतो उसका उपाय कठिन है ॥

बच्चों को जो यह रोग होजाता है - वह खेंचने और बांधने से अच्छा होजाता है ॥

पांचवां पाठ ५

नीचे के होठ पर अधिक मांस उत्पन्न होजाने के विषै में

रुधिर और सौदा का मवाद निकालें - और मसूर या शरदाग का मरहम लगावें - और मवाद निकालने के पीछे रंग इस

सांसका कालाहोतो पछने लगावें और सिरका मलें और जो रंगलाल होतो कुछ उपाय नकरें ॥ ओ। ५ २८ ७४३।

छठापाठ ६

होठकी सूजनके बिषयमें

जो रुधिरकी अधिकता सेहोतो फ़स्द खोलें और लेपलगावें और रसोत को हरी मकोय के रसमें घोलकर लगावें-यह उपाय गर्म सूजन में बहुत लाभदायक होगा - परंतु यह लेप दूसरे ग के होते ही लगावें- और अंतमें बादाम के तेल का मरहम लाभदायक है ॥

सातवांपाठ ७

होठपर फुन्सियां होजाने के बिषय में

मवाद को निकालें - और जो घाव पड़जाय तो लेप और मरहम लगावें ॥

आठवांपाठ ८

होठमें घाव पड़के पीपबहना

उसी प्रकार से मरहम लगावें ॥

नवांपाठ ९

होठमें घाव पडके फल[illegible]

इसका यह उपाय करें जो ऊपर के . १०

. . ।६ ९॥

जब होठ में

करना चाहिये-इस प्रकार से कि गरमी से होतो नर्म कपड़ा हरे धनियां के पानी में और हरे बारतंग के पानी में और हरी कासनी के पानी में और गुलाब में भिगोकर बर्फ से ठंडा करके होठ पर रक्खें-और कपूर और चंदन को ईसबगोल के लुआब और गुलाब में पीस कर लगावें और सूखने न दें॥

और जो ठंड से होतो-मुश्क-जुन्द बेदस्तर-अकरकरा-चम्बेली और नरगिस का तेल लगावें॥

और जो खुश्की से होतो रोगन बादाम-लुआब इसबगोल आशजौ शक्कर मिलाकर पिलावें-और रोगन बनफशा-रोगन कदू आदि में मोम पिघलाकर लगाया करें॥

और जो तरी से यह रोग होतो-कलचेका उपाय करें और जो मवाद न हो तोभी फस्द और जुल्लाव दें॥

आठवां अध्याय

दांतो और मसूड़ों के रोगों में

पहिला पाठ १

दांतों की पीड़ा के विषय में॥

जो गरमी से होतो ठंडे पानी से थम जायगा-और जो सरदी से होतो गरम पानी से और जो कोई बिगाड़ मिज़ाज में गरमी से बे मवाद के होतो सिरके और गुलाब से कुल्ली करें और ठंडे बिगाड़ में बायबड़ंग को औटाके कुल्ली करें-और जो किसी मवाद से होतो उसी के अनुसार उस मवाद को निकालना चाहिये-इस के पीछे उपाय करें और जो पेट भरे पर पीड़ा हुआ करे तो कारण

इसुआ मेदें का विगाड होगा-उससमय मेदे का मवाद निकालें और हज़म करने वाली औषधे दें-और भोजन में धनियां बहुत डालें-इस्से कै करानानहीं चाहिये-और जो एक जगह से दूसरे जगह फैलता और फिरता होतो बाय से होगा-पहिले इससें मवाद को निकालें फिर सोंफ़-अनीसून और ज़ीरा को औटाके कुल्ली करें ॥

और जो कीड़े पड़ने से दांतमेंपीडा होतो दांत में पहिले छेद पड़ाहोगा-इस्में गन्दनी के बीज-खुरासानी अजवायन प्याज़ के बीज कूट छानकर मोम में मिलावे आग में जलावें और धूंआ उसका नरकुल की राह से दांतको पहुंचावें॥

गन्धक का अर्क पीडामें दांतपर डालना लाभदायक है परंतु और दांतों पर लगने न पावे-जो इससे जो मिज़ाजमें बिगाड़ होजाय उसमें कल्ले को सेंकना और सोने या लोहे की सलाई से दाग देना अति लाभदायक है चाहिये कि कई बार इस उपाय को करें-परंतु ऐसा न हो कि दाग़ और किसी दांतपर लगजाय

जो दांतो के हिलने से पीडा हो और दांत थोड़े हिलते हों तो-उनको पुष्ट करें-और जो बहुत हिलते हों तो उनको निकलवा डालें-परंतु पहिले जड़को ढीला करलें-नहीं तो आंख को हानिदायक है-और पीडा के थमने के लिये अक़रक़रा-अफ़ीम कुन्दर की भाड़न पीस के स्त्री के दूध में मिलाके दांतपर लगावे

दूसरा पाठ २

दांतों के कुन्द होजाने के विषय में

जो कारण इसका खट्टी या कसैली वस्तु खाना होतो गर्म

[illegible] या दीजचवामें और गर्म रोटी दांतों में दा
और जो केवल [illegible]नी से होतो कड़वा बादाम और जोज़ हिन्द
और जो कोई भीतरी कारण हो तो खट्टी डकारें आवेंगी-
[illegible] और थूक बहुत आवेगा-इसमें व
लगम या सौदा का मवाद कै से निकाले- क्योंकि मवाद का मेदे
से कै के साथ निकलना सहज है- और दर्द न होने से कोई मवा
द भी दांतों पर नहीं गिर सक्ता॥

तीसरा पाठ ३

दांतों की आब जाते रहने के विषय में

इस रोग में हर प्रकार वस्तु खाई और चबाई नहीं जाती इससे पहिले मवाद को निकालें- और बकरी की तिल्ली भूनकर गर्म दांतों पर रक्खें- और जो मिज़ाज में कोई बिगाड़ गरमी से होतो रोगन गुल और काफ़ूर की कुल्ली करें॥

चौथा पाठ ४

दांतों के टूटने और खोखले होजाने के विषय में

इसमें भेजे को मवाद से साफ़ करें- और रसोत- माज़ू- अक़रक़रा- मंजन बनाकर दांत पर मलें॥

और जो दांतों की तरी जाते रहने से होतो दांतों में खुजली होगी और घुलने लगेंगे- इसका उपाय नहीं हो सक्ता- परंतु दांतों के थांभने के लिये तर औषधें दें॥

पांचवां पाठ ५

हफ़र के विषय में

इसरोग में दांतकी जड़ में एक वांवाड़ सा उत्पन्न होजाता है जो मवाद अधिक हो उसे निकालें - फिर लोहे की नहरनी से उसे काटडालें - और नमक - समुन्दरफेन - दरमैना - जलाकर मलें - इससे रहा सहा जातारहता है - और फिर उत्पन्न नहीं होता ॥

छठापाठ६

दांतके रंगबदलजानेके विषयमें

जो दांत का रङ्ग पीला होतो पित्त की अधिकता होगी और जो नीली होतो सौदा की और जो चूने कासा रंग होतो बलगम की अधिकता होगी - मवाद के अनुसार उसे निकालें और पीला होने में मसूर सिरके के साथ मिलाकर मलें - और काले रंग में वि ... की जड़ रोग़न गुलके साथ मिलाकर मलें और सफेदी में म स्तगी का तेल मलें ॥

सातवांपाठ७

दांतोंकेहिलनेकेविषयमें

जो बच्चों और बूढ़ों को होतो उसका उपाय न करें - परंतु इस के सिवाय भीतरी या बाहरी कारण से होतो उसका उपाय करना चाहिये ॥

दांततरी की अधिकता और रुधिर के विगाड़ से हिलने लगते हैं - के बिगाड़ में फस्द सरारू और चाररगों की खोलें - और ठुड्डी पर पछने लगावें - और मसूढ़ों पर जोंक लगाना अतिलाभ दायक है - और फिर दांतों का पुष्ट करने वाला मंजन मलें - और जो इससे भी फायदा नहो तो - दांतों को उखाड़ डालना

चाहिये-परंतु पहिले दांतकी जडको इस प्रकार ढीला करले कि नश्तर से चीरडाले - और उसपर इन्जीरके पत्ते उसी के दूध में मिलाके दोतीन दिन मले-दांतढीला होजायगा और उखडने में सुगमता होगी ॥

आठवांपाठ ८

दांतकालम्बा औरमोटाहोजाना

जोरुधिरकी अधिकताहोतो पीडाभी होगी-इससे फस्द खोलें और मवाद को निकालें ॥

जोबलग़म की अधिकता होगीतो पीडानहोगी-इस में उसीमवाद को निकालें और उसी के अनुसार कोई उपाय करें ॥

कभीऐसाभी होता है कि और दांत घिस कर छोटे होजातेहैं और केवल एक दांत लम्बादिखाई देताहै - यह कोई रोगनहीं है - जोइसका उपायकरनाहोतो उस बडे दांत कोभी सोहन या आरीसे रगडकर औरदांतों के बराबर करलें ॥

नवांपाठ ९

दांतोंमें खुजलीहोनेकेविषयमें

इसमेंरोगीको दांतरगडने या कोई वस्तु चबाये बिना चैन नहीं पडता-सारे बदन औरविशेषकर भेजे का मवाद निकालें औरखट्टी औरतेज औरखारीवस्तु न खावें - और चूके की जड को सिरके में औटाके या शिकंजबीन अन्सली को पानी में घोलकर कुल्लीकरें ॥

दसवां पाठ १०

सोते में दांत रगड़ने के विषय में

जो तरी से होतो भेजे से मवाद निकाले - और कुटकी तेल गर दन पर मले नहीं तो केवल मिज़ाज के ठीक करने से ही फायदा हो जाता है ॥

लड़कों के दांत सुगमता से निकलने का उपाय यह है - कि मधु घी कल्ले पर मले और कड़ी वस्तु न चबाने दें - और हरी मकोय का रस रोगन गुल से मिलाकर गुन गुना करके मले - और अंगुली से मसूढ़ों पर लगावें इससे जो पीड़ा दांत निकलने में होती है न होगी ॥ गा्मि-८०१२२५

ग्यारहवां पाठ ११

मसूढ़ों की सूजन के विषय में

जैसा मवाद हो उसी के अनुसार मवाद को निकाले - और वैसी ही औषधों से कुल्ली करें - ॥

बारहवां पाठ १२

मसूढ़ों से रुधिर बहने के विषय में

जो यह मसूढ़ों के कमज़ोर होने के कारण से होतो माजू- और मसूर और वंसलोचन पीसकर मलें और जो रुधिर की अधिकता से होतो फ़स्द खोलें और ठंढी औषधों से कुल्ली करें ॥

तेरहवांपाठ१३

मसूढों से घाव और नासूर होजाने के विषय में

मसूढों से पीप निकले तो घाव होगा॥ और जो ऐसे ही चालीस दिन व्यतीत होजायँ तो नासूर कहलायगा- मुंह आनेका जो उपाय हैं वही इसका भी करें- और नासूर को सलाई से दाग दें॥

चौदहवांपाठ१४

दांतोंकी जड़ में कमजोरी होने से दांत हिलने के-विषयमें

इस रोग में दांतकी जड़का मांस काम और सुर्ख होजाता है- गुलाब के फूल- चकोत- गुलनार- हब्बुल आस- हर एक की दह चौदह माशे- स्वरनूर्वनिवती- सिमाक- अकाकुरा- हर एक १४॥ माशे पीसकर मसूढों पर जमादें ॥ ८८२॥ ५.

पन्द्रहवांपाठ१५

मसूढों परबुरा मांस उत्पन्न होनेके विषयमें

कभी २ पिछली डाढ के पास सूजन होके बुरा मांस उत्पन्न हो जाता है- मुर्दार संगी- फिटकिरी हरी- पीसकर इस मांस पर मलें तो गल जावेगा ॥ ८२५२

नवां अध्याय

गले और कौव्वे और मरी और कुसंबेरया केरोगों

मरी उस राहको चाहते हैं जिससे खाना और पीना पेटमें उत-रता है ॥

कुसवैरेया वह राह है, जिससे मनुष्य दम लेता है ॥

पहिलापाठ १

कव्वेकी सूजनके विषयमें

जो मवाद अधिक हो उसी को निकालें– इसके पीछे रुधिर और पित्तकी अधिकतामें सिरके और गुलाव और हरी मकोय आदिसे कुल्ली करें और बलगमी में– काञ्जी और शिकंजवीन और राई पानीमें औटाके कुल्ली करें– और सौदाकी अधिकतामें अमलतास को ताजे दूधमें घोलकर कुल्ली करें ॥

दूसरापाठ २

कव्वेके लटक आनेके विषयमें

जो वह रुधिरकी अधिकता से होतो फस्द खोलें– और सिरके और गुलाव से कुल्ली करें– और गुलाबके फूल– चन्दन– गुल नार– कापूरको पीसकर कव्वे पर मलें ॥

और जो बलगम की अधिकता सेहोतो बलगम को निकालें और शहद को पानीमें औटाके कुल्ली करें– और जली हुई फिट करी– और बारह सिंगा– नौशादर के साथ पीसके किसी पत ली वस्तु पर रखके कव्वे पर जमाके ऊपर को उठावें– और साजू सिरके में पीसके या मुलतानी मिट्टी जली हुई सिरके में गूंद के या सरेश सिरके में पिघलावे और उसमें इसबगोल मिलाके सिरके ऊपर तालूकी जगह लेप करें जब वह सूख-

जायगा वो तालू की खाल ऊपर को खिंचेगी - इस से कव्वा भी ऊपर को उठ आयगा - जो इन उपायों से कुछ लाभ न हो - और गला बन्द हो जाने का डर हो तो - दस्तकारी करनी पड़ेगी - अर्थात बहुत सावधानी से जितना उचित हो काटलें - परंतु इस के काटने और गलाने में बड़ा डर है - अधिक कट जाने से - शब्दों का उच्चारण अच्छी प्रकार नहीं होसक्ता ॥

तीसरा पाठ ३
खुन्नाक के विषय में

इस रोग में गले के भीतर सूजन होजाती है और सांस रुकती है और खाना पीना बन्द होजाता है - जो रुधिर और पित्त की अधिकता हो तो - सरारू फस्द खोलें - और जीभ के नीचे जो रग है उसकी फस्द करें - और रुधिर कई वार थोड़ा २ निकालें - और जो रोगी कमज़ोर न हो तो एक चार जितना चाहें रुधिर निकालें - और जो उसके पीछे फिर जरूरत पड़े तो थोड़ा थोड़ा रुधिर निकालें - और जो कब्ज़ हो तो मवाद को नर्म करें और निकालें फिर सिमाक और ठंडी औषधों से कुल्ली करें और गर्मी निकालने के लिये ठंडे शर्बत पिलावें और भोजन की जगह आशजो पिलावें और जो खांसी पैदा करने वस्तों से कुल्ली करावें और पिलावें - जो सूजन बाहर गर्दन पर हो आवे - तो उसपर पछने या जोकें लगावें - इससे भीतर का मवाद बाहर निकल आवेगा - और रुधिर की अधिकता में पिंडली पर पछने लगावें लाभदायक है - जब इस रोग को तीन दिन व्यतीत होजाय - तो अमलतास गाय के दूध में घोलकर कुल्ली करावे - जब रोगी बहुत कमज़ोर हो

वोहकीमके पास आवेतो वे जरूरत फस्द न खोलना चाहिये- जव यह सूजन पकजाय और आपसें आप न फूटे तो बूरी अरमनी- और हींग अबाबील की बीट दूधमें घोलकर कुल्ली करा वेइस से फूट जायगा- फिर शहद और दूधको मिलाकर कुल्ली करें- कि पीप साफ होजाय- और भोजन की जगह यह हरीरे खिलायें गेंहूकी भूसी पानीमें भिगोकर छानलें- और उसमें रोगन बादाम डालकर औटावें- और थोडीसी शक्कर मिलाकर हरीरा बनालें ॥

गलेकी पीडामें ठंडी औषध गले पर न मलें परंतु मवाद निकालने के लिये पीछे बूरे अरमनी जिफ्त और राई पानी में पीसकर गलेपर लगावें मवाद भीतर से बाहर खिंच आवेगा और ठुड्डी पर पछने लगावें ॥

जो यह रोग बलगम की अधिकता से होतो जुल्लाब पिलावें और मूली के पत्तोंके रसमें सिकंजबीन घोलकर कुल्ली करें और जो यह रोग बहुत बढ़जाय तो जीभके नीचे कीरगकी फस्द खोलें और गुद्दीके ऊपर और ठुड्डीके नीचे पछने लगावें ॥

और जो सौदाकी अधिकता से होतो फस्द बासलीक खोलें और नश्तर गहरा लगावें और जुल्लाब दें और दूध और अमलतास की कुल्ली करें और मेथी और कासकाल्के के पत्ते कूटके उसके रसमें रोगन नरगिस और बतख की चरबी मिलावे गलेके चारों ओर लगावें ॥

खुन्नाक कण्ठी बहुत बुरा रोग है इसमें रोगी अपना मुख कुत्ते की प्रकार खोल देता है जीभ बाहर निकल आती है यह गलेके उनके की सूजनके कारण से होता है -

जाय्गावो तालूकी खालऊपरको खिंचेगी-इससे कव्वा भी ऊ
परको उठ आयगा- जो इन उपायों से कुछ लाभ नहो- और
गला बन्द होजाने का डरहोतो-दस्तकारी करनी पड़ेगी- अ
र्थात् बहुत सावधानी से जितना उचितहो काटडालें-परंतुइस
के काटने और गलाने में बहुतडरहै- अधिक काटजाने से-
शब्दोंका उच्चारण अच्छीप्रकार नहीं होसक्ता ॥

तीसरापाठ ३
खुन्नाक के विषयमें

इसरोग में गले के भीतर सूजन होजाती है और सांस रुक
ती है और खाना पीना बन्द होजाताहै- जो रुधिर और पित्तकी
अधिकता होतो-सरारू फास्द खोलें- और जीभ के नीचे जो
रग है उसकी फास्द करें- और रुधिर कई बार थोड़ा २ निका
लें- और जो रोगी कमज़ोर न होतो एक बार जितना चाहें रु
धिर निकालें- और जो उसके पीछे फिर जरूरत पड़े तो थोड़ा
थोड़ा रुधिर निकालें -औरजोकब्ज़होतो मवादको नर्मकरें औरनि
कालें फिर सिमाक औरठंडी औषधों से कुल्ली करें औरगर्मी निकालनेको
ठंडे शर्वत पिलावें और भोजनकीजगह आशजौ पिलावें औरजोखार
वाली वस्तोंसे कुल्ली करावें और पिलावें- जो सूजन बाहर ग
रदन परहो आवे- तो उसपर पछने या जोकें लगावें-इससे
भीतरका मवाद बाहर निकल आवेगा- और रुधिर की अधि
कता में पिंडली पर पछने लगावें लाभदायक है- जबइस
रोगको तीन दिन व्यतीत होजाय-तो अमलतास गायके
दूधमें घोलकर कुल्ली करावे-जब रोगी बहुत कमज़ोर हो

को

केहकीमके पास आवे तो वे जरूरत फस्द न खोलना चाहिये - जब यह सूजन पक जाय और आपसे आप न फूटे तो चूरे अरम नी - और हींग अर्वाबील की बींट दूध में घोलकर कुल्ली करा वे इस से फूट जायगा - फिर शहद और दूध को मिलाकर कु ल्ली करे - कि पीप साफ होजाय - और भोजन की जगह यह हरीरा खिलाये गेहूं की भूसी पानी में भिगोकर छानले - और उसमें रोगन बादाम डालकर औटावे - और थोडीसी शक्कर मिलाकर हरीरा बनाले ॥ २६२ - ३०३ - ५४७

गलेकी पीडा से ठंडी औषध गले पर न मलें परंतु मवाद निकालने के लिये पीछे चूरे अरमनी जिफ्त और राई पानी में पीसकर गले पर लगावें मवाद भीतर से बाहर खिंच आवेगा और ठुड्डी पर पछने लगावें ॥

जो यह रोग बलगम की अधिकता से होतो गुल्लाब पि लावें और मूली के पत्तों के रस में सिकंजबीन घोलकर कु ल्ली करें और जो यह रोग बहुत बढ़ जाय तो जीभके नीचे की रगकी फस्द खोलें और गुद्दी के ऊपर और ठुड्डीके नीचे पछने लगावें ॥

और जो सौदाकी अधिकता से होतो फस्द बासलीक खो लें और नश्तर गहरा लगावें और गुल्लाब दें और दूध और अ मलतास की कुल्ली करें और सथी और कासनी के पत्ते कूट के उसके रस में रोगन नरगिस और बतख की चरबी मि लाके गलेके चारों ओर लगावें ॥

खुन्नाक कल्बी बहुत बुरा रोग है इसमें रोगी अपना मुख कुत्ते की अकार खोल देता है जीभ बाहर निकल आती है यह गले के उजेके की सूजन के कारण से होता है -

उपाय इसका फ़स्द और जुल्लाब से करें- और कभी गरदन के
नोडों के हटजाने से भी ऐसा होता है- चाहिये कि नोडों को ठी
क करें ॥

एक प्रकार खुन्नाक की और है जिसे जुन्हा कहते हैं-य
ह सब से बुरी है इसमें रोगी के मुख से बात तक नहीं निकल
सक्ती-न कुछ निगल सकता है और जो कुछ पिलाते हैं तौग
ले से पंदा पड के नाक से निकल आता है--ऐसे समय में जो ग
ले पर लाल रंग होजाय तो बहुत अच्छा है-उपाय इसका वह
है जो ऊपर लिखा गया ॥

जब रोगी कोई वस्तु निगल न सके तो गरदन के दूसरे मो
हरे पर सींगी लगाकर चूसें उससे खाना उतरने की जगह कुछ
खुल जायगी और पतली वस्तु उतरने लगेगी और जब दम रु
क जाय तो गले में छेद करदें उसकी रीति बड़ी पुस्तकों में लि
खी है॥

चौथा पाठ ४

गले और मरी और कुसवेरे यामें फुन्सियां होजाने के विषय में

मरी में फुन्सियों का चिन्ह यह है कि निगलने के समय पी
ड़ा बहुत होगी और खट्टी और तेज और कड़ी वस्तु खाने से और
भी अधिक होगी और कुसवेरैया की फुन्सियों का चिन्ह यह है
कि बात करने में और चबाने में और थूक और रेत पहुंचने से
अधिक पीड़ा होगी और निगलते में कठिन मालूम होगा- फ़स्द
खोलें और खट्टे मेवों का पानी पीवें और बहुत ठंडा पानी न पिये

करें और तेज़ और खुश्क भोजन न खावें- और जब जानें कि दंभ पक गये तो मवाद को मकावें और फूटनेके पीछे साफ करने का उपाय करें- जैसा कि खुन्नाक़ में लिखागया ॥

और गले में जो फुन्सियां पडें तो वही कुल्ली करें जो खुन्नाक़ में लिखी गई हैं ॥

पांचवांपार ५

गलेमें जोंक चिमट रहनेके बिषेमें

बहुधा ऐसे पानी होते हैं जिनमें छोटी जोंक होती है- जब बिना देखे कोई उस पानी को पीता है तो जोंक गले में यामरी या कुसबेरेया में चिपट जाती है- कभी तालूकी राह से नाक की ओर चढ़कर चिमट रहती है ॥

जो जोंक गले में नीची हो और दिखाई न दे तो आपसे आप रुधिर वह निकलेगा और बेचैनी होगी ॥

और जो कुसबेरेया में चिमटे तो हरदम खांसी आवेगी- और जो नाक के पास चिमटे तो नाक में रुधिर बहेगा- और द माग बन्द होजायगा- और कभी खखार के साथ मुंहसे रुधि र निकलेगा ॥

जो गले में ऊपर को दिखलाई दे तो पहिले मोचने से सिर उसका दबोचके थोडी देर ठेरे रहें वह मुंह खोल देगी फिर उ सको निकाल लें- और जो दिखाई न देती हो तो काली मि ट्टी एक पोटली में बांधके मुंह में गलेके पास लेजायं वह मिट्टी की सुगंध से पोटली में चिमट जायगी फिर उस पोटली को निकाल लें ॥

और जो तालू में चिमटी हो तो कोले का रस और कुट-

की सिरके से भोटाके नाकमें डालें- जोइसके जोंक पेट में जा पड़ेतो जल्दी से के करावें- और जो कै से न निकले या कै न आवेतो जुल्लाबदें ॥

पानी बहुत सावधानी के साथ देखके और छानके पीना चाहिये ॥

छठापाठ ६

सुई निगल जाने के विषयमें

चुम्बक पत्थर को गुलाब में पीसकर नहार मुख पिलावें- और घड़ीके पीछे जुल्लाब दें- और फिर मेदे को ठीक करें ॥

सातवांपाठ ७

नरीके भिंचजाने के विषेमें

इसमें पतली वस्तु तो गले से नीचे नहीं उतर सकती- और गाढ़ी वस्तु उतरजाती है इयारिज खिलाके बलगमको निकालें- और अनीसून कुन्दर- सुम्बल- लालबहमन- और सफेद बहमन- और टके और छानके थोड़ा २ पिलावें- और ठुड्डी के नीचे पछने लगाके जुन्द बेदस्तर और शिकंजबीन गालें या बारे लगावें ॥

आठवांपाठ ८

नरखरे के ढीले होजाने के विषेमें

चिन्ह उसका यह है कि सांस नहीं लीजाती या बिलकुल बन्द होजाती है ॥

इसका उपाय कहीहै – जो ऊपरके पाठ में लिखागया और जब सांस बिलकुल न लीजाय तो जल्दी से गलेमें छेद करके लोहेया तांबे या पीतल की नली उसमें अटकादें – कि रोगी उसमें से सांस लेवे और फिर उसका उपाय करें ॥

नवांपाठ ९

सरीसें खुजली होने के विषय में

बेकाढ़ें और पुराने सिरके से कुल्ली करें – और दूध और शकर एकर चूंट करके पीवें ॥ धो२० धो२०

दसवांपाठ १०

कुसबैरेया के फड़कने और कांपने के विषय में

फड़कने का चिन्ह यह कि बात करने में हर घड़ी रुक्के कुस कुसहोगी – और कांपने का चिन्ह यह है कि बात करने में कंप कपी मालूम होगी – जैसा कि बूढ़ों को होता है – इसका उपाय वही है जो रेशे – और इस सलाज का उपाय है – और इसमें कुल्ली करना भी लाभ दायक है ॥

ग्यारहवांपाठ ११

डूबे हुये के उपाय में

जब आदमी को पानी से निकालें और उसे होश न हो परंतु दम आता जाता हो उसको उलटा लटका कर पेट उसका दबावें कि पानी निकल जाय और मिर्च और सोंठ सिरके में औटाके उस के मुंह में टपकावें कि होश में आवें इसके पीछे हरीरा बेसन और दूध कादें कि पेट पड़ा ठीक होजाय और जब देखें कि सांस

आती जाती नहीं है तो जानें कि– वह मरगया ॥

बारहवां पाठ

गला घोंटे हुये और फांसी दिये हुये का उपाय

जो दम आता जाता देखें तो जल्दी से फन्दे को काट दें– फिर देखें कि उसके मुख में काफ है या नहीं– जो न हो तो सरारू फस्द खोल दें– और तलवों में राई मलें जब उसको होश आजाय तो रोगन बनफशा और गर्म पानी से कुल्ली करावे– और जो मुंह में झाग पा जाय तो उसके जीने की आस नहीं ॥

तेरहवां पाठ १३

उसर उल्बला के विषय में

इस रोग में कठिनाई से निगला जाता है– जो यह गले के तंग होजाने से हो तो खुन्नाक और मरी के भिंचजाने का उपाय करें जैसा ऊपर लिखागया है– और जो मरी में कोई बिगाड होजाने से यह रोग हो तो– कारण के अनुसार इस बिगाड को दूर करें और दोनों कंधों के बीच में लेप करें– इस लिये कि मरी पीठ की ओर है और बासवैरै या छाती की ओर ॥

चौदहवां पाठ १४

मरी की सूजन के विषय में

जैसा मवाद हो उसी के अनुसार उसे निकालें और वैसे ही शरबत पिलावें ॥

——:०:——

पन्द्रहवांपाठ १५

मरीमें घाव पड़जाने के विषयमें

चिन्ह इसका यहहै कि मरीकी जगह पीड़ा होगी और तेज़ और खट्टी वस्तु के खाने में दुःख होगा और चिकनी वस्तु भली भांत निगली जायगी और मरीकी सूजनके चिन्ह इस्से विपरीत हैं और घाव कभी रफ़ूजाने के पीछे पड़ा करता है-और कभी बिना सूजन के गर्म मवाद के कारण पड़ जाताहै-उपाय इसका यह है कि सफेद सोंस रोग़न गुल में पिघलाकर एक एक घूंट करके पिलावें-परन्तु इस मे पहिले दो तीन दिन शहद और दूध और शक्कर मिलाकर पिलावें-कि घाव साफ़ होजाय॥

सोलहवां पा० १६

आवाज़ बन्द होजाने और पड़जाने के विषयमें

इसमें पहिले यह देखें कि नज़ले से है या गले के किसी बिगाड़ से-जो नज़ले ने होतो खशखश का शरबत पिलावें-और पोस्त खशखश से कुल्ली करें इससे नज़ला रुक जायगा-और जो गले के बिगाड़ से होतो जैसा उचित हो वैसा उपाय करें॥

- कबाबचीनी चबाना-बाकला-मुनक्के-छुहारा-ज़ंजीर चिलगोज़ा-बादाम-गन्ना-शहद-अलसी के बीज-इनमें से हर एक आवाज़ को साफ़ करता है॥

नज़ले के लिये रूमाल गले में लपेटे रहैं-और सिरको ठंडी हवा से बचावें॥

दसवांअध्याय

छातीऔरफेंफडेकेरोगोंकेबियेमें

पहिलापाठ१

दम के वर्णन में

यहरोग वडीकठिनाई सेजाताहै औरदूरहोकर फिरहोजाता है- इसके उपाय में जितनी जल्दी होसके करें- जो वलग़म से होतो खांसी के साथ वलग़म निकलेगा- और छाती में खरखरा हट पाईजायगी- इसमें पहिले वलगमकी सुन्जिशें दें- फिर जुल्लाव देकर मवाद निकालें और बहुत गर्म दवा नदें जिस से खुश्की रहजाय या मवाद गाढा पडके जम जाय- और मवाद निकालने के पीछे शरवत जूफा दो तोले गर्म पानी में घोलकर सवेरे और संध्या को सोने के समय पिलावें- और कभी कभी मूली के बीज शहद के साथ औटाके क़ै कराया करें और जिससमय वलग़म की अधिकता होतो- अलसी कुचली को पानी में औटाकर शहद मिला कर पिलावें- इस से बहुत जल्दी चैन होजा यगा- और अलसी के तेलमें मोमको पिघलाकर छातीपर म लाकरें ॥

औरजो यह रोग दिलकी गरमी से होतो चिन्ह उसका यह हैकि नाडी और सांसजल्दी जल्दी औरभारी चलेंगी औरप्यास बहुत होगी औरठण्डीहवा अच्छीमालूम होगी-इस में वायें हा थ से फ़स्दवासलीकरखोलें औरलुआव औरनर्म करने वाली औषधें पिलावें औरहाथपांव मलें ॥

और जो यह रोग फेफड़े में अधिक गरमी होजाने से होतो नाडी जल्दी जल्दी चलेगी परंतु भारी नहोगी और प्यास बहुत होगी और ठंडी हवा अच्छी मालूम होगी इससे ठण्डी ओषधें पिलावें और लगावें ॥

और जो यह रोग छाती के उजलों के ढीला पडजाने से होतो नाडी धीमी होगी और सांस दुहरी आवेगी जैसी किरोने में आती है और छाती को सीधा करे विना पूरी स्वास न आवेगी इसमें फालिजका उपाय करें और मेथी के बीज-दारचीनी-शहद में औटाके सहार घूंट पीवें और रोगन नरगिस मलें ॥

और जो फेफड़े की खुश्की से होतो प्यास अधिक होगी-और आवाज़ धीमी निकलेगी और तरवस्तुओं से लाभ होगा-इसमें फेफड़े को तरी पहुंचावें और तर ओषधें औटाके उसमें रोगी को बिठावें-और बकरी का दूध पीना अति लाभदायक है ॥

और जो फेफड़े की सरदी के कारण से होतो ठण्डी वस्तुओं से हानि होगी और गरमी के चिन्ह न पाये जायंगे-इससे फेफड़े को गरमी पहुंचावें और मेथी के बीज औटाकर पिलावें-और गर्म तेलों को मलें ॥

और जो दमा दम लेने की राहों में हवा भर रहने से होतो सूखी खांसी होगी-और बलग़म न निकलेगा-और बादी वस्तु खाने से और बढेगा-और छाती भारी न मालूम होगी उपाय इसका यह है कि वायको निकालें और जुल्लाब दें-और सोया और बाबूना छाती और पांसों में मलें और माजून फिलासफा खिलावें ॥

और जो यह फेफड़े की सूजन से या जिगर आदि की परदों की सूजन से होतो इसका उपाय उन्हीं रोगों में लिखाजायगा ॥

और जो दमा खुन्नाक के कारण से होतो - इसका उपाय वही है जो खुन्नाक का है ॥

और जो मेदे की तरी से होतो पेट भरने पर दम चढ़ने लगेगा - और खाली पेट में कमी होगी - इसमें मेदे से मवाद निकालें और भोजन कम दें और पचाव की औषधें खिलावें ॥

एक प्रकार इस रोग की बहुत बुरी है - इसमें, छाती को सीधा किये बिना दम नहीं लिया जाता - और करवट से नहीं लेटा जाता कारण इसका या तो कोई गाढ़ा मवाद है या सांस आने की राह में सूजन है या छाती के वजूलों का ढीला होजाना - उपाय हर एक का ऊपर लिख चुके हैं ॥

दूसरा पाठ २

खांसी के विषय में

जो यह फेंफड़े की गरमी ठंड और तरी या खुश्की से होतो पहिचान उसकी लिख चुके हैं उस कारण को दूर करें ॥

और जो रुधिर की अधिकता से होतो नाड़ी भारी होगी और सांस की हवा गर्म होगी और मुख का रंग लाल होगा - इसमें बासलीक फस्द खोलें - और ठण्डी औषधें पिलावें ॥

और जो जिगर की गरमी से होतो - ठंडी औषधें दें और उन्नाब सुलय्यन पिलावें ॥

और जो कोई पतला मवाद भेजे से गले में उतरे तो - गले में सरसराहट होगी और खांसी में बलगम न निकलेगा - और रात को सोने से अधिक होजायगी - इस में नजले को रोकें - और पोस्त खशखाश को औटा के कुल्ली करें - और बबूल का गोंद मुख में रक्खें ॥

और जो भेजे से फेंफडे पर मवाद गिरके गाढा होजाय तो वडे जोरकी खांसी से वलगम निकलेगा– और छाती भारी मालूम होगी और पहिले इस से जुकाम हुआ होगा–इसमें जूफा–इन्जीर–सेथी केवीज–मुलहटी–पानी में ओटाके पीवें–और मुलेहटी का सत–कालीमिरचें–शक्कर–बराबर लेकर गोलियां बनावें और मुख में रक्खें।

और जो फेंफडे और छाती में अधिकतरी होजाने से होतो खांसी में लसदार वलगम निकलेगा और छाती के भीतर खर खराहट होगी–यह बहुधा बूढों और तर मिज़ाज़ वालों को होता है इसका उपाय वही है जो वलगमी दमे का है॥

और जो फेंफडे से धूयें या गर्द पहुंचने या बहुत चिल्लाने से होतो उस कारण को दूर करें–और तर और नर्म वस्तु खावें और औषधों की कुल्ली करें–और बूढी और पारवाने की जगह पी लगावें॥

और जो खांसी किसी और रोग के कारण से होतो उस रोग का उपाय करने से जाती रहेगी॥

और जो फेंफडे में फुन्सियां पड जाने से होतो नाडी जल्दी जल्दी चलेगी और पेशाव में जलन होगी और ठण्डी वस्तों से आराम मिलेगा–इसमें फस्द खोलें और छाती पर पछने लगावें और पित का जुल्लाव दें–फिर जो उपाय गले की फुन्सियों का है वही इसका करें॥

और जो मेदे की तरी से होतो मेदे से मवाद निकालें–और भोजन कम दें॥

और जो फेंफडे में सौदा का मवाद आजाने से होतो खांसी में वलग़म काला और नीला निकलेगा और २ चिन्ह सौदा

केपाये जायंगे- इससे गेहूं की भूसी का हरीरा शक्कर या शहद डा
ल्कर पिलावें और सुल्फिशि देकर सोडा का गुल्ला वदें॥

और जो नरखरे में पानी या और कोई वस्तु जा पड़े और उ
ससे खांसी होतो जब तक वह वस्तु वहां से दूर न होगी- खांसी न
थमेगी- इसके उपाय की जरूरत नहीं है-परंतु कभी ऐसा होता
है कि भारी वस्तु जा पड़ने से मरने का डर होता है-ऐसे समय में छा
ती और गले को सहलावें और कै करावें-इससे वह वस्तु निक
ल आवेगी॥

तीसरा पाठ ३

मुखसे रुधिर निकलने के विषैमें

इसमें पहिले यह देखना चाहिये कि रुधिर मुख के भीत
र से आता है या भेजे से या गले के अन्दर से- जो केवल मुख से
आवेगा तो थूक के निकलेगा॥

और जो भेजे से आवेगा तो खखार के साथ निकलेगा औ
र उसके निकलने से सिर हलका होजायगा॥

और जो गले से आवे तो विना खांसी के निकलेगा॥

और कुसवैरैया का रुधिर कफ और खांसी के साथ नि
कलेगा और छाती में पीड़ा होगी॥

और फेफड़े का रुधिर बहुत लाल होता है-और खांसी
भी होती है- परंतु पीड़ा नहीं होती॥

और छाती का रुधिर काम और फुट की रसा निकलेगा
और खांसी बहुत होगी और घाव की जगह पीड़ा होगी- और चि
लेटने में खांसी और पीड़ा अधिक होगी॥

और जो सरी या मेदे या जिगर या तिल्ली से आता हो तो जिस जगह से आवेगा उस जगह कोई बिगाड़ पाया जावेगा और उसके साथके भी होगा ॥

जो मुखसे रुधिर निकले तो - आसके पत्तो - गुल्नार - माजू - फिटकरी - आदिसे कुल्ली करें ॥

और जो जोंकके चिपटने से आवे तो उसका उपाय लिखचुके हैं ॥

और जो भेजे से आवे तो फ़स्द सराल करें - और गुद्दी पर पछने लगावें - और ऊपर लिखी हुई वस्तो से कुल्ली करें ॥

और जो गले और कुसवेरैया से आता हो तो वही कुल्ली करें - और कुर्सनफ्स उकदम मुख में रक्खें - परंतु कुसवैरैयाका घाव कठिनाई से जाता है - और भीतर के परदे के घावका उपाय हो सकता है ॥

और जो फेंफडे से रुधिर आता हो तो - फ़स्द साफिन और बासलीक खोलें और पिंडली पर पछने लगावें - और जो आवश्यकता हो तो - अकाकिया - कुन्दर - माजु - गुल्नार बंबूल का गोंद - गिले अरमनी - अफ़ीम - बराबर लेकर पीस के मलें - परंतु यह देख लेना चाहिये कि फेंफडे में सूजन तो नहीं है ॥

और जो छाती से रुधिर आता हो तो फ़स्द बासलीक खोलें - और कुर्सनफ्स उकदम मुख में रक्खें और खिलावें - और छाती पर लगावें ॥

छाती का घाव जल्दी अच्छा होजाता है और फेंफडे का घाव बहुत बुरा है ॥

और जो रुधिर मरी और मेदे आदि से आता होतो उसका उपाय आगे लिखा जायगा॥

इस रोग के सब प्रकारों से धोया हुआ शहद ना ५॥ माशे खुरफे- या वारतंग के पत्तों के रसके साथ देना और कुलफे का साग पका कर खाना और साग डंठल समेत कच्चा चबाना और अर्क उसका निगलना अति लाभ दायक है॥

जब रुधिर किसी जगह फेफडे पर गिरे और उसके साथ खांसी नहोतो सिरके और गुलाब से कुल्ली करावें- और थोडासा पिलाभी दें - और जो खांसी अधिक होतो- लाल रशहद में मिलाके चटावें याइन्जीरकी लकडी जलाके पानी में घोलके दें- और हाशा एक प्रकारका पोदीना होता है उसेभी मिलालें तो अतिलाभ दायक होजायगा॥

चौथापाठ ४

मुखसे पीप निकलनेके विषे में

जोपह फेंफडे की सूजन के फूट जाने या सिल आदि से होतो उपाय इसका आगे लिखाजायगा और जो गले और मुखके भीतर से आवे तो खुन्नाक का रोग पहिले हुआ होगा और इन स्थानों में सूजन होगी- इसका उपाय हम लिख चुके हैं॥

परंतु जो पीप छाती से आवे सूजन के फूटने के कारण से तो मवाद को उन औषधों से पतला करें जो बलगमी खांसी में लिखी गई हैं कि मवाद पतला होके टपक जाय और मोम को रोगन बाबूने में पिघला दे मले और कोई ठण्डी वस्तु और कड़े -

करने वाली कूमी नस्खावें - और मवाद के पतला करने के लिये जूफा - और हाशा और इञ्जीर - और मुल्हटी - गोटा के पीना अ तिलाभदायक है - और यह औषध हर पर्दे की सूजन में चाहे वह छाती की हो या फेफडे की और फूट गई हो लाभदेगी॥

जानना चाहिये कि छाती का मवाद फेफडे में उत्तर करन खरे की राह मुख से निकलता है - सिवाय इसके और कोई राह छाती के मवाद निकलने की नहीं है॥

पांचवांपाठ५

फेफडे की सूजन के विषय में

जो सूजन रुधिर या पित्त या खारी बलग़म से होतो तप बहुत होगी और सांस नली जायगी और छाती भारी होगी और पीडा होगी और गालों पर लाली होगी और प्यास बहुत होगी और इन चिन्हों में मवाद के अनुसार कमी और अधिकता होगी इसमें बासलीक फस्द खोलें - और जो रुधिर की अधिकता देखे तो पहिले साफिन की फस्द खोलें - इसके पीछे मतबूरन सुलय्यन से मवाद को नर्म करें - और जो नज़ले से सूजन होतो फस्द सरा रुकारें॥

जानना चाहिये कि फेफडे और छाती और उसके पास में जो सूजन हो उसमें तीन दिन से पहिले फस्द खोलें - और जि धर सूजन हो उसकी दूसरी ओर की फस्द खोलें - और जब मवाद गिरने से रुक जाय तो दूसरी ओर की खोलें - जिधर सूजन हो॥

फेफडे की सूजन में जब तप अधिक होगी तो सूजन की ओर का गाल लाल होजायगा - और भारीपन भी कमी और मालूम

होगा- और सूजनकी ओर लेटने से मुखसे पानी बहुत निकलेगा- जो रोगी कमज़ोर नहो तो-तीन तीन दिन पीछे फ़स्द खोला करें- और उसके पीछें मवादको नर्म करें और मवाद को बाहर खेंचने के लिये छाती पर पछने लगावें॥

और रोगके आदि में ठण्डी औषधें जो मवाद को फेंफडे पर गिरने से रोकें मलें और इसके पीछे सूजन की पकाने अर्थात बिठानेवाली औषधें मलें - और ज़िमाद शोरा पीडा को जल्दी से अच्छा करता है॥

खबरदार जिन औषधोंमें कब्ज़ हो जैसे कासनीका रस वागादा करनेवाली औषधें जैसे शरबत खशखाश और ठंडा पानी इस रोगमें कभी न देना चाहिये- परंतु जो सूजन पित्त से हो उसमें यह औषधें दे सकते हैं॥

इस रोग में छाती को मवाद से साफ करने का उपाय करें और जो तपके लिये ठंडाई पिलानी होतो माउल्शस्ल- और शर्बत गुलाब और आशजोद- और खीरे और लौकी और तरबूज का पानी भी दे सकते हैं- क्योंकि यह साफ करते हैं और इनमें क़ब्ज़ नहीं है- और शिकंजबीन जो बहुत खट्टी नहो अति लाभदायक है और जब सांस लेने में रोगी हांपने लगेतो लुआब इसबगोल पतला करके चान्द और शरबत गुलाब के साथ एक एक घूंट पिलावें- और गुनगुने पानी से छाती और पसली को धोवें- जब तक कि दम ठिकाने से होजाय और पीडा थम्मजाय॥

जहां कहीं सूजन होती है या तो मवाद आप से आप पक के दूर होजाता है या पीप पड जाता है या वह स्थान कड़ा पड जाता है- सूजन पकने के चिन्ह यह है कि रोग में कभी खाल्स होगी और बलगम गले से सुगमता से निकलेगा॥

और पीप पड़ने के चिन्ह यह हैं कि रोग बढ़ता जायगा-और जिस दिन मवाद पकेगा उस दिन बहुत अधिकता होगी परंतु तप और पीड़ा ठहरजाय गी और भारी पना बढ़ जायगा- और जिस दिन सूजन फूटेगी उस दिन जाड़े के साथ तप फिर ज़ोर करेगी॥

और कड़े होजाने के चिन्ह यह हैं कि बहुधा रोगों में कमी मालूम होगी- परंतु दम रुकेगा और सूखी खांसी ज़ोर करेगी और भारी पना भी रहेगा- और कभी यह सूजन कड़े पड़ने के-पीछे भी पकके फूट जाती है- परन्तु बहुत कम- जिस समय सूजन फूट जाय और बलगम की जगह पीप निकले तो बहुत अच्छा है- नहीं तो वह औषधें दें जो चौथे पाठ में लिखी गई हैं और कभी ऐसा होता है कि सूजन भली भांति नहीं पकती- परन्तु किसी कारण से कच्ची फूट जाती है और केवल रुधिर निकलता है ऐसे समय में शीघ्रता से फ़स्द खोलें और वह उपाय करें- जो तीसरे पाठ में हैं॥

और जो फेफड़े की सूजन ठण्ड से हो अर्थात् बलगम या सौदा से तो बलगमी के चिन्ह यह हैं- कि मुख से थूक बहुत निकलेगा और भारी पना और दम का रुकना बहुत होगा और गर्म सूजन के चिन्ह कोई नहोंगे- परन्तु हलकी तप रहेगी और गर्म सूजन में तप अधिक होगी॥

और जो सौदा से हो तो सूखी खांसी होगी और सांस कठिनाई से ली जायगी- और जो पहिले गर्म सूजन हो फिर कड़ी होजाय चिन्ह उसका यह है कि कड़े पड़ने से पहिले गर्म सूजन के चिन्ह पाये जायगे॥

वलगमी में पहिले मवाद को नर्म करें और ऐसी ओषधे मलें जो ठंडी हो- और मवाद को फेंफडे पर गिरने से रोकें और थोडे दिन पीछे जब तप कम होजाय तो वलगम की मुंजिश पिल के जुल्लाब दें ॥

और जो सौदा से हो तो खतमी के बीज और अलसी के बीनों का लुआब रोगन बादाम में मिलाके एक २ घूंट पिलावें और लडकी की मा का दूध और नर्म करने वाली ओषधें मलें- परंतु सौदावी का उपाय बहुत कम हो सकता है ॥

फेंफडे की सूजन में कभी पथरी पडजाती है- फिर स्वांसी थम जाती है- और कभी इससे सिल का रोग हो २ जाता है ॥

छठा पाठ

सिल के विषय में

फेंफडे में घाव पडजाने का नाम सिल है- चिन्ह उसका यह है कि इसमें तपदिक अवश्य होती है और स्वांसी में पीप निकलती है ॥

पीप और वल्वे वलगम के पहिचानने में धोका होजाता है- इसलिये उसकी पहिचान याद रखनी चाहिये- कि पीप पानी में बैठ जाती है- और आगपर जलाने से गंध निकलती है- और वलगम पानी पर तैरता है- और आग पर रखने से गन्ध नहीं देता- इस रोग का उपाय नहीं हो सकता परंतु जो उचित उपाय के साथ दैव योग्य से दूर भी होजाय तो क्या अचम्भा है- जैसा हकीम बूअली सीना ने लिखा है कि मैंने एक स्त्री का उपाय

कियावह तेईस वरस जीती रही और हकीम जालीनूस कहताहै किमैंने इसरोग में जिसका उपाय आदिसे किया वह अच्छा होग या इससे शीघ्रता से फस्द वासलीक उस ओरखोले जिधर पीड़ा नहो और जो फस्द न खोलसकें तोछाती पर पछनेलगावें-और जोइसमें नजला भी होतो फस्द सरारू भीखोले और आशजौ में केवड़े पकाके खिलावें और तपे दिक का उपाय करें- और हकी म बूअलीने लिखा है कि इसरोग में जहां तवाशर या गुलकन्द खि लाया जाय खिलावें- यहां तक की रोटी के साथभी वही खिला याजाय-परंतु यह बात मेरी समझ में नहीं आती-क्योंकि गुलक न्द से दस्त आनेका डर है- और दस्त इस रोग में बहुत बुरे हैं- औ र सफूफ सरतान शरवते उन्नाव- या शरवत खशखाश के साथ चटाना लाभदायक है ॥

सफूफ सरतान यों बनाते हैं- कि केंकड़े कोजलाकर खाकरलें और वह राख १० माशे लें और बबूल का गोंद और गिले अरमनी हर एक ५ माशे- सफेद खशखाश- और काली खश खा शहर एक २॥ माशे- कतीरा ३ माशे पीसके सफूफ बनावें और ७ माशे खाया करें ॥

सातवां पाठ ७

छाती के पर्दों और झिल्लियों और बघनों और उजलों और उसके आसपासके जोड़ों की सूजनों के विषय में

इनसूजनों का नाम अलग अलग रक्खा गया है- जो सूजन आगे की पसलियों के भीतर झिल्ली में या उस परदे में जो मरी और मेंदे और जिगर के बीच में तना हुआहै- पड़े उसको ज़ात उल जनूब खालिस और ज़ात उल जनूब सही कहते हैं ॥

और जो सूजन भीतर के सब परदों में हो उसका नाम खानिकाहै ॥

और जो सूजन पसलियों के बीच के अजलों में हो उसको- ज़ात उल जनब ग़ैर सही और ग़ैर खालिस- कहते हैं ॥

और जो ऊपर की पसलियों की झिल्ली में हो तो उसका नाम इन्हीं नामों से रक्ख लिया जाताहै- और जो पीठ की पसलियों के भीतर की झिल्ली में सूजन हो उसका नाम शौसाहै ॥

जिगर और मेदे के बीचमें जो परदाहै उसकी सूजन को बरसाम कहते हैं ॥

जो झिल्ली छाती से मिली हुई है उसकी सूजन को ज़ात उल सदर कहते हैं ॥

और इस झिल्ली के साम्हने पीठ से मिली हुई जो झिल्ली है उसकी सूजन का नाम ज़ात उल मेर्ज़ है ॥

जो पहिचान मवाद की और उपाय फेंफड़े की सूजन में लिखा गया है वही इसका भी जानें और सूजन की जगह पीड़ा से मालूम हो जायगी- अर्थात जिस स्थान पर पीड़ा होगी वही सूजन भी होगी और ज़ात उल सदर में लेप छाती पर लगावें- और ज़ात उल मेर्ज़ में कान्धों के बीच में इन सूजनों और फेफड़े की-

सूजनों में यह अन्तर है कि फेंफड़े की सूजन में नंदी लड़ती हुई चल तीहै - और दम बहुत रुकताहै और इन सूजनों में नाड़ी ऐसी नहीं ती और दमभी कम रुकताहै और सरसाम में होश और ज्ञान जात रहताहै - इसी कारण से बहुत मनुष्यों को सरसाम का धोखा हो ताहै ॥

कभीऐसा होताहै कि जिगर की सूजन में दम रुकने लगताहै - इस कारण से ज़ात उल जनब का धोखा होता है - पर तु ज़ात उल जनुब और जिगर की सूजन में यह अन्तर है कि जिगर की सूजन में रंग पीला होजाता है और खांसी नहीं होती और जि गर की ओर बोझ और पीड़ा होतीहै और पेशाब गाढ़ा आता है ॥

जब सवाद इन सूजनों का पकजाय तो जो बलग़म मु खसे निकलेगा उसमें पकने के चिन्ह होंगे - उस समय चाहिए कि ऐसा उपाय करे जो पीप बनने से पहिले सब सवाद पक के निकल जाय इसलिये गर्म पानी और आशजौ - शुक्र और ए हदगुन गुना करके पिलाना चाहिये - इससे सवाद थूक बन कर निकल आवेगा - और रोगी को उस करवट से सुलावे - जिधर सूज न है - इससे फेंफड़ा सूजन के पास आजायगा और पके हुए स वाद को चूसके निकाल देगा ॥

ज़ात उल जनब दो प्रकार का है एक हकीकी - दूसरा गै र हकीकी - हकीकी तो वह है जो सूजन हो - और गैर हकीकी वह है कि गाढ़ी रीह पसलियों के आसपास और झिल्लियों में रुकजा य और पीड़ा हो ॥

और जो रीह फंसने के कारण आगे नहीं बढ़ सकती इस लिये ज़ात उल जनब हकीकी का धोखा होताहै - अब अन्तर इ न दोनों में यह है कि ज़ात उल जनब रीही में भारीपन और तप

नहीहोती- और ज्ञात उलजनव हकीकी में यह दोनों बातें पाई जाती हैं -उपाय इसका यहहै कि रीढ़ी में पकाने वाली औ पधें लगावें और कभी फस्द और जुल्लाबभी देना पड़ता है - और साम्हने के हाथ से फस्द उसे कम रालना शीघ्रता से लाभ देतीहै ॥

आठवांपाठ

छाती के आस पास पीप रुकरहने के विषयमें

यह इसप्रकारहोता है कि फेंफड़े आदि की सूजन पक के फूट जाती है और छाती के आस पास फेंफड़े से बाहर गिरती है और गाढे होने के कारण वहीं फंस रहती है - न फेंफड़ा इसे चूसके निकाल सकता है और न पेशाव और पारवानह से निक ल सकती है - चिन्ह उसका यहहै - कि इससे पहिले छाती में किसीस्थान पर सूजन हुई होगी और श्लेष्मकाने के महोगे और हल्की तपहोगी - और पेशाव और दस्त और पीप न निकलेगी - इसमें - इज्जीर - सूखा जूफा - हटी - हंसराज - सुनक्के - पानी में औटाके रोगन बादाम और - मिश्री मिलाके पिलावें कि वह पतलाहोकार निकलने के योग्य होजाय - और वह औपधें दें जो उसको निकालें - और पेशाव लाने वाली औपधें भी दें - और मसाने को धोवें - और जो दस्तों में निकले तो नर्म करने वाली औपधें दें और जो दोनों से निक ले तो कभी वह दें और कभी वह परंतु ऐसा कम होता है ॥

नवांपाठ९

छातीकाठण्डयाजाना औरजकडजाना

यहरोग या तो वाहर से अधिकठण्ड पहुंचनेसे होगाया भीतरसे पहिले इसकारण को मालूमकरें- और उसमेंदम रुककर आवेगा- उपायइसका यहहै कि सातर औरहींग आदि के तेल में जुन्द वेदस्तर मिलाकरमलें और गर्म औषधें औटाके धारें औरलेपकरें और हीगमाय उल अस्ल में मिलाके एक एक घूंट पिलावें और हरीरो और माउल अस्लभोजन की जगहदें॥

कभी यहरोग अफीम पीने और सीसे के पिघलने के धूएंके पहुंचने से होजाता है- इसमें वह गर्म औषधेदें जो खांसी के लिये हैं- और गर्म घासों के जोशादे से सेकें॥

जो अफीम पीने से हो उसमें केसर का तेल छाती पर मलें- औरजो सीसे के धूएं से होतो कुट का तेल मलना अति लाभदायक है॥

सीसे पिघलने के धूएं से बहुत बचना चाहिये॥

ग्यारहवांअध्याय

दिलकेरोगोंकेबिषयमें

पहिलापाठ१

दिलकेमिजाजकेबिगाडमें

जो अकेलाहोतोठीक करनेही सेजाता रहेगा ... जो कि
सीमवाद सेहो तो पहिले उस मवाद को निकाले- और फिर मि
ज़ाजकी संभाल करें - और जोफस्द की आवश्यकताहो और को
ई हानिभी न हो - तो दोनों कन्धों के बीच में पछने लगावें - और
मिज़ाज को ठीक करने और मवाद निकालने में कोई बातों का
ध्यान रखना अति उचितहै । एकतो यह देख ले कि कारण रोग
का कम है या अधिक दूसरे रोग एक कारण सेहै या कोई से - ती
सरे दिलको कम जोर नहोने दे - चौथे जो तपहो तो उसका भी
ध्यान रक्खें और उपाय करें - इस रोग का उपाय शीघ्रता से करें
नहीं तो पुराना पड़के कठिनता से जाता है ॥

दूसरा बाब २

खफकान अर्थात दिलघबराने के विषय में

यह रोग जब बढ़ जाताहै तो मूर्च्छा आने लगती है
और ये दो प्रकार से उत्पन्न होता है - अर्थात् या तो इसका
कारण केवल दिल में होता है - या बदन के और स्थान में जै
सा मेदा और भेजा और जिगर और आंतें और फेंफड़ा आदि या सा
रे बदन में और जोंडक मारने या जहरीले जानवर के काटने से
हो वहभी इसीप्रकार में समझना चाहिये ॥

जो इस का कारण दिल के सिवाय किसी और स्थान
में हो तो उस स्थान को ठीक करें - परंतु दिल को पुष्ट रक्खें -
और जो केवल दिल में हो तो मवाद के अनुसार उसे ठीक करें और
जुल्लाब दें ॥

और जो यह रोग दिल के तीव्र होने से हो तो हरीरा

खिलायें ॥

औरजो बहुतसी उलटी आने या रुधिर निकलने या दस्त आने से दिल कमज़ोर होजाय और उससे यह रोगहोतो दिल की पुष्ट करने वाली ओषधें और भोजन दें ॥

ओर जिसे किसीको यह रोग गरमी से हो उसको चाहिये कि गरम स्थानमें और गर्म हवामें और गर्म शहर में न रहें - नहीं तो अवस्था उसकी कम होजायगी ॥ या उल्टी बहुत हुआ करेगी इस रोग का कुछ वर्णन तीसरे पाठ में भी आवेगा ॥

तरेली यशब की कौडी के स्थान पर लटकाना इस रोग में अति लाभ दायक है ॥

तीसरापाठ३

मूर्च्छा के विषयमें

जब स्वफ़ कोन बदजाता है तो मूर्च्छा आने लगती है और जब मूर्च्छा बहुत आती है तो मनुष्य मरजाता है - और मूर्च्छा तीन प्रकार की होती है ॥

एक तो यह कि रूह हैवानी जाती रहै ॥

दूसरे यह कि वह रूह घुटजाय ॥

तीसरे यह कि उत्पन्न कम हो - और इन तीनों प्रकारों में रोगी कमज़ोर होजाता है ॥

और रूह के जाते रहने के भी कई कारण हैं ॥

एक यह कि दस्त बहुत आवें या रुधिर अधिक निकल जावे ॥

दूसरे कोई खुशी अधिक और अचानक हो ॥

तीसरे चैन और स्वाद अधिक होने से भी जाती रहती है ॥

चौथे अधिक पीडा और बेचैनी से ॥

और रूह के घुट जाने के कारण यह हैं ॥

कि किसी मवाद के अधिक होजाने से या अधिक मदिरा पीने से और अधिक मोटा होजाने से ॥

दूसरे अधिक दुखसे ॥

तीसरे अचानक डर के होने से ॥

और रूह के कम उत्पन्न होने के भी कई कारण हैं-अर्थात् दिल में बिगाड होना या बुरे भोजन खाना या बहुत बीमार रहना और भूखा रहना ॥

जो मवाद रंगों से दिल में पहुंचता है वह या तो दिल की रगों में समाता है या दिल के ऊपर रहता है उसका वर्णन इसी अध्याय के चौथे पाठ में आवेगा ॥

चाहिये कि मूर्छा में कारण के विपरीत उपाय करें-अर्थात् जो मूर्च्छा गरमी से होतो ठंडी औषधें दिल को पुष्ट करनेवाली सुंघावें- जैसे चन्दन - कपूर आदि और केवडे का अरक गले में टपकावें- और जो ठंड से होतो- मुश्क और केसर आदि सुंघावें- और गले में टपकावें और मिज़ाज के अनुसार लेप करें- और गर्म मिज़ाज वाले को गुलाब और ठंडा पानी छाती और मुंहपर छिडकना लाभदायक है- परंतु जो बहुत दस्त आने से शरीर ठंडा पड गया हो और उसके कारण से मूर्च्छा हो तो पानी और गुलाब न छिडकना चाहिये-इसमें गर्म रोटी सुंघावें और माउल अस्ल मुंह में टपकावें और गरम तेल टूंडी के नीचे मलें ॥

और जो गरमी की अधिकता से बहुत सा पसीना आवे मूर्च्छा होतो ठंडे पानी या गुलाब से हाथ पांव धुलावें और पसीना बन्द करने के लिये मूरद के सूखे पत्ते या माजू पीसकर वदन पर मलें ॥

और पीडा की अधिकता से मूर्च्छा होतो माजून फलो नियां खिलावें - और कूलंज की पीडा में भी ऐसा हीकरें

और जो यह रोग जी मचलाने या हिचकी से होतो उलटी कराना लाभ दायक है और वहुधा मूर्च्छा की बहुत सी प्रकारों में उलटी कराना अच्छा है - परंतु जो वहुत पसीना आवे तो न कराना चाहिये ॥

और जो जहरीले जानवर के काटने या डंक मारने से होतो तिरयाक और विषको दूर करने वाली औषधें दें - और जो रहम के विगाड से होतो सुगंध न सुघावें - परंतु दुर्गन्धें सुंघानी चाहिये - और रहम के अन्दर सुगन्ध लगा दें - और हर प्रकार की मूर्च्छा में हाथ पांव मलना लाभदायक है - और जब रोगी चैतन्य होजाय तो कारण के अनुसार उपाय करें ॥

मूर्च्छा के चिन्ह यह हैं - रंग पीला होना - हाथ पांव ठंडे होना - और नाडी होले होले चलेगी - और जो मूर्च्छा अधिक होगी तो आंखें भी बन्द हो जावेंगी - मूर्च्छा और सकते में अन्तर यह है कि मूर्च्छा वाला पुकारने से सुनता है - और सकते वाला नही सुनता - और जो चिन्ह मूर्च्छा के ऊपर लिखे गये हैं - वह सकते और सबात के रोग में नहीं होते ॥

मोतदिल औषधें जो दिल को पुष्ट करती हैं यह हैं - याकूत - फीरोजा - सोने चांदी के वरक - गाउजबां - ॥

और गर्म ओषधें यह हैं - जदवार - दरूनज - सुम्बुल - अम्बर - जरम्बाद - कहरुबारेशम - केसर - दोनों बहमनें - लौंग - कच्चा ऊद - बालंगू के बीज और पत्ते - छोटी और बड़ी इलायची - रैहां के फूल और बीज - कबाबा - तुरंज के छिलके साजिज़ हिन्दी - रासन॥

और ठण्डी ओषधें यह हैं - काहरुबा - बिसद - काफूर चन्दन बंसलोचन - गिलो मख्तूम - सेब - धनियां॥

और याकूतियां - और दवाउल मिस्क - भी दिल को पुष्ट करती हैं - और जो खुश्की और तरी दोनों प्रकार की ओषधें देना चाहें - तो उन्हीं में से ठण्डी और गर्म ओषधें समझकर मिलादें॥

जब अधिक गर्मी दिल में हो या मूर्च्छा हो तो भी बहुत ठण्डी ओषधें न देना चाहिये - इसी लिये पहिले हकीम दिल के रोगों में काफूर के कुर्सों को बिना केसर नहीं देते थे॥

चौथा पाठ ४

दिल के दोनों कानों के सूजने के विषय में

दिल से ऊपर दो वस्तु उभरी हुई हैं जिनमें छिद्र भी हैं और उनमें से हवा दिल को पहुंचती है - उन्हें दिल के कान कहते हैं - जब कोई रोग देर तक रहता है और रूह जाती रहती है तो भोजन दिल को नहीं लगता और इनमें सूजन होजाती है - ये सूजन ठण्डे मवाद से होती है - क्योंकि गर्मी कम होने से भोजन भली भांति नहीं पकता और वही इस सूजन का मवाद बन

२ - और सूजन गर्मी से हो या ठण्ड से दिल के लिये बहुत

बुरीहै - और गर्मी की सूजन से तो मनुष्य मरही जाताहै और ठण्डी सूजन में उपाय का अवसर मिलताहै - इसका जल्दी उपाय करना चाहिये - नहीं तो रोगी दुबला होके मरजायगा -॥

ठण्डी सूजन के चिन्ह यहहैं - छाती भरी रहनी - बहुधा मूर्च्छा रहनी - और उदासी - आंखोंपर भुरभुराहट - और मुंहका रंग बहुत पीला होगा॥

इसमें - बाबूना - नाखूना - हंसराज - गेहूंकी भुसी - पानी में औटाकर छाती को ठंडी तक धारें और पकाने वाली औषधों का लेप करें और दिल को पुष्ट करते रहें - दिल के ऊपर की झिल्ली में जो सूजन होती है उससे इन बातों की सूजन से कम दुख और मूर्च्छा होती है॥

पांचवां पाठ ५

दिल से धूंआ उठने के विषैमें

यह किसी मवाद के जलजाने से होता है - और जब पुराना होजाता है तो मूर्च्छा आने लगतीहै और बुरीबुरी बातों के ध्यान होते हैं - इससे सौदाका मवाद निकालें - और तरी पहुंचावें - इस रोग में जो रंग रंग के काले दस्त आवें या नकसीर फूटें या बवासीर होजावे तो रोगी जल्दी अच्छा होजावेगा॥

छठापाठ ६

खफ़कान ज़ुगतल कल्ब के विषयमें

इसरोगमें ऐसा मालूम होताहै कि दिल को कोई दबो

त जब ऐसा होता है तो मूर्च्छा आजाती है और मुं
नकलते हैं – और थोडी देरके पीछे रोगी अच्छा
होजाता है – इसमें दिलको ठीक करें और दिल और भेजे
को पुष्ट रक्खें – और मुफर्रह सगीर – तिरयाक़ कबीर खि
लावें ॥

सातवां पाठ ७

तकाशुरकल्ब के विषयमें

इसमें दिल छिलता है और पीडाभी होती है और जब पीडा अधिक होती है तो मूर्च्छाभी आजाती है – और थोडे समय पीछे होश आता है और मूर्च्छा के समय पीडाकी अधिकता से मुंह पर झुरियां सी पडजाती हैं – और सारे बदनसे पसीना निकलता है ॥ इसमें पहिले कारण को मालूम करें कि मवाद भेजे से आता है या किसी और स्थान से फिर वैसाही उपाय करें – और जो पित्तसे होवो ——— पित्तको निकालें – और जो नज़ला होतो मवाद निकालने के पीछे खश खाशका शरबत चटावें – और नजले की रोकने वाली औषधें दें ॥

आठवां पाठ ८

कज़ाफुलकल्बके विषयमें

इसमें ऐसा मालूम होता है कि दिल बाहर खिचा आता है जैसे वलटी मे – ये रुधिर या पित्तकी अधिकता से होगा जो रुधिरकी अधिकता होगी तो मुंह का रंगलाल होगा

और पित्त में पीला-इसमें दाहिने हाथ से फस्द वासलीक खो लें और पित्तका जुल्लाव दें- और चन्दन का शरबत बेद मुश्क के अरक और गुलाब में घोलकर पिलाया करें- और भोजन अच्छा दें और दिल को खुश करने वाली औषधें पिलावें॥

नवांपाठ ९.

दिलके बैठने के विषै में

यह दिल में रुधिर या पित्तकी अधिकता होजाने से होता है- और कभी इसके साथ धीमी पीड़ा और मूर्च्छाभी हो ती है- जो मुंहका रंग लाल होतो रुधिर की अधिकता होगी- और पीला होय तो पित्तके मवाद के अनुसार फस्द खोलें और जुल्लाब दें॥

दसवां पाठ १०

दिल पर तरी छाजाने के विषय में

इस रोग में ऐसा जान पड़ता है कि दिल पानी में डुबाजा ताहै और फड़कताहै- यह रोग दिल घबराने की प्रकार में से है- इसमें दिल के ऊपर की झिल्ली में का फाड़कठ्ठा होजाताहै इसमें अथारिज खिलावें- और गुलाब के फूल- बालछड़- बाल छड़- आदि का लेप छाती परकरें और रोगी से मिहनत करावें- और क्रोध दिलावें इससे तरी दूर जाती है- कभी यह तरी उस दूर होकर दिलसे चिमट जाती है और क्रोध आता है

खुशीनहीं होती–इसमेंनर्म करनेवाली ओषध और छाती पर खुश्की दूर करने के लिये मोंम रोगन मलें फिर मवाद को निकालें और दिलको पुष्ट करें – ...
र में दिल बहुत उत्तम वस्तुहै – इसपा ...
रना चाहिये ॥

बारहवां अध्याय

स्त्रीकी छाती के रोगों के वर्णन में

ईश्वर ने स्त्री की छातियों को दूधके लिये उत्पन्न किया है और उसका मांस भी सपेद है जब रुधिर उनमें आता है तो दूध बनजाता है – जैसा कि मर्दका रुधिर पेल्हड़ों में आकर वीर्य बनजाता है ॥

पहिलापाठ१

दूधकम होने के विषयमें

इसरोग में प्रभावके अनुसार दूध कम होजाता है–इस के तीन कारण हैं–एक कमी रुधिरकी उसके निकल जाने से दूसरे किसी रोग के देर तक रहने से और कमी रुधिरकी अधि कतासे भी इसी प्रकार से दूध कम होजाता है कि छाती में बहु तसा रुधिर आकर दूध नहीं बनने पाता–तीसरे रुधिर के बिग ड़ने से भी दूध कम होजाता है–चाहे वह ...

किसीमवाद से चिन्ह उसका यहहै कि उसमवाद के चिन्ह पाये जायेंगे या किसी मवाद की अधिकता हो – जो रुधिर की कमी होतो मिजाज के अनुसार वहवस्तु खावें जो दूध उत्पन्न करें जैसा दूध आदि – और जो रुधिर की अधिकता होतो फस्द खोलें और पछने लगावें और भोजन थोड़ादें – और जो मिजाज में कोई बिगाड हो तो ऐसे भोजन और औषधदें जो रुधिर को ठीक करें और जो मवाद अधिक हो उसे निकालें ॥

जो दूध पतला और पीला और स्वाद और बास उसकी तीक्ष्ण हो तो पित्तकी अधिकता होगी – और जो वह पानीसा पतला और सफेद और खट्टा होतो कफकी अधिकता जानो – और जो मैला और गाढ़ा और थोड़ा होतो – सौदा की अधिकताहै – और जहां कफ और पित्त दोनों मिले होंतो दूधका स्वाद खारी और नमकीन होगा ॥

जो औषधवीर्य्य को बढ़ाती वह दूध कोभी बढ़ातीहै और जब खुश्की और दुबले पन से दूधकम होजायतो चौपायोंका दूध अतिलाभदायक है ॥

यह औषधदूधको उत्पन्न करती है – गाजरके बीज – प्यालके बीज – शलगम के बीज – मूली के बीज – सौंफ सब बराबर लेकर उन सबके बराबर भुनेहुये चने मिलाके कूट छानलें और उसमें से १७॥ साढ़े सत्रह माशे ताजे दूधके साथ सवेरे पिलावें – और जो रातको सफेद चने दूध में भिगोके सवेरे छानके और शक्कर मिलाके पिलावें तोभी लाभ होगा ॥

यह लेप दूधको बढ़ाता है – बाकले का आटा ३५ पेंतीस माशे – बादरंज साढ़े १७॥ माशे कूट छान के बाद रंज के अर्क में घोलके छातियों पर लगावें ॥

दूसरापाठ २

दूधवढ़जाने के विषयमें

खानेका उपायकरें औरवह औषधें।

दायक होंगी और लाख और मुरदा संगरोगन गुलमें मिलावे

छाती परलगावें और मलें-और ज़ीरा

लगाना और ईसब गोलके पत्तोंका लेपकरना भी

नकालेपकरें ॥

तीसरापाठ ३

छातियोंके सूजने औरतन्नके विषयमें

जो किसी गर्म मवाद से होती सिरके को

मिलाके पुकने में भरके सेकें और हरी मकोय पीसकर लेपक रें और तीन दिन पीछे वह औषधें लगावें जो आगे के पाठ में लिखीगई हैं- और जो ठण्डे मवाद हो तो गजमोद को कूटकर लेप करें या बाबूने को सौंफके पानी में पीसकर लगावें और वही उपाय करें जो और सूजनों का है ॥

चौथापाठ४

छातीमेंदूधजमजानेकेविषयमें

जब छातीके भीतर दूध जम जाता है तो सूजन उत्पन्न होती है- इसका कारण यह है कि या तो गर्मी से दूध गाढा होजाता है- या ठण्ढ से जम जाता है- और देर तक दूध के न निकलने सेभी ऐसा होताहै - कारण के अनुसार उपाय करें और जब देर तक दूधके न निकलने से या बच्चे के न पीने से या किसी और कारण से ऐसा होतो गर्म पानी से छातियों को धोवें और होले होले दूधको चुसवावें कि सारा दूध निकल जावे- और जो दूधके बन्द होने से छाती पकजाय और सूजजाय और दूधका रंग और स्वाद बिगड़ जाय तो सूजन को पकाने के लिये- बाबूना- अलसी के बीज- मेथीके बीज- खेरूकेबीज बराबर लेकर चुकन्दर के पानीमें अथवा केवल पानीमें पीसके दिन में दो तीन बार छाती पर लगावें और जब सूजन आपसे आप पककर फूटजाय तो अच्छा है नहीं तो नश्तर लगावें- कभी ऐसा होता है कि नश्तर गहरा नहीं लगता और पीपकी जगह नहीं पहुंचता और इससे केवल ऊपरका रुधिर निकलता है- ऐसे समय में दूसरी बार गहरा नश्तर लगावें जिससे पीप निकले फिर घावका उपाय वही है- जो मुंह और जीभके घावों में लिखा गया- क्योंकि छाती में भी पतली और नर्म रगें और मांस है- जैसे जीभ और मुंह में-- और जो छाती में गुठली होजावे तो मोम रोगन बांधे॥

पांचवां पाठ ५

छातीके पिसजानेके विषयमें

मूंगको सर्व के पत्तों के पानी सें पीसकर लेप करें और जो सूजन होजाय तो उसका उपाय करें ॥

फिटकरी को रोगनजैत्न में मिलाके शीशे केबासनमें से डे और लगावें तो छातियां बढ़ने न पावेंगी और जो उपाय पिलडों के बढ़ने का है वही इसका है ॥

तेरहवां अध्याय

मेदेके रोगोंके विषैमें

पहिला पाठ १

मेदेके मिज़ाज बिगडजानेके विषयसे

गरमी और ठण्ड और मवाद आदि के चिन्ह आपसे आप मालूम होजावेंगे - जो गरमी से मिज़ाज में बिगाड हो और कोई मवाद न होतो - थोडा और हलका भोजन पेटमें जाकर बिगड जाता है - और बहुतसा और भारी नहीं बिगडता और भली भांति पचजाताहै - खारी कफ जब मेदे में होता है तो - प्यास बढ़ जाती है - और ठण्डे पानी से अधिक होती है और गरम पानी से काम - और जो मेदे में पित या गरमी होतोभी प्यास बढ़ज़ाती है

और यह ठण्डे पानी से बुझती है और गर्म पानी से अधिक होजाती है- जो मेदे में केवल गर्मी हो और कोई मवाद न होतो मेदेको ठीक करें और जो कोई गर्म मवाद होतो उसे निकालें- मेदे से मवाद उल्टी से भली भांति निकलता है और जो किसी स्थान से मेदे में मवाद आता होतो उस स्थान से मवाद को निकालें - बहुधा भेजे और तिल्ली और जिगर से मेदे में मवाद गिराकरता है - लक्षण प्रत्येक के यह हैं - जो भेजे से गिरे तो नज़ला होगा और जिगर और तिल्लीसे गिरने में इन स्थानों में बिगाड़ पाया जायगा - जो भेजेके कारण सेहो तो फस्द सरारू खोलें- और जिगर में दाहिने हाथसे फ़स्द बासलीक या असीलम खोलें- कभी ऐसा होता है कि मेदा पुष्ट और साफहो के बिन देर में भोजन खाने के कारण निर्बल होजावे- और मवाद उस में गिरे यह बात बहुधा गर्म मेदेको होतीहै - कि भोजन न मिलने से बेचैन होजाता है -और कभी उनको भूखकी अधिकता से मूर्च्छा भा जाती है ऐसे मनुष्योंको चाहिये कि आठ कालकी कोई स्वदिष्ट वस्तु खालिया करें और पेट खाली न रक्खें- और कभी मेदे की परत में मवाद के फंस जाने से यही रोग होताहै उसमें अयारिज फी कारा खिलावे उल्टी करावें और जो उसमें शरबत इफसंतीन या पीली हड़ मिलालें तो मवाद मेदे की तह से उखड़ कर निकल आवेगा ॥

दूसरा धातु २

पेटकी पीड़ा के विषय में

जो यह मेदे के बिगाड़ सेहो तो उसका वर्णन होचु

का- और मेदे में सूजन या घाव होतो उसका वर्णन आगे आवेगा-
और जो वाय की अधिकता से होतो पीडा फिरती हुई मालूम हो
गी और डकारें और हिचकियां आवेंगी और पेट बोलेगा- और फू
ला हुआ होगा,- और जब भोजन मेदे में नीचे उतरेगा तो बाईं ओर
पीडा होगी- इसमें पेट को सेकें और इलायची को गुलाब में औ
टाके पिलावें और पौदीना चबावें कि डकार खुलकर आवें और
कमूनी खिलावें और जो वाय गाढ़ी होतो कफका जुल्लाब दें और
पचाव करने के लिये उपाय करें- और पेट पर बारे लगाने से
पीडा जल्दी जाती रहती है- किसी कारण से पीडा हो उस में शिवं
नवीन को गुलाब या पानी में मिलाकर पिलाना अति लाभदाय
क है- कभी ऐसा होता है कि पीडा पतले या खारी कफ से हो औ
कोई वस्तु ठंडी दीजावे और कफ से वाय कुछ कम ह्वे और इस कारण से पीडा में कु
छ कमी होतो जान पडता है कि गर्म मवाद है क्योंकि ठंडी वस्तु से कमी हुई- और इसी
प्रकार कभी ऐसा होता है कि मवाद गर्म हो और कोई औषधि
गर्म दीजावे और वह धूएं को पचावे और वाय को तोडे तो धो
का होताहै कि मवाद ठण्डा है क्योंकि ठण्डी दवासे लाभ हुआ
इन दोनों धोकों से बडी हानि होती है इसी लिये चाहिये कि
और लक्षणों परभी ध्यान रक्खें ॥

और अधिक भोजन या तीव्र वस्तु खाने से पीडा होतो
उलटी करके उसे निकाल डालें और कई दिन तक भोजन कम
खांय और जो तीव्र भोजन खाने से हो तो ऐसी वस्तु खावें जो उस
प्रकार की न हो ॥

औरजो मेदे के कमजोर होने से यह रोग होतो लक्षण
उसका यह है कि भोजन करनेके पीछे पीडा की अधिकता होगी
और जब तक वह उलटी या दस्तों से निकल न लेगा पीडा नहीं

वढ़ेगी–इसमें वह औषधें दें जोमेदे को पुष्ट करें और नौशदारू कोखिलाना अति लाभदायकहै॥

और जो मेदे में मवाद इकट्ठा होजाने से मेदा कमजोर होजाय लक्षण उसका यह है कि भूख बन्द हो जायगी और गर्म मवाद में प्यास और मतली अधिक होगी इस में मेदे से मवाद निकालें और कुर्स कौकब और कुर्स अनीसून लाभ कारक हैं॥

जो मेदे की हिस्स वढजाने से पीड़ा हो पहिंचान उस की यह है कि थोड़े कारण से पीड़ा उत्पन्नहोजातीहै–जैसे भो जन के घूएं या थोरु से या सोदाके गिरने से जो मेदे के खाली होनेके समय तिल्लीसे गिरता है और उससे भूख मालूम होते है–और ठण्डे पानी पीने से और इसके सिवाय किसी प्रकारका विगाड़ न पाया जावे ऐसे समय में भारी भोजन या ऐसे दवा खि लावें जो मेदे को कुंद और सुन्न करदें जैसे पोस्त खशखाशको पानी में भिगोकर और छानकर पिलावें॥ 3/12

एक प्रकार की पीड़ा ऐसी है जो खाली पेट में नहार सुरु होती है– और खाने के पीछे जाती रहती है–इस के तीन कारण हैं–एक यहकि तरी मेदे में इकट्ठी होजाय और पेट के खाली होने के समय भूख की गर्मी से औटे और उससे वाय उत्पन्न होके पीड़ा हो– दूसरे यह कि मेदे के खाली होने के समय जिगर से पित मेदे में गिरे–और उससे पीड़ाहो–तीसरे य ह कि तिल्लीसे मेदे पर प्रमान से अधिक सौदा गिरे या सौदामे तेज़ीहो जिससे पीड़ा होजाय–वाय का लक्षण यहहै कि डकार आने से पीड़ा हलकी होजाती है और किसी मवादका चिन्ह नहीं पाया जाता और पित और सौदा के लक्षण लिख चुके हैं

परंतु सौदा के कारण मेदे में जलन होती है - चाय में तरीको मेदे से दूर करें और उसे पुष्ट रक्खें - और पित से सवाद को निकालें - और जो अवश्य होतो दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोलें और सौदा में जो सवाद की अधिकता होतो उसे निकालें और बायें हाथ से फ़स्द असीलम खोलें - और जो सौदा की तेजी होतो उसे ठीक करें ॥

ॐ श्री

तीसरा पाठ ३

"जौफ़हज़्म" और "सूयेहज़्म" और "तुख़्मे" के विषय में ॥

कारण इन तीनों रोगों के एक हैं - जो कारण कमज़ोर होतो पहिला रोग होगा - और जो बहुत पुष्ट होतो तीसरा - और मध्यम में दूसरा रोग होताहै - जो स्वभाव के विपरीति देरतक भोजन मेदे में ठहरा रहे और फिर पचकर निकल जाय तो वह जौफ़ हज़्म - है - और जो भोजन भली भांति न पचे और रस पतला आवे तो उसे "सूयेहज़्म" कहते है ॥

और तुख़्मा वह है कि भोजन बिलकुल न पचे और दस्तोंमें निकले - जैसा कारण देखें वैसा ही उपाय करें - बारह घन्टे से कम और चाईस घन्टे से अधिक भोजन पेट में न रहना चाहिये - मेदे का जो रोग गर्मी से नहोउसमें सेर भर शिकंजे बीन सफ़ेर जलमें तीन तोले सोंठ मिला देना अति लाभकारक है ॥

——॥——

चौथा पाठ ४

हैज़े के विषय में

यह वह रोग है जिससे बिना पचा हुआ और बिगाड़ करने वाला मवाद शरीर से मेदे में आकर दस्तों और उल्टी में बहुत ज़ोर से निकलता है - और कभी ऐसा होता है कि उल्टी नहीं होती केवल दस्त आते हैं - परंतु मतली अवश्य होती है - यह रोग बहुत डरावना है परंतु दस्त और प्यास और कमज़ोरी और नाड़ी का न चलना और हाथ पांव का ऐंठना देखकर बहुत डरना न चाहिये जो उपाय अच्छा किया जायगा तो दूर होजाने की आस है - उपाय करने वालों को घबराना न चाहिये - ख़ास करके जब कि बच्चों को यह रोग हो इसमें नहीं तक बने बिगाड़ करने वाले मवाद को दस्तों या उल्टी से बिलकुल निकाल डालें - और बन्द न करें - परंतु जो रुकाव देखें तो उल्टी और जुल्लाब से उसे निकालें और कमज़ोरी अधिक होजाय तो मिज़ाज के अनुसार बन्द करें - बंद करने के लिये नीबू के छिलके मुख में रखके उसका रस चूसे और जब प्यास और गरमी अधिक हो तो गरम औषधें और तिरपाक़ फ़ारूक़ कभी न दें - और यह बातें याद रक्खें - एक यह कि रोगी को हिलने जुलने न दें और भोजन की प्रकार से कोई वस्तु न खिलावें परंतु जब अधिक आवश्यकता हो तो कोई हल्की और पतली वस्तु खिलावें जैसे अनार या मिठे आदि का रस, और जहां तक बने रोगी के सुलाने का उपाय करें - यद्यपि इस रोग में नींद आना बहुत कठिन है तथापि सब उपाय सुलाने के करने चाहियें - और जब मवाद निकल चुके तो कोई हलका भोजन हाल के अनुसार थोड़ा २ खिलावें ॥

यहां में एक धोखे का वर्णन करता हूं कि राति के अंत में
सवेरा होनेपर कभी उल्टी होती है उससे डरके तिरयाक़ फ़ारु
क़ और लौंग आदि गरम औषधियां देते हैं-यह बात अच्छी नहीं है बिना
सोचे गर्म औषधें देने से तप होजाती है-कभी मवाद के जलने से बेहोशी होजाती
यह बुरी है उससे मूर्च्छा और कमज़ोरी और विष्णु अवश्य होता है जो मतलब
ठंडा पानी पिलाना ज़हर को कम करता है-जब ऐसी उल्टी राति के १
अंत में हो मूर्च्छा आदि के साथ तो तिरयाक़ फ़ारूक़ दें नहीं तो
कुछ न दें- और तीन पहर तक भोजन न दें- और जब मूर्च्छा उत्प
न्न हो तो तिली के तेल में नाय फल पीसके और गुन गुना करके
सारे बदन पर मलें ॥

पांचवांपाठ५

भूख के घटजाने याजातेरहने के विषय में

कारण इन दोनों का एक है-जब कारण कमज़ोर होते
भूख घट जाती है और जब कारण पुष्ट होते जाते रहती है-परंतु
कारण इन दोनों के बहुत हैं-एक केवल मेदे का बिगाड़ है बि
ना मवाद के चाहे वह बिगाड़ गरम हो या ठंडा दूसरे मेदे में
मवाद का इकट्ठा होना-तीसरे सारे शरीर में किसी कच्चे मवा
द की अधिकता हो इस कारण से बदन को भोजन की चाह न
हो- चौथे शरीर के छिद्रों का मुंदा होना और चमड़ा कड़ा हो
ना कि इससे मवाद पचता नहीं है-पांचवें जिगर का कमज़ोर हो
ना या जिगर और मामारीक़ा के बीच में सुद्दा पड़जाना-छठे कम

रास्ते में सुद्दा पड़ना जो तिल्ली और मेदे के बीचमें है- सातवें मेदे की हिस्स जाती रहे ॥

जो मवाद और सौदे के बिगाड से हो उसके लक्षण आपसे आप मालूम होजायगें। परंतु वह जो तिल्ली से मेदे पर सौदा[illegible] गिरने से रास्ते के बंद होजाने के कारण से हो, और जो वह मेदे की हिस्स जाती रहने से मेजे के किसी मवाद के कारण हो उन दोनों में मेदे के कारण सब से अच्छे रहेंगे- और उन दोनों में अन्तर यह है कि सौदा के न गिरने से हो उसमें खट्टी वस्तु खाने से बहुत जल्दी भूख लगेगी- और जो मेदे की हिस्स जाने से हो उसमें खट्टी वस्तु खाने से कुछभी भूख न लगेगी- और इस के सिवाय मेजे में बिगाड पाया जावेगा ॥

जब बदन को भोजन की चाहना होती है तो वह रगों से मांगता है और चूसता है और रगें जिगर से मांगती हैं और जिगर मासारीका से और मासारीका मेदे से- उस समय में मेदा जान लेता है और तिल्ली से सौदा मेदे पर गिरता है और उसकी खटाई और कसी लेपन से मेदा ऐंठता है- इसीका नाम भूख लगना है- जब कभी इन में से किसी एक बात से बिगाड पड़ जाता है तो भूख नहीं लगती- सादे बिगाड में उस बिगाड को ठीक करें- और जब कोई मवाद होतो उस मवाद को निकालें और जब शरीर के छिद्रों के मैला होने से यह रोग होतो गर्म पानीसे स्नान करें- और जो जिगर के कमज़ोर होने से यह रोग होतो उसमे जिगर को पुष्ट करें और जो तिल्ली और मेदे के बीच के रस्ते के बंद होजाने से यह रोग होतो तिल्ली से मवाद निकालें और वह उपाय करे जो तिल्ली की सूजन का है और जब मेदे की हिस्स जाते रहने से हो तो मेजे को पुष्ट करे और आवश्यकता को

अनुसार भेजे से मवाद निकालें - क्योंकि ऐक्य पट्ठों भेजे से मेदे पर आया है - मेदे में हिस्स उसी के कारण से है इसलिये भेजे के उपाय से उस में भी लाभ होगा ॥

शरीर मे रुधिर के घटजाने और किसी प्रभाव के छोड़ देने से या किसी दुख के होने से भूख बिगड़ जाय तो जो उपाय अवश्य समझें करें - और जो आंतों में केंचुऐ उत्पन्न होने से भूख जाती रहै तो उनके निकालने का उपाय करें और इसी प्रकार से कारण को दूर करें ॥

भूख लगाने वाली औषधें यह हैं - शिकंजबीन सफर जली - और नीबू का शर्बत - और हरा पोदीना - सिरके में डाल कर खायें - और खट्टा अनार - और पोदीने का शर्बत चाटें ॥

छठा पाठ ६ ॥

भूख के बिगड़ जाने के विषै में

इस रोग में मनुष्य वह वस्तु खाने लगता है जो खाने के योग्य नहीं - जैसे मिट्टी, कोयला, कागज, रुई आदि - और यह बहुधा पेट वाली स्त्रियों को होता है - इसमें बुरे मवाद मेदे में इकट्ठे होजाते हैं और उनके विपरीत खाने की चाहना होती है इसमें मेदे से मवाद निकालें - परंतु पेट वाली स्त्रियों का कुछ उपाय न करें - उनका ऐसा स्वभाव तीन चार महीने पीछे आपसे आपजाता रहता है - और अजवायन और जीरे का चबाना और उसका रस निगलना भी लाभकारक है ॥

सातवां पाठ

भोजनकाहोकाहोजानेके विषयमें

इस रोग में ठण्ड से मेदे में बिगाड होजाता है और तरी से मेदा ऐंठता है जैसे कि सौदा गिरने से भूख के समय होताहै- लक्षण उसका यह है कि खाने का होका हो और प्यास बिलकुल न हो और पेट फूला रहै और नाडी धीमी चले इससें मेदे को गरमी पहुंचावें- और अनीसून-अजवायन-जीरा-मस्तगी-आदि गर्म औषधें चबावें और मेदे पर बालछड़-जायफल- आदि पीस कर मलें- और जो कफ़ से बिगाड होतो उस मवाद को निकालें- औरजो तिल्ली से मेदे पर सौदा अधिक गिरे और उससे यह रोग होतो लक्षण उसका यह है कि जब तक पेट खाली रहै मेदे में जलन पाई जायगी-इसमें सौदा का मवाद निकालो और दाहिने हाथ से फ़स्द बासलीक और असीलम खोलें कि जिगर से सौदा निकल जाय और तिल्ली पर बारे लगावें-जो मेदे या सारे शरीर की अधिक गरमी से भोजन न लदी पचजाया करे- जैसे कि रसायन या कुश्ता खाने सेहोताहै- उपाय इसका समझ के अनुसार करें जिससे वह कारण दूर होजाय- जो इस रोग का कारण भेजे से मेदे पर कफका गिरना और खट्टा होजाना होतो खट्टी डकार आवैगी- और पहिले ईससे नज़ला हुआ होगा-इसमें नजले को रोकें और जो आंतों में केंचुए पड़ने से यह रोग होतो इस कारण से कि केंचुए भोजन को खालें तो उसका वर्णन सोल्हवे अध्याय के नवें पाठमें किया जायगा ॥

आठवां पाठ ८

जूउल बक़र के विषय में

इस रोग में भूख बिल्कुल जाती रहती है और भोजन से ऐसा दिल हटजाता है कि ऐक टुकड़ा खाना कठिन होता है-परंतु सारा शरीर भूखा होता है-और दिन पै दिन दुबला होता है-और ज़ोर घटजाता है-और देखने में कोई कारण और रोग नहीं पाया जाता-जब यह चढ़जाता है तो मूर्च्छा उत्पन्न होती है-जब मूर्च्छा होतो पहिले उसका उपाय करें और फिर कारण को पहिचान के उसे दूर करें-और जब रोगी कमज़ोर होतो जुल्लाव न दें- उत्तम उपाय यह है कि मेदे को पुष्ट और ठीक करें॥

नवां पाठ ९

भूखकी सहारन होनेके विषयमें

इसमें समय पर भोजन न मिलने से मूर्च्छा भी आजाती है चहिये कि हर समय भोजन बना रक्खें और मेदे को पुष्ट करें और खट मिट्ठे अनार के रस और सेव के रसमें रोटी भिगोकर खिलावें-इससे मेदा पुष्ट होता है॥

दसवां पाठ १०

अधिक प्यासहोनेके विषयमें

यह दो प्रकार का है एक तो सच्ची प्यास होना और दूसरे झूठी-सच्ची प्यास वह है कि जिसमें गरमी के बुझाने के लिये- और तरी घटजाने से पानी की चाहनाहो- इसमें गरमी और खुश्की के लक्षण पाये जावेंगे और पानी से प्यास बुझेगी- और झूठी प्यास वह है कि खारी या निस्सी कफ या जलाहुआ सौदा मेदे में चिपटे और उसके धोने के लिये पानी की चाहना हो- इसमें पहिले तो ठण्डे पानी से प्यास बुझजाती है परंतु थोड़ी देर पीछे फिर लगती है और मुखका स्वाद मवाद के अनुसार होता है- और जो थोड़ी देर पानी न पिये तो प्यास धीमी होजाती है- जब वह रोग गरमी से होतो यह देखना चाहिये कि वह गरमी मेदे में है या जिगर में- या छाती में- या फेंफड़े में- जिस स्थान पर गरमी हो ठंड पहुंचावें- और छाती और फेंफड़े और दिलकी गरमी में ठण्डी हवा खाना और ठंडी वस्तु सूंघना अति लाभ दायक है- और मेदे और जिगर की गरमी को ठंडा पानी लाभ देता है- इसी से पहिचान सकते हैं कि गरमी किस स्थानपर है- और जब कोई ठण्डा मवाद होतो गर्म पानी में सिकंजबीन घोलकर पिलावें- और उल्टी करावें और सौंफ का अर्क दें और चनों को औटाकर उसका पानी पिलावें- परंतु खारी बलगम में सिवाय सौंफ के अर्क के और कोई वस्तु गरम न देनी चाहिये- और जब खुश्की होतो तरी पहुंचावें- और रोगन बादाम और दूध पिलाना अति लाभदायक है- और जो प्यास तप या जिगर की सूजन के कारण से होतो तप और सूजन का उपाय करें- कभी ऐसा होता है कि बहुत सा रुधिर निकलने से पित की अधिकता होकर खुश्की बढ़ जाती है- और उसके कारण से प्यास लगती है इसमें ठण्ड और तरी पहुंचावें- और

किसी लसदार भोजन के खाने से भी प्यास लगती है- क्यों कि वह मेदे में जाकर चिमट जाती है - और उसके धोने और छुटाने की चाहना होती है-इसका वही उपाय करें- जो कफ़ की प्यास का है - और इसमें पानी का न पीना भी लाभदायक है और कभी बर्फ खाने से भी प्यास होती है इसलिये कुछ लोग बर्फ़ को गरम बताते हैं - इसमें नीबू का शर्बत पीवे या थोड़ा २ गर्म पानी ॥

ॐ

ग्यारहवां पाठ ११

मेदे की सूजन के विषयमें

यह सूजन चाहे जिस मवाद से हो उसमें पीड़ा और तप अवश्य होगी- परंतु गर्म मवाद में यह दोनों अधिक होंगे और ठंडे में कम- और चिन्ह अत्सेवा के पाये जांयगे- जो गर्म मवाद हो तो फस्द खोलें और उलटी न करावे- और पुष्ट जुल्लाव भी न दे- जब कब्ज़ होतो- अमलतास और इमली और गुलाब के फूल हरी मकोय के फाटे हुए अर्क में पिलावे और पहिले चन्दन और मामीसा का लेप करें- और तीन दिन पीछे जौ का आटा ज़र्द खैरू के फूल गुलाब में पीसकर लेप करे और जब ठंडा मवाद कफ़ का होतो पहिले कफ की मुंजिस दें- अंगूर की लकड़ी जलाकर उस की राख और सोया और सरकंडे की जड़ और बाबूना सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करें - फिर जुल्लाव की आवश्यकता होतो अमलतास को औटे हुए सूफे में घोलकर और छानके पिलावें- और जो २

सीह्री के मवाद से सूजन होतो वह सूजन काड़ी होगी- जो उसमें गरमी का लगाव न होतो रेंडी का तेल और अमलतास और स कोप का अर्क मिलाकर पिलावें- तीन दिन में वह कड़ापन जाता रहेगा- और जो यह सूजन पुरानी होजाय तो कुर्स सम्कुल देना चाहिये ॥

बारहवां पाठ १२

दुबेल तुल मेदा के विषय में

इस रोग में मेदे की सूजन फोड़ा बनजाती है- और पका के उसमें पीप पड़ती है- जो गरम सूजन होतो उसे खुराज कहते हैं- इसके पकाने और फूटने के चिन्ह वही हैं जो जातु ल्याव में बताये गये हैं - जब मवाद इकट्ठा होने पर होतो मेथी और कनौचे के बीज और कड़ुये बादाम कूट पीसकर रेंडी के तेल में मिलाके लेप करें कि वह पककर फूट जावे - और जो आप से न फूटे तो रोगी को गरम पानी पिलाकर सूजन को दबावें- कि वह फूट जावे और फिर माउल असल और गुला ब का शर्बत दूध में मिलाके पिलावें- कि मेदे से मवाद निकल जावे- और जब देखें कि मेदा साफ होगया तो कुन्दुरु दम्मुल अरववैन - गुलनार- काहरुबा- गिले अर्मनी- पीसकर फ कावें- कि घाव पुरें और आशजो या हरीरा भोजन की जगह खिलावें ॥

—०—

तेरहवां पाठ १३

मेदेके घाव और फुन्सियों के विषेमें

इसमें पीड़ा और जलन खट्टी और तीव्र वस्तुओं के खाने से होगी- और जिस स्थान पर पीड़ा होगी उसी पर घाव और फुन्सियां होंगी - फस्द खोलें और उसी के पीछे वह उपाय करें जो सूजन का है और काली गाय के मठेसें [illegible] फूल और चूके के बीज और वंसलोचन पीसकर देना लाभ दायक है - और जब फुन्सियां फूट जांय तो पहिले वे औषधें दें जो घाव को साफ़ करें - फिर वह [illegible] जैसे ऊपर के पाठ में लिखी गई है - और नरम करने के लिये अमलतास को हरी कासनी के पानी में घोल कर देना लाभ दायक है ॥

चौदहवां पाठ १४

पेट फूलने के विषयमें

इसका कारण या तो कोई ठण्डा और सादा बिगाड़ है या भोजन का बिगाड़ या किसी सवाद का मेदे में इकट्ठा होना - इसके चिन्ह और उपाय जो पित्ताक्रम और मेदे के बिगाड़ में लिख चुके हैं - और [illegible] पिलाना भी लाभदायक है ॥

—:o:—

पंद्रहवां पाठ १५

डकार जंभाई और अंगडाई अधिक आने के विषयमें ॥

यह तीनों रोग सारे शरीर में या मेदे में वाय के उत्पन्न होनेसे और उसमें से अधिक धुंआ उठने से होती हैं – इनमें मवाद को निकालें और पचाव को ठीक करें – और सौंफ को महीन पीसकार गुलकंद में मिलाकार खिलावें – और मुश्क यासमनगीशहद में मिलाकर देना अति लाभदायक है – और सारे शरीर से वाय को खोता है ॥

सौल्हवां पाठ १६

उल्टी उबाकी और मतली और तकल्लुव नफस के विषयमें

उल्टी वह है कि कुछ मेदे से मुंह की राह निकले – और उबकाई वह है कि कुछ न निकले परंतु ऐसा माल्हूम हो कि उल्टी होती है – और मतली उल्टी से पहिले होती है – और बराबर उल्टी होना तकल्लुव नफस कहलाता है – मवाद के अनुसार जुल्लाव दें – और गरम पानी में सिकंजवीन घोलकार पिलावें – और जो कुछ हानि न हो तो उल्टी कराना उत्तम है – और जो मवाद किसी और स्थान से मेदे में आकार गिरता हो तो उस स्थान का जुल्लाव दें – और ठीक करें – और जो तपमें बुहरान के दिन उल्टी होतो उसे कभी न रोकें ॥

आमला- कहिरुवा - वंसलोचन- जौकासतू- चाहें लाटें या इकट्ठा दें ॥

यह औषधकफ़की उल्टीको दूरकरतीहै मेदेको पुष्टकरतीहै

अदरगरकी- लौंग - मस्तगी- सूखापोदीना- र कूटछानलें- और उसमें से साढ़ें तीन माशेकेवार पैंतीस माशे गुलकंद में मिलाकार दें ॥

यह लेपसौदाकी उल्टीकोलाभदायकहै

लादन- मारवूना - छैडीला - सौरंट के हरे पत्ते व में पीसकार मेदे और तिल्ली पर लगावें- और कुरसे से अधिक कफ और सौदा की उलटी में कोई नहीं है- खाली सिंगी विना पछने की टूंडी के पास और कंधों के बीचमें लगाना और हाथ पांव मलना और रोगी के सुलाने का उपाय कारना अति लाभ दायक है - और जब भोजन के बिगाड से उलटी आवे तो उस भोजन को बिलकुल निकालना चाहिये- इस लिये चाहे उलटी करावें- चाहे जुल्लाबदें और जो मेदे के कामज़ोर होने से होतो उसे पुष्ट करें- और जोकेंचुये पड जाने से यह रोग होतो उन्हें निकालें ॥

३०

सत्रहवां पाठ १७

उल्टी में रुधिर आनेके विषयमें

यह रोग दो प्रकार से होता है—एक यह कि कोई रग मेरी या मेदे की टूट जाय या फटजाय या रग का मुंह खुलजाय—इस रोग में मेरी या मेदे में कोई बिगाड़ पाया जायगा—और दोनों कांधों के बीच में पीड़ाहोना मेरी के घाव का लक्षणहै—इसमें फस्द बासलीक खोलें—और आवश्यकता के अनुसार रुधिर निकालें—औरजब बहुत सा रुधिर उल्टी में आता होतो उसमें एक सेर तक रुधिर निकालना लिखाहै—और हाथ पांव कसना और पिंडली पर पछने लगाना और रुधिर को बन्द करनेवाली औषधें देना लाभदायक है—और रग के मुंह खुलजाने से जो रुधिर आता हो उसके बन्द करने के लिये सुनक्के बीज समेत खाना अति लाभ दायक है—और जो मेरी में कोई बिगाड़ होतो रुधिर के रोकने की जो औषधि पियें वह थोड़ी थोड़ी गले से नीचे उतारें कि देर तक दवा मेरी में रहे—और रग के फट जाने में कुर्स कुहेल लाभ दायक है—और ऐसाही हरे बारतंग और हरे कुलफे का पानी लाभ कारक है॥

दूसरे यह कि जिगर या तिल्ली या भेजे में कुछ बिगाड़ हो और वहां से रुधिर मेदे में गिर कर उल्टी में निकले—लक्षण उसका यह है कि उन्हीं स्थानों में बिगाड़ होगा—इसमें फस्द खोलें और उस स्थान कोठीक करें और ठहरठहर कर थोड़ा रुधिर निकालें—परंतु जो मवाद बहुत होतो एक बारभी बहुत निकाल सकते हैं—और जो छाती पर चोट लगने से यह

खोलें - फिर मुगोस-
-एलुआ- आस के पत्तों के पानी
मकार चोटकी जगह लगावें ॥

अठारहवां पाठ १८

मेदे में रुधिर या दूधके जम जाने के विषय के वर्णन में

जब रुधिर कहीं से आकार मेदे में रहजाय और उसमें गरमी न रहे और वह जम जाय या दूध पीवे- वह इंड से या किसी जमाने वाली वस्तु से जैसे पनीर मेदे में जम जाय - लक्षण दोनों का यह है कि मूर्च्छा और ठंडा पसीना आवे ॥ और कभी नाड़ भी आता है कि इसमें सोया और पोदीना ओटावे और सिकंजबीन मिलावे गरम गरम पिलावें - सब जानवरों का पनीर बने हुए दूध और रुधिर को पिघलाता है- परंतु खरगोश का पनीर इस के लिये बहुत अच्छा है- वह पतले रुधिर और दूध को जमा देता है- और जमे हुए को पिघला देता है ॥

कभी ऐसा होता है कि दूध पीने वाले बच्चों के मेदे में दूध जम जाता है - कारण इसका दूध पिलाने वाली के दूध का बिगाड़ है - या मेदे की कमजोरी - पहिले दूध को पिघलावें और दाई से बच्चे को अलग करलें - और ऊंटनी या गौ या बकरी का दूध पिलावें - और उत्तम यह है कि किसी और दाई का दूध पिलावें - जिस का दूध अच्छा हो - और जिस जानवर का दूध दें उसको सुदाब या चौसम खिलावें - और जो दाई को दूर न करे

सकें तो भोजन उसको ठीक दे - और कभी २ थोड़ा थोड़ा सा तिरियाक़ फ़ारुक़ उसको खिलावें - और बच्चे को भी थोड़ा सा खिलावें - और जब तक दाई को भोजन न पचे दूध न पिलाने दें - और बच्चे के पेट को कपड़े से ढांके रक्खें - कि गरम रहै और सूखा हुआ पोदीना साढ़े सत्रह १७॥ माशे जवान को खिलाना जमे हुए दूध को पिघलाता है॥

उन्नीसवां पाठ १९

अधिक हिचकी आने के विषय में

जो बहुत खाजाने से आवें तो खाने के पीछे ऐसा होगा जल्दी से उल्टी कराके भोजन को निकाल डालें और पचाव की औषधियां दें - और कभी इलायची पोदीना चबाने से थम जाती है - और कभी आपसे आप - और जो उनका कारण वायु हो तो - वायु उत्पन्न करने वाली वस्तु के खाने से ऐसा होगा - और पचाव न होगा जैसे बच्चों को बहुत होती है वह वस्तु जो वायु को दूर करें दें - और जो किसी तीव्र स्वाद या औषधि के खाने से होतो पहिले सिकंजबीन और गरम पानी पिलाकर उल्टी करावें - और ठंडे और तर लुआब और शीरे दें - और गर्म पानी में रोग़न बादाम मिलाकर एक घूंट पीना और भोजन में मक्खन डालके खाना अति लाभ दायक है - और जो मेदे में कफ़ के चिमट रहने से ऐसा होतो लक्षण उसका यह है कि मुंह से पानी निकले और पचाव नहो और खट्टी डकारें आवें - अयारिज का कुल्लाव देके उस स्वाद को निकालें - और जो यह किसी सादे बिगाड़ से होतो लक्षण उस बिगाड़ के पाये जावेंगे - इसमें गर्म औषधें पीवें - या

इस प्रकार में और वाय में और कफ में उत्तम उपाय द
और चिल्लाना है – और जो कारण इसका जिगर

। भी लाभ दायक है – और अर्कनाना और रब्दे अना
र का रस मिलाके पीना और बहुत सा ठंडा पानी पीना और रीठे
को गले में लटकाना और डराना और मस्तंगी और दार चीनी
टाके पिलाना लाभ दायक है ॥

बीसवा पाठ २०

इक़्लाव मेदे के विषय में

इस रोग में भोजन ठहरके उल्टी में निकल जाता है-
कारण इसका छिल जाना उस आंत का है जो मेदे के पास है जब
भोजन पचके उस आंत तक पहुंचता है तो उल्टी होजाती है – और
जो उपाय मरोड़ का है वही इसका भी करें ॥

इक्कीसवा पाठ २१

कलकुल मेदे के विषय में

यह वह रोग है जिसमें रोगी को यह जान पड़ता है-
कि मैं गरम राख पर लोट रहा हूं – इसके दो कारण हैं – एक
तो मेदे में पित्त इकट्ठे हो जाय या कोई ठंडा मवाद बिगड़
जाय इसमें मवाद और मिज़ान के अनुसार जुल्लाव दें – और
ठीक करें ॥

बाईसवां पाठ २२

मेदेके फड़कने के बिषय में

इसरोगमें दिल घबराने कीसी हालत मेदे में मालूम होती है–मवाद के अनुसार जुल्लाब दें और जो केंचुरे पड़गये होतो उन्हें निकालें॥

तेईसवां पाठ २३

वजउल फवाद के विषयमें

यह एक पीडाहै जो मेदे में होतीहै–इसमें हाथपाव ठंडे होजाते हैं–और मूर्छा होजाती है–और दिलतक इसका दुख पहुंचताहै–और जो यह रोग देरतक रहै तो रोगी मरभी जाता है–जो उपाय मेदे की पीडाकाहै वही इसकाहै॥

चौबीसवां पाठ २४

पेटमेंजलननहोनेके विषय में

जो यह रोग कच्ची रोटी या कच्चे फलों के खाने से या मेदे में कच्ची तरी के इकट्ठा होजाने से होतो लक्षण इसका यह है कि पहिले भारी वस्तु खाई होंगी–और भूख के समय जलन में कमी होगी और जो सौदा के गिरने सेहोतो भूख के समय जलन न होगी और चिकनाई खाने मेजलन जाती रहेगी–जो भारी और तर भोजन के खाने से होतो उसमें उलटी करावें–और हल्का

भोजन दें और मेदे को पुष्ट करें–और जो सौदा से हो तो बायें हाथ से फ़स्द असीलम या बासलीक खोलें– और हड़ का मुरब्बा और सिकंजबीन बज़ूरी दें ॥

पच्चीसवां पाठ २५

मेदे के ढीला होजाने के विषय में

यह दो प्रकार से होता है– एक तो मेदा ढीला होजाय और दूसरे उसके बंधन जिनसे कि वह बंधा हुआ है–ढीले होजाय– पहिले का लक्षण यह है कि पचाव नहो और छाती उभर आवे–दूसरे का लक्षण यह है कि मेदा झुक पड़े और जिस ओर झुकेगा उसी ओर बोझ होगा– इससें– इसतिरखा–और फालिज का उपाय करें–और हल्का भोजन दें–और सुगंधि वाली और कब्ज़ करने वाली औषधे दें–और वह उपाय करें जो छब्बीसवें पाठ में लिखा जायगा ॥

छब्बीसवां पाठ २६

मेदे की बुनावट के ढीला होजाने के विषै में

यह रोग बहुत बुरा है इससे भोजन कभी नहीं पचता और सूजन और बिगाड़ के लक्षण नहीं पाये जाते– जवारिश ऊद खिलावें और मस्तगी का तेल मेदे पर मलें– और चरेलू मुर्गे का संगदान सुखाकर और पीसकर सवा दो माशे इतरीफल या शर्बत हब्बुल आस के साथ चटावें– और हरा यशब पीस के पौने दो माशे देना लाभदायक है ॥

सत्ताईसवांपाठ २७

मेदेके खिंचजानेके विषयमें

जो यह रोग मेदे में हो पचाव नहीं रहेगा– और जो पीठ के बंधन में हो तो खातेही भोजन आंत में उतर जावेगा और न पचे गा– और जो दहने या बायें बंधन में हो तो रोगी उसी ओर झुका रहेगा– और जो हंसली के बंधन में हो तो रोगी आगे को झुका रहेगा और पीठ सीधी न हो सकैगी– इसमें वही उपाय करें जो तशन्नुज का है ॥

अट्ठाईसवांपाठ २८

मेदेके कड़ाहोजानेके विषयमें

यह कड़ापन हाथ लगाने से मालूम होता है– और जो बढ़जाता है तो दिखाई भी देता है– इसमें मेदे का बिगाड़ अवश्य होगा– जो गर्मी से हो तो फस्द बासलीक या असीलम खोले– और कच्चा मोम रोगन बनफ्शे या रोगन गुल में पका के लगावे– और जो सर्दी से हो तो– बाबूना– बालछड़– मरवांड़े की जड़– मेथी के बीज– गूगल– कड़ुये बादाम कूट छान के लेप करें– कभी ऐसा होता है कि तिल्ली के बड़े होजाने से उसी ओर मेदा भी कड़ा होजाता है– इसमें तिल्ली का उपाय करें ॥

—३८—

उन्तीसवां पाठ २९

पहचान उसकी यह है कि वह कहीपन एक ओर से पतला और दूसरी ओर से मोटा होगा—और मेदे में कोई बिगाड़ नहीं पाया जायगा—इसका वही उपाय करें जो ऊपर के पाठ में लिखा गया है ॥

तीसवां पाठ ३०.

पेटचलने के विषय में

जो कोई सादा बिगाड़ या मवाद हो तो लक्षण और उपाय उसका ऊपर लिख चुके हैं—और जो फुंसियों और घाव से हो तो उसका वर्णन कर चुके हैं—और जो जिगर में कमज़ोरी न हो तो सफ़ूफ़ चारतुख़्म और सफ़ूफ़ हब्बुलआस लाभ करता है—और जो नज़ले के गिरने से हो उसमें सोने के पीछे दस्त आवेंगे—इसमें नज़ले का उपाय करें—और दस्तों को न रोकें—परन्तु मवाद को निकालें और मेदे को पुष्ट करें—और जो भोजन से दस्त आवें तो पचाव और भोजन को ठीक करें—और जो रगों के मवाद से ऐसा हो तो लक्षण उसका यह है कि शरीर मोटा होगा और दस्त बड़े आवेंगे—इसमें फ़स्द खोलें और चंदन मलें और पसीना निकालें और भूखे रहें—और जो जिगर के कमज़ोर होने से हो तो दस्त सफ़ेद या हरे आवेंगे—इसमें जिगर और मेदे को पुष्ट करें और जवारिश मस्तगी खावें—और जो दस्त चौरी

वांधकार आवे-तौ मवाद के रंग से लक्षण मालूम होगा-फ़स्द और गुल्लाव से उस मवाद को निकालें ॥

औरजो मासारीका में सुद्दा पडने से ऐसा होतो वर्णन उसका जिगर के सुद्दे में होगा- और जो मेदे के खंदाने के मिट जाने से ऐसा होतो कोई गलाने वाला मवाद गिरा होगा - या मेदे में गर्म सूजन हुई होगी - या विष खाया होगा- कारण के दूर करने के पीछे - सिमाक़- ज़रवर्द- वंसलोचन- छालिया- चंदन- अनारके छिलके- रसौत- पीसकूर- विही या अंगूर के पानी मेमिलाकर मेदे पर लेप करें - और सत्तू और सेब और विही रोगन बादाम मिलाकर खिलावें - और खाने के पीछे देर तक दाहिनी करवट लेटे रहें - और कहते हैं कि दूध और मेदे का हरीरा मेदे के खदानों को उत्पन्न करता है - और जो गुल्लाव के पीने से अधिक दस्त आवें तो खहा मठा ठंडा करके पिलावें ॥

इकतीसवां पाठ ३१

मेदे के छोटा होने के विषय में

जो यह जन्म से होतो अधिक भोजन चाहे हल्का हो दुख देगा- इसका उपाय सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि नित ऐसा भोजन खावें जो थोडा हो परंतु ज़ोर उसमें अधिक हो - औरजो खिंचाव या सूजन आदि से होतो उसका वह उपाय करें जो उचित हो ॥

चौथा अध्याय

जिगरके रोगों के वर्णन में

पहिला पाठ १

जिगरके बिगाड़ के विषयमें

चाहे यह रोग मवाद से हो या बिना मवाद के इसमें जिगर में कोई बिगाड होगा– और इसके साथ हरप्रकार के लक्षण पाये जायगे– इसमें कारण को दूर करें– जिगर के बिगाड को कासनी अति लाभ कारक है– और अमलतास के साथ हर प्रकार के बिगाड को लाभ देती है– परंतु अमलतास उससमय परदें जब कि मवाद को नर्म करना चाहें– अब यहा वह औषधें लिखतेहै जो केवल जिगरको लाभ देतीहै– इन्हें समझ के दें और वायु का ध्यान रख ठंडी औषधे–हरी कासनी का रस– अनार का रस नुरि रुक का शीरा-अस्पगोल का लुआव–चन्दन का शर्बत–और सिकंजबीन– और मठा चाहें इनको अकेलादें या मिलाके, और जो कब्ज़ न होतो कुर्स तबाशीर काफिज दिहो, या नेब के सतमें मिलाके या शर्बत हुम्माज के साथ दें+ और जो कब्ज़ होतो हड और अमलतास औटाके दें– और जब रुधिर की अधिकताहो और कोई रोक नहो तो फस्द खोलें– और जो पित्तों से होतो ठंडाई अधिकादें– और जो अवश्य होतो फस्द भी खोलें और ठण्डी औषधों का जिगर पर रखना जिगर की गरमी को बुझा

ताहै- परंतु जब तक जिगर से मवाद न निकाल के उसकी औष धेन लगावें ॥

और गर्म औषधे यह हैं- सौंफ- करफ्स के बीज- शहद का गुलकन्द- असानासिया- दवाउल कारकम- और कफ के निकालने के लिये- माउल उसूल- और इत्रीफल सिंज लाभ दायक हैं- और सूखे जूफे को पानी में ओटा के साढ़े चार माशे दवाउल कारकम के साथ देना जिगर को गर्म और पुष्ट करता है- और माजून फलसफा और अनिसों का इत्रीफल भी जिगर को गर्म करता है- और मवाद अधिक न निकाले- कि इससे कमजोरी और दुबला पन होता है- और जो इस रोग में दस्त भी आते होंतो कुलफा- रेहां के बीज बबूल का गोंद अत्येक साढ़े दश माशे भूनकर और गुलाब में भिगोकर दें- और जो सौदा की अधिकता होतो तरी पहुंचावें- और सौदा के निकालने के लिये इफ्तीमून ओटा के या इफ्तीमून की गोलियां माउलजोबन के साथ दें- और कौरूती मुरत्तब जिगर पर लगावें- इससे खुश्की और जाड़ापन जाता है- परंतु कि तरी अधिक न पहुंचावें नहीं तो जिलधर होजाने का डर है- और जो भोजन इस प्रकार के बिगाड़ के अनुसार हो दें- और इसके साथ कोई और रोग भी होतो उसका भी उपाय करें ॥ इति

दूसरा पाठ २

जिगर के कमजोर होजाने के विषय में

चाहे जिस कारण से हो लक्षण उसका यह है कि दस्त ... होगा- और बदन दुबला होगा-

और भूख बिलकुल न होगी – और दाहिनी ओर बगल में ऊपर से नीचे की पसली तक लम्बाई में पीडा होगी – परंतु खाने के पीछे जब भोजन जिगर में जाने लगेगा – तो अधिक पीडा होगी और रोगी का रंग सफ़ेद और हरा होगा – और कभी पीला और काला जानना चाहिये कि बदन के प्रत्येक स्थान में चार शक्ति हैं – पचाव दूर करने वाली शक्ति – खैंच लेने वाली शक्ति – और जानने वाली शक्ति – जिगर की चारों शक्तियों में से जो कमज़ोर हो जायगी उसे जिगर की कमज़ोरी कहेंगे – और लक्षण इन चारों की कमज़ोरी के अलग अलग हैं – जिगर के पचाव की कमज़ोरी के लक्षण यह हैं, कि दस्त और मूत्र धोवन कासा होगा और सूजन और उदासी आदि पाई जायगी – और दूसरी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र थोडे २ होंगे और उनमें रंग भी थोडा होगा और भूख न लगेगी – और तीसरी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त बडे और सफ़ेद और पतले आवेंगे – और बदन दुबला होगा – और चौथी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र मांस के धोवन से होंगे – और रुधिर के पतला होने से बदन ढीला हो जायगा – और मूंह पर सूजन और उदासी होगी – यह रोग जो जिगर के बिगाड से हो उसका उपाय लिख चुके हैं – और जो सुद्दे या सूजन या जिगर के फटजाने से या किसी और कारण से हो उसका उपाय आगे आवेगा – और जो किसी और स्थान में हो तो उस स्थान का उपाय करें – और जिगर और रूह को पुष्ट करते रहें – और फ़स्द असीलम भी लाभ दायक है ॥

तीसरा पाठ ३.

जिगर के सुद्दे के विषय में

इस रोग में जिगर के अन्दर या उसकी रगों में चोई गा
ढा मवाद फंस रहता है चिन्ह उसका यहहै कि शरीर में रुधिर
कम उत्पन्न हो और रंग पीलाहो - और दस्त धोवन से आवें -
और जिगर भारी हो- और जो सुद्दा जिगर के ऊपर होगा तो बोझ
अधिक होगा - और मूत्र थोड़ा और पतला आवेगा - और जो सु
द्दा भीतर होतो दस्त बड़े और पतले आवेंगे - इस रोग में और जि
गर की सूजन में यह अंतर है कि सूजन में तप होती है - और अधि
क पीड़ा होती और सुद्दे में बोझ अधिक होगा जो सुद्दा जिगर के
ऊपर होतो मिज़ाज के अनुसार मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें
और जो जिगर के भीतर हो तो नर्म करने वाली औषधें और जु
ल्लाब दें - और उपायों में मिज़ाज का ध्यान रक्खें - और जो
कब्ज़ करने वाली वस्तु खाने से सुद्दा पड़े तो रोगन बादाम
और दूध और शक्कर का हरीरा पिलावें - और अनार का रस
भी लाभदायक है - और जो जिगर की रगों के संकड़ा होजाने से
सुद्दा होतो यह रोग जनम से ही होगा - इसका उपाय कुछ नहीं
है - सिवाय इसके कि भारी भोजन खाने से बचते रहें - और
कभी २ मूत्र लाने वाली औषधें पिया करें ॥

चौथा पाठ ४

मासारीका के सुद्दे के विषय में

लक्षण उसका यहहै कि जिगर और मेदे के बीच में

अंदर को खिचाव और बोझ मालूम हो और मेदा और जिगर दोनों चंगे हों - और दस्त कच्चे आवें - और शरीर दुबला होता जावे - इसका ठीक उपाय वही है जो जिगर के भीतर के सुद्दे का है - और वह औषधें दें जो सुद्दे को दूर करें ॥

पांचवां पाठ ५

जिगर के फूलने के विषय में

लक्षण इसका यह है कि दाहिनी पसली के तले पीड़ और खिचाव हो और बोझ न हो और तर्य और पचाव के पीछे पेट अधिक फूल जाय - इसमें कमूनी खिलावें - और शर्बत दीनार पिलावें - और गर्म पानी से नेहार मुंह नहावें - परंतु हवा न लगे - और नमक और बाजरे और राख से सेकें - और जो आवश्यकता होतो जुल्लाब दें - और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और हल्का भोजन जिसमें बाय दूर करने वाली औषधें पड़ी हों खिलावें ॥

छठा पाठ ६

जिगर की पीड़ा के विषय में

जो इसका कारण कोई बिगाड़ या सुद्दा आदि हो उसका उपाय लिख चुके हैं - और जो शिरका या सूजन या जिगर को फटने या पथरी खारेश पड़ने से होतो उसका उपाय आगे लिखेंगे ॥

—३·६—

सातवां पाठ ७

शिरका के विषय में

जब नेहार मुंह या मजलत करने के पीछे या नहाने के पीछे जल्दी से ठंडा पानी पीले उसकी ठंड जिगर को लगे और पीड़ा होतो गरम पानी में कपड़ा भिगोके गरम गरम जिगर पर रक्खें और चाल छड़ और मस्तगी गुलाब और सौंफ के अर्क में पीस कर गर्म करके जिगर पर लेप करें और गरम पानी से धोवें - और जो इसमें हकीम से कोई भूल हो जायगी तो जलंधर या जिगर की सूजन होजावेगी ॥

आठवां पाठ ८

जिगर की सूजन के विषय में

जो यह रुधिर या पित्तों की अधिकता से होतो लक्षण उसका यह है कि तप और प्यास होगी और जिगर में बोझ और पीड़ा और जलन होगी और सिवाय उसके और लक्षण रुधिर और पित्तों की अधिकता के पाये जायगे - और जिगर की सूजन के भीतर या बाहर होने के लक्षण तीसरे पाठ में लिख चुके हैं - और सिवाय इसके जिगर की भीतर की सूजन में उल्टी और मूर्च्छा और हाथ पांव ठंडे होंगे और बाहर की सूजन में खांसी और दुगला रुकाव होगा और इसली नीचे को खिचेगी और मूत्र थोड़ा होगा - और सूजन टेढ़ी दिखाई देगी जब सूजन रुधिर की अधिकता

लगावें और देर न करें- कहीं ऐसा न हो कि कोई रोग उत्पन्न हो जावे ॥

दसवां पाठ १०

जिगरके फोड़े के विषयमें

जो उपाय मेदे के फोड़े का और फेंफड़े की सूजन का है वही इसका है- जो मवाद आंतों की ओर गिरने लगे तो हलका सा जुल्लाव दें- और जो गुरदे की ओर गिरे तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें- और जो फूटके पेट में जावे तो जलंधर का डर है उसमें जिक्की जलंधर का उपाय करें- और जो मवाद आप से आप पक कर पचजावे तो रोगी में कमी होगी- और दस्तों और मूत्र में पीप न निकलेगी ॥

ग्यारहवां पाठ ११

जिगरकी फुंसियोंके विषयमें

लक्षण उसका यह है कि जिगर में कोई गरमीसे बिगाड़ हो और जिगर के स्थान पर जलन हो और कभी२ रोंगटेभी खड़े हों औरजाड़ा आवे- इसका यह उपाय करें जो गरम मवादके बिगाड़ से पहिले पाठ में लिखा गयाहै ॥

बारहवां पाठ १२

जिगरके फड़कने के विषयमें

इसमें ऐसा मालूम होता है कि कोई फूंकता है- और यह बात थोड़ी देर रहकर बंदहो जाती है- कारण इसका जिगर का सुद्दा है- और वायका फिरना और रहजाना- इससे वह औषधें दें जो सुद्दे को दूर करें और दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोलें ॥

तेरहवां पाठ १३

जिगरकी पथरी के विषयमें

लक्षण उसका यह है कि भोजन पचने के पीछे उलटी आवें और कोई वस्तु चुभे और जिगरमें पीड़ा हो और कभी- हाथ लगाने से जिगर पर सूजन और कड़ापन मालूम हो- और देखने मेंभी आवे ॥ और जब दाहिने हाथ से फस्द वासलीक खोलें और नश्तर गहरा लगेतो रुधिर के नीचे रेत हो- इसका उपाय वही है जो अठारह वें अध्याय के दस वें पाठ में लिखा गया है ॥

चौदहवां पाठ १४

जिगरके छोटा होने के विषैमें

इसका लक्षण और उपाय वहहैजो मेदेके छोटा होने में लिखा गया- परंतु इसमें जिगर सेसवाद निकालनाचाहिये चाहे नरम करने वाली औषधें दें चाहे मूत्रलाने वाली ॥

—:०:—

पंद्रहवां पाठ १५

जिगर से दस्त आने के विषय में

यह रोग छः प्रकार का है- पहिला चीर्हो जिसमें दस्तों में पीप आती है- कारण इसका जिगर के फोडे का फूटना है- उपाय इसका लिख चुके हैं ॥

२ दूसरा गस्साली जिसमें मांस के धोवन कैसे दस्त आते हैं इसका कारण जिगर की कमजोरी है उपाय इसका भी लिख चुके हैं और मुनक्के बीज समेत खाना अति लाभ दायक है ॥

तीसरा दमवी जिसमें रुधिर के दस्त आते हैं-कारण इसका जो केवल रुधिर की अधिकता हो और घाव नहो तो लक्षण उसका यह है कि बहुत सा रुधिर निकलके ठहर जावे और फिर निकले और चिन्ह रुधिर की अधिकता के उत्पन्न हों- और जो जिगर पर घाव या चोट लगने से होतो मेदे और आंतों के खाली होने पर थोडा रुधिर बराबर चला आवेगा और चिन्ह घाव के उत्पन्न होंगे- जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होतो जब तक कमजोरी न बढ़ने लगे दस्तों को न बंद करें- और आदि में फस्द खोलें और मवाद को दूसरी ओर फिरावें- उपाय इसका यह है कि हाथ पांव और छातियों आदि को कसकर बांधें और फस्द में थोडा थोडा रुधिर ठहर२के निकालें- और जो रुकने की आवश्यकता होतो कुर्स कहरुवा- कुलफे के बीजों का शीरा- और वारतंग का पानी मिलाके दें और भोजन थोडा खावें- और जो घाव के कारण से हो उसका उपाय यही है- और जो यह रोग रुधिर की अधिकता से नहो तो कारण को दूर करें और कुर्स नम मुद्दम

में जरावंद चटाकर देना कावज़ और घाव के भरने के लिये अति लाभदायक है ॥

चौथा सफरावी इसमें जिगर पर गरमी होगी- इसका उपाय भी जिगर के बिगाड में लिख चुके हैं- परंतु मवाद निकालने और ठीक करने से पहिले दस्तों को न रोकें ॥

पांचवां सदीदी कारण इसका जिगर में रुधिर या किसी और मवाद का जलजाना है- लक्षण और उपाय भी वही है जो चौथे प्रकार में लिखा गया है- और चन्दन को गुलाब में घिस कर, जिगर पर लगावें- और दाहिने हाथ से फस्द असलिम खोलें ॥

छठा स्वासरी इससें दस्त गाढे कीचड से आते हैं- इसका कारण भी जिगर के फोडे का फूटना है या जिगर के मुहें का खुलजाना और बुरे मवाद का बहना या जिगर में मवाद का जल जाना इसमें लक्षण और कारण जानके उचित उपाय करें- और जब तक कमजोरी न बढ़ने लगे दस्तों को कभी न रोकें- इन दस्तों और मेदे के दस्तों का अंतर जिगर और मेदे के लक्षण से जाना जाता है- और जिगर के दस्तों से भूख बाधि होगी- और दस्त बारी बारी रुके आवेंगे- और खाली पेट में दस्त कम होंगे और पीडा नहीं होगी, और दिन ब दिन रोगी दुबला होता जायगा- और मेदे के दस्तों में यह बातें न होंगी- परंतु जब जिगर के दस्त देर तक रहेंगे तो मेदे से भी दस्त आने लगते हैं- उस समय मेरोड और जिगर के चिन्ह इकट्ठे हो जावेंगे- ऐसे समय पर दोनों के अनुसार उपाय करें ॥

सोलहवां पाठ १६

सुउल किनी आके विषयमें

यह रोगभी जिगर का बिगाड़ है और जलंधर से पहिले होता है - और लक्षण उसका यहहै कि मुंह और हाथ पांव पर भुर भुराहट होती है और जिगर की कमज़ोरी के लक्षण उत्पन्न होते हैं - उपाय इसका जलंधर में लिखा जायगा - जो यह रोग पुष्ट नहीं होता है - इसलिये कामज़ोर औषधें दें और सपार करें और पैदल चलें - और यह रोग बढजावें और जलंधर होता हुआजान पड़े तो रवा रत्ती ऊंटनी के दूध ताज़ा में दो रती सिकंजबीन मिलाके देंना लाभ दायक है - और अनार का रस पिलानाभी लाभ दायक है और ठंडा पानी विल कुल न पीवे - और पानी के बदले कासनी और सौंफ और मकोय का अर्क पिलावें - औरजो हो सकेतो भूखेरहें नहीं तो मूंग या चनों को औटा के उसका पानी दें और जो यह रोग बवासीर या हैज़ के रुकने से होतो मूत्र लाने वाली औषधें देकर और लेप लगाकर उन्हें जारी करें औरजो इससे लाभ नहोतो फ़स्द साफ़िन खोलें और रुधिर थोड़ा निकालें और फ़स्द से पहिले जुल्लाव पिलाना उत्तम है ॥

सत्रहवां पाठ १७

जलंधर के विषयमें

यह रोगतीन प्रकार का होता है - पहिला लहमी इसमें सारे शरीर पर भुर भुराहट होती है - और मवाद मांस के भीतर

होताहै ॥

दूसरा जिक्की इसमें पेट मशक्क साहोजाता है- औरहाथ पांव पर कभी सूजन होती है और कभीनहीं होती- और पेट के परदों में तरी समाजाती है ॥

तीसरा तबली इसमें गाढी वायपेट के परदों में समा जातीहै और पेट परहाथमारने से तबले कीसी आवाज निकलती है इसमें पहिले कारण को दूर करें- और फिर जिगर को ठीक करें- और गरमी पहुंचावें और जो गरमी होतो उसे बुझावें फिर इस रोग का उपाय करें अर्थात् दस्त और मूत्र और पसीना लाने वाली औषधें दें जैसे शरीर को बालू में गाड़ देना- और खुश्क औषधें मलना जैसे नरकचुर और राख और खूब काला और मंडुये का आटा आदि और खुश्क करने वाली औषधों का लेप करना अति लाभ दायक है ॥

—३०—

और ठंडा पानी न पीवें और गर्म औषधें भी अधिक न दें- और जो बिना ठंडे पानी पिये चैन नपडे तो छोटी बधनी जिसकी टोंटी सकड़ीहो उससे एक एक बूंद पानी गले में टपकावें- औरवह पानी भी पक्काहुआ और ठंडा किया हुआहो और थोड़ा सिरकाभी उसमें मिलावें- और जोपानीकेबदले कासनी और सौंफ का अर्क दें तो उत्तम है और वहभी थोड़ा हो चाहिये कि दिन भरमें भोजन से तिगुने पानी पिलावें- और चंगे रहने के दिनों में जितना भोजन खाते हों उसका छटा हिस्साइस रोग में रखें अनार अतिलाभ दायक है जितना खा सकें खावें और जहां तक होसके नौन न दें और रोटी में सौंफ अनीसून मिलादें और सूखी रोटी खिलावें और भरबी ऊंटनी का दूध अति लाभदायक है- भोजन

और पानी के बदले पिलावें-इस दूध पिलाने की रीति यह है कि पहिले दिन १४० माशे पिलावें-फिर हर रोज़ १४० माशे बढ़ा दिया करें-परंतु इसका ध्यान रखें कि मेदे में दूध जमने न पावें-इसके लिये पोदीना और हब्ब सिकबीनज कभी २ दिया करें-तो दूध न जमेगा और लहमी में हब्ब रावंद का गुल्लाव दें-और जो गरमी होतो हड़ को ओटाके शर्बत बुर्द मुकर्रर के साथ दें और जिक्की में जो गर्मी न होतो काळ काळानजहीर दें-और जो गरमी होतो काळ काळानजवामिद और पीलीहड़ अति लाभ दायक है और तबली में मिज़ाज के अनुसार गुल्लाव दें-और सब प्रकारों में मुवाद निकालने के पीछे जिगर के पुष्ट करने के लिये कुर्स अंबर बारीस आदि खिलावें और मूत्र लानेवाली निरंतर दें उसे बदलते रहें और जो औषध दें उसे भली भांति पीस लिया करें कि वह जिगर में तुरंत पहुंचे और पसीना लाना भी अति लाभदायक है रीति उसकी यह है कि नमक और सनी को रोगन बाबूने में मिलाकर शरीर पर मलें और पसीने को पोंछते जावें और दूसरी रीति यह है कि गरम रेत में रोगी को बिठावें या लिटावें और उसके चारों ओर शरीर को रेत से ढांप दें केवल मुंह खुला रहे जब रेत ठंडी होजावे तो और गरम रेत डालें इससे सूजन जाती रहती है और जो सूजन किसी एक स्थान पर हो जैसे हाथ में या पांव में तो उसी को रेत में गाड़े और ऐसे ही धूप में बिठावें और गरम न दियों में और समुद्र के पानी से न्हाना लाभदायक है-और जो नमक को पानी में घोलकर कोई दिन तक धूप में रक्खें तो वह भी समुद्र के पानी के समान होजाता है और यह लेप लगी को सुखाता है और दहलंबा-जंगली कबूतर की बीट ऊंट के मूत्र बतक मुरगी की चर्बी इन सबको मिलाकर मरहम बनालें-लहमी में

सारे शरीर पर लेप करें और तवली में हाथ पांव पर और जिक्की में केवल पेट पर— और चाहिये कि तवली में सवाद निकालने के पीछे वाय के तोड़ने का उपाय करें— उन औषधों में जो मेदे के फूलने में लिखी गई हैं और सूखा सुद्दाव और इसपंद और सौंफ और अनीसून और नमक अर्मनी और लाल शक्कर पीस कर सुद्दाव के पानी में शाफा बनाकर पैखाने की जगह रक्खें और जिक्की में छेवा देते हैं उससे पीला पानी निकलता है परंतु इसमें डर है— इस रोग में जो पानी रोगी को पिलाते हैं उसके पकाने की यह रीति है कि सौ हिस्से पानी और एक हिस्से सिरका मिलाकर औटावें और जब तिहाई रह जाय तो ठंडा करके पानी के बदले पिलाया करें— इससे जलंधर की प्यास बहुत बुझती है— प्यास के बुझाने और जिगर के सुद्दा खोलने के लिये सिरका अति लाभ दायक है। और इसके लिये ज़रिश्क भी अच्छा है— जो खांसी हो तो खट्टी वस्तु कोई न दे— जो इस रोग के साथ कोई और रोग हो तो उसका भी ध्यान रक्खें और जिक्की में पेट पर यह लेप करें— नमक अरमनी— मुलैठी— क़र्दमाना— सुनक्के— प्रत्येक साढ़े दस माशे— करंजुवे के बीज २४॥ साढ़े चौबीस माशे— बकरी की मेंगनी १७५ माशे— जौका आटा और गौ का गोबर प्रत्येक २१० माशे— सब को पीसकर सौंफ या कासनी के पानी में मिलाके पेट पर लगावें ॥

तवली जलंधर में जब बहुत दिन हो जावें और पेट कड़ा हो जावे तो उस समय पेट के कड़ा होने के सिवाय और कुछ डर नहीं है और उपाय उसका यह है कि उन औषधों का लेप करें— जिनसे पेट नर्म हो उसके पीछे बाबूना— नाखूना— दोनाम रवा— सातर सुद्दाव के बीज— जुन्दबेदस्त— गांव की राख— मरज़ंजोश— कूट छानके और सुद्दाव के पानी में पीसकर पेट पर लेप करें— और जब जलंधर में कोई

औषधलाभदायक नहोतो पांच स्थान पर दाग दें एक मेदे पर दूसरा जिगर पर- तीसरा तिल्ली पर- और चौथा मेदे पर- नीचेको पांचवां टूंडीपर- जो रोगी पुष्टहोतो सबदाग इकट्ठा दें नहींतो थम थमकर ॥

पंद्रहवां अध्याय

॥१५॥

यरकान और तिल्ली और पित्तेके रोगोंके विषयमें ॥

पहिलापाठ १

यरकानके विषय में

इसरोग में शरीरका और आंखोंका रंग पीला या काला होजाता है- पीला यरकान पित्तोंके फैलने और काला यरकान सौदा के फैलने से होता है ॥

पीला यरकान बहुत अच्छाहोता है- एक वह जो बुहरान के दिन पित्तोंके चमड़े की ओर आजाने से होता है- इसमें जोरोगी पुष्ट होतो कुछ उपाय नकरें औरजो कमज़ोर हो तो उसेगर्म पानी में बिठावें कि शरीर के छिद्र खुलें - और मवाद

भली भांति चाम से आजाय और केवल सिकंजवीन या कासनी के शीरे के साथ पिलावें जो पीलापन आप से आप जाता रहे तो अच्छा है नहीं तो खोलने वाली और जलाबेने वाली औषधें पिलावें ॥

दूसरी प्रकार यह है कि जिगर में गरमी से कोई विगाड़ उत्पन्न होने के कारण हो यह बहुधा रुधिर की तप में होता है- इसकी पहंचान जिगर के विगाड़ से होगी-इसमें वही उपाय करें जो जिगर के विगाड़ में लिखागया है ॥

तीसरी प्रकार यह है कि पित्ते के गरम विगाड़ से उत्पन्न हो लक्षण इसके यह हैं कि अचानक उत्पन्न होगा और उससे पहिले सफेद मूत आवेगा-फिर पीला होकर गाढ़ा और काला हो जायगा- और न कोई विगाड़ और सुद्दा जिगर में होगा- और भूख जैसी की तैसी रहेगी इसमें सिकंजवीन कासनी के शीरे के साथ पिलावें- और जो उपाय जिगर की गर्मी का है वही इसका है ॥

चौथी प्रकार यह है कि पित्ते में गरम सूजन उत्पन्न हो और उससे पित्त और बार फैले- लक्षण उसका यह है कि तप रहेगी- और जीभ में कांटे पड़ेंगे और उबकाई और उलटी होगी- जो उपाय जिगर की गरम सूजन का है वही इसका है ॥

पांचवी प्रकार यह है जो सारे शरीर और रगों की गरमी से उत्पन्न हो- लक्षण उसका यह है कि बदन जलेगा और कब्ज रहेगा और सारे अंग में खुजली और फुंसियां होंगी- और सब लक्षण गरमी के पाये जावेंगे - जो कोई सादा विगाड़ हो तो ठंडाई पिलावें और जो मवाद हो तो उसे निकालें और सारे शरीर को

रोका करें- और तरी पहुंचाने वाले रोगन मलें- और उसी प्रकार से आबज़न में बिठावें ॥

छठी प्रकार वह है जो शरीर के छिद्र बंद होने से उत्पन्न होता है-इसका कारण यह है कि गरमी की ऋतु में बहुत चलने से रेत शरीर पर जम जाती है और छिद्र बंद होजाते हैं-इस से पित्त औंटकर फैलते हैं इसमें खैरु के फूल और गेहूं की भूसी औंटाकर उसके गर्म पानी से न्हावें ॥

सातवीं प्रकार वह है जो जिगर की गर्म सूजन से हो-लक्षण और उपाय उसका उसी सूजन में लिखागया है ॥

आठवीं प्रकार वह है जो जिगर के सुद्दे से हो इसका उपाय भी जिगर के सुद्दे में मिलेगा ॥

नवीं प्रकार वह है जो विषैले जानवर के काटने और विष खाने से उत्पन्न हो- इसमें विष का औगुण दूर करें- और वह औषधें दें जो उचित हो और जो गरम विष खाया होतो- कुर्स काफ़ूर और ठंडी औषधें दें- और जो ठंडा विष होतो तिरयाक फ़ारूक़ खिलावें ॥

दसवीं प्रकार यह है कि पित्त कमज़ोर होजावे और पित्तों को जिगर से न खेंचे- और वह सारे बदन में फैलजावे-लक्षण उसका जी मतलाना है- और पित्तों की उलटी न होना और क़ब्ज़ रहना और दस्त बिना रंग के होना-इसका उपाय वही है जो जिगर की कमज़ोरी का है ॥

ग्यारहवीं प्रकार वह है कि जिगर और पित्ते के बीच में जो रास्ते हैं उसमें सुद्दा पड़े- लक्षण उसका वही है जो पित्ते की कमज़ोरी में लिखा गया है- और दस्त भी होले होले सफ़ेद आने लगे- इसमें जिगर के सुद्दे को खोलें ॥

बारहवीं प्रकार यह है कि पित्ते और आंतों के बीच में जो रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े- इसमें अचानक दस्त सफेद आवेंगे- और कब्ज होगा- इसमें भी सुद्दे को खोलें और इन दोनों प्रकारों में अमलतास को करंग कल्ले के पानी में घोल कर कड़ुये बादाम का रोगन मिलाकर पिलाना अति लाभ दायक है ॥

तेरहवीं प्रकार यह है कि इन दोनों रास्तों में बुरा मांस या मस्सा उत्पन्न हो- लक्षण उसका वही है जो ऊपर के प्रकारों में लिखा गया है- परंतु उपाय इसका नहीं हो सकता है ॥

चौदहवीं प्रकार यह है जो बाफ की कूलंज से उत्पन्न हो- इसका कारण यह है कि लेसदार बाफ इस रग के मुंह पर चिमट जावे जिससे पित्त गिरते हों- उपाय इसका वही है जो कूलंज का है ॥

इस रोग में कारण दूर करने के पीछे जो पीलापन आंख में रहजाय तो गरम स्थान में बैठकर पुराना सिरका नाक में डालें और सिरका और गुलाब मिलाकर आग में पकावें और इफसंतीन को औटाकर कुल्ली करें ॥

काला यरकान भी कई प्रकार का होता है- पहिले प्रकार वही है जो बुहरान के दिन हो- तिल्ली के रोगों में इसके पीछे तिल्ली का यह रोग घटजावेगा- इसका उपाय वही है जो पित्तों की प्रकार में लिखागया है- और साबुन और सोये का तेल मलना अति लाभ दायक है ॥

दूसरी प्रकार यह है कि जिगर और तिल्ली के बीच में रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े- लक्षण उसके यह है कि मुख

हौले हौले घटेगी- और जिगर में बोझ होगा- और : . .
भी हौले हौले चढ़ेगा- इसमें सुद्दे को खोलें - और जुल्ला
व दें- और बायें हाथ से फ़स्द बासलीक अथवा असीलम:
खोलें ॥

तीसरी प्रकार वह है कि मेदे और तिल्ली के बीच
में जो रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े-इसमें भूख अचानक जाती रहे
गी और तिल्ली में बोझ होगा-इसका उपाय भी :
र कारा करें ॥

चौथी प्रकार वह है जो रुधिर के जल जाने से उत्पन्न
हो- यह जिगर की गरमी के कारण से होता है-इसका :
उपाय जिगर के बिगाड़ में देखो ॥

पांचवी प्रकार वह है जो तिल्ली की कमज़ोरी से उत्प
न्न हो- इसका उपाय आगे लिखा जायगा ॥

छठी प्रकार वह है जो तिल्ली की सूजन से उत्पन्न हो
इसका वर्णन भी आगे करेंगे ॥

सातवीं प्रकार वह है कि जिगर में अधिक ठंढ से बि
गाड़ हो और उससे यह रोग उत्पन्न हो- उपाय इसका जिगर के रोगों
में लिखा गया है ॥

जब यरक़ान पीले और काले दोनों साथ हों तो दोनों
हाथ से फ़स्द खोलें - तीन दिन बीच देकर और ऐसी औषधें औं
टाकर पिलावें जो सौदा और पित्तों को निकालें- और जो मवा
द अधिक हो उसके अनुसार उपाय करें- और जिगर और ति
ल्ली को ठीक करें ॥

—:०:—

दूसरापाठ २

तिल्लीके बिगाड़ के विषयमें

गर्मी का लक्षण तिल्ली का जलना और मूत्र और दस्तों का रंग लाल और काला होना और गरमी के लक्षण पाये जावें ॥

और बंड का लक्षण यहहैकि तिल्ली के स्थान पर गड बड होनी और भूख का घटना और दूसरे लक्षण ठंड के पायेजावेंगे ॥

और खुश्की के लक्षण यह हैं कि तिल्लीपर बोझ न होगा और रुधिर गाढा होगा और शरीर दुबला होगा ॥

तरी के लक्षण यह हैकि तिल्लीमें बोझ होगा और शरीर का रंग सीसे कासा होगा ॥

जो कोई सादा बिगाड़ होतो मिज़ाज को ठीक करें औरजो मवाद होतो उस मवाद को निकालें और फिर ठीक करें जैसा कि जिगर के रोगों में लिखागया है - और बांये हाथ से फस्द बासलीक खोलें - और जो गरमी से बिगाड़ होतो यह औषधे ला भ दायक है - बेद के पत्तों और कुशूस के पानी से सिकंजबीन मिलाकर दें - और नर्म करने के वास्ते काली छड़ पानी में औटा के गुलकन्द के साथ पिलावें - और जो गरमी अधिक होतो कुर्स काफूर बुसकुल्लू कंद्रीपून मिलाकर दें - और जो ठंड से बिगाड़ होतो अमरूद का पानी और सिकंजबीन बुजूरी नहारे मुंह पिलावें - और मूली का पानी और तिरियाक अर्बा और गुलकंद - और चित्र की जड़ की छाल - सिकंजबीन बुजूरी के साथ

दें और जो खुश्की से बिगाड़ होतो शर्बत बनफ़शा और सालजोब न आदि तरी पहुंचाने वाली औषधें पिलावें या लगावें - और जो किसी मवाद से बिगाड होतो पहिले फ़स्द और जुल्लाबसे सौदा को निकालें - और जो तरी से बिगाड होतो - गुलाब के फूल - बिञ्ज की जड़ - बालछड़ - रेवंद - धुलीहुई लाख - और जी एक सब को पीसकर कुर्स बनाके दें - और सुखाने वाली औषधों का लेप करें - और नर्म करने के लिये हुव्व अयारिज़ दें - और जो कई मवाद मिले हुये होतो उसका उपाय भी वैसाही करें - और तिल्ली से ठंडा मवाद निकालने के लिये बिञ्ज की जड़ की छाल और इफ़ती मून दोनों बराबर कूट छान कर शहद में मिला के ७ सात माशे देना चाहिये -, और जो ठंड और खुश्की दोनों हो तो इनका वर्णन आगे कियाजायगा ॥

तीसरापाठ ३

तिल्लीकी सूजनके विषयमें

जो सूजन गरम हो तप नित्य रहेगी - और जो कारण इसका रुधिर होतो तप चौथे दिन अधिक होगी - और जो पित होतो एक दिन बीच करके तप अधिक होगी - और बाकी और लक्षण रुधिर और पित्तों की अधिकता के पायेजावेंगे - और जो कफ़की सूजन हो उसको तहब्बुज तिहाल कहते हैं - और जो सौदा से हो उसको जसावत या सलाबत कहते हैं - लक्षण तरी और खुश्की के दूसरे पाठ में लिखे गये हैं - मवाद के अनुसार उस मवाद को निकालें और ठीक करें - और जो गरम सूजन

होतो जौका आटा-हरी मकोय-झाऊ के पत्तोंके पानी में पीसकर तिल्ली पर लेप करें- और कफ की सूजन में अंगूर की लकड़ी की राख-रेगुन गुल में मिलाकर लेप करें- या बकरी की मेंगनियां जलाकर उसकी राख तीन हिस्से और किब्र की लकड़ी की राख ऐक हिस्से सिरके में मिलाकर लगावें- और जो सौदासे होतो अशक सिरके में पकाकर या सुद्दाव और पोदीना सिरके में पीसकर या गेहूंकी भूसी सिरके में ओटाके अशक मिलाकर तिल्लीपर लेप करें- और कहते हैं कि जो कोई प्याला झाऊ की लकडी का बनाकर खाना पानी उसमें खिलाया पिलाया करें तो चालीस दिनमें तिल्लीकी सूजन घुलजावेगी- और इसरान-सूखा जूफा-संभालूके बीज- बराबर लेकर कूट छान के शहद में मिलाके सात माशे खिलानाभी सूजन को घुलादेता है और कुंजीर और किब्रका अचार जो सिरका में बनाहो अति लाभदायक है- और मरहमों से सूजन को नरम करके बायें हाथ से फस्द आसीलम खोलना लाभदेता है-

चौथा पार ४

तिल्ली की सूजन के पकजाने के विषय में

लक्षण पीप पड़ने का यह है कि पीड़ा होती है- जैसे कोई वस्तु चुभती हो और मूत्रमें तलछट निकलती है और दुर्गंधि आती है और कभी ऐसा होता है कि यह सूजन अंदर को फूटती है- और उलटी और दस्तोंमें निकलती है- उपाय इसका वह है जो जिगर के फोड़े का है- परंतु मूत्र लाने वाली औषधें मिजाज के अनुसार दें और जो पीप निकलजाने के पीछेभी कड़ापन रहै तो

और क़ब्ज़ करने वाली औषधों से बचें- और जब सूजन कड़ी होके पुरानी होजाय और कोई औषधं लाभका रक नहो तो दागदें-इसकी रीति यहहै कि चाम को तिल्ली की जगह से मोचने से पकड़ के अलग उठालें- और लोहेके औज़ार से जिसकी दोनोंके हो भली भांति गरम करके दागदें- और इसी दाग के इधर उधर दो दाग और दें कि तीन चार में छः दाग होजावें और जो वह औज़ार छः पहल का होतो औरभी अच्छा है- उससे एकही वार में छः दाग होजावेंगे ॥

पांचवांपाठ ५

तिल्लीकी कमज़ोरीकेविषयमें

जो तिल्लीकी खेंचने वाली शक्ति में कमज़ोरी होतो लक्षण उसका यहहै कि भूख बिलकुल जाती रहेगी- और सौदावी रोग उत्पन्न होंगे- औरजो उसकी मासका शक्ति में कमज़ोरी होतो सौदा की उलटी और दस्त होंगे- और जो उसके पचाव में कमज़ोरी होगीतो भूख बहुत होगी-या सौदाके दस्त होंगे- और जो दूर करने वाली शक्ति में होतो तिल्ली चढ़ जावेगी- और भूख जाती रहेगी-तिल्ली के पुष्ट करने के लिये इफ़संतीन रूमी और बालछड़ और झाऊका फल और कर्दमाना- और सरकंडे की जड़ को कुल्लीकरें- और कित्र की जड़ और गुलाब के फूल-गूगल सबको कूटकर गाऊ के पत्तों के पानीसे या सुदाब के पानी से मिलाके सिरके के साथ तिल्लीपर लेप करें- और तिल्ली को खुरखुरे कपड़े से मलें- और उसपर खाली सींगी लगावें ॥

छठा पाठ ६

तिल्ली के सुद्दे के विषय में

इसमें तिल्ली में बोझ होगा – और सूजन के लक्षण बिलकुल न होंगे– जिगरके सुद्दे में जो पुष्ट करने वाली औषधें लिखी गई हैं दें– और सिकंजबीन बुजूरी और कुर्स किब्र अति लाभ दायक हैं॥

सातवां पाठ ७

तिल्ली की उस सूजन के विषय में जो वाय से हो

यह तिल्ली के पचाव और दूर करने वाली शक्ति की कमज़ोरी से होती है – इसमें तिल्ली को पुष्ट करें– और गेहूं की भूसी और बाबूना और नमक कूट कर सेंके और नमक भर्मनी और पोदीना और सुदाब सिरके और शहद में पीसकर लेप करें– और बारे लगावें– और सुफ़ूफ़ तेरातेजक खिलावें॥

आठवां पाठ ८

तिल्ली में पथरी पड़ने के विषय में

इसमें रेत मूत्रमें आती है और तिल्ली में चुभती है और इसके सिवाय और कोई रोग नहीं होता– चूनीर को सिरके में भिगोकर खिलावें और उसी का लेप करें– और मूत्र लाने वाली ...

औषधें दें जो गुरदे और मसाने की पथरी को तोडती हैं ॥

सोल्हवाँ अध्याय

१६

आँतों के रोगों के विषय में

पहिला पाठ १

ता २३-०८-२१

ज़लकुल अमआ के विषय में

इस रोग में भोजन विना पचे हुवे दस्त होकर निकल जाता है- जो आंतोमें फुंसियां होतो जलन और पीडा होगी-और पतला और पीला पानी निकलेगा- पित्तों का जुल्लाव दें- और फस्द खोलें- और ठंडी औषधें पिलावें - और सुफूफ़ जलकुल अमआ खिलावें ॥

और जो [illegible] औरचु
भना भीतर होगा- पीड [illegible] और कभी नीचे को
और कभी आस [illegible] औषधें
[illegible] डी के नीचे ल [illegible]
औ [illegible] और
उलटी करावें- औ [illegible]

सुखानेवाली औषधें दें ॥

और जो तरी से बिगाड़ होतो सुखानेवाली सुफूफ खिलावें और रोगन गुल पेट पर मलें ॥

और जो पित्तों की अधिकता होतो पित्तों को निकालें और पीली हड़ दें ॥

और जो कफ और पित दोनों होतो दोनों को निकालें और पीली हड़ सात माशे - हब्बुल आस - वाज प्रत्येक पौने सात माशे सबको कूट छानकर उसमें इलों पौने सात माशे मिलाके यह सुफूफ सात माशे फंकावें ॥

और जो फ़ालिज से यह रोग होतो उसीका उपाय करें ॥

और जो जुल्लाब से यह रोग होतो चार सुरख भून कर रोगन गुल में चिकनी करके फंकावें - और जो इलों को मैंडे से सना ओटायें कि वह जमजावे - तो उसका खिलाना अति लाभ दायक है ॥

दूसरा पाठ २

आंतों से दस्तों में रुधिर आने के विषय में ॥

यह रोग दो प्रकार का है एक तो यह कि आंतें छिलजावें दूसरे यह कि रुधिर की अधिकता से आंतों की रगका मुंह खुल जावे ॥ किसी

पहिली प्रकार अर्थात् आंतों के छिलजाने के जो कारण इसके पितहोंतो पित्त के दस्त आवेंगे और फिर दस्तों में छिलके निकलेंगे - और फिर रुधिर छिलकों समेत और आंव निकलेगी - और

गसी के लक्षण पाये जावेंगे- आदि में कच्चे अंगूरों का सत्त और अन
र का सत्त और जो औषधें खट्टी और कब्ज़ करने वाली हों खिला
वें- और जब मवाद अधिक होजावें तो उसे निकालें- और लुआव
अस्पगोल और लुआव बीदाना- और लसदार औषधें जो घाव को
वंद करें पिलावें- और कुलफ़े का शीरा- मिले असनी के साथ पि
लाना और सुफ़ूफ सिकालियासा अति लाभदायक है- और जब तुर
त दस्तों को रोकना होतो बीजों को भून डालें और केवल वारतंग ला
भदायक है- और जब पीड़ा अधिक होतो चार तुख़्म का लुआव रोग़
न गुल में मिलाकर पिलावें॥

और जो कफ़ से होतो पहिले कफ़ के दस्त आवेंगे- और
बहुधा ज़ुकाम नज़ले के पीछे ऐसा होता है- पहिले कारण को रोके
और यह औषधें दें जो घाव पर चुपकें- जैसे रैहां के बीज और बारत
ग और जंगली तुलसी आदि- और काली हड़ घी से चिकना के भून
कर और कूटछानकर तीन माशेलें- और उसके बराबर सफ़ेद
कंद मिलाके खिलावें॥

और जो यह रोग सौदा से होतो हर समय मरोड़ रहै
और दस्तों में सौदा और रुधिर और छिलके निकलेंगे- इसमें प
हिले कारण को दूर करें- फिर तिल्ली को पुष्ट करें और मवाद थाम
करने वाले बीज और सुफ़ूफ तीन खिलावें॥

और जो तिल्ली के कड़ेपन और मवाद की ख़ुराबी से
होतो पहिले कब्ज़ होगा- और जैसीही वस्तु खाई होगी- और मवा
द भी कड़ा निकलेगा- इसमें तर और नरम करने वाली औषधों को दें
जैसे बीदाने- अस्पगोल का लुआब- और शर्बत बनफ़शा और रोग़
न बादाम आदि- और जब आंतों से मवाद निकल जावें और मरोड़
हे तौ कब्ज़ करनेवाली औषधें जो रंगत होंदें- परंतु जब

तक मवादको न निकाललें - और आंतों से सूखा मवाद न निकलदु वे जभी जावन करनेवाली औषधें न दें ॥

और जो विषेली वस्तु खाने से मरोड़ हो जैसे हरताल और नौसादर और चूना आदि - उसमें उलटी करावें और ताजा दूध और इरीरे पिलावें ॥

और जो जुल्लाव पीने से मरोड होतो ठंडी औषधें दें और सुप्फ़ तीन और बीज खिलावे - और मठे में लोहा बुझाकर अकेला पिलावें या चांवल के साथ खिलावें ॥

जब आंतोंकी रग खुलजाने से रुधिर के दस्त आवें तो लक्षण उसका यह है कि मरोड़ और ववासीर और जिगर के दस्तों के लक्षण न होंगे और पीडाभी न होगी - परंतु पेचिश में पीड़ा भ वश्य होती है - जो रुधिर अधिक निकलजाय और रोगी में ज़ोर रहे तो फ़स्द बासलीक़ खोलें - फिर बंद करने के लिये कुर्स काहरुवा और ऐसीही औषधें दें - और गिले अरमनी पौने दो माशे - शर्बत हब्बु लआस या शर्बत अंजबार के साथ देना अतिलाभ दायक है और अ नारके छिलके और माज और गिले अरमनी बराबर लेके कूट छा नकर गोलियां बनावें - उसमें से सात माशे खाना अतिलाभ दाय कहै - और पेट पर वारे लगानाभी अच्छा है ॥

जबतक होसके इस रोग में अफ़ीम के प्रकार की औष धें न खिलावे - और जो अवश्यक्ता होतो शाफे में दें या उनके सा थ उनकी टीका करने वाली औषधें मिलादें ॥

तीसरापाठ ३

आंतोंसे पीप आनेके विषयमें

कारण इसका या तो मरोड़ से घाव पड़ जाना है- या पक कर सूजन का फूटना- इस में पहिले पेचिश होगी या सूजन होगी ॥

पहिले उन औषधों से हुक़ना करें जो घाव को साफ करें और फिर उनसे जो घावको भरलावें- हुक़ना करें ॥

साफ़ करनेवाली औषधें यह हैं- अनार के छिलके- सिमाक़- आस- चांवल- जौ- सबको कुचलके पानी में औटावें- और मलकर थोड़ा सा बिना बुझा चूना मिला कर हुक़ना करें ॥

और भरलाने वाली औषधें यह हैं- बबूल का गोंद- गिले अरमनी- दम्मुल अखवैन- बरगद के रेशे का रस- जला हुआ कागज़ सबको पीसकर हरे बारतंग के पानी में और कच्चे शहतूत के रसमें मिलाके हुक़ना करें ॥

जबमरोड़से पीप आवेतो पहिले कारणको दूर करें- और फिर घावके भरने का उपाय करें ॥

चौथापाठ ४

कूंथकेरदस्त आनेके विषयमें

इसमें आंव निकलतीहै और कभी उसके साथ रुधिर होता है- यह सख्तेसवाद के आंतों में फंस रहने से होता है और ... ... आंव निकलतीहै इसको नहीर ...

उपाय

मम्सा यह है कि अस्पगोल आदिके पिलाने से आंव नहीं आती-इससें मवाद की नर्म करें और वैसाही हुक्ना काम में लावें और कभी केवल गरम पानी लाभदेताहै और इससें कब्ज करने वाली औषधें कभी नदें - कि उससे मरने काडर है॥

और जो कफ़या पित्त या सौदा से होगईहो तोउपाय उसका मरोड में लिखागयाहै॥

इस रोग में हुक्ना और शाफ़ा अति लाभदायकहै॥

और जो नीचे की आंतमें गरम सूजन होने से यह रोग होतो उस स्थान पर बोझ होगा- और कभी तप और मूत्र कठिनता से होगा-इससें फ़स्द खोलें और कमर के नीचे पछने लगावें- और भोजन थोड़ादें और ठंडी औषधें जोकुधिरकी गरमी दूर करें पिलावें- और जब मवाद का गिरना रुकजावेतो - खैरू - मेथी - बनफ़शा - बाबूना - करम कल्लेके पत्ते - औटा के पेटको और पैखाने की जगह को धावें- और जो उल्टी हो सकती हो तो बहुत अच्छाहै॥

और जो पैखाने कीजगह अधिक ठण्ड पहुंचने से यह रोग होतो - सेकें और गरम पानी से धोवें- और कूटका तेल आदि गरम करके मलें - और ईंट गरम करके उस पर बैठें - और सात माशे हलदी भून के नहार मुंह फांकें॥

जोसवारी या किसी कड़ी वस्तुपर बैठने सेहोतो मोमरोगन मलें॥

खाली पेटमें खटाई खाने से भी ऐसा रोगहोजाता

हैं उसमें मिश्रीका शर्वत पिलावें ॥

पांचवां पाठ ५

सरोड के विषय में

इसका उपाय कारण के अनुसार करें जो ऊपर लिखा गयाहै - और कूलंज में और केंचुये पड़ने के रोगमें लिखा जायगा ॥

और जो जुल्लाव के पीने के पीछे यह रोग हो-तो थोड़ा थोड़ा गरम पानी पिलावें - और रोगन गुल मलें ॥

छठा पाठ ६

आंतों के फूलने औरबोलनेकेविषैमें

यह रोग वायु उत्पन्न करने वाली वस्तुओं के खाने से या बुरा भोजन खाने से होताहै - इसमें अच्छा भोजन खावें - और गुल कंद और गुलाब पीवें और जो कारणकम ज़ोरहो और उससे आंत को ठंड पहुंचेतो आंतें बोलेंगी - इसमें भोजन थोड़ा खावें और माजून फ़्लाफली और कमूनी खावें - और जो इसके साथदस्तभी आतेहोतो जवारिशखोजी अतिलाभदायक है ॥

सातवां पाठ ७

कूलंज के विषयमें

यह पीडाहै जो कूलून नाम एक आंत में होतीहै- और इसके साथ बिलकुल कबज होजाता है - और जोकुछ निकलताभीहै तो बडी कठिनता से - कारण इसका गाढे कफका आंतमें अटका रहना होतो भोजन बुरा खायाहोगा और कबज अधिक होगा - और खट्टा और नमकीन वस्तुभ च्छीलगेगी पहिले शाफे और हुकनोंसे मवाद को नरमकरें फिर जुल्लाव पिलावें - और वह जुल्लाव ऐसा होकि मनली कोदूरकरे - और सेदेको पुष्टकरें - जैसे सफरजली और जवारि शशहरयारा का जुल्लावदें ॥

जुल्लावदेने से पहिले आवज़न, औरसेंक, औरलेपन करें ॥

और कबज दूर होजाने के पीछे एक रातदिन बिलकुल भोजन न दें - और चनों को ओटाकर उनका पानीम रस मसाला डालकेदें - और पानी थोड़ा पिलावे - औरजोपानीकेबदले गुलाब या सौंफ का अरक या माउलअस्लदें तो अच्छाहै ॥

जो गाढी वाय के कारण से पीडाहोतो तखलेसे चुभे यें और पेट फूलने वालीवस्तु खाई होगी - और पेट बोलेगा - २
और पीडा एक स्थान परनरहे इसका उपाय भी वैसाहीकरें और जुल्लाव देनेसे पहिले इसमें लेप आदि कर सकतेहै और सोये का तेलमलें और कमूनी खिलावें - और वहउपाय

करें- जो मेदे के फूलने में लिखा गया है - उरद के आटे की रोटी एक ओर से पका के कच्ची ओर से गरम गरम पेट पर बांधना और चारे लगाना अति लाभदायक है ॥

पेट पर सोदा के गिरने से भी कुछ मनुष्यों को ऐसी पीड़ा होती है - चिन्ह उसका यह है कि अचानक पीड़ा हो- और पेट फूल जावे और खट्टी डकारें आवें - परंतु पीड़ा अधिक नहो इसमें सोदा का मवाद निकालें और फस्द असीलम खोलें और तेल मलें - और जो आंतों की सूजन के कारण से पीड़ा होतो मवाद के अनुसार जुल्लाब दें - और फस्द खोलें - और वह उपाय करें जो मेदे की सूजन में लिखा गया है - टीली और कफ की सूजन बहुत कम होती है - और सौदा की सूजन में उन औषधों से हुकना करें जो वायु को तोड़ें - और उन में रोगन मिले हों ॥

और जो आंत के टलजाने से यह पीड़ा होतो कूदने उछलने से ऐसा हुआ होगा - इसमें पेट मलवावें इसी को लीगनाफ़ टलना कहते हैं ॥

और जो आंत अपनी जगह से उतर आवे और मवाद आंत में फंसा हुआ होतो उस मवाद को निकालें - और फिसलाने वाली औषधें दें - और ऐसा उपाय करें कि फिर यह रोग नहो ॥

औरजो आंतोके भीतर पित्त इकट्ठा होके तो केवल मवाद ही निकाल लेने से लाभ होजायगा : ऐसा बहुत कम होता है क्योंकि पित्त पतले होते हैं और ... में उत्पन्न भी कम होते हैं ॥

और जो मसाने और गुर्दे और जिगर और तिल्ली और रहम की सूजन से होती उनका उपाय करें॥

एक प्रकार कूलंज की बहुत बुरीहै - इसको एला उस कहते हैं - और उबकाई और उल्टी भी इसमें होतीहै॥

और जब यह रोग बढ़जाता है तौ पैखाना मुंह से निकलता है - इसका उपाय वही है जो ऊपर लिखा गया है॥

इसरोग के आदिमें फ़स्द अति लाभदायकहै - जब आंतों में सूजन होया ऐसकाडरहो॥

हर प्रकार की कूलंज में यह औषधें अति लाभदायक हैं - हुदैर कामास - सुखाये हुए केंचुए - भुनाहुआ बिच्छू - जलायाहुआ बारहसिंगा - और यही औषधें मरोड़ के रोगको एकदम से खोदेतीहैं॥

आठवां पाठ ८

विना पीड़ा के कब्ज़ होने के विषयमें

इसमें कूलंज का उपाय करें - और शर्बत बनफ़शा रोग़न बादामके साथ पिलावें॥

नवां पाठ ९

पेट में केंचुए पड़ने के विषयमें

यह चार प्रकार के होते हैं - एक लंबे बालिश्त भरके या गज़ भरके उनको केंचुए कहते हैं ॥

दूसरे चौड़े जैसे कद्दूके बीज होते हैं उनको कद्दूदाने कहते हैं ॥

तीसरे गोल होते हैं ॥

चौथे पतले और छोटे इन को चिंचिने कहते हैं ॥

लक्षण इनका यह है कि दिनको होंट सूखे रहैं- और रात को राल बहाकरे - और मेदे के मुंह पर कुरेद मालूम हो और भूखके समय केंचुए ऊपर चढ़ते हों और ऊपर ही की आंतमें पड़ते हों और कद्दूदानोंसे और तीसरी प्रकार से भूख अधिक होजाती है - और वो कभी कभी दस्तों में भी निकला करते हैं - और- कूलून- और- अऊर -नामकआंतों में उत्पन्न होते हैं -और चिंचिने बच्चों के बहुत पड़ते हैं और नीचेकी आंतों में होते हैं - उनसे पैखाने की जगह खुजली होती है ॥

इन्हें मारके निकालें-इसप्रकार सेकि तीन दिन बराबर ताज़ा दूध मीठा डालके पिलावें - और चौथे दिन दूधके साथ यह औषधें दें छिला हुआ बिरंग- काबलीरेवन्द- तुरबुद- कमीला प्रत्येक ९७॥माशे - बाकला- मिश्री - कड़वा कूठ प्रत्येक २४॥माशे- शीर्ह ३५ माशे- नमक ३॥ माशे कूट छान के १०॥ माशे दें और पीने के समय नाक बन्द करलें - नहींतो कीड़ोंको इनकी बास पहुंच जावेगी ॥

गरम मिज़ाज वालेको गरम औषध कभी नदें उ

केलिये यह औषधहै खट्टे अनारके पेडकी छालऔरउ सीकी जडपानी मे औटाके और छानके पिलावें -इससेकी डेमर जातेहैं - औरदस्तोंके साथ निकल जातेहैं - और जो दवा पीना बुरा मालूम होतो हुकना या शाफ़ा करें - औरये भी नहोसकेतो सिमाक अकाकिया गिले सरखतूम शरावमें पीसकर पेट पर लेप करें - या कडुये बादाम और कमीला और तुरमस और किब्र और ख़रनूब को सिरके में पीसकर लेपकरें ॥

और वच्चों के लिये यह उपाय अतिलाभ दायकहै कि मेंहदी और मोम मिलाके वत्ती बनावें और उसकाशाफ़ करें फिर थोडीदेर पीछे दियेसे देखके जो कीडा किनारे हो उसे मोचने से पकडके खेंचलें - जैतून का कच्चा तेलभीस वप्रकार के कीडों को लाभ दायकहै - चाहे खिलावें या पा खानेकी जगह लगावें ॥

सत्रहवांअध्याय

॥१७॥

उन रोगोंके विषयमें जो पैखाने कीजगह होतेहैं ॥

पहिला पाठ १

बबासीरके विषयमें

इसमें पैखाने के स्थान पर मससे फूल आतेहैं- जो उनसे रुधिर और पीला पानी वहे तो उसे खूनी बवासीर कहते हैं और जो कुछ न वहे तो वादी बवासीर कहलातीहै इस रोगमें सौदाके मिलने से रुधिर गाढ़ा होजाता है या वह जलजाता है और कभी पित्तों के मिलने सेभी होताहै-रुधिर के गाढ़ा होनेके लक्षण यहहैं शरीरभारी होगा और पीडा और खरक अधिक होगी-और पित्तों के मिलने के चिन्हय हहैं कि मससों में जलन और पीडाहोगी-फस्द खोलेऔ जोनहो सकैतो पछने लगावें और कब्ज़ को दूर करें और रु धिरको ठीक करें और जो वह अधिक निकलता होतो कु स काहरुवा खिलावें-और जब काला रुधिर निकलने लगे और कमजोरी काडर नहोतो कभीबंदनकरें क्योंकि इससे और रोग नहीं होने पाते और जो मससे फूलेहों और पीडाहों प रंतु उनमें रुधिर नवहता होतो खतमी और साये से सेंके- और रोगन शफतालू मलें-और मरहम सफैदे का अतिला भ दायकहै-परंतु मस्सोंके काटने में डरहै-जोकाटें तो सकम ससा रहने दें और गूगल और मुर और बकायनके छिलके और कांचली सांपकी और टुंडनी वैरान की-चाहे सबकोच हे एक २ को जलाकर धूनी लेना मस्सोंको सुखा देताहै-औ र गिरा देताहै ॥

दूसरा पाठ २

बादी ववासीरके विषयमें

इसरोग में गाढी वाय आंतो में उत्पन्न होतीहै - वह कभी नीचेको उतरतीहै और कभी पीठकी ओरजाती है और कभी हाथ पावों में आजाती है - और कभी खून वहताहै और कभी पेट वोलताहै और कभी पीडाभी होतीहै - इसमें सोदा का सवद निकालें और वाय की तोडने वाली औषधेदें - और किब्रकी जड़ की छाल सब हिस्से और सातर फारसी उससे आधी पीस कर सात मासे फंकावें और वदन का मलना और घोडे की सवारी और महनत करना और फ़स्द बासलीक़ अति लाभदायकहै ॥

तीसरी पाठ ३

पैखाने के स्थान पर नासूरहोजाने के विषैमें

उससे पीलापन वहा करताहै और वड़ी कठिनाई से अच्छाहोता है - इस रोग में शियाफ़ गर्म पानी में घिसकेसवेरे और शामकोदोतीन बूंदें इसकी चित लिटाके टपकाया करें - और जव तक दवा सूख न जाय वैसेही पडेरहें - और जो नासूर में वत्तीजा सके तो वत्ती उसी शियाफ की औषधों के गोंद कापानी लगाके रक्खें - और सलाई में रुई लपेटके वत्ती की जगह रखना उत्तमहै ॥

और जव नासूर आंतके पार होजाता है तो अच्छा नहीं

होसकता ॥

चौथा पाठ ४

पैखाने की जगह सूजन होजाने के विषय में

जो गरमी से होतो पीडा और जलन होगी - फस्द खोलें और पछने लगावें और उलटी करावें - और जब सूजन पकने पर आवेतो तुरंत चीरदें क्योंकि देर में नासूर पड़ने का डरहै - और जो सूजन ठण्ड और कफ़ की अधिकता से होतो सूजन नरम होगी और गरमी के लक्षण बिलकुल न होंगे उसमें उलटी करावें और पकाने वाली मरहम लगावें ॥

पांचवां पाठ ५

पैखाने की जगह फट जाने के विषय में

इसका उपाय वही है जो होठों के फटने में लिखागया और बहुत ठण्डे पानी से बचें - और खट्टी वस्तु न खावें - और कब्ज़ न होनेदें - इसके लिये सबेरे शर्बत बनफ़शा और रोग़न बादाम और लुआब बीदाना मिलाकर देते हैं - और नरम भोजन खिलाते हैं ॥

छटा पाठ ६

शिश्नके ढीलाहोजानेके विषैमें

शिश्न सक पट्ठाहै जोदस्त और वाय को रोकताहै जब वह ढीला होजाताहै तो दस्त और वाय नहीं रुक सकती अचानक निकलजाती है - यह चाततरी और ठंड पहुंच ने से होतीहै - इस रोग में उस मवाद को निकालें - जिससे पट्ठा ढीला होगयाहो और उस उपाय से मिजाज़ को ठीक करें - जो फ़ालिज़ में लिखागयाहो - औरजो सूजन होतो उसका उपाय करें - औरजो चोट लगने या ववासीरके मस्से काटने से यहरोग होतो उपाय उसका कठिनहै ॥

सातवां पाठ ७

कांच निकलनेके विषयमें

जो कारण इसका सूजन होतो उसका उपाय करें - खतमी और बनफ़शा ओटाके रोगीको उसमें बिठलावें - और मोम रोग़न मलें तो वह अन्दर बैठ जातीहै - और जो तरी से पट्ठा ढीला होजायतो उससे यह रोगहोतो ज़रा सेचूं पनेमें निकल आयाकरेंगी - और सहजसे अंदर को चली जावेगी - उपाय उसका यहहै कि रोग़नगुल मलके ऊपर सफेदा - गुलनार - माजू - फिटकरी - सुरमा - अनार के छिल के - पीसओर छानके छिड़कें और गद्दी रखकर कसदें ॥

आठवां पाठ ८

पैरवाने की जगह गहरा घाव होजाने के विषयमें

इसमें काला मरहम लगावें और सुरवाने वाली ओषधें छिडकें- और जो पीडा की अधिकता होतो अफ़ीम मलें और वही उपाय करें जो और घावोंकाहै ॥

नवां पाठ ९

पैरवाने की जगह खुजली होने के विषय में

जो कीडे उत्पन्न होने से खुजली होतो लक्षण और उपाय उसका लिख चुकेहै- और जो कोई मवाद होतो उसी के अनुसार उसे निकालें- और हर मवाद से तुड्डी पर पछने लगाना और सिरका और रोग़न गुल मलना अति लाभदायकहै ॥

अठारहवां अध्याय

गुरदोंके रोगोंके विषैमें

पहिलापाठ १

गुरदेके बिगाड़के विषय में ॥५॥

लक्षण गरमी औरसरदी और सवाद के वैसेहीपायेजा यंगेजैसे कि जिगरके बिगाड़ में लिखेगये हैं- और उपाय भी उसी परकार का करें- औरजब गरमी से बिगाड़ होतो काफूर मलना लाभदायकहै-परंतु अधिक न मलें किइससे पथ रीपड़जाने काडरहै- और विषय की चाहनाभी घटजातीहै

दूसरा पाठ २

गुरदे के दुबलाहोजानेके विषेमें

लक्षणइस रोगका यहहै कि मूत्र अधिक और सफेद आवेगा- और शरीर दुबला होगा और विषय की चाहना भीकमहोगी- और पीठ और सिरमें पीछेकी ओरहलकी पीडावरावर रहेगी - जिसकारण सेहो उसकारण को दूर करें- और फिर गुरदेको मोटाकरनेके लिये- पिस्ते-बादाम-बुंदुक-नारियल-शक्करके साथ और दवाउत तुरंजबीन-और विषयकी चाहना उत्पन्न करने वाली औषधें खिलावे॥

तीसरा पाठ ३

गुरदेकी कमजोरीके विषय में

लक्षण इसका यह है कि रेटा और सूखा होने से और करवट वदलने के समय कमरसें पीड़ा होगी- और विषयकी चाहना और सूत्र घटजायगा- और मांसके धोवन कासा मूत्र आवेगा- जो कोई सादा विगाड होतो उसी के अनुसार उसे ठीक करें ॥

औरजो गुरदे के दुवला होने से ऐसा रोगहोतो उसका उपायकरें ॥

औरजो गुरदेके खाल ढीला होजाने से- औरउसके रास्तोंके खुलजाने से यह रोग होतो कारण उसका विषय की अधिकता या चोट लगना या मूत्र लानेवाली औषधोंका अधिक पीना होगा- इसमें कारण को दूर करें- औरजो औषधेंनिगरको पुष्ट करतीहैं वह गुरदेकोभी पुष्टकरती हैं- और माजून लबूब और विषय की चाहना उत्पन्न करने वाली औषधें अति लाभदायकहैं ॥

चौथापार ४

गुरदे में वायकी पीड़ाहोनेके विषयमें

इस रोगमें कमरके आसपास पीड़ा और खिंचावनहोगा और बोझ नहोगा- और पथरीके लक्षण भी नपायेजावेगे- और मूत्रके समय पीड़ा घटजाया करेगी- इसमेंजीरा- सोया- सुद्दावकेवीज- वावूना सवको पीसकर गुरदेकेस्था

पर लेप करें - और शर्बत जूफा पिलावें और वाय की तोड़ने वाली औषधें खाना और शरीर को मलना और पश्चात कोठीक करना अति लाभदायक है ॥

पांचवां पाठ ५

गुरदे की पीड़ा के विषय में

इसका कारण गुरदे की वाय या कमज़ोरी या सूजन या पथरी या घाव होगा - उस कारण को दूर करें - और बाबूनाओ रसोया और खतमी और करम्ब के पत्ते औटाके भाब जन करना हर प्रकार की पीड़ा को लाभदायक है ॥

छटा पाठ ६

गुरदे की सूजन के विषय में

लक्षण और उपाय इसका सवाद के अनुसार वह है जो जिगर की सूजन में लिखागया - परन्तु कमर में पीड़ा होगी - जो दाहिने गुरदे में सूजन होतो कुछ ऊपर को जिगर के पास पीड़ा होगी - और जो बायें गुरदे में होतो नीचे को मसाने के पास पीड़ा होगी - यह इस लिये है कि दाहिना गुरदा बायें गुरदे से कुछ ऊंचा है ॥

और जो पीड़ा अधिक होतो परदों के पास गरम सवाद से होगी ॥

औरजो सूजन गुरदे के रस्तों में होतो मूत्र रुकेगा-औरजो आँतों के पासहोतो पीडा भीतर की ओरहोगी-और अचम्भा नहीं कि कुलंजका रोगभी उत्पन्न होजावे-और जब गुरदे की सूजन पुरानी होजावे।तो फ़स्द माबिज़ लाभ दायकहोगी॥

सातवांपाठ७

गुरदेके घावके विषयमें

लक्षण उसका यह हैकि मूत्रमें पीप और रुधिरऔर छिलके निकलेंगे-और गुरदे के स्थान पर पीडाहोगी इसमें मवाद को ठीक करें-और जिस ओरके गुरदे में घावहोउसीओर फ़स्द बासलीक़ खोलें-और पुष्ट जुल्लाब कभीनदें परंतु हलका जुल्लाब दे सकते हैं-इसके पीछेरासी औरमज़के अनुसार मूत्रलाने वाली ओषधें पिलावें-और फिरघाव भरने वाली ओषधें दें-जैसे गिले अरमनी-दम्मुल अखवैन-जलाहुआ काग़ज़-कुंदर आदि और कुर्सकाकानज औरबनाद्कुल कुसूर खिलाना लाभदायकहै॥

आठवांपाठ८

गुरदेमेंखुजलीहोनेकेविषयमें

सात दिन में दोबार मवाद को निकालें-और उलटी करें-और शर्बत बनफ़शा पिलावें-और शियाफ़ अबियज़

कोरोग़न बादाममें घिसके मूत्रकेछिद्र में टपकावे- और बनी दवुल कुसूर खिलावें ॥

नवां पाठ ९

जिया बितुसके विषय में

यह वह रोगहै कि पानी जैसा पीवे वैसाही तुरत मूत्र में निकल आवे- इसका उपाय गर्मी और ठण्ड देख के करना चाहिये- गरम में कुर्सकाफूर और कुर्स तवाशीर औ रकुर्स जियाबितुस दें- और ठण्डमें मसरोदीतूस और माजून मासिकुल बोल खिलावें ॥

दसवां पाठ १०

गुरदेमें पथरी पड़ने और मूत्रमें रेत आनेके ॥ विषयमें ॥

इसरोगकी बारियां होतीहै- कभी एक महीनेके पीछे कभी वर्ष दिनमें और कभी कमवूद से जोर करताहै ॥

इसका लक्षण यह है कि ढुड्डी की जगह खिंचाव औ रबोझहोगा और मूत्र पीला और लालआवेगा- और कभी २ उससे पथरीभी निकलेगी- और जब आतें भरेंगी तो पीड़ाअ धिक होगी ॥

औरजो सूजन गुरदे के रस्तों में होतो मूत्र रुकेगा-औरजो आंतों के पासहोतो पीड़ा भीतर की ओरहोगी-और अचम्भा नहीं कि कुलंजका रोगभी उत्पन्न होजावे-और जब गुरदे की सूजन पुरानी होजावे तो फ़स्द साफ़िन लाभदायकहोगी ॥

सातवांपाठ ७

गुरदे के घावके विषयसें

लक्षण उसका यह हैकि मूत्रसें पीप और रुधिर और छिल्के निकलेंगे- और गुरदे के स्थान पर पीड़ाहोगी यत्न सें मवाद को ठीक करें- और जिस ओरके गुरदे में घावहो उसी ओर फ़स्द बासलीक़ खोलें- और पुष्ट जुलाब न दें परंतु हलका जुल्लाब दे सक्ते हैं- इसके पीछेबारी और रोगके अनुसार मूत्रलाने वाली औषधें पिलावें- और फिर घाव भरने वाली औषधें दें- जैसे गिले अरमनी- दम्मुल अखवैन- जलाहुआ कागज़- कुंदर आदि और कुर्स कोकनज और वर्नाद ख़ाल खुजूर खिलाना लाभदायकहै ॥

आठवांपाठ ८

गुरदे में खुजलीहोनेके विषेसें

सात दिन में दोबार मवाद को निकालें- और उलटी करें- और शर्बत बनफ़शा पिलावें- और निशास्ता विषेस

कोरोग़न बादाममें घिसके मूत्रकेछिद्र मेंटपकावे- औरखर्नी दकुल बुजूर खिलावे ॥

नवांपाठ ९

जिया बितुसके विषय में

यह वह रोगहै कि पानी जैसा पीवे वैसाही तुरंत मूत्र में निकल आवे-इसका उपाय गर्मी और ठण्डदेख के करना चाहिये-गरम में कुर्सकाफ़ूर और कुर्स तबाशीरओ रकुर्स जियाबितुस दे- और ठण्डमें मसरोदीतूस और माजून खार्मिकुल बोल खिलावे ॥

दसवांपाठ १०

गुरदेमें पथरीपड़ने और मूत्रसे रेत आनेके

॥ विषयमें ॥

वा१२१

इसरोगकी बारियांहोतीहै-कभी एक सदीने के पीछे कभी वर्ष दिनमें और कभी कमबूद से जोर करताहै ॥

इसका लक्षण यह है कि टुइडी की जगह २ खोफ़होगा और मूत्र पीला और लाल आवेगा -और कभी २ उससे पथरीभी निकलेगी- औरजब भातें भरेगी तो धिक होगी ॥

दूसरा धार २

मसाले के घावके विषयमें

चिन्ह इसका यह है कि सूत्रमें छिलके और और जलन होगी और रुकके आवेगा – उपाय इसका वही है जो गुरदेके घावकाहै – और जब पीड़ा अधिक होतो अबियून स्त्रीके दूधमें घोलके सूत्र के छिद्र में टपकावें और जब पीप अधिक आती होतो केवल माउल अस्लटप कावें वह घाव के साफ करने में अति लाभदायकहै – और मसालेके रोगोंमें सूत्रके छिद्रसे दवाका पहुंचाना तुरंत लाभ ताहै – और स्त्रियोंको पिचकारी से दवा पहुंचासकतेहैं ॥

तीसराधार ३

मसानेकी खुजलीके विषेमें

पेड़में खुजली और जलन और पीड़ाहोगी – और मूत्र में दुरगन्धि होगी – और कभी कभी उसके साथ रुधिरभी निकलेगा – इसमें मवादको निकालें और रीककरें – और लुआब ए दाना और स्त्रीका दूध और रोगन बादाम सूत्रके छिद्रमें टप कावें – और इन्ही औषधोंसे हुकना करें – और भोजन की अगह आशजो और दूध और चांवल खाना लाभदायकहै ॥

चौथापार ४

मसाने में रुधिर जमजानेके विषयमें

यह रोग मूत्रमें रुधिर निकलने से या मसाने में चोट पड़ने से और किसी रग के फटजाने या मुंह खुलजाने से उत्प... इस रोग में हाथ पांव ठण्डे होंगे- और कसीनाडा ...गा और मूर्च्छा होगी- अकेली सिकंजबीन अनीसिली ...समें थोड़ी अंगूरकी लकड़ी की राख मिलावे पानीमें घो... कर पिलावें और खरगोशका पनीर अंगूर कीलकड़ी कीराख के पानीके साथ खिलावें- और पेड़ूको उसपानी से धोवें और मूत्रके छिद्रमें टपकावें- औरइस उपाय से जमाहुआ रुधिर न पिघले तो वह ओषधें जो पथरी को तोड़ें और मूत्र लानेवा... ओषधें और पुराने चनों को सुहावके पानीमें औटाके पिलावें- और जब कोई ओषध लाभदायक नहोतो जमेहुए रुधिर को चीरकर निकालें- और भोजन की जगह पुराने चनोंको ओटाकर उसका पानी दसचीनीडारके पिलावें ॥

पांचवांपार ५

मसानेकी पीडाके विषयमें

यह सुजन के कारणहोगा- या घावके या खुजली के या पथरी पड़ने के या मसाने में वायु उत्पन्न होने से इनसब

का उपाय लिख चुकेहैं - एक प्रकार इस पीडाकी यह
जो सराने के विगाड से होतीहै - जो यह गरमी
सहोगी और मूत्रमें जलन होगी - और पहिलेइससे
सुखाईहोगी - इसमें ठण्डाई पिलावें और
वें और ठंडी वनादकुल कुजूर
मूत्र सफेद आवेगा - और इससे पहिले ठंडा
लाये होंगे जैसे कपूर आदि - और ठंडीहवा लगने
डाहोजातीहै गरम भोजन और औषधें दें -
नी से पेडूको धोवें ॥
और दूसरी प्रकार इस पीडा की वहहै कि
नके दिन भवाद गसाने में आवे और मूत्र जोर से
और उससे यह पीडाहो इससे अधिक मूत्र
पाय करें ॥

छठाप्रकार ६

मसानेकेरलजानेके विषयमें

पीठपर चोट लगने से ऐसाहोताहै
पधों का लेपपेडू पर करें - और जो चोट पडने से पहा
गयाहोतो मूत्र रुक रहताहै -
अचानक मूत्र आने लगताहै - इन दोनों में फस्द
खोलें - और कभी इसरोगके साथ और रोगभी होताहै -
लेउसरोगका उपायकरें और फिर इसका ॥

सातवां पार ७

मसानेके फूलनेके विषयमें

मसाने में वाय भरजातीहै– और पेडूपर खिचाव रह ताहै– और वाय एक स्थान पर नहीं रहती और न बोझ हो ताहै– और जो बोझ और खिचाव एक स्थान पर रहैतो जा नों कि वायके साथ तरीभीहै– इस रोग में कुछ दिनों तक मा उल् अुसूल गरम पिलावें या उसमें थोडा रोगन बेदअंजीर १ मिलाकर पीवें– और रोग़न गरम वोबाय को तोडेंमलै–और उसको छिद्रमें टपकावें– और रोग़न केसर का खिलावें–औ र ऱक्खें और जब सूत्र निकलने में कठिनता होतो ख़रबूजेके बीजोंकेस छिलके कुचलके नार के साथदें– और आबज़न में बिठावें– और जब इसके साथ तरीभी होतो बारबार उल्टी करावें– और तिरियाक़ और मसरूदीतूस और इंजीर खिलावें।

आठवां पार ८

मसानेमें पथरीपडनेके विषयमें

लक्षण उसका यहहैकि लिंग कीजडमें खुजली होगी और थोडी २ देर पीछे सूत्र आवेगा और विषयकी चाहना प हलेतो एकबार अधिकहोगी– और फिर तुरंतही जातीरहे गी– इस रोगमें सूत्रका रुकके आना– याबिलकुलन आना और मसानेमें पीडाहोना कुछ नहीं होता– परन्तु जिस१

समय पथरी मसाने के मुंह पर आनकर अड़जाती है तो ऐसा होताहै और इस पथरी का उत्पन्न होना इससे जान सकतेहैं कि गुरदे की जगह और ॰ पीड़ाहो ॥

वह उपाय करें जो गुरदे की पथरी में है और अधिक पुष्ट औषधें दें और बिच्छू का तेल आदि पेड़ पर मलें और मूत्र के छिद्र में टपकावें और जो अवश्य हो तो चीरकर निकालें और जो रोगी की अवस्था सतरह या १८ वर्ष से कमहो तो कभी ऐसा न करें कि मरने का डरहै और जब पथरी मूत्र के रास्ते में आकर अड़ रहे और मूत्र रुकजावे और उससे पीड़ा हो तो रोगी को बिठलावें और दोनों पांव उठाके गरम पानी से पेड़ को धार और नीचे से ऊपर तक मलें इससे पथरी नहीं आसे हटके मसाने के अंदर चलीजावेगी और मूत्र का रास्ता खुलजावेगा और हर गर्ल यहूद अतीलपथरी के तोडने में लाभदायक है ॥

न्वां पाट २

मूत्र में जलन होने के विषय में

यह गुरदे या मसाने की खुजली या इनहीं स्थानों का घाव की पीप से होताहै खुजली और घाव का उपाय करें और जो लिंग के भीतर घाव हो तो उपाय उसका आगे लिखा जायगा और जो जिगर की गरमी और पित्त की अधिकता से हो तो उनके लक्षण पाये जावेंगे इसमें

औषधें दें - जो जिगर के बिगाड़ में लिख चुके हैं - और जो सवा इकी अधिकता के कारण उससे लाभ नहोतो सवादको निका लें - और स्याफ़ अवियज़ स्त्रीके दूधमें घोलकर रोग़न गुल औ ररोग़न बादाम मिलाके मूत्रके छिद्र में टपकावें - और लिंगको अस्पगोलके लुआबमें रक्खें ॥

लिंगके छिद्रमें स्कतरी विसरीहै उसके छिलजा नेसेभी यहरोग होताहै - लक्षण इसकायहहै कि उससे पहि लेपास औषधें खुजलाने वाली खाईहोगी - और विषयकी अधिकता होगी - इससे पहिले कारणको दूर करें - स्याफ़ अ वियज़ कोस्त्रीके दूधमें घोलकर मूत्रके छिद्रमें टपकावें - औरलुआबों और बीजोंको चाहेंपीवें चाहेंटपकावें ॥

दसवां पार १०

मूत्रबंद होजानेके विषय में

जोयह रोग गुरदे या मसाने की सूजन सेयाउनमें पथरी पड़ने सेया मसानेमें रुधिरके जमने या पीप अटकनेसे याबाय के फँसने सेहोतो उसका उपाय ऊपर लिख चुकेहैं ॥

औरजो मूत्रके स्थानपर मांसउत्पन्न होनेसे यहरो गहोतो और किसीरोग केलक्षण नहींहोंगे - औरइसकाउपा यनहींहोसकता - परंतु थोड़ासा लाभहोनेके लिये - ढीलाऔर नरम करने वालीऔषधोंका आवजन करें - कि बिलकुल रुका बनरहें ॥

मसाने की गर्दन पर एक पट्ठा है जो मूत्र को नि
चोड़ता है- उसके ढीला होने से भी यह रोग होजाता है-
लक्षण उसका यह है कि मसाने के दबाने से मूत्र खुलके
कलता है - इसमें गरमी पहुंचावें चाहे पीने की
से या लगाने की से और वह तेल मलें जो फ़ालिज में
गये हैं॥

और जो मसाने और लिंग में लेसदार मवाद
है और उससे मूत्र रुके तो पेड़ू बोझल होगा- और ...
लेसदार करने वाली वस्तु खाई होगी- और किसी दूसरे रोग के
लक्षण नहोंगे -इसमें कुछ औषधें मूत्रलाने
और आवज़न करें और रिवसक और बिच्छू का तेल उसी
में टपकावें॥

और जो मसाने की दूर करने वाली शक्ति के जाते
रहने से यह रोग होतो उससे पहिले रोगी ने देर तक मूत्र
को रोका होगा-इसमें आवज़न करें- और पेड़ू को हाथ से
दबावें- और रोग़न विलसान और रोग़न क़ुस्त पेड़ू पर म
लें- और जो इससे लाभ न होतो एक पोली सलाई चांदी
शीशे या रांगे की लेकर छिद्र में डालें- रीति य..
कि थोड़ासा फ़ूसड़ा रेशम वाले कर तागे में बांधें- और
सिरा उस धागे का उस सलाई में डालकर निकालें - और
जिस ओर वह फ़ूसड़ा हो उसी ओर से सलाई उस छिद्र में
डालें-जब वह सलाई मसाने के मूंह तक पहुंच जावे तो त
गे को ज़ोर से खींच लें तो मूत्र का रास्ता बिल्कुल खुल
जावेगा॥

आनु २१
नी ...

और जो मूत्र के रास्ते में घाव या फुंसी होनेसे मूत्र रुकेतो उसके लक्षण पाये जावें गे-इसका उपाय सोज़ाकमें देखना चाहिये ॥

औरजब पीठ या पेडू पर चोट लगने से यह रोग हो तो देखना चाहिये कि सूजन है या मसाना ढीला और खिंचगया है-जो सूजनहोतो उसका उपायकरे-और जो खिंचाव आदि होतो फस्द बासलीक खोले - और रोगन गुल मलें ॥

औरजो मूत्रके रास्तेमें खुश्की और कब्ज़होतोगरमी केलक्षण पायेजावेंगे-और तर औषधोंसे लाभ होगा-औरमसा ने सेथोड़ासा मूत्रन निकल सकेगा- औरजबबहुत गाढ़ाहो होजायगातो भली भांति निकला करेगा-इसमें तरी औरठंड पहुंचावें ॥

औरजो पट्ठों और वधनों पर कफ़ के गिरने से मसा ने और मूत्र के रास्ते में खिंचावहोजावे तो लक्षण उसका यह हैकि मूत्र थोड़ा मोउकल कर निकल पड़ता है- और रेलेसे नहीं आता- इसमें खिंचाव का उपाय करें- जैसा हम लिख चुकेहैं ॥

औरजो पेडू पर पेलडे चढ़जाने से मूत्र रुकेतो उनकेउतारनेका उपायकरे ॥

औरजो मूत्र की सरसराहट न जान पड़ने से यह रोग होतो केसर और बिलसान का तेल छिद्र में टपका वें- और पोदीने और सोये आदिका लेपकरें- और माउलबसूल और रौग़न केद इजीर पिलावें- और तिरियाक कबीर खिलावें ॥

औरजो तरी से यह रोग होतो सब से पहिले उलटी करावें ॥

औरजो मसाने के टलजाने सेहोतो उसका उपायलिख चुकेहैं ॥

औरजो मसानेके आसपास किसी औरस्थान में सूजनया बिगाड़ होतोउसस्थानका उपायकरे ॥

औरजो मसानेके बराबर गुरियों के उतरने से मूत्र रुके तो उनगुरियों को अपने स्थान पर बिरावें जैसा कि बारहवें पाठ में लिखाजायगा ॥

ग्यारहवांपाठ ११

मूत्रखुलके नहोनेके विषयमें

इसरोग में मूत्र रुक रुक बूंद करके आताहै - उसके लक्षण और उपाय दसवें पाठ के अनुसारहैं ॥

बारहवांपाठ १२

अचानक मूत्र निकला करने के विषयमें ॥

मसाने के ढीला होने या उस में कोई गरम बिगाड़ होने पर उस की आस पास की सूजन से या मसानेके टलजाने से यह रोग होतो उसका उपाय दसवें पाठमें लिख चुकेहैं ॥

औरजो शराब या स्वरबूजों आदि के खाने से होतो उसकारण को दूर करें- औरजो मसाने के वरावर की गुरियो के टलजाने से होतोदेखें कि वह भीतर को धस गई है या वाहर उभर आई है -जो भीतर धसगई होतो खाली सीसियां उसजगह पर रखकर चूसे या जिफितें का लेप करें औरजो वाहर उभरीहोतो हाथ से मलें- और जो मसाने के बंधन टूट गये होंतो उनका उपाय नहीं होसकता॥

तेरहवां पाठ १३

सोते में मूत्र निकलजाने के विषय में

यह रोग लड़कों को वहुत होताहै -इसमें गरमी पहुंचावें और इसके पाठ में जो उपाय मसाने के पट्ठेकी सुस्तीदूर करने कहे कही करें-और रातको कई वार उठाके पेशाव करालें- और रात को स्वाने पीने नदें- और कुन्दरकाजीरा हब्बुल आसप्रत्येक साढे वाईस २२॥ माशे पीस कर १०० माशे शहद में मिला रक्खें- और सोने के समय सात माशे खिला दिया करें॥

चौदहवां पाठ १४

मूत्र मेंरुधिर निकलने के विषयमें

जो गुरदेकी रग फट गई होया खुलगई होतो चिन्ह

. रुधिर साफ़ बिना तलछट के निकलेगा पीप बिलकुल न होगी जो थोड़ा थोड़ा आता होतो रग काम ह खुलगया होगा- और जब बहुत सा आवे तो जानो रग फट गई है - फ़स्द बासलीक़ या साफिन खोलें- और कुर्स काहरुबा और कुर्स कोलुब्बस खिलावें और पेड़ू पर और मस ने की जगह पछने लगावे- और जब रुधिर में तेज़ी होतो ठंडे पानी से पेड़ू को धोवें और ठंडी औषधों का लेप करें औरध्या न रक्खें कि रुधिर असाने में न जमने पावें - और शर्बत उ न्नाव धनिये के तुख़्म में देना रुधिरको बन्द करता है और गा सीको बुझाताहै ॥

और जब जिगर या गुरदे की कमज़ोरी से होतो रुधिर से सूत्र अलग न हो सकेगा- इसलिये उसके साथ नि कलेगा- लक्षण उसका यहहै कि सूत्र मांस के धोवनका साहोगा ॥

जब गुरदा कमज़ोर होगा तो सूत्र सफ़ेद औरगाढ़ा होगा ॥

औरजब जिगर कमज़ोर होगा तो सूत्र लाल औरप तलाहोगा ॥

इसमें जिगर और गुरदे को पुष्टकरें ॥

औरजो सूत्रकी रगों में घाव होतो पीप आदि सेजा न पड़ेगा - इसका उपाय लिखचुकेहैं और कुर्स काकनज लाभदायकहै ॥

बीसवाँ अध्याय

॥२०॥

उन रोगोंके विषयमें जो केवल पुरुषों को होते हैं॥

पहिला पाठ १

विषयकी चाहना घटजानेके विषैमें

विषय की चाहना शरीर के बडे बडे स्थानो के चंगा होने से पूरी होतीहै और विषय की चाहना दो प्रकार से घट जातीहै॥

एक तो यहहै कि आपही घटजावें-दूसरे लिंग के ढीला होजाने से इन दोनों प्रकारों का वर्णन अलग अलग कियाजाता हैं॥

पहिली प्रकार के कई कारणहैं॥

एक तो यहकि शरीर भोजन की कमी से कमजोर होजावे और उससे रूह और वायु और रुधिर जो विषय के मवाद हैं कम उत्पन्नहों लक्षण उसका यह हैकि कम जोरी दुबला पन होगा- और पहिले से उसके रहे होगें-

उपाय इसका यह है कि अच्छे अच्छे भोजनों से और पुष्ट औषधों से शरीर को पुष्ट करें और खेल कूद और नाच रंग में लगे रहें ॥

दूसरे यह है कि वीर्य्य थोडा उत्पन्न हो चाहे भोजन भली भांति खावें- लक्षण उसका यह है कि वीर्य्य थोडा निकलेगा - कारण यह है कि कोई बिगाड़ वीर्य्य उत्पन्न होने की जगह पड़जायगा - और उन वस्तुओं से हानि होगी- जो उस बिगाड़ के अनुसार हों - और उनके विपरीत से आराम होगा- इसीसे उस बिगाड़ की प्रकार जान पड़ेगी- कि गर्म है या ठंडी आदि- इसमें मिजाज को ठीक करें ॥

तीसरे यह कि वीर्य्य अधिक हो परन्तु उसकी तेजी और गुदगुदी हट जाती रहे लक्षण उसका यह है कि वीर्य्य अधिक निकले और गाढ़ा हो और विषय करने के समय आदि में ज़ोर कमहो और फिर अधिक होजाय-इसमें माजून जरओनी औ ... ल ... र माजून कुजूर आदि खिला

के गरमी प ...

... कि विषय की

या ... मलाव-

वा ... लिंग आदि

रग ...

पसल ... वात का

छटे यह कि दिल या मेदे या जिगर या भेजे या गुर
दे पे किसी बिगाड़ के होने से ऐसा होतो पहिले उस बिगा
ड़का उपायकरें ॥

दूसरी प्रकार यहहैकि शरीरमें कमज़ोरी होनेसेया
बहुत दिनों तक विषयके छोड़देने से लिंग सुस्त होजाय उपा
यइसका ऊपर लिखचुकेहैं और गर्मपानीसे धोवें- फिरभेडी
का दूध मलें- और ज़िफ़्तलगावें ॥

जोनीचे के धड़में बायुहोतो देखेंकि ठंड सेहै यागर्मी
सेया खुश्कीसे उसीके अनुसार कामकरें ॥

जो पट्ठों पर कफ़ के गिरने या ठण्ड पहुंचने सेहो
तोलक्षण उसकायहहै कि पहिले ये सबबातें पाईजावेंगी
औरवीर्य्य पतला होगा- और बिनाज़ोर करने के निकलाकरे
गा-इसमें वही उपायकरें जो फालिजकाहै और गरम शाफ़े
और हुक़ने करें और गरम औषधें मलें- और लिंगको बहुत
गर्म पानी से धोवें- जोवह उसकी ठण्ड सेन सिमटेतो उस
रोगका उपाय नहींहो सकता ॥

अब ऐसी औषधें लिखीजाती हैं जो लिंगको बड़ा
करें ॥

पहिले उसे खुरदुरेऔर कड़े कपडेसे इतनामलें कि
लाल होजावे फिर रोग़न सोर्चा और इसीप्रकारकी और औ
षधें मलें और उसपर ज़िफ़्तका लेपकरें ॥

दूसरे कौंफसके पानी से कई बारधोवें ॥

बकरी के घीसे कईबार चिकनाकरें ॥

चौथे केंचुए याजोंक सुखाके रोग़न सोशन सें मि
लाके मलें ॥

दूसरापाठ २

वीर्य्यजल्दी निकलनेके विषय में

ठंड या तरी से होतो लक्षण उसका यहहै कि बहुत सफेद और पतला होगा- और गर्मी न होगी- गरमजुल्लावों से मवाद को निकालें- और उलटी करावें और माजून खुब सुल्ह ईदीद खिलावें और उसकी शराव पिलावें और शहदान को औटाके शहद मिलाके पिलावें॥

और जो यह रोग वीर्य्य और रुधिर की अधिकतसेहोतो फ़स्द खोलें- और विषय थोडाकरें और भोजनकम खावें और वह वस्तु खावें जिन से वीर्य्य और रुधिर कम उत्पन्न हो॥

और जो वीर्य्य में तेजी आगई होतो लक्षण उसका यहहै कि वह पतला और पीला निकलेगा- और उसमें जलन होगी- इसमें ठंडाई और काहू के बीज औटा के पिलावें॥

औरजो कमजोर होने के कारण से यहरोगहै तो उस कारणको दूर करें॥

तीसरापाठ ३

विषय की चाहना अधिकहोजाने के विषयमें

यह रोग भी रुधिर और वीर्य्य की अधिकता से होताहै उन्हें कम करें- परंतु ऐसा न चाहिये कि कोई हानि हो और जो बहुत ही अवश्य होतो फस्द और जुल्लाब दें- और वह वस्तु खावें जो वीर्य्य को कम करें- औरभोजन भी कम खावें ॥

औरजो वीर्य्य में तेजी होतो ठंडाई दें- और ठंडे पानी से न्हावें ॥

औरजो कमजोरी हो और रुधिर कमहोजावे- और इस पर भी वीर्य्य की अधिकता होतो वह पतला और सफेद होगा- इसमें कलौंजी और सुद्दाब और संभालू के बीज देना चाहिये- और नवारिश कमूनी अति लाभदायकहै ॥

औरजोवीर्य्य के स्थान पुष्टहों- परंतु शरीरमें और स्थानों पर कमजोरी होतो उसके लक्षण पाये जावेंगे- उपायइसका यह हैकि वीर्य्य के स्थानों को कमज़ोर करदें- और दूसरे स्थानों को पुष्टकरें ॥

और जो वीर्य्य के रास्ते में फुन्सियां या घाव या सूजनकी उत्पत्ति होने से यह रोग होतो लक्षण उसका यहहै कि विषयकरने के समय वीर्य्य जल्दी से निकले- परंतु घाव में पीड़ा होगी- और पीप भी निकलेगी -इसका उपाय वही है जो मसाने के घाव का है- फस्द और जुल्लाब आदि दें ॥

औरजो शरीर के फूलने से यह रोग होतो गर्मी की अधिकता में ठंडी औषधें दें- और जो तरी अधिकहोवे वह औषधें दें जो वाय को तोड़ें और खुश्की करें - औरजो

सौदा की अधिकता होतो फ़स्द बासलीक खोलें-औरसौदा का जुल्लाब दें ॥

चौथापाठ ४

वीर्य्य निकलाकरनेके विषयमें

जो यह रोग वीर्य्य की अधिकता या तेज़ी या उसके स्थान के ढीला होने से होतो लक्षण उसका यहहै कि नित ही विषय की चाहना उत्पन्न होजाया करेगी- औरहर बार से वीर्य्य निकलेगा- इसका उपाय दूसरे पाठ में लिखा गयाहै ॥

और जो यह रोग उस पट्ठे के खिंच जाने से होजो वीर्य्य के स्थान पर है तो खिचाव का उपाय करें-औरपेडू आदि पर रोगन मलें ॥

- और जो गुरदे की कमजोरी हो और उसकी चर्बी पिघल के निकला करे तो लक्षण उसका यह हैकि विषयकरने के पीछे मूत्र मे कोई वस्तु सफ़ेद और गाढ़ी निकले और गुरदे की कमजोरी के और लक्षण पाये जावेंगे और कभी विषय की बातें सुनने से भी वीर्य्य निकल आताहै- उसकारण को भी दूर करें ॥

यह रोग स्त्रीयों को भी होता है- और उसके यही कारण होते हैं जो ऊपर लिखे गयेहैं- और कभीहैम

के मुंह ढीला होजाने से भीहोता है- उपाय इसका यहहै कि उलटी करावें- और कब्ज़ करने वाली औषधों कोऔट के आवज़न करें ॥

यह औषध वीर्य्य या मज़ी या वदी निकलनेमें लाभदायक है-सुहाव के बीज साढ़े दस माशे- संभालूकेवी न और सोसन की जड प्रत्येक सात माशे-पीस छानके मरे या कच्चे अंगूर के रसमें मिलाकेदें ॥

यह दवा मज़ी और वदी को लाभदेती है-भंगको भूनकर पीसके शहद में मिलाकेदें ॥

जानना चाहिये कि मज़ी और वदीलसदारवस्तुहै और मूत्र के साथ या उसके पीछे निकला करतीहै ॥

पांचवां पाठ ५

वीर्य्य के वदले रुधिर निकलनेके विषयमें

इसका कारण खुसियों या गुरदे की कमज़ोरीहै-जो गरमी काडर नहोतो खुसियों को रोग़न मस्तगी में भिगोवें और गुरदों को पुष्टकरें ॥

छठा पाठ ६

सोते में वीर्य्य निकलजाने के वि षयमें

इसका उपाय और लक्षण वहीहै जो चौथे पाठ में लिखचुके है- और सीसे का टुकड़ा पीछे कमरे पर गुरदों की जगह बांधें ॥

सातवां पाठ ७

लिंगके हर समय जोर करने के विषयमें

जो रुधिर की अधिकता होतो फ़स्द खोलें और भोजन थोड़ा दें- और ठंडी औषधें काम में लावें- और जोवंड और खुश्की से होतो उलटी करावें- जिससे काफ़ निकलेऔर वह औषधें जो वाय को तोडें चाहे लगावें या खिलावें और सुदाव का तेलपीठ और पेढू परमलें ॥

आठवांपाठ ८

वीर्य्य निकलने के समय अचान कपेखानाहोजाने के विषयमें

शरीर के बड़े २ स्थानों की कमजोरी से और तरी की अधिकता से होता है-इसमें उन स्थानों को पुष्ट करें-और मक़ाकिया और समक और गुलनार और बबूल का गोंद और कुंदर से शाफ़ा करें और विषय के समय भी यही कारना चाहिये- और नारदीन का तेल पैखाने के स्थानपर मलें और विषय के समय पेट खाली रक्खें ॥

नवाँ पाठ ९ ॥

पुरुष को विषय कराने की चाहना उत्पन्न होने के विषय ॥ में ॥

इस रोग में आंतों में खुजली होजाती है-जो कोई सवाद पाया जावे तो उसे निकालें - और इस रोग का सवाद बहुत करके खारी कफ़ होता है और जो सुभावसे स्त्रियों कीसी बातें होजावें तो मारपीट से दूर करें ॥

दसवां पाठ १०

खुसियों की सूजन के विषय में

जो सूजन अधिक और बोझल हो और गर्मी पाई जावे

तो रुधिर की अधिकाता होगी- और पित्तों की अधिकाता में अत्यंत गर्मी होगी- पहिले पीठ और पिंडली पर पछने लगावें और फस्द खोलें- फिर ठन्डी औषधों का लेपकरें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें- और इसके पीछे उसलेप में पर काने वाली औषधें भी मिलालें और फिर केवल पर काने वाली औषधों का लेपकरें - जैसाकि सूजन के उपाय में लिखागयाहै ॥

और जो सूजन में नर्मी और सफेदी होतो कफ की अधिकाता होगी-इसमें उलटी करावें औरकफकी मुंजिश और जुल्लाव दें- और वाकले के बीज पीसके वेसन और शहद में मिलाके लेपकरें ॥

और जो सूजन में कड़ा पन और काला पन होतो सौदा की अधिकता होगी-इसमें नरम करने वाली औषधें बावूने और नाखूने के साथ लेपकरें- और फिर सोदाकाजुल्लाव और मुंजिश दें ॥

और जो किसी मवाद के लक्षण नहों और सूजन फूली हुई होतो वाय से होगी -इसमें परकाने वाली औषधों से सेक करें- और कमूनी खावें और जोइससे लाभ नहो तो उलटी करावें और जुल्लाव दें- जो रोग नीचे के अंडे नहो तो- इनमें उल्टी कराना अति लाभ दायक है- और इसमें डरभी नहीं है॥

जो सूजन केवल थैली अर्थात् ऊपर की खाल में होतो दुख काम होगा- और सूजन दिखाई देगी - और अंदर की सूजन में दुख औरतप और प्यास अधिक होती है ॥

ग्यारहवां पाठ११

खुसियोंके वढ़जाने के विषयमें

यह रोग सूजन की प्रकार से नहीं है-इसमें सोट फ्न आजाता हैं- इसमें खुरसानी अजवायन और शूकरान और तफीह और पोस्त खशखाश और सान के पत्थर की रेत हरे धनिये के पानी में पीसकर लेप करे- औरजो गिले अर्मनी और सिरका भी मिलालें तो अति लाभदायक होगा- और इसी लेपको स्त्री की छाती पर लगाने से छातियों वढ़ने नहीं पाती- परंतु इस रोग में भोजन भीथोड़ा खाना अवश्य है॥

बारहवां पाठ१२

लिंगमें रहम के मुंहके फड़कने के विषयमें

मवाद को निकालें और रुधिर को ठंडा करें और फिर उसी जगह पर जोंकें लगाना अति लाभदायक है और भोजन भी अच्छा खावें॥

तेरहवां पार १३

खुसियों की पीडाके विषयमें

जो सूजन के कारण से होतो उसका वर्णन करचुके हैं और जो बाय होवो पीडा एक जगह नठहरेगी– उसमें सेक और गरम तेल मलें– और जो गर्मी ठंड से बिगाड होतो उस का उपाय भी लिख चुके हैं– और जो चोट पड़ने से पीडा होतो फस्द खोलें और बनफशा. खैरू. मकोय. कद्दू. नीलोफर का लेप करें॥

चौदहवां पार १४

खुसियों के छोटा होजाने के विषय में॥

यह ठंड के पहुंचने से होताहै– इसमें गरम पानी से न्हावें और गरम दवायें लगावें॥

पंद्रहवांपार १५

खुसियों के चढ़जाने के विष

॥यमें॥

कभी ऐसा होता है कि बिलकुल ऊपर चढ़आते हैं नीचे कुछभी नहीं रहता उस समय मूत्र रुक के और टपक टपक के निकलता है-और चलाफिरा नहीं जाता-और जो थोड़ा चढ़े तो थोड़ी२ पीड़ा होती है और कुछ हानि नहीं होती- और कभी पीड़ाभी नहीं होती- परंतु जो देर तक यह रोग रहे तो अच्छा नहीं है- इसमें गरम पानी से स्नान करें और फरफियून का तेल मलें- और आबजन करें और उसी जगह सींगियों लगावें॥

इसीप्रकार से कभी लिंगभी चढ़जाता है-उसका उपाय भी यही है॥

सौल्हवाँपार १६

रगें उभर आने के विषय में

इसका उपाय वही है जो पैरकी रगें उभरने का लिखा जावेगा- और जो कड़ापन भी आजावे तो उसका वह उपाय करें जो सूजन का है॥

सत्रहवां पाठ १७

ऊपर की खाल ढीली होजाने के विषय में ॥

माजू-आस-गुलाब के फूल-गुलनार-बलूत के फल आदि कबज करने वाली औषधों का लेप करें- और उन्हीं को ओटाके धारे ॥

अठारहवां पाठ १८

लिंग आदि के घाव के विषय में

जो यह घाव ताज़े होतो मुर्दा संग और तूतिया छिड़कें और लगावें- चाहे सूखा पीसके या मरहम बना के- और जो रुधिर की अधिकता होतो पहिले मवाद को निकालें ॥

और जो घाव पुराने होंतो यह मरहम लगावें दम्मुल अखवैन- और मुर प्रत्येक नौ माशे- सफ़ेदा-मुर्दा संग-इज़रूत प्रत्येक सात माशे पीसके रोग़न गुल मिलाके लगावें ॥

जो घाव लिंग के अंदर होतो मूत्र आने में जलन होगी- उसका उपाय मसाने के घाव से करें ॥

उन्नीसवां पाठ१९

लिंग के सूजजाने के विषयमें

इसका उपाय वही है जो दसवें पाठ में लिखागयाहै ॥

वीसवां पाठ२०

लिंग आदि की खुजली के विषयमें

इसमें फ़स्द खोले- और रान और नाफ पर पछने लगावें और पित्तों का जुल्लाब दे- फिर गरम पानी औ र सिरके से धोवे-और रोगन गुल मले-और अंडेकी सफेदी का लेप करें ॥

इक्कीसवां पाठ

लिंग के फटजाने के विषयमें

इसका उपाय वही है जो पैरवाने की जगह के पाठ में लिखागयाहै ॥

२५१

बाईसवांपाठ २२

लिंग पर और उसके आस पास काड़ी फुंसियां और मस्से होजाने के विषयमें

काला दाना सिरके में मिलाकर लगावें- और वही उपाय करें जो मस्सोंका है॥

तेईसवांपाठ २३

मूत्रके छिद्र बंदहोजानेके विषैमें

जो फुंसी निकाली होंतो मूत्र कठिनता से जलन के साथ होगा- इसमें फ़स्द खोलें- और गुलके और खब्बूजों के बीज़ोंका शीरा निकालके शर्वत खशखाश के साथ दें- और अस्पगोल रोग़न बनफशे और बादाम में मिलाके लिंग पर रक्खें- जब वह पकके फूटे और पीप निकलेतो श्याफ अबियज रोग़न गुल और स्त्री के दूधमें घोलके छिद्रमें टपकावें- और जो पीड़ा अधिक होतो थोड़ीसी अफीमभी मिलालें॥

और जो कोई केसदार मवाद छिद्रमें फंसा

होतो मूत्र कठिनता से निकलेगा- और जलन न होगी- और मूत्र में उसम वायुका लक्षण पाया जावेगा- इससें मूत्र लाने वाली औषधें दें- और पिघलाने वाली औषधों को औटाके धारें- और क्सीं औटे हुये पानी में थोड़ासारोग़न बाबूना मिलाके पिचकारीलें॥-

और जो मस्सा होतो मूत्र कठिनाई- सेहोगा- और न जलन होगीन काफ़ निकलेगा- जो वह मस्सा सिरेपर होतो रसूत और सफ़ेदारोग़न गुलमें पीसकर टपकावें और जो पीडा अधिक होतो फस्द साफ़िन खोलें- औरपिंडलीपर पछने लगावें॥

चौबीसवाँ पाठ

लिंगके टेढाहोजानेके विषयमें

इसका कारण पट्ठेका खिंचाव या सूजन है- पहिले उस कारणको दूर करें- और रोग़न आदि मलके उस स्थान कोनरमकरें- और फिर हाथ से भली भांति उसेसीधाकरलें॥

इक्कीसवाँ अध्याय

॥२१॥

मिराक सिफाक और सर्ब के विषयमे

जानना चाहिये कि पेटके चमडेको मिराक कहते हैं- और जो भिल्ली उसके नीचे है वह सिफ़ाक़ कहलाती है- और एक परदा मोटा चिकना जो सिफाक के तलेहै-सर्व कहलाता है ॥

पहिलापाद १

कील के विषयमें

सह वह रोग हैकि सिफाक़ की राह जो१ नददो की ओर है खुसियों के पास से खुलजावे- या सि१ फाक़ आपही यहां से फटजावे और सर्ब या आंत या वाय यातिरी खुसियों की थैली में उतर आवे-इसको पित काभी कहते हैं ॥

और जब कोई गाढा सवाद उतरे तो उसे बारदुल लहमी कहते हैं-इन पांचोंका वर्णन अलग अलग करते हैं ॥

पहिले आंतके उतरने का लक्षण यह है कि थोडी थोडी उतरे- और कठिनाई से ऊपर को चढे और चढनेके समय गड बड हो- और कभी शूलनकी पीडा भी इस में होती है- उपाय इसका यह है कि १

होले होले मलके ऊपर चढ़ावे- और जो तुरंत न चढ़े तो ग
रम पानी से धारे- और आवज़न में विठावे- और जब चढ़
जावे तो यह लेप पेडू और चड्ढो और खुसियों पर लगावे-
मस्तगी-इंजरूत- कुन्दुर-सरों के फल और पत्ते-अकाक
किया-गुलनार-सुर-दम्मुल अखवैन- फिटकारी-रसौत-
अमल-सलुआ- सबको बराबर लेके कूट छान के सरेश
मोही को हरी मकोय के पानी में पिघलाके यह औषधें
उसमें मिलावे सब कपडे पर मरहम की तरह लगाके खु
सियों पर चिपटादे और ऊपर से पट्टी खेंचकार बांधदे-
और तीन दिन तक बंधा रक्खे- और रोगी को चाहिये कि
तीन दिन तक चित्त पडारहे- और तीन दिन पीछे बहुत होलेसे
बैठे और चले फिरे और जो वस्तु हानि दायक हो उसे न खावे
पीवे और छिकने कुलने से बचे- और नित्त जवारिश कमू
नी खावे और आंकेड़ा जो इस कामके लिये बनाया गयाहै
बांधे रहै ॥

दूसरे सर्व के उतरने का लक्षण भी कठिनता सेचढ़
ना है- परंतु उसमें गड़बड़ नहीं होती- और यही इसमें और
आंत के उतरने में अंतर है- इसका उपाय भी वही हैजोऊप
रलिखा गया ॥

तीसरे वाय के उतरने का लक्षण यहहै कि सहजसे
ऊपर को चढ़े और गड़बड़ अधिक हो-इसमें वायकी तोड़
वाली औषधें काम में लावें- और वाय उत्पन्न करने वाली
वस्तु से बचे और पट्टीबांधे रहै ॥

चौथे पानी उतरनेका लक्षण यहहै कि खुसियों
की खाल भारी और पानी से भरी मालूम हो और किसीउपाय

से ऊपर न चढ़े- इसमें उसपानी को सुखावे जैसाकि नि॰ क्की जलंधर में लिखाहै- और जब उससे लाभ नहो तोछेद देके पानी निकालडालें॥

पांचवें कारदुल् लहमी में गाढ़ा पन और खिचाव और कड़ायन थैली के अन्दर होताहै नेकि उसकी खालमें यही अंतरहै- इस रोग में और यहां की सूजन में मतवू खइसीमून से मवाद निकालें- और बाकी वही उपाय है जो खुसियों की सूजन काहै॥

दूसरापाठ २

पेट और चढ्ढों की फ़तक के विषय में

कभी सिफ़ाक टुंडी के पास ऊपर वारयानीचे को उसरो फटजाता है- और सिराक जैसे कातेसा रहता है- और जो कुछ सिफाक के तलेहै और कार सिराकको ऊंचाक रताहै- और इसी प्रकार सेचढ्ढों में सिफ़ाक फटजाता है और उस जगह ऊंचा होजाताहै—और यह दोनों रोग बहुतकार के स्त्रियों को होते है- उस जगह को भारी गद्दियों और पट्टियां से कसके बांधें और उन वस्तुओं से बचें जो ऊपरलिखी गई हैं- परंतु सच यह हैकि यह रोग अच्छे नहीं होते- उपाय करने से केवल यह लाभहै कि रोग बढ़ने नहीं पाता ...ते हैंकि इन रोगों में पांवों की उंगलियों पर सीखको ... करके दाग देना लाभ दायक है- और इसी प्रकार से उस मोटी रगपर जो अंगूठे की जड़में हाथ की मुट्ठीपर

है दूसरी ओर दागदें ॥ ५ू२ जा पृ.४/ से ६००

तीसरी पाद ३

४- ५ू८५५८

टूंडीके उभरनेके विषयमें

जो उत्पत्ति के दिन बुरी तरह से काटने से याकि सी चोट से उभर आवै तो उसी समय तुरत ही उसे ठीक करें नहीं तो पुराना होने पर कुछ लाभ नहीं होगा-उसी समयपट्टी आदि से ठीक करें ॥

जो यह रोग सिफाक के फटने या कफके इकट्ठा होने से होतो जैसाकि जिक्की जलंधर में होताहै या वायके इकट्ठा होने सेजैसाकि तवली जलंधर में होताहै याटूंडी की खालके नीचे-मांस बढ़जाने से या किसी रगके फटजाने से और रुधिर इकट्ठा होने से हो ॥

इन में से जो रोग फितक की प्रकार का है उसमें दवाने से टूंडी नीचे होजाती है- चाहे गड़बड़ हो या न हो ॥

और कफमें बोझ जान पड़ेगा ॥

और वाय में नरमी होगी- और वाय की उत्पत्ति करने वाली वस्तु खाने से और अधिक होगा और उनकी विपरीत से घटेगा ॥

मांस उत्पन्न में टूंडी कड़ी होगी- और दवाने से नहीं दवेगी ॥

और रुधिर के इकट्ठा होने में ऊपर का रंगनील

याकाली होगा ॥

जो यह रोग फिलक की प्रकार से हो उसका उपाय लिख चुकेहैं ॥

और जो कफ या वाय से होतो उसका उपाय जलंध रके वर्णन में देखलें ॥

और मांस उत्पन्न होजाने में कुछ उपाय न करें- वह अच्छा न होगा ॥

और जो रुधिर इकट्ठा होजावे तो जोंकलगावे कावज़ करने वाली ओषधोंका लेपकरें - जोनकसीरके वर्णन में लिखी गईहैं - कि रगों का मुंह जिससे रुधिर निकलताहै बन्द होजावे ॥

बाईसवां अध्याय

॥२२॥

उन रोगोंके विषयमें जो केवलस्त्रियों कोहोतेहैं

पहिला पाठ १

बांभहोनेके विषयमें

सं ७ — ५। ७५२

जो रहेम में कोई बिगाड गर्मी या ठंड या खुश्की या तरी और सादा या मवाद से हो उसका कारण जानके उपाय करना चाहिये ॥

गरमी की पहिचान यह है कि हैज़ का रुधिर काला और गाढा होगा- और उसमें गरमी भी पाई जावेगी ॥

ठंडकी पहिचान यह है कि हैज़का रुधिर देर करके और बिना जलन के निकलेगा ॥ ।। ११२। ७२।-१-

और खुश्की की पहिचान यह है कि पेशाब की जगह सूखी रहेगी और हैज़ कम होगा॥ ३०।—२-३-

तरी की पहिचान यह है कि रहम से तरी निकला करेगी - और ऐसी स्त्री को तीन महीने से अधिक पेट न रहेगा ॥

और जो बिगाड किसी मवाद से हो तो पहिचान उस मवाद की उस तरी के रंग से जानी जावेगी - जो कि रहम से बहे ॥ ॥५२५॥

जो मुटापे के कारण गर्भ न रहे तो दुबला होने का उपाय करें ॥

और जो अधिक दुबला होने से हो यहां तक कि इतना रुधिर न बचे कि बच्चे को बढावे तो मोटा होने का उपाय करें जो इस पुस्तक के अंत में लिखा गया है ॥

और जो हैज़ के बंद होजाने से होतो ऐसी औषधें काम में लावें जो हैज़ को निकालें॥

और जो रहम की सूजन या ववासीर या घाव या बडे पन से होतो उस कारण को दूर करें और इनका वर्णन अलग अलग कियाजावेगा॥

और जो रहम में गादी वाय इकट्ठी होने से होतो लक्षण उसका यहहै कि पेडू फूला हुआ होगा - और विषय के समय पेशाव की जगह से वाय आवाज के साथ निकलेगी-इससें वाह औषधें काममें लावेंजो वाय को तोडें-और पेडू पर चारे लगावें -और रोगन वेदइंजीर सादे दशमाशे माउल उसूलमें मिलाकर पिलावें॥

और जो रहम के मुंह में कोई विगाड होजैसे सूजन या मांस या मस्सा आदि जिस से मुंह बन्द होजावे तो उस कारण को दूर करें- उसका वर्णन आगे किया जावेगा॥

औरजो रहम का मुंह सामने से हटगयाहो औरजो उससे वीर्य्य भीतर नजासके तो विषय करने के समय पीडा होगी- और उसका उपाय २०वें पाद में लिखा जावेगा॥

औरजो विषय के पीछे स्त्री तुरंत ही उठखडीहो या कोई औरवात इसी प्रकार कीहो जिससे वीर्य्य फिसलकर निकलजावे तो उसकारण कोरोकें॥

कभी पुरुष भी बांझ होताहैजैसे कि वीर्य्यकेविगडजाने सेहोतो पुरुष का उपाय करना चाहिये- औरवीर्य्य को ठीककरें-

और कभी ऐसा होता है कि मनुष्य के जन्म में रहो
ग होतो उसका उपाय नहीं होसकता ॥

अब इस बात का जानना कि स्त्री बांझ है या पुरुष
इस प्रकार से होसकता है कि दोनों के वीर्य्य अलग रक्खे- और
उन्हें गरम पानी में डालें जो ऊपर तैरता रहे जानों कि वही
बांझ है ॥

जो औषधें कि गर्भ रहने के लिये लाभदायक हैं
यह हैं- हाथी दांत का बुरादा ४॥ साढ़े चार माशे खिलावें या
पनीर लगावें ॥

दूसरा पाठ २

बहुधा गर्भ गिरने के विषय में

जो इसका कारण चोट, या क्रोध, या दुख आदि या
उलटी या भूक या कोई रोग होतो उस कारण को रोकें- बांझ
होने के कारण और इसके दवा हैं- इस लिये ऊपर के पाठ में
देखना चाहिये ॥

तीसरा पाठ ३

जन्ने में कठिनता होने के विषय में

इसका उपाय ठंडी और गरम हवा और समय
के अनुसार करना चाहिये- और जो स्त्री कठिनता सेजना

करे- उसे आठवें महीने से दूध पिलाया करें जितना उसेपच सके- औरजब वह जनने को होतो उसे गरम जगहमें लेजायें और गरम पानी बदन पर धारें और आबज़न में बिठावें-और तेल मलें और टहेलावें- औरठंडे पानी और ठंडी वस्तुओंओर खटाई से वचें - और स्त्री को चाहिये कि अपने दमको रोकें और पांव पर ज़ोर करें और कूथे और दाई रोग़न वादाम याग लसीका तेल- और अलसीका लुआव मिलाके गुनगुनाकर के रहम के मुंहपर बहुत सा मलें-इससे वचचा सुगमता से उत्पन्न होताहै ॥

यह औषधें इस रोग को अति लाभदायकहैं-चुंम्बक पत्थर का बड़ा टुकडा बायें हाथ में बांधे और मूंगेकी जड़दाहिनी रान पर बांधे- और दार चीनी खिलावें-और जोंदबेदस्तर्था हींग भी मिलालेंतो तुरंत लाभ होगा- परंतु गरमी नहो और अमलतास के छिलकेडेढ़ तोला कुचलके औटावें- और शर्बत बनफशा याचनों का पानी मिलाकेपिलावें- इससे तुरंत ही वचचा हो सकताहै - और मशीमाभी निकल आतीहै- और गर्भवती स्त्रीको सुगंधि न सुंघाना चाहिये- और जनने केसमय तो कभी नहीं सुंघावें ॥

चौथापाठ ४

मशीमा के रुकने और पेटसेंबच्चामरजाने के विषय में ॥

९ पेट में बच्चा मरजाने का लक्षण यह है कि फिरना उसका बंद होजाता है- और स्त्री के हाथ पांव ठंडे होजाते हैं- और हांपने लगती है- और सांस पेट में नहीं समाती- इसमें तुरंत ही बच्चे या मशीमा को निकालें- चाहिये कि यह काढ़ा पोदीना- हंसराज- अबहल- प्रत्येक साढ़े१०॥ दशमा०- तुरसुंस और पोदीना प्रत्येक सात माशे ओटाके और तीन तोले मिश्री मिलाके पिलावें - और नक छिकनी या पिसी हुई कलोंजी या तमाकू की नास सुंघाके छींक लिवावें- और जब छींक आने लगे तो मुंह और नाक १ बंद करालें- कि जोर छींकका भन्दर को पड़े और बच्चा मरा हुआ निकल पड़े- और सांपकी कैंचली और कबूतर की बीट जलाके रहम में धूनी दें तो तुरंत लाभ होता है- और जो इनसे कुछ लाभ न होतो बच्चे को काटके निकालें।

पांचवां पार ५

जो रुधिर जनने के पीछे निकलता है उसके रुके रहने के विषय में

इसका उपाय वही है जो हैज के बंद होने का है कुछ स्त्रियों को जनने के पीछे पीड़ा होती है उसकी औषधें यह हैं- अलसी के बीज ओटाके रहम को भपारा दें- और गधी का दूध गुनगुना करके सूत्र की जगह को धोवें और गधे या खिच्चर का सुम जलाकर धूनी लें- और

सातर का पानी पिलावें- और खुब्बाज़ी ओंटाके पिलावें-और रहम में भी पहुंचावें- और जो कोई दवा लाभदायक न होतो पोस्त को पानी में भिगोकर उसका पानी थोड़ा सा पिलावें ॥

कभी गर्भ गिराना पड़ता है- यह अत्यंत महा निषेध काम है- और जो अत्यंत आवश्यकता होतो उसका उपाय यह है कि कागज़ की बत्ती बनाके रहम के मुंह में रक्खें और जो उसको कुतरान में अथवा इन्द्रायन के पानी में या उसके जुशांदे में भिगोलें तो अधिक पुष्ट हो जावेगा- और हीरा दो माशे, सूखा हुआ सुहाव दश माशे- मुर्र मक्की तीन माशे कूट छान के खिलावें- और ऊपर से अवहेल ओंटाके पिलावें- संध्या और सवेरे यह सब सब खुराकें और भोजन के बदले चनों का पानी दें- और तिरियाक़ अर्बा भी लाभदायक है- और जो औषध मरे हुवे बच्चे और मशीमा को पेट से निकालती है वह पेट के गिरने में भी काम आती हैं ॥

गर्भ गिराने के समय पहिले गरम स्थान में बैठकर रोग़न बेद् इंजीर मलें और चिकनाई पिलावें- और जब गिरजावेतो गूगल और राई जलाके रहम को धूनी दें कि रुधिर गाढ़ा न होने पावे और निकलता रहे ॥

जब चाहे कि गर्भ न रहने पावे तो उपाय उसका यह है कि विषय करने के पीछे सात बार या नौ बार कूदें- और वीर्य्य निकलने के पीछे तुरंत ही जब खड़ी हो और .. लें- और पुरुष विषय के समय लिंग पर तिली तेल मलाकरे - उसकी चिकनाई से वीर्य्य फिस

ल जावेगा- और काली मिर्चें विषय करने पीछे मूत्रके छिद्रमें रक्खें- और चूहे की सेंगनी पीस के गद्दी बनाके रक्खें ॥

छटापाठ

रिजा के विषयमें

यह वह रोग है कि जिसमें सब लक्षण गर्भ रहने के से पाये जाते हैं- परंतु वह गर्भ नहीं है क्योंकि इस रोग में और गर्भवती होने से यह अंतर है कि बच्चेके हिलने जुलने के जो समय हैं उनमें बच्चा हिलता नहीं है-और लक्षण जो गर्भ के हैं वह नहीं पायेजाते ॥

और ऐसाही जलधर में और इस रोग में जानने वालों को अंतर मालूम होजाता है अर्थात जैसा कड़ापन इस रोग में होता है वह जलधर में नहीं होता ॥

कारण इसका रहम की सूजन होतो उसका उपाय आगे लिखा जावेगा ॥

और जो किसी मवाद के गिरने या वायके उत्पन्न होने से हो तो उसका उपाय पहिले पाठ में लिख चुके हैं ॥

और जो केवल स्त्री के वीर्य्य से और रहम सेको ई वस्तु उत्पन्न होगई होतो गर्भको गिरादें ॥

ॐ

सातवा पार७

हैज़ की अधिकता के विषे में

जो रुधिर की अधिकता से होतो फस्द से उसे कम करें छातियों को पट्टी से कसके बांध दें-और उनके नीचे पछने लगावें-और फस्द के पीछे कुर्स कहरुवा रुधिर बंद करने के लिये खिलावें-और शाफा मुनासिब रहम में रक्खें ॥

और जो रुधिर पित्तों की अधिकता से पतला और तेज़ होगया होतो पित्त के लक्षण पाये जायंगे-इसमें पित्त को निकालें और वही ऊपर वाले कुर्स और शाफा दें और चंदन पेडूपर लगावें ॥

जो रुधिर में तरी बढ़जावे तो कफ के लक्षण पाये जावेंगे-इसमें तरी को सुखावें और निकालें ॥

जो सौदा के मिलने से रुधिर में तेज़ी आगई हो तो रुधिर काला या नीला याहरा होगा-उससे सौदा को फस्द और जुल्लाव से निकालें ॥

और जो इसका कारण रहम की बवासीर या घाव होतो उसका उपाय आगे आयेगा ॥

और जो जनने की कठिनता से रहम की रगें फट गई होंतो-उसका उपाय आठवें और नवें पार में लिखा गया है ॥

और जो कच्चे फूटने में वह रोग होतो

शराव में भिगोवें और क़ब्ज़ करने वाली औषधेंजैसे माजू और गुल्नार और गुलाब के फूल औटाके आग से धोवें और उस स्थान को चिकना रक्खें - और अंगूर की लकड़ी और पत्तों की राख कपड़े पर रखके गद्दी बांधें - और ज़हर मुहरा मठे में घिसकर पिलावें - और जो उपाय घावका है वही मरहम लगावें ॥

आठवां पाठ ८

रहमके घावके विषय में

३२५ - २१५४

लक्षण उसका यह है कि पीड़ा कमी रहेगी - और पीप या रुधिर अकेले या दोनों मिले हुये निकलेंगे - जब तक घाव में पीप न पड़े और कोई हानि न हो तो फ़स्द खोलें - और भोजन ठीक दें - और कुर्स काहरुवा खिलावें और क़ब्ज़ करने वाले हुक्ने और गद्दी काम में लावें - और जब घाव में पीप पड़े या सूजन पकके फूटे तो रोग़न गुल और शक्कर और रोग़न बनफ़शा पानी में घोलके रहम में हुक्ना करें - और जब मवाद साफ़ होजाय तो मरहम बासलीकून रोग़न गुल में मिलाकर रहम में हुक्ना करें किघाव अच्छा होजाय ॥

और जो रहम की गर्दन में घाव हो तो इनही औषधों की गद्दी रक्खें - कुछ हुक्ने की आवश्यकता नहीं है - और अकेला शहद या औटा हुआ दूध रुई में भिगोके घाव में रक्खें - और रहम से मवाद निकालना अति लाभ

दायक है ॥

और जब पीड़ा अधिक होतो - अफ़ीम औरकेस र स्त्री के दूध में घोलके उसमें रुई भिगोके रहम के भीत र रक्खे ॥

ॐ

नवाँ पाठ ९

रहम के फटजाने के विषय में

सं ३१५ - २१०५

इससे विषय के समय पीड़ा अधिक होगी - औ र लिंग रुधिर में भरा हुआ निकलेगा - जो मरहम पैरवाने की जगह के लिये लिखेहैं वही लगावें - और मरहम १ बासलीकून और रोग़न बनफ़शा लगाना अति लाभ दायक है - कभी पैरवाने और पैशाब के स्थान के बीच में जो पर्दा है वह जनने की कठिनता आदि से फटजाता है - इसमें न लीकी चूरा और सफेद मोम और बकरी के गुर्दे की चर्बी लेकर बहुत सी संग निपहत मिलाके मरहम लगावें - और उसको गद्दी पर लगाकर इस प्रकार से बांधे कि घाव की जगह जमजावे - और हानि कारक वस्तुओं से बचें ॥

ॐ

दसवां पाठ १०

६५ - २१०५

रहम की खुजली के विषय में

यह रोग पित्त खारी बलग़म या सौदा वादी

में तेज़ी आजाने से होता है- लक्षण इसका यहहै कि हैज़ का रुधिर पीला या सफेद या काला होगा- पहिले मवादको निकाले- फिर पोदीना अनार के छिलके- और दुली हुई म सूर कूट छान के मुसल्लस या शराब या सिरके में घोलके रुई उससे भिगोके अन्दर रक्खे- और रोग़न गुल और रोग़न बनफ़शा मले- और जो सूत्र के स्थान पर खुजली होतो उसका भी यही उपायहै ॥

ग्यारहवां पाठ ११

रहमकी बवासीरके विषयमें

इसका उपाय भी वही है जो बवासीर का सत्रहवें अध्यायमें लिख चुके हैं ॥

बारहवां पाठ १२

रहमकी फुंसियों के विषयमें

यह रुधिर के बिगाड़ या पित्त से होता है-फुंसियां छूनेमें आती हैं और खुजली होती है-फस्द से मवाद को निका ले और सिकंजबीन पिलावें और सफ़ेदे का मरहम लगावें और जो रहम की गर्दन की में फुंसियां हो- औरजो भीतर को होतो हुकना करें ॥

तेरहवाँ पाठ १३

रहमके मस्सोंके विषयमें

यहभी छूने से मालूम होते हैं फ़स्द खोले- औरसै-
दाका जुल्लाव दे- और बाबूना नाखूना और मेथी और
अलसी के बीज ओंसाके आबजन करें- और पेशाव करनेकी
ठौ उसी से धोवें ॥

चौदहवाँ पाठ १४

रहमके नासूरके विषयमें

जब स्राव चालीस दिनका होजाताहै तो उसेना-
सूर कहतेहैं- लक्षण उसका यहहै कि पीलापानी बहाकरे
और उपाय उसका वहीहै जो आठवें पाठमें लिखागयाहै ॥

पंद्रहवाँ पाठ १५

रहमसे पानी बहनेके विषयमें

इसमें फस्द और जुल्लाब से सवाद को निकालें- और
मिज़ाज की ठंड और गर्मी के अनुसार सुखाने का उपायकरें ॥

ॐ

सोल्हवां पाठ १६

रहमसे वीर्य्य वहनेके विषयमें

इससे पानी वहने में यह अंतर हैकि पानी में दुरगंधि अधिक होगी- और वीर्य्य में गाढ़ापन और सफ़ेदी अधिक होगी- इसका उपाय वही है- जो पुरुषों के वीर्य्य वहनेकाहै॥

ॐ

सत्रहवां पाठ १७

हैज़ बन्द होजानेके विषयमें

जो रुधिर की कमी से होतो शरीर दुवला होगा और रुधिर की न्यूनताके लक्षण पाये जावेंगे- पुष्टभोजन खिलाके रुधिरवढ़ाने का उपाय करें॥

और जो ठंड पहुंचने से या किसी गाढ़े मवादके मिलने से रुधिर भी गाढ़ाहोगया होतो पहिले उनके कारण पाये जावेंगे- और ठंडके लक्षण होंगे- उस गाढ़े मवाद को निकालें और वह औषधें जिन से रुधिर पतला हो चाहें पिलावें या भपारा दें॥

और जो रहम की रगों के मुंह बंद होगये होंतो देखना चाहिये कि कारण उसका गर्मी है या ठंड याखुश्की-फिर वैसा उपाय करें- जो कि पहिले पाठ में लिखा

गया है ॥

जो रहम का घाव मंस्ने से रुधिर रुक रहा होतोउसका उपाय नहीं हो सकता – परंतु अधिक हानि से बचनेके लिये कभी कभी फस्द खोला करें – और मिहनत अधिक करें – और भोजन कम खावें ॥

और जो रतक के कारण से होतो उसका उपाय आगे आता है ॥

और जो अधिक बुढापेसे रुधिर निकलने केरस्ते बंद होगये होंतो जुबला करने का उपाय करें ॥

और जो रहम का मुंह चिरजाने से होतो उपायउसका बीसवें पाठ में आवेगा ॥

अठारहवां पाठ१८

रतक के विषय में ॥

यह वह रोग है कि भग के मुंह पर या उसके और रहम के मुंह के बीचमें या रहम के मुंह पर कोई खुचड़ी हुई उत्पन्न हो – पहिले में लिंग अंदर न जासके और दूसरे में पूरा जावेगा – और तीसरे में जासकेगा – परंतु हैज़ का रुधिर निकलने न पावेगा – चाहिये कि इसको कि सीसे काटडालें ॥

ॐ

उन्नीसवांपाठ १९

रहमके उभरनेके विषयमें

नुस्खा - २७१

इसका लक्षण यह है कि पेड़ू और कमर और पै
खाने के स्थान पर अधिक पीड़ा मालूम होगी- और कुल्हा
और रानों के रोग उत्पन्न होंगे- और भीतर कोई वस्तु नरम
पाईजावेगी- आंतों को झुकाने से और मसाने को सूत लाने
वाली औषधों से साफकरें- चमेली का तेल या रोगनगुल
लेकर उसमें थोड़ासा केसरका तेल और अरगेजा मिलावें-
और गुनगुना करके रहम में टपकावें- और ऊपर मलें
और दाई से कहदें कि स्त्रीको चित लिटाकर दोनों रानें
उठावें- इस प्रकार से कि आपसमें मिलने न पावें अलगअ
लग रहें- और भेडके नरम बालजो खालके पास बालोंकी
जड़ में होते हैं लेकर उस शराब में जिससे कि कब्ज़ करने
वाली औषधें औटाई गई हों भिगोके अकाकिया और सुक
और रामैबा कूट छान के उसमें उन बालों को लथेड़े और
पोटलीसी बनाके रहम को उससे उठाकर भीतर करें-औ
र उस पोटली को उसी जगह रहने दें और दूसरी गद्दी सेभ
गको भरदें और कसके पट्टी बांधें और पेड़ूपर उसके आस
पास काबिज़ औषधों का लेपकरें और तीन दिन तक इसी
प्रकार से रहें- और हानि कारक वस्तुओं और हिलने जुल
ने से बचें- तीसरे दिन पट्टी खोलके उस औषधिको नि
कालें और नई दवा रखदें- और जब तक भली भांति

आराम नहो चलने फिरने में पट्टी बांधे रहें और बराबर सु
गंधि सुंघावें ॥

बीसवांपाठ २०

रहसके भुकाधड़नेके विषयमें

मे ८ ला ० - २१०५

यह दाई को हाथ लगाने से मालूम होसकता है और इसमें विषय के समय पीड़ा होती है- और कभी कभी पेचिश भी होती है- और मूत्र और मैलवाला बंदहो जाताहै ॥

जोरुधिर की अधिकता से सो तन राई हो तो जिधर को झुकाओ हो उसी ओर फ़स्द साफ़िन खोलें ॥

+ २५ २१ ५२ २५१

+ और जो ठंड पहुंचने से होतो तर आवज़न सेवि दावें- और रोग़न बाबूने में बतख की चर्बी पिघला करके मलें ॥ २१ ५२

और जो काफ़ गिरने से हो तो अयारिजें खिला के मवाद को निकालें ॥

२८ और जो कारण दूर करने के पीछे भी यह रोग न जावे तो उंगली में मोम रोग़न लगाके दाई सीधा करदें ॥

ॐ

इक्कीसवांपार२१

रहम कीसूजनके विषयमें

धर आरम्भ - २०१५

जो गरम से होतो लक्षण उसका यहहै कि गरमतप
होगी औरनाड़ी और सांस जल्दी जल्दी चलेंगी। औरसेदगों
र भेजेमें बिगाड़ होगा-औरजो आगेकी रहम में सूजन होतो-
पेड़मेंं पीड़ाहोगी- और जो पीछे होतो कमर की ओर- और
जो दोनों जगह होतो दोनो कोख में पीड़ा होगी-इसकाउ
पाय वहीहै जो मसानेकी सूजनकाहै ॥

और जब सूजन पकजावे औरफूटे तो रहमके घा
वका उपाय करें ॥

और जो कफ़की सूजन होतो पेडू के आसपासपी
डा होगी और बोझभी होगा- उलटी और मसाने की ठंडीसू
जनका उपाय करें ॥

औरजो सौदा से होतो कड़ापन होगा औररह
म किसी ओरझुका होगा- और पीड़ाकम और बोझ अधिक
होगा- फ़स्द और जुल्लाब से सौदा को निकालें- और मरह
म और चरबी और रोग़नों से चाहे पिचकारी लें या गद्दीरक्खें
या लेप लगावे - और सोये और खैरू को औटाके रात
दिनमे दो वार आबज़न करें ॥

बाईसवाँ पाद २२

रहमके दुबैले के विषयमें

धं भीटा - २१०३१

जब सूजन पकजावे और न फूटे उसको दुबैला कहते हैं॥

जो यह रहम के मुंहमें होतो छेदा देकर पीपको निकाल डालें॥

जो रहम के भीतर तहमें होतो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें - और नरम करने वाली औषधों का लेपकरें कि आप से फूटजावें - और जो फूटने में देर होतो इंजीरऔर राई ओंटाके रहम में हुकना करें - और फोके उनका कूट के सूजन की जगह पेडूपर लेप करें - और जब फूटे तो पीप को साफ़ करें - और घाव को भरें॥

तेईसवाँ पाद २३

सरतान रहम के विषय में

यह रोग बहुधा गरम सूजन के पीछे होजाता है इसमें कड़ापन और गरमी और तपक होगी - पीडाछाती तक होगी - और पांव पर सूजन होगी - इसका उपाय नहीं हो सकता - परंतु थामने के लिये ऐसे मरहम लगाया करें जिन से पीडा थोसी हो - और आबज़न और हुकनाआदि

किया करें- और मरहम रसूल अति लाभ दायक है- और सौ दाने निकालने के लिये कभी कभी फस्द और जुल्लाब दें- परंतु तरी पहुंचने का ध्यान बहुत रक्खें ॥ 4/अध्या 6

चौबीसवाँ पाठ २४

इ ख्तिनाक़ रहम के विषय में 9/2 ज

इस रोग में सृगी और मूर्च्छा कासा हाल होता है- परंतु कफ़ मुंह से नहीं निकलता- और तड़पन नहीं होती और मूर्च्छा ऐसी अधिक होती है कि पुकारने से भी कुछ ख़बर नहीं होती- मूर्च्छा में वह उपाय करें जो मूर्च्छा और सृगी का है- परंतु इसमें सुगंधि कभी न सुंघावें- दुर्गंध सुंघानी लाभ दायक है- और गंधक और गूगल आदि जिसमें दुर्गंधि हो नाक के आगे जलावें- और सुगंधि रहम के भीतर मलें और मुश्क, और अम्बर की धूनी रहम में पहुंचावें- और जब विषय के छूट जाने या वीर्य्य की अधिकता से यह रोग होते हो सके विषय करें ॥

और जब हैज़ के रुधिर रुकने से होतो- फ़रफ़ियून और काली मिरचें गद्दी में भीतर रक्खें- और जब रोगी चैतन्य होतो मूत्र लानेवाली औषधें पिलावें- और फ़स्द खोलें और मवाद निकालें और रहम को पुष्ट करें ॥

पच्चीसवाँ पाठ २५

x गुल्म
अध्या 2
ब गार्भ

रहममेंपानीभरजानेकेविषयमें

इस रोगमें ज़िक्की जलंधर की भांति पेट फूलजात औरकभी पानी अपर वह आता है- इससें रहम और सारे शरीर का मवाद निकालें- और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और वह उपाय करें जो जलधर और पंद्रहवें पाठमें लिखा गया है- और भूका रहना और महनत करना लाभदायक है- और कहते हैं कि सफेद कुत्की भीतर लगना अच्छाहै ॥

छब्बीसवांपाठ२६

रहम में वायभरजानेकेविषेमें

इसमें पेड़ू फूल जाता है और पीडा भी होती है- और बजाने से तबले की सी आवाज़ निकलती है- अयारिज खिलाके सारे शरीर का मवाद निकालें- और वाय तोड़ने वाली औषधों से हुकना- लेप- सेंक- आबज़न आदि करें- और जो उपाय तबली जलंधर का है वहीइसकाहै ॥

जो रोग बीसवें अध्याय के आठवें और नवें और बारहवें पाठ में लिखे गये हैं वह स्त्रियों कोभी होतेहैं- उनके उपाय वहीहैं जो पुरुषों के लिये हैं ॥

तेईसवां अध्याय

॥२३॥

पीठ और हाथ और पांवके रोगोंके बिषयमें

पहिला पाद १

कुभ निकल आनेके विषयमें

इसमें पीठ की गुरियां अपनी जगाह से आगे पीछे दहने बायें खिसक जायें॥

इस रोगके कारण पांचहैं- एक उस पर्देकी सूजन जो गुरियों के आस पास है॥

दूसरे गुरियों के नीचे गाढ़ी बायका रुकना॥

तीसरे यहकि पतली तरी गुरियों की नसोंमें आवे और उसे ढीला करदे॥

चौथे नसोंका खिंचना॥

पांचवें यहकि गुरियों पर चोट पड़े॥

पहिली प्रकार का लक्षण यह है कि पहिले पीठ में पीड़ा होती है- और नाड़ी भारी होती है- और तप अधिक होती है ॥

और दूसरी प्रकार का लक्षण यह है कि पीड़ा अधिक होती है विना तप के ॥

तीसरी में मूत्र सफेद निकलता है- और इससे पहिले तर वस्तु खाई होगी ॥

और खिचाव और चोट पड़ने का लक्षण तो सब जानते हैं ॥

पहिली प्रकार में फस्द खोले और मुलायम करने वाली औषधे दें- और लेप लगावें- और सूजन का उपाय करें ॥

दूसरी और तीसरी प्रकार में वह उपाय करें जो गुर्दे की वायका है ॥

और खिचाव में तशन्नुज का उपाय करें ॥

और चोट लगने में पीठ के मुहरों को ठिकाने से विठावें जो भीतर को घुस गये हैं ऊपर खेंचें सींगियों से या वारे लगाकर या ज़िफ़्त और गूगल थोड़ा सा अक़ाक़िया मिलाके लेप करें कि सूखने से तनाव पड़े और ऊपर खिंचें ॥

जो मुहरे बाहर उभर आये हों तो हाथ से मलके भीतर अपने ठिकाने पर फेर दें- फिर काबिज़ औषधों का लेप करें कि फिर न उभरें ॥

दूसरापाठ २

पीठकी पीड़ाके विषयमें

जो कारण इसका केवल कोई बिगाड़ बिना मवाद के होतो ठंड लगेगी - और पीड़ा बिना बोझके होगी और गरमी से आराम मिलेगा इसमें पिलने और लगाने से गरमी पहुंचावें ॥

औरजो कफ उत्पन्न होने या गिरने सेहोतोकफ उत्पन्न होने में पीड़ा बोझके साथ होगी - और पहिलेसे कफ उत्पन्न करने वाली वस्तु खाईहोंगी ॥

और कफ गिरने के लक्षण इनके सिवाय-क्रोध दौड़-धूप-और मिहनत आदिहैं ॥

मवादको निकालें और शाफकरें ॥

और कफ गिरने में पचाने वाली औषधोंका लेपभी लाभ दायक है बिना मवाद निकाले हुये ॥

औरजो पीठ में वायु कसी होतो लक्षण उसका वहीहै जो कफ के गिरने का है - परंतु इसमें बोझ नहो गा या हलका होगा - और पीड़ा इधर उधर फिरेगी - इस का उपाय भी लिख चुके हैं - क्योंकि जड़ इसकी भी कफ है ॥

औरजो विषय की अधिकता होतो विषयकरना छोड़ दे - और रोगन गुल और रोगन सुरजान पीठ पर मलें और जो इससे लाभ न होतो कफका मवाद निकाले ॥

और जो गुर्दे की कमज़ोरी हो तो लक्षण और उपाय उसके वही हैं- जो गुरदे के रोगों में लिखे गये हैं ॥

जो पीठ में बड़ी रग है उसमें रुधिर की अधिकता से हो तो पीठ के मुहरों में गर्दन के पास से-कमर तक बराबर लम्बाई में पीड़ा और तपक हो- इसमें फ़स्द बासली की और माबिज़ खोलें और ठंडाई पिलावें- और ठंडी औषधि लगावें ॥

जो यह रोग रहम के बिगाड़ से हो जैसे कि स्त्रियों को हैज़ आने के समय हुआ करता है- जबकि भली भांति खुलके न आवे इसमें हैज़ लाने वाली औषधें दें- और उसके निकालने का उपाय करें- और रोग़न गुल पीठ पर मलें ॥

तीसरा पार ३

कोख की पीड़ा के विषय में

इसके कारण और लक्षण और उपाय पीठ की पीड़ा में देखें ॥

चौथा पार ४

गरिया के विषय में

यह पीडा शरीर के जोडों में होतीहै-इसमेंकभी सूर न होतीहै और कभी नहीं होती ॥

जो चूतड़ों के जोड़ में पीडा हो उसे वजउलवर्को कहते हैं- और जो कूले से नीचे को उतरे पांव तकतो अरकुंनिसा कहलाताहै ॥

और जो टखने के जोड़ से ऊपर कोचढे या पांवकी उंगलियों से होतो उसका नाम नुक़रस है- बहुधा यह पांवके अंगूठे में होताहै ॥

और जो हाथ पांव के सब जोड़ों में होतो वजअ मुफ़ासिलहै ॥

सब प्रकारों के कारण और उपाय एकसेहैं- इस वास्ते एक उपाय लिखा जाता है- और जो वस्तु केवल एक ही प्रकार के लिये हैं वह भी बताई जाती है ॥

जो केवल गरमी ठंड या खुश्की से होतो होले होले उत्पन्न होगा- और बोझ और पीडा न होगी- और इन बिगाडों के लक्षण पाये जावेंगे- पीने और लगाने की औषधों से मिज़ाज को ठीक करें- और तरी से यह रोग नहीं होता ॥

जो रुधिर की अधिकाता से होतो उस स्थान पर लाली और तपक और तनाव होगा- जो पीडा एक ओर होतो दूसरी ओर फ़स्द खोलें- और जो दोनो ओर होतो दोनो ओर से खोलें- जो हाथ के जोडों में होतो फ़स्द हफ़्त अंदाम खोलें- और पांवो के जोडो में होतो बासलीक परंतु रुधिर अधिक निकाले- और जो मवाद के नरम करने की

आवश्यकताहो तो वैसी औषधें दें - और मिज़ाज के ठीक करने के लिये शर्बत पिलावें - और रोग के आदि और वद तीसे फ़स्द के पीछे इन ठंडी औषधों का लेपकरें - जो म वाद को इधर गिरने से रोकें - और पीड़ी की अधिकता में सुन्न करने वाली औषधें भी मिलालें - और रोग के अंत में बनफ़शा और खेरू आदि फिर पचाने वाली औषधें से नाखूना और बाबूने के फूल काम में लावें - चाहे तकेड़ करें या लेप ॥

और जो पित्त के मिलने से रुधिर बिगड़ जावे तो पित्त के लक्षण पाये जावेंगे - अर्थात् पीड़ा की अधिकता और जलन आदि फ़स्द खोलें - और मवाद को नरमकरें परंतु रुधिर अधिक न निकालें - फिर मूत्र लाने वाली औषधें जो ठंडी हों अति लाभदायक हैं - और बचाने वा ली औषधों का लेप कभी न चाहिये - और इन दोनों प्र कारों में सिकंज बीन जो बहुत तेज़ न हो लाभ कार तीहै ॥

और जो पित्त से पीड़ा होतो केवल उन्ही के लक्षण पाये जावेंगे - इसमें मवाद को नरम करें - और मिज़ाज को ठीक करें - और उलटी अति लाभ कार कहै - और फ़स्द न खोलें - यह रोग केवल पित्त से बहुत कम होताहै ॥

जो कफ से होतो जोड़ बोझल होंगे औ र वरम के लक्षण पाये जावेंगे - इसमें उलटी करावें - औ र मुंजिश देके कई बार जुल्लाब दें - जब मवाद निक ल चुके तो मूत्र लाने वाली गरम औषधें पिला वें -

और इसमें भूले से भी केवल वह ठंडी औषधें जो सवार को इधर गिरने से रोकें- या केवल पचाने वाली औषधेंक भीन लगावें ॥

और जो सौदा से होतो रंग काला होगा- और पीड़ा कम होगी- और सूजन में कड़ापन और तनाव होगा फस्द खोलें और जब सवाद भली भांति पकजावै तौ सौदा के जुल्लाब दें- और ऐसे मरहम लगावें जो कड़ेपनको नरम करें ॥

फस्द में नशतर चौड़ा लगावें- जो रुधिरगाढ़ा काला निकले तौ बहुत सा निकालें- और बदनकरें- और जो लाल और साफ़ निकले तौ तुरंत बंद करदें- और पहिले सवाद को सौदा की सुंजिशों से पतला करले- फिर फ़स्द खोलें ॥

जो वाय से हो तो पीड़ा फिरैगी औरतनावहो गा- इससे गुलकंद और गुलाब और सौंफ़का अर्क और शर्बत बजूर पिलावें- और रोगन गुल मलें और क़फ़को निकालेंऔर पचाव को रोकावें ॥ एक प्रकार वायु की पीड़ाकी ऐसीहै किक ड़ापने और तेज़ी उसकी हड्डियों तक पहुंचती है- औरउसे तोड़तीहै और बिगाड़ती है- इससें रुधिर और पित्तको निकालें ॥

जो पीड़ा मिले हुए सवाद से हो उसका उपाय भी वैसाही करें- और सुरंजान सब प्रकारों में लाभकारक है खानेमेभीऔर लगाने से भी परंतु कफ़ के सवाद को अतिलाभ दायक है- और इसमे जीरा सोंठ मिलालेना चाहि

ये फिर मेदे को हानि न करेगी- और जब इसे खावें तौजो डों पर रोगन गुल मलते रहें- और इसकी खुश्की से फिर हानि नहोगी॥

यह औषधें इस रोग में लाभ कारकहैं- सुरंजान और मिश्री मिलाके कूट छान के साढ़े दश माशे ठंडेपानी के साथ फंकावें॥

सूखा धनियां और बराबर शक्कर मिलाके साढ़े दस माशे खिलावें॥

सफेद खशखाश पीसके बराबर शक्कर मिलाके सात माशे फंकावें॥

असगोल गरम पानी में घोलके और रोगनगुल मिलाके लेप करें॥

१० मेथी के बीजों का लुआब और सिरका मिला के लेपकरें॥

तुकारम आदि में सुन्न करने वाली औषधों और ठंडीऔषधों से जब भेजेमें कोई बिगाड़ उत्पन्न होतो औषधि को तुरंतही छुड़ादें- और बाबूना और खैरू को औटाके सिरको धोवें कि सवाद भेजे से उतर आवें॥

जब वजउलवर्क और अरकुंनिसा में औषधि से लाभ नहोतो पहिले रोगमें जूलेपर दागदें और दूसरे में टखने पर॥

अरकुंनिसा जो रग है- उसकी फस्द भी लाभ कारकहै- वह रग गंठीली होतीहै- चाहिये कि लोहेकी सीख भली भांति गरम करके टखने से आठ अंगुल ऊपर दागदें चौड़ाई में और एक दाग पांवकी छुंगलियां और

दूसरी उंगली पर जो उसके पास है जड में ऊपर को सला ई गरम करके लगावें कि एक लकीर सी पड जावे चोव चीनी सावधानी के साथ जोडों की सब पीडाओं कोअ ति लाभ दायक है ॥

पांचवां पाट ५

पिंडली की रगें बड़ी ओर मोटी होकर उभ रआवें ॥

इसमें सौदा ओर कफ़ का मवाद निकालें-ओर फ़स्द बासलीक ओर जुल्लाब ओर उलटी के पीछेव न्हीं रगों की फ़स्द खोलेंकि उनके भीतर का मवाद निकल जावे ओर जब रोग में कमी होजावे तो भली भांति नर्मी से उन्हें बांधे कि मवाद उलट न आवे ॥

छटा पाट ६

पांव सूजकर हाथी केसे होजानेके विषय में

इसका उपाय वही है जो ऊपर के पाट में लिखागया है-ओर जो अधिक हो जावे तो अच्छा हो नही सक्ता ॥

सातवाँ पाठ ७

एड़ी की पीड़ा के विषय में

जो घाव से होतो मरहम लगावे ॥

जो चोट लगी होतो - मामीसा - गिलेअर्मनी - पानीया गुलाब में पीसकर लगावें - और ठंडे पानी से धोवें और पछने भी लगा सकते हैं ॥

और जो जूते के दबाने से होतो भी वहीउपायहै ॥

और जो मवाद के गिरने सेहोतो रुधिर के मवादमें फ़स्द खोलें ॥

और जो कोई और मवाद होतो उलटी करावें-और जुल्लाब दें ॥

और गरम पीड़ा में रोगन गुल और ठंडीमें बाबूने और फ़रफ़ियून और कुस्का तेलमलें ॥

आठवाँ पाठ ८

तलुये की पीड़ा के विषय में

इस पीड़ा में धरती पर पैर नहीं रक्खा जाता - मसूर को सिरके में पकाकर लेपकरें - और जो रुधिर का मवाद अधिक होती सब से पहिले फ़स्द खोलें ॥

चौबीसवां अध्याय

॥२४॥

{तपके वर्णन में}

तप तीन प्रकार कीहोतीहै-हुम्मायोमी-हु
म्मारिक्ती-हुम्मादिक्की

पहिला पाठ १

हुम्मायोमी के विषयमें

यह वह तप है कि इसका संबंध रूह सेहोताहै
और एक दिन में बहुधा जाती रहती हैं- इसके कारण बहु
तहैं जैसे दुःख-क्रोध-भूक-प्यास-धूप-आग- भी
जन आदि- जब कोई कारण इन कारणों मे बरजाताह
तो रूह गर्म हो जाती है और तप हो आतीहै- और रूहें-
तीन है- नफ़सानी- हैवानी- तबई- इन तीनों में से १
जिस रूह के कामों में हानि हो जानों कि उसी रूह में

तप्यहै ॥ नालोर २७

कुस्मायोमी का लक्षण यह है कि गर्मी बिनाज लन के बराबर रहेगी - जैसे कि बहुत मिहनत करने में हो तीहै - और सेंडी तप और दिक के लक्षण न होंगे - और बहुधा सक रात दिन रहके उतर जाती है - जब कि दूसरी प्रकार की तप न हो जावे - इसमें कारण को दूरकरे - जैसे उचि तहो ॥

इस तप में भोजन बंद न करें सिवाय उस तप के जो तुस्वमे से हो - और उलटी भी न करावें - और न फ़स्द आदि परंतु जो तप सुद्दे से हो और कारण उसका सवादकी अधिकता हो और जब मेदे में पचाव न हो और गरम जल्ले में फ़स्द आदि कर सकते हैं - और इसतह साफ़ी तप में भी ॥

इसतह साफ़ी और सुद्दे की तप में शरीर का मलना और महनत करना और गरम पानी से न्हाना अति लाभ दायक है ॥

इसतह साफ़ी वह तप है जिसमें शरीर के छिद्र बंद हो जाते हैं - और खाल मैली और मोटी होजाती है - जैसे कि ठण्ड की अधिकता से खाल सुकड़ जाती है ॥

और सुद्दे की वहहै कि पतली रगों में गाढ़ा मवाद फंस जावें ॥

६८६५ कस्फ़ी तप उसको कहते हैं कि महनत यां न्हाना छोड़ देने से गर्मी रुके - और उससे रूह गर्म हो जावे - चाहे सुद्दा पड़े या न पड़े ॥

और ज़हीरी तप वह हैकि पेचिश की अधिकता आदि से तप होजावे ॥

दूसरापार २

हुम्मारिवल्तीके विषयमें

शरीर में चार मवाद हैं- कफ़- रुधिर- पित सौदा- इसलिये इस तप में भी चार प्रकारें लिखी जातीहैं ॥

पहिली प्रकार रुधिर की तप एक तो यहहैकि रुधिर केवल गरम होकर तप उत्पन्न करे और सड़े नहीं दूसरे यह कि सड़ जावे- पहिले तप को सूना खस और दूसरे को मुतविका कहते हैं- पहिली के लक्षण यहहैं किरुधिर की अधिकता होगी- और शरीर एकसा गरम रहेगा और पसीना न आवेगा- और मुतविका में मूत्र और पैखाने में दुरगंधि होगी और जितने लक्षण रुधिर के औटने के हैं इसमें सूनाखस से अधिक होंगे- जैसे होसके और सुगमता से रुधिर को निकालें- आवश्यकता के अनुसार रुधिर की गरमी को बुझावें- और रुधिर को साफ़ करें- परंतु बहुत ठंडाई देना इसमें बुरा है कि इस से कफ़ का सरसाम होजाता है- सोनाखस में जितना अधिक रुधिर निकालें अच्छा है- और मुतविका में आवश्यकता के अनुसार ॥

जब रुधिर पतला होजावे तो शर्वत उन्नाव

पिलाके उसे गाढ़ा करें - और जो गाढ़ा हो तो सिरके की सिकंजवीन देने से पतला होजावेगा और ऐसी औषधें दें जो मवाद को नरम करें - और जब मवाद बुहरान के पीछे रगों में रहजावे तो हरी कासनी का अर्क ७० माशे फाड़के और साफ़ करके ५२॥ माशे सिकंजवीन मिलाके दें - जो खांसी का लगाव हो तो खटी वस्तु कभी नदें - औदाने और अस्पगोल का लुआब पिलावें - और शर्बत बनफ़शा चटावें और जो खटाई के बदले कोई और ऐसी औषधि दें कि खांसी को भी लाभदायक हो और तप को भी तो बहुत अच्छा है - इस तप में उन्नाव भिगोके या औटाके पानी उसका कई दिन तक पिलाना अच्छा है - विशेषकारके जब कि रुधिर को गाढ़ा करना हो - और केवल अस्पगोल रुधिर के साफ़ करने को अच्छा है - और आलूबुखारे का पानी भी लाभदायक है - और खांसी को भी हानि नहीं करता॥

✗ दूसरी प्रकार पित्तों की तप है - चाहे अकेली हो या कोई और मवाद मिला हो लक्षण पित्त आदि का सिरपर इस पुस्तक के लिखा गया है - यहां इतना जानना चाहिये कि जो पित्त का मवाद रगों के भीतर सड़गया हो तो तप बराबर रहेगी - और एक दिन बीच करके अधिक होगी इसका नाम गिब्बे लाज़िम है॥ २ - मुग - २७ सफ़ी ९१ ३५ग

और जो यह मवाद दिल और मेदे के पासकी रगों में सड़जावे तो रोगी की अधिकता होगी - इसका नाम तपे मुहरिका है॥ २१ ०१ ०५ ३५ ९१ ३५ ग २ ०१ ६

और जो मवाद पित्तों का रगोंसे बाहर कहीं सड़े

तो गिब्बे दायरः कहते हैं ॥

फिर यह मवाद जो निरे पित्तों के विना किसी और मवाद के तो गिब्बे खालिस कहेंगे ॥

और जो कफ मिला हो और ऐसा मिले कि दोनों मिलकर एक हो जावें तो गिब्बे गैरखालिस नाम होगा ॥

और जो कफ और पित का भली भांति मेल नहीं हुआ हो- और अलग अलग हों तो शतुरुल गिब्ब कहेंगे ॥

गिब्बे खालिस में तप एक दिन आयेगी- और एक दिन नहीं- परंतु जो दो गिब्बे इकट्ठा हों इस प्रकार से कि एक२ दिन आवे और दूसरे दूसरे दिन आवे तो वारी से आना मालूम न होगा ॥

और गैर खालिस में एक दिन अधिकता होगी- और दूसरे दिन कुछ थोड़ा सा अन्तर होजावेगा ॥

शतुरुल गिब्ब में पित और कफ रगों से बाहर सड़े हों तो लक्षण यह है कि एक दिन केवल कफ के लक्षण पाये जावेंगे- और दूसरे दिन दोनों के- क्योंकि कफ की तप रोज़ वारी करती है- और पित की एक दिन बीच करके तो जिस दिन पित की वारी न होगी उस दिन केवल कफ के लक्षण पाये जावेंगे- और पित की वारी के साथ दोनों के ॥

जो दोनों मवाद रगों के भीतर हों तो दोनों के लक्षण बराबर रहेंगे परंतु एक दिन बीच करके अधिक अंतर

होजायगा ॥

२ और जो पित्त रगों के भीतर हो और कफ़ बाहर होतो पित्त की तप बराबर रहेगी- और कफ़ की भी अपने समय पर रोज़ आवेगी ॥ और एक दिन बीच करके न्यिकता होगी - इन तीनों का नाम शतुरुल ग़िब्वे ख़ालिस है ॥

२ और जो पित्त रगों से बाहरहो औरकफ़भीतर तो कफ़ की तप बराबर रहेगी- और पित्तकी एक दिनबीचकरके आवेगी जिस दिन पित्त की तपकी बारीहोगी उसदिनरोगी की बहुत अधिकता होगी -इसको शतुरुल ग़िब्वेख़ालिस कहते हैं ॥

ग़िब्वे ख़ालिस जो बराबर रहे सात दिन से अधिक और ग़िब्वे ख़ालिस दायरा चौदह दिन से अधिकनहीं रहती परंतु उपाय में भूलनहो ॥

पित्त को ठंडाई और तरी पहुंचाना चाहिये- और जो कब्ज़ होतो मवाद निकालें - और जब मवाद रगोंके भीतर हो तो बहुत ठंडाई न दें- परंतु मवाद के पकाने का ध्यान रक्खें । और तपे मुहरक़ा में ठंडाई अधिक चाहिये- जिससे दिक़ न होने पावे। परंतु वह तपे मुहरका जिसमें मवाद गरमी से अधिक हो उसमें पहले मवाद को पकाना और निकालना चाहिये । और ठंडाई का ध्यान रक्खें । और मवाद निकालने के पीछे ठंडाई अधिक करें । और इस पित्त की ग़िब्वे में जो रुधिर की अधिकता हो- और मूत्र लाल और गाढ़ा निकले तो फ़स्द खोल सकते हैं - बहुत करके जब कि मवादरगों

के अंदर हो परंतु जैसा कि रुधिर की तप में वेधड़क फ़स्द खोल सकते हैं- जैसा पित्त की तप में नहीं कर सकते- और जो खोलें भी तो रुधिर बहुत थोड़ा निकालें और वह भी पकाने के पीछे और जब केवल पित्त हो और रुधिर की अधिकता बिल कुल न हो तो कभी फ़स्द न खोलें ॥

तपे हाइरी में जो हो सके तो बारी के दिन भोजन न दें- और जब जाड़ा और कंप कपी आने को हो तो सिकंजबीन गरम पानी के साथ पिलावें कि इस से उलटी होजावे- और निकल जावें- और जो उलटी नमी होतो उब काई ही से पचजावे- और जाड़ा ठहर जावे-और जब तप उतरने पर होतो पांशोया करें- और पांव गरम पानी में रक्खें और मलेंकि रही सहीगर्मी जिस्से उतर जावे और उस समय सिकंजबीन भी पिलाना अच्छाहै- जो मतली हो और कुछ हानि न होतो उलटी करावें- और जो आंतों में गड़बड़ होतो जुल्लाब दें- और जो मूत्र खुलके नहीं आताहो तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें- और जो शरीर पर तरी पाई जावे और पसीना खुलके न आवे तो पसीना लानेका उपाय करें- और जो इनमें से कोई बात न होतो जुल्लाब दें ना अच्छाहै ॥

और गरम तपों में तुरंजबीन नदें- परंतु आलू और इमली के साथ और जब तक मेवों के पानी से काम निकले- कोई और पुष्ट वस्तु दस्त लाने वाली नदें- सिवाय मुलय्यन मुबारिक के ॥

और जब पित्त अकेले न हो तो विना, मुंज़िश दिये जुल्लाव और मुलय्यन न दें- परंतु मवाद का औटना कम करने के लिये दे सकते हैं॥

जितना कफ़ अधिक हो ठंडाई कमदें- परंतु ख री बुख़ार में ठंडाई देना चाहिये॥

तप में जब तक इन सब बातों को भलीभां ति न जान लें- उपाय न करें और कुर्सगुल और सिकंज बीन गुलकंद के साथ मिली हुई तप में अति लाभ दायक है॥

तप मुहरिका में बहुत पसीना और, नींद और एक का होंके और छोंको की अधिकता और मूर्च्छा आदि होती है- और नकसीर फूटती है- और दम रुकता है- इन का उपाय भी तप के अनु सार करें॥ ०२।८६८८।२६।४-१२।४४

पित्तों के तप की एक प्रकार ऐसी है- जिस में बराबर तप रहती है- और एक दिन बीच करके ग धिक हो जाती है- और पित्तों के लक्षण पाये जाते हैं- औ र भीतर गरमी और बाहर ठंड होती है- उपाय इस का वह है- जो गैर खालिसा का है- और सिकंज बीन और गुलकन्द लाभ दायक है- इस तप को लैफ़ूरिया कहते हैं॥

इसी तप की एक प्रकार और है- इसमें वारी के समय मूर्च्छा आजाती है- उसको इस्मागरिशिया कहते हैं इसका उपाय वही है- जो उस इस्मायौमी का है- जो कि मूर्च्छा सी हो जाती है- और वारीके समय रोटी नीबू के

र्कमें भिगोकर थोड़ी सी खिलावें ॥ +

तीसरी प्रकार कफकी तप है- जो इसमें कफ का मवाद रगों के भीतर सड़ जावे तो उसको लसका कहते हैं ॥

यह मवाद जो खारी कफ हो और दिल और मेदे के पास रगों के अन्दर सड जावे तो मुहरिका कहलावे गा इसमें और पित्त की मुहरिका में अंतर इनके लक्षणों से मालूम होजावेगा ॥

और जो कफ रगों के बाहर सडे तो नाइवी और मुआज़िवा नाम होगा- परंतु लसका बराबर रहती है बिनाना है और कभी कभी थोडी देर के लिये कुछ कभी कभी भी होजाती है ॥

और नाइवा प्रति दिन में एक दो बार उतरजा ती है ॥

कफ की तप में कफ के लक्षण पाये जा वेंगे- परंतु खारी कफ में वह लक्षण नहीं होते-क्योंकि इ समें गर्मी अधिक होती है-इसपर भी खारी कफकी गर्मीपि त्तोंकी गर्मीको नहीं पहुंच सकती ॥

खारी कफका लक्षण यह है कि रोंगटे शरीर पर ख डे हों- और ठंड और कपकपी थोडी हो ॥

२८६ और ज़ुजाजी कफ में कपकपी अधिक होती है और खट्टे कफमें ठंड बहुत मालूम होती है- मीठे से बास और बहुधा चाई आरियों तक रोंगटे खडे होना + और ठंड और कपकपी कुछ नहीं होती- सात दिन तक शहद की सिकं जबीन और शहद का पानी जिसमें थोडा सा जूफा गौराहुआ

हो और शराजो जिसमें थोड़ी सौंफ और चने
रहें- और सिकंजबीन और गुलकन्द
चाहे- इसके पीछे सिकंजबीन और गरम पानी से
वें- बहुत करके उस समय जब कि बारी आने कोहो और ब
हुत सी पिलावें- और जितनी उलटी सुगमता से आवे अच्छी
है- और कभी कभी गुलकंद के साथ अनीसून दें- और यदी
ना और मस्तगी बराबर चबाया करें- जब मवाद भली भांति
पकजावे तो जुल्लाब दें॥

जो कबज हो तो रात को दवाय तुर बुद जितनी उचित हो खिलाया करें- और सबेरे गुलकन्द १० मासे खिलाके ऊपर से शहद की सिकंजबीन पिलाया करें- जब कि कबज़ दूर करना हो- और जो मूत्र गाढ़ा और रंगीन हो तो फस्द खोल सकते हैं- और जब भेजा कमज़ोर हो तो सिकंजबीन न दें- और मवाद निकलने के पीछे कुरस गुल अति लाभ दायक है॥ २६२५।

जो कफ की तप पुरानी हो और कपकपी अधिक आती हो- और शरीर देर में गरम होतो अतवायल कूट छान के शहद में मिलाके १०॥ मासे खिलावें- और गारी कून ३॥ मासे शहद ७॥ मासे में मिलाके खिलाना भी ऐसा ही है॥ ८०।

और लसका में पकाने वाली और पतली करने वाली औषधें देने में इतनी जलदी न करना चाहिये जैसी कि नायबा में करसकते हैं- कहीं ऐसा न होवि मवाद पिघल के सिर में चढ़जावे- और सर साम होजावे-

और सिरकी पीड़ा और भेजे की कमज़ोरी में तो ऐसा कभी न चाहिये ॥ [illegible]

एक प्रकार कफ़ की तप की ऐसीहै- जिसमें भीतरठंड और बाहर गर्मी होती है-उसको इनक्रुया लूस बोलते हैं- और एक और प्रकार है जिसमें भीतर गरमी और बाहर ठंड होतीहै- उसका नाम लैफूरिया है- उसका वर्णन और उपाय ऊपरहोचुका ॥

कफ़ की तप की एक प्रकार ऐसीहै जिससे गरमी और ठंड इकट्ठा भीतर और बाहर होती है- और एक प्रकार में भीतर ठंड होती है- और बाहर असली हालत- और कफ्कपी कई बार बिना गर्मी के आवे-इन दोनों का कुछ नाम नहीहै ॥

एक प्रकार दिन को आती है- और रात को उतर जाती है- उस को निहारी कहते हैं- और एक प्रकार रात को आती है- और दिन को उतर जाती है- उसको लैली कहते हैं-इन सब में मवाद को पकावें ॥

४ चौथी प्रकार सौदा की तप है-इसका मवाद भीजो रगों के भीतर होतो रुवालाज़िम कहते हैं- और लक्षण उसका यह हैकि तप बराबर रहेगी- और दो दिन बीच करके अधिकता होगी ॥

जो मवाद रगों के बाहर सड़जावै उसको रुवदायक कहते हैं- और यह दो दिन पीछे दौरा करती है- और इस तप के आने का दिन उतर जाने के दिन समेत चौथा दिन होताहै- इस लिये इसका नाम रुवा रक्खा गया।

है इसीप्रकार से पाँचवें दिन वाली तप और छठे दिन वाली आदि जानो- परंतु चौथे दिन वाली बहुत आया करती है य ह तपें या तो तवई सौदा के सड़ने से होंगी- लक्षण उनका य हहै कि पहिले वह वस्तु खाई होगी जो सौदाको उत्पन्न क रे-और नाड़ी हल्की होगी-दूसरे यहकि गैरतबई सौदासे हो-और यह बात हम पहिले लिख चुके हैं कि जो मवाद ज ल ता है वह गैरतबई सौदा होजाता है तो मालूम हुआकि यह तपें रुधिर या पित्त या कफ़ या सौदा से होंगी- और लक्षण हर मवाद के पाये जावेंगे- परन्तु पित्तों की तप में गरमी और तपों से अधिक होगी- और जल्दी जाती रहेगी॥

तपें रूवा देरतक रहती है- और कभी पाँच छैः बारी होके जाती रहती है- और फिर आने लगती है- इसमें नागेके दिन बहुत करके इस रोग के आदि में खाना पीना बन्द करदें- और ठण्डा पानी और मेवे और वायु उत्पन्न करने वाली वस्तु और गरम खुश्क और ज ल्दी सड़ने वाली वस्तु से बचें- और तर औषधों और भोजनों से जहां तक हो सके- मवाद को पकावें-फिर मवा द को निकालें कई बार करके- और रुधिर की रूवा में फ़स्द खोलें-परंतु दो तीन बारियों के पीछे और २ प्रकारों में भी फ़स्द खोलें- परंतु मवाद के भली भांति पकजाने के पीछे- और पित्तों की तप में पकाना अवश्य नहीं है- और जब फ़स्द से रुधिर लाल और साफ़ निकले तो रोक दें- और जो यह तप देर तक रहे तो रोगी में ज़ोर रहने का ध्यान रखें और कड़ा परेहज़ न करावें- और हर महीने के सिरे पर

फ़स्द उसैलम खोलना और थोड़ासा रुधिर निकालना अच्छाहै और बारीके दिन २ घड़ी पहिले खाली सींगियां लगाके बहुत देरतक चूसना लाभ कारकहै ॥

मिली हुई तपों की कई प्रकारें हैं- नाम उन के अलग २ नहीं हैं- सिवाय शतुरुल गिब्ब- और गिब्बे गैर ख़ालिसा के- और जिसकी इनमें से बारीका ठीक नहो उसको मुख्तलित कहते हैं- और तपों के मिलने की तीन प्रकारें हैं ॥

एक यह कि एक तप अभी उतरी नहीं कि दूसरी चढ़े-उसको मुदाख़िला कहते हैं ॥

दूसरी यह कि एक उतरे औरदूसरी चढ़े उस को मुवादिला कहतेहैं ॥

तीसरी यह कि इकट्ठा दो तपें चढ़ें-चाहे साथ उतरें या नहीं - उसको मुशारिका और मुशाबिका कहते हैं उपाय इसका सोच समझ के करें- जो अधिकहो उसका दूर करने की अधिक आवश्यकता जानों ॥

तीसरापाठ ३

दिक़ के विषय में

यह वह तप है जिसमें बुरी गर्मी शरीर के बड़े बड़े स्थानों और दिल में बैठ जाती है- और अच्छी तरी पहिले जाने लगती है- और आदि मे उसको दिक़

कहते हैं ॥

१ और जब दूसरा दर्जा होता है तो शरीर पिघलने लगताहै- उसको जबूल कहते हैं ॥

२ और जब इससे भी बढ़जावे और बाल गिरने लगें उसको मुफ़तित कहते हैं- उस समय उपाय कठिन होजाताहै ॥

अकेली दिक की पहिचान यह है कि हलकी तप बराबर रहती है- और भोजन करने के पीछे गर्मी अधिक हो जाती है- और नाड़ी कमज़ोर होतीहै- परंतु खाने के पीछे नाड़ी में जोरपाया जाता है मूत्र में छिल्केसे निकलते हैं- इसमें शरीर को तरी और ठंड पहुंचावें- और भोजन और मकान और हवा ठीक करें- और ठंडी औषधें और गधे का दूध और मग पिलावें- जो सड़ी हुई तप नहोतो इसके देने की क्रियावड़े ग्रन्थों में लिखी गई है- इस तप में जहां तक हो सके शरीर के बड़े बड़े स्थानों को पुष्ट रक्खें और तरी पहुंचावें- और दस्त न आने दें- और जब कमज़ोरी बढ़ने लगेतो माउल्लहम पिलावें ॥

एक और रोग है जो दिक से मिलता हुआ है उसको दिक़ शैखूख़त और दिक्कुल हरम कहते हैं- वह यह हैकि जवान सूखकर बुड्ढों कासा होजाता है- और बुड्ढे को होतो वह और भी बुरा होजाताहै- बिना गरमीके और बहुधा बुड्ढों को यह रोग होताहै - और जवानों को कम और बच्चों को बहुत कम - तपों में ठंडी वस्तु अधिक खाने से दिलमें ठंड से बिगाड़ हो जाताहै- या महनत करने के पीछे ठंडा पानी पीलेने से या किसी और ऐसेही कारण

से यह रोग होता है- इसमें मिज़ाज को गरम और तर वस्तु ओं से ठीक करें- परन्तु बहुत न दें- और कभी कभी शहद चाटें- और जब यह रोग जगह पकड़ लेता है तो अच्छा होना बहुत कठिन है- परन्तु उपाय से हाथ न रोकें कि जलदी म रने से बचें- और सोने का बर्क़ शहद में या गुलाब शर्बत में मिलाके खिलाना और मावले लहम और अंडे की ज़रदी देना अ तिलाभ कारक है ॥

चौथा पाठ ४

—⁓❋⁓—

सीतला के विषय में

इस रोग में जो तप होती है उसमें बेचैनी और पीठ में पीड़ा होती है- और नाक खुजलाती है- और आंसू बहते हैं- और सोते में चौंक पड़ता है ॥

ह ख़सरा में मोतिया से बेचैनी अधिक और कमर की पीड़ा कम होती है ॥

सीतला निकलने से पहिले रुधिर कम करें- जवानों के फस्द खोलें और लड़कों के जोंक लगावें- और नरम कर ने वाली औषधें पिलावें- और शरबत उन्नाव बराबर पि लाया करें ॥

और जब निकल आवे तो कभी मवाद न निकालें प रन्तु भली भांति निकलने का उपाय करें- इस प्रकार से कि शरीर को नरम कपड़े से ढांके रक्खें- और ठण्डा

पानी एक २ घूंट देते रहें- और खूबकाला बिछोने पर बिछा दें- और ओटाके भपारादें ॥

पांचवां पाठ ५

हुस्मावबाई के विषयमें

यह तप बहुत बुरीहै बवा के दिनों में होतीहै ताऊन एक रोगहै उसके निकलने में ॥

जब तक वह न निकले सवाद को निकालें- औ रगरमी को बुझावें- और दिल और भेजेको पुष्टकरते रहें- औ र जब ताऊन निकल आवे तो उसका उपाय करें- जैसाकि आगे लिखा जावेगा ॥

पच्चीसवां अध्याय

॥२५॥

सूजनों और फुन्सियों और उनरोगों

के विषयमें जो शरीरके ऊपरहो तेहैं॥

पहिलापाठ१

सूजनों आदिकेविषयमें

छोटी सूजन को फुंसी कहते हैं-और सूजन कई प्रकार की होतीहैं-और उनका नाम भीजुदाजुदा है-जैसाकि आगे लिखाजाताहै॥

फलग़मूनी~एक सूजन गाढ़ी है- बहुत बड़ी रुधिर के मवाद से उससें पीड़ा और तपक अधिक हो तीहै॥

फ़स्त खोले और आदि में वह ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरने से रोके लगावे- जैसे चंदनछा लिया- गिलेअरमनी- मामीसा- अक़ाक़िया- गुलाबके फू लकासनी आदि और बढ़ने के समय ढीला करने वाली औषधें मिलालें- जैसे जौका आटा- हराधनिया- खैरू- खुब्बाज़ी आदि और अंत में ढीला करने वाली और पका ने और पटकाने वाली औषधें मिलाके लगावें- जैसे बाक़ले का आटा- और खैरू- खुब्बाज़ी- बाबूना- कनौवा आदि और जब सूजन बढ़ने से रुकजाय तो अकेली पटकाने वाली औषधें लगावें- जैसे बाबूना और नाखुना अलसी

और मेथी के बीज आदि ॥

और जब मवाद न पचै और पकाने पर आजावें तो पकाने वाली औषधों का लेप करें- जैसे कनोचे और कतां के बीज और इंजीर आदि कि जल्दी पकजावे - फिर जो आपफूटजावे तो अच्छाहै - नहीं तो फूटने वाली औषधें लगावें - जैसे कबूतर की बीट और अंकुश या नश्तर से चीरदें- और फस्द के पीछे जो कब्ज़ होतो मतबूख फ़वा कह या मुलय्यन मुबारिक पिलावें ॥

यहजो रीत लेप की लिखी गई सब सूजनोंमें इसी प्रकार से करें- सिवाय उस सूजन के जो कानके पीछे और बग़ल के नीचे और रान के कोने में हो वहां स्थानोंको मवाद दूर होनेसेहो वहां ऐसी ठंडी औषधें जो मवाद कोइधर गिरने से रोकें लगाना न चाहिये ॥

सक्राक्रिलूस - यह बहुत बुरी सूजन है- जिस स्थान पर होती है- उसको काला कर देतीहै और बिगड़देतीहै - काला होने से पहिले गहरे पछने लगावें- और उसी जगह का रुधिर निकालें - फिर मटर का आटा सिकंजबीन में मिलाके लगावें- जब वह जगह बिलकुल काली होजावे ॥

सिवाय काट डालने के कोई उपाय नहीं है- उसी समय काटडालें - कि बिगाड़ आगेको न बढ़े- और इसमें फ़स्द कभी न खोलें - जो वह काटने के योग्य न होतो आसपास उसके दागदें ॥

हुमैरा - पित्त की सूजन है - जो केवल पित्त से होतो जलन और चमक अधिक होतीहै- और फैलताहु

आचला जाता है- और पीला होता है- और जो पित और रुधिर के मेल से होतो लाल होता है- और जलन नहीं होती- और न जलदी फैलताहै- केवल पित में उन्हें निकाले- और ठंडी और तर औषधें लगावें- हर समय औसोमेन्त से - हो तो पहिलें फ़स्द खोलें- और फिर पित को निकाले- और दवा इसी रीति से लगावें- जो अलगमूनी मे लिखी गई हैं॥

"जमुरा" यह दाने होतेहैं फैलेहुए और बहुत लाल पीला और जलन के साथ जैसा अंगारा होताहै-इस में पित को निकालें- और जो रुधिर अधिक हो तो फरदभी खोलें- और कुछ लोग यह कहते हैं कि रुधिरइतना निकालें कि मूर्छा आजावे और यह लेप लगावें-सिरके की तलछट गरम ज़मीन पर डालें- जब खौलने लगेतो उसे उसके कापूर मिलाकेलगावें- और जो गिलेअर्मनी या सिर धोने की मिट्टी भी मिलालें तो अच्छाहै॥

नमरटा- एक दाना या बहुत से दाने होते हैं- जलन और खुजली उसमें बहुत होती है- और अपनीजगह से बढ़ती नहीं- जो केवल पित होतो खाल के ऊपरहीहोगा और जो रुधिर भी मिला होतो खाल के ऊपर और मांसके भीतर पैदा हुआहोता है- कारण के अनुसार उपाय करें- और जमेरी वाला लेप लाभ दायक है- और दवायें तरद आस पास लगावें - और घाव का उपाय सफैदे के मरहम से करें॥

जावरसिया- छोटे २ दाने खाल पर नागर वैसे होजाते हैं- नोक उनकी सफ़ैद और जड़ लालहोतीहै

और अलग अलग निकलते हैं- इससे पित्त और कफ़ का मवाद निकलें- अनार के छिलके थोड़े से सिरके औ र गुलाब में पीसकर मलें- और जो आवश्यकता हो तो फ़स्द भी खोलें॥

नार फ़ारसी दाना है इसके भीतर पतला पानी भरा होता है और जलन और खुजली अधिक होती है- औ र नव निकलता है- जल्दी खुरंड हो जाता है- निकलने से पहिले उस जगह लाल और मोर के रंग की लकीरें पड़ जाती हैं- फ़स्द खोलें और पित्त का मवाद निका लें- और मुर्दासंग गुलाब में या माज़ू सिरके में पीसकर लगावें॥

निफ़ताता छाले पड़ने को कहते हैं- इसके भीतर बहुधा पतला पानी भरा होता है- और क भी पतला रुधिर और कभी केवल गाढ़ी वाय होती है- और कुछ नहीं होता- फ़स्द खोलें और रुधिर को गाढ़ा करें- और जब छाला बड़ा होकर फूल जावे तो सोने की सुई से फोड़ दे- जिससे पानी सब बह जावे- और ठंडी औषधें मलें॥

पित्ती ददोड़े होते हैं- लाल और चप टे छोटे हों या बड़े- और बहुधा अचानक हो जाते हैं- और खुजली और बेचैनी होती है- जो उससे पानी ब हे तो ' इुलुम कहते हैं- मवाद इस का बहुत करके रुधि र या कफ़ होता है- और लक्षण हर सब के पाये जावेंगे रुधिर में फ़स्द खोलें- और क़ब्ज़ दूर करें- और सिरका और गुलाब और रोगन गुल मलें- और कफ़ में मवाद को

निकालें ॥

माशरा॰ यह सूजन पित्त और रुधिर से मुहप रहोजाती है-इसमें मुंह लाल और पीडा और तपक होती है- और सिर और कान और नाक और गाल और माथासू जजाते हैं- बहुत सा रुधिर निकालें- फिर मिज़ाज को नरमकरे और उस समय गले और छातीपर ठंढी औषधें लगावे- किंम वार मुंह से उतर कर छाती पर न गिरै और ३० दाने उन्नाव के पानी में औटाके सिकंजबीन मिलाके पिलाना अति ला भदायकहै ॥

ताऊन॰ सूजन है- जो बहुधा वबा के दिनों मेंहोती है-इसमें जलन बराबर रहतीहै- औररंग स का लाल या पीला या नीला या हरा या कालाहोताहै- न रंगों में हर दूसरा रंग पहिले से बुरा होताहै- इसमें दिल और भेजे को उसद और ज़ोर अधिक पहुंचावें- औ र सूजन के आस पास ठंडी औषधें लगावें- और उस पर गहरे पछने लगावें- और गरम पानी से धो डालें- कि रुधिरभली भांति बह जावे- और जो रुधिर की अधि कता होतो फ़स्द भी खोलें- परन्तु पहिले सूजन पर पछ लगालें ॥

औरामग़ाबिन॰ यह वह सूजन है बग़ल में या कान के पीछे या चट्ठों में उत्पन्न होबिना पपके और जो किसी और जगह के घावके या गुल्ली केका रण सेहो तो केवल 'जिदवार' घिस कारलगावें- मवाद निका लने की आवश्यकता नहीं- और जो शरीर के बड़े बड़े स्थानों के मवाद दूर होने सेहोतो पीड़ा करने वाली औषधें

लगावें- और ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरने
रोकें- न लगावें- और मवाद को पकाके चीरने का
यकरें॥

आकिला- मवाद इसका आंस में चारों ओ
जल्दी जल्दी फैलता है- और सवेरे से सांझ तक अमलता
स के बीज के बराबर होजाता है- इसमें दाग़ दें- और गिले
अर्मनी सिरके में पीसकर आस पास लगावें- और वहन
से मवाद भली भांति निकालें- और घाव को सिरके और
पानी से धोवें- जो इससे लाभ न हो तो दाग़ दें- इस प्रका
रसे कि तेल कड़ कड़ा के आस पास आकिले के आटे से घेरा
बनाकर वह तेल उसके बीच में छोड़ दें कि जितनी जगह भु
लस जावें॥

दुम्मल- इस सूजन को सब जानते हैं- इस
में रुधिर को फ़स्द आदि से निकालें- और मवादों को
जुल्लाबों से निकालें- और मिकंज बीन पिलावें- और आदि से
तीन दिन तक ठंडी औषधे लगावे- और चौथे दिन अस्पगोल
अंडेकी सफ़ैदी में मिलाके लेप करें- और जब पकने पर हो
पकाके चीरें- और पीप आदि से साफ़ करें- घावके भरने
उपाय करें॥

पकाने वाली औषधें यह हैं- इंजीर- इल्लक-
कर मलें- गेहूंका आटा गूंध के थोड़ा सा नमक और श
का तेल- और शहद मिलाके सूजन पर बांधें॥

फोड़ने वाली औषधें यह हैं- खदी- खमीर
के बीज- कबूतर की बीट- बिना बुझा चूना- अंडेकी
शहद में मिलाके लेप करें- और नश्तर से चीरदेना

सब से उत्तम है॥
दुबैला - यह सूजन दुम्मल से बड़ी बिना पीड़ा
के शरीर के ऊपर या भीतर होतीहै। इसका मवाद भी कई
रंगका होताहै - जैसे काली सिट्टी और गीकारी और नाखून इ
ताल और चूने कासा - पहिले मवाद को निकालें - और मोज
न थोड़ादें - और मरहम दारवलियून लेप करें - जब मवाद
पकजावे तो चीरदें - चाहिये कि मवाद को कई वार करके
निकालें - क्योंकि एक वारगी निकालने से इसमें मूर्च्छा आ
जातीहै - और जब सब मवाद निकल चुकेतो पुरानी रुई घाव
में भर दें - कि सारी पीप को चूसले - फिर घावके भरने
का उपाय करें - जो दुबैला भीतर होताहै - उसका वर्णन
अपनी अपनी जगह लिख चुकेहैं - जब तक सूजन भली
भांति न पकले उसे चीरें नहीं - और चीरने का स्थान उभरीहु
ई जगहहै - जो पिलपिली हो और चाहिये कि छेवे को
नीचेकी ओर झुका रक्खें जिससे मवाद रेलेसे निकल जावे॥
अन्जीमा - सूजनहै सफेद विनागरमी और पीड़ा
के इसमें मिजाज को ठीक करें - और कफका मवाद निकालें -
और नतरून की खारमें जो अंगूर के पेड़ की राख से बनाई गई
हो और थोड़े सिरके में मिलाकरे लेप करें - और एलुआ सिर
के और गुलाबमें घोलकर लगाना लाभदायकहै॥
नफ़खा - वाय की सूजन को कहतेहैं - वह
हल्की और उंगली से दवाने के पीछे फिर वैसीही होजाती
है - जैसे मस्क में हवाभरीहो - वाय उत्पन्न करनेवाली वस्तु
ओं सेवचें - और वायकी तोड़ने वाली वस्तुखावें - और बाजरे
के आटे से सेंकें और नमक और अंगूर की राख और गौकागोवर

और फिटकरी और एलुआ सब को पीसके सिरके में मिलावें लेपकरें ॥

सलआ – सूजन है मोटी बिना कडेपन कौकि नीचे खाल के हिलाने से हिलतीहै – अपनी जगह पर-इसमें कफ़का मवाद निकाले- और मरहम दाखलियून नित्य लगायेरहैं – और जो इससे लाभ नहोतो वह औषधें लगावें जो गल्ला सडाकर फोड़दें – या नेश्तर से चीरके भीतर से सावधानीके साथ उस गुद्दल को निकालडालें ॥

गद्दें – और "गांठें" शरीर के ऊपर होतीहैं इनसे और सलआ में यह अन्तरहै कि यह बडे नहीं होते- और कडे होते हैं- और जो मवाद अधिक होतो एकके पास दूसराभी निकल आताहै – इसमें मरहम दाखिलीयून लगावे और भारी टुकडा सीसे का उसपर बांधें ॥

फ़ुजिशला – उस सूजन को कहतेहैं जो गुद्द के स्थानों में उत्पन्न हो – परन्तु यह ताऊन की प्रकार से नहीहै – उपाय इसका वहीहै जो ओरास मुग़ाबिन का है ॥

खनाजीर – बुरी सूजन है – और सलअकी प्रकार उभरीहुई होतीहै और दबजातीहै – और बहुधा नरम मांस से उत्पन्न होतीहै – बहुत करके गर्दन और बग़लमें बलग़मको निकालें – और दाखिलीयून लगावें – और मवाद निकालनेके लिये हब्बे खीज़रान और हब्बे वासलीं और इतरीफ़लगुददी सब से उत्तमहै ॥

सुकेरूस – कड़ी सूजन को कहतेहैं – बहुधा सौदा के मवाद से होताहै – सौदा को निकालें – और दाखि

लगावें- और कभी कफ़ से या कफ़ और सौदा से मिल कर होताहै -परन्तु इसमें कड़ापन कम होताहै -मवाद के अनुसार उसे निकालें - यह सूजन दो प्रकार की होतीहै पीड़ी होतीहै और दूसरी में नहीं होती- उपाय हो सकताहै और दूसरीकानहीं ॥

सरतान - यह सौदा की सूजनहै - अधिकड़ी कालापन लिये हुये बुरे रंगकी- और बीच में और भीतर को बैठी हुई और उसके किनारे लाल हरी रगें होती हैं-सब मिलावें केंकड़े कासा होता ॥

इसमें हौले हौले कई वार करके सौदाको निकालें- और जिगर के मिज़ाजको ठीक करें -ठंडी औषधें लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें तक कि पीप पड़े-इसकेपीछे घाव भरनेवाली और ठंढ वाली और बढ़ने से रोकने वाली औषधों को -जैसे कलईका सफेदा धोयाहुआ तूतिया, आदि मिलाके ॥

नहरुआ - एक दाना होताहै - जिसमें से एक वस्तुरग कीसी निकलती है लाल कालापन लिये हुए और बढ़ते २ एक एक बालिश्त या अधिक होजाती है और कभीखालकेनीचे कीड़े रेंगा करती है - आदि में फ़स्द खोलें फिर जोकें लगावें- और मवाद निकालें तरी पहुंचाने के साथ और एलुआ और हरी कासनी के पानी में पीस के लगावें- औरए इस रोग में लाभ कारक है - चाहिये पहिले दिन ॥

मासे रलुआ हरी कासनी के पानी में रात को भिगोदें- और सवेरे अकेला या कंद के साथ मिलाकर पिलावें- और दूसरे दिन ३॥मासे रलुआ लें- और तीसरे दिन ५।मासे-और जब नहरुवा बाहर निकलने लगेतो सीसे के टुकडे पर लपेटे कि बोझसे बाहर निकलता आवे- और आसपास सूजन के रोगन मलें- और गरम पानी फुंकने में भरकर सेकें और ध्यान रक्वें कि नहरुवा टूटने न पावें- और जो टूटभी जावे तो लम्बाई में चीरदें- कि सारा मवाद निकलजावे- फिर घाव को भरदें- और कपीले की माजून इस रोग को नहींहो नेदेती ॥

जुज़ाम - इसमें शरीर का रूप बिगड़ जाताहै और नाक चपटी होजातीहै- और आवाज़ बैठजाती है- और मुंह फूलके शेर कासा होजाताहै - इसमें फ़स्द और जुल्लाबों से शरीर का मवाद निकालें- और नित्य गरम पानी से न्हावें- और खाने पीने और नाक में डालने और शरीर पर मलने से तरी पहुंचावें- और बकरी का दूध अकेला या रोटी भिगोकर खाना अति लाभ कारक है- और जो वस्तु सौदा उत्पन्न करें- उससे बचें- और इसके उपाय से घबरावें नहीं-यह देरमें अच्छाहोताहै ॥

साफ़ा - बाव को कहते है- जो सिर औरमुंह परहोते हैं- जो तरी के साथ होतो फ़स्द खोलें - औरहड़ और शाहतरे को औटाके-पिलावें- इससे मवाद निकलेगा- और रुधिर को रोक करें- और हलदी अनार के छिलके-मुर्दासंग- और मेंहदी पीसके सिरका और रोग़न गुल मिलाके लेप करें- और जो सूखाहो और सफ़ेद छिलके

खाल परसे उतरें तो तरीपहुंचावें-एक प्रकार इसकी ऐसी है-जिसमें शहद का सा मवाद निकलताहै- और एक से दाने पड़तेहैं जिनकी नोंकें सुई कीसी होतीहैं- और दूसरी ऐसीहै जिसमें बड़ा दुम्बल हो जाताहै और पीप नहीं पड़ती और एक इंजीर कासा होताहै- और एक मेंहजामत बनवा ने से सिरकी खाल लाल होजातीहै- इनसब प्रकारों में मवादको निकालें और मिज़ाज को ठीककरें॥

खुजलीजो सूखी हो तो तर वस्तु लगावें- फिर कईबार करके मवाद निकालें- और गरम पानी से खाल कार के रोगन गुल और सिरका मिलाके मलें- और जो तरहो और पीला पानी उसमें से बहे तो पहिले फ़स्द खोलें और जो मवाद अधिक हो उसका जुल्लाब दें- और गरम दवा कभी न लगा वें॥

हिक्का- उस खुजली को कहतेहैं जिससेदानेन पड़ें-इसका उपायभी वहीहै जो ऊपर लिखा गयाहै- औरजोखु जली पेशाब और पाखाने कीजगहहो उसमें मेथी और अलसी केबीज शहद के साथ औटाके कपड़ा उसमें भिगोके शाफ़ाब नाके रक्खें॥

खुजली और "पिती" जो बच्चोंकोहोती है- उसमें पछने पाजोंके लगाके-गुलाब के फूल और बनफ़शा और नीलोफ़र और छिलेहुएजो औटाके शरीर को धोवें और ऊपर से रोग़न मलें और दूध पिलाने वाली अर्थात् बचचे की माको ओषधि पिलावें॥

हसफ़- छोटे छोटे दाने लालशरीरपरनिकलते हैं-उनमें खुजली अधिक होतीहै- फ़स्द और जुल्लाब सेपित

का मवाद निकालें- और नमक और मेंहदी सिरके में मिलाके मलें॥

दाद – खुरखुराहट फैली हुई खुजली के साथहो तीहै- आदि में जबकि मांसके भीतर तक नहोतो रसौत सिरके में घोलकर या हड़ सिरके में पीसकर मलें- और जो कुछमां स के भीतर पहुंच चुका होतो उसजगह पर जोकें लगावें और उशक या मुर सिरके में पीस के ऊपरसे मलें- और जो भलीभा ति मांस के भीतर बैठ गयाहो और खाल मोटी पड़गई होतो प हिले फ़स्द और सौदा के जुल्लाव से मवाद को निकालें- और गरम पानी से स्नान करें- फिर उसजगहका रुधिर निकालें- और तीव्र औषधें जैसे हरताल- उशक और राई- गूगल- फिर करी गेहूं के तेलमें और सिरके में मिलाकर लगावें- जबदा द जाता रहे तो ठंडी औषधि कई दिन तक लगावें- कि फिर नहोने पावे- और बच्चों के दाद में बासी थूक लगावें- और जब दाद औषधि से अच्छानहो और संभव होतो चीरदें- फिर तीव्र औषधें लगावें कि बुरामांस गलजावे- फिर वह औषधेंल गावें जो घावको भरें॥

लोहनी मुहासे – सफेद फुंसियां होती हैं नाक औरमं थेपर निकलती हैं- इनमें शरीर से कफ़का मवाद निकालें- और अंगूर की लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लेप लगावें॥

बनातुल लैल – छोटी २ फुंसियां रातको ठंडके समय निकलती हैं- और उनमें खुजली सी होतीहै- फ़स्द और जुल्लाव से मवाद को निकालें- और गरम पानी से स्नान करने और मलने से शरीर के छिद्र खोलें जैसाकि

खुजली में लिखा गया है- और काफ़िस के पानीमें सिरकेकी तलछट मिलाकर मलना लाभकारकहै ॥

मसूसे ◣ अधिक काडी फुंसियां कई प्रकारकी होतीहैं- पहिले मवाद को निकालें- और नमक और सिरकामलें- और रोग़न गुल्से चिकना रक्खें ॥

चलख़ीया ◣ इन फुंसियों मेंसे फूट के पानी वहता है और ऊपर खुरंड जमजाता है- और इनके साथ बहुधा दिल घबराताहै- और मूर्च्छा आती है- पहिले मवाद निकालें- और गिले अर्मनी सिरके में पीस कर नित्य लगाया करें- जब तक कि घाव सूख के नया मांस न जमे ॥

वतम ◣ यह काली फुंसियां होती हैं- जो पिंडली पर निकलतीहैं- इनमेंसे काला पानी वहताहै पहिले फस्द वासलीक खोलें- और कई वार उल्टी करावें फिरनों को या पछनों से उसे जगह का रुधिर निकालें- और जलीहुई महंदी मामीरा पीसके सिरके और रोग़न गैत मिलाके लगायाकरें ॥

तौसा ◣ फुंसी है घाव वाली कि मांसके भीतर शहतूत कीसी होतीहै- मवाद निकाल के मरहम जंगार लगावें- कि बुरा मांस गलजावें- फिर भरने वाली मरहम लगावें ॥

दारवस ◣ गरम सूजन है- जो नाखूनों कीजड़ में होतीहै- इसमे पीडा और तपक और खिंचाव अधिकहोताहै- और कभी तप भी होजाती है- फस्द और जुल्लाबके पीछे मिज़ाज को ठीक करें- और आदि में अस्पगोल सिरके

में घोलके और वर्फ में ठंडा करके लगावें- और जो पीडा अधिक होतो खुरासानी अजवायन और अफ़ीम सिरके मेंघीसके लगावें- और जो इससे अच्छा नहोतो रोगन जैत गरम करके उंगली उससे रक्खें कि मवाद पकजावे-और जो इस से भी लाभ नहोतो अलसी और कनोंचे के वीज मलें- और जब सूजन पकजावे तो चीरदें- जब पीप साफ़ होजावे तो भरलानेका उपाय करें ॥

अबूरसमा - चोट लगाने या कुचल जाने से खाल के नीचे रग फटजातीहै- और रुधिर और वायु उसकी खाल के नीचे अटक रहतीहै - लक्षण उसका यह है कि रगके खुलने पर सूजन दवजावेगी- और खुलने पर उभर आवेगी - क्योंकि खुलने में रुधिर रगके अन्दर खिंचजावेगा- और बन्द होने में फिर वाहर निकलेगा- और रंग उसकी खालका वैगनी और नीलाहट लिये होगा - क़ब्ज़ करनेवाली औषधें लगावें- जैसे शाहवलूत और साजू आदि और जो औषधें रुधिर को हिलावें उनसे बचेरहें ॥

कई प्रकार की फुंसियां और दाने होतेहैं-एक यहकि छोटे २ दाने जिनकी जड़ें सफेद और कडी हों- औरदेर में पकें- और सिरों से उनके थोडी २ पीप वहे तो उनको ज़ातुल अस्ल- कहतेहैं ॥

दूसरी वह कि कडी हो और मुंहपर निकले- और आस पास लालीहो उनको-शैलम-कहतेहैं ॥

तीसरी वह जो कानपटी पर कानकी जड़में होतीहै औरचीरने से गाढा रुधिर निकलताहै ॥

चौथी प्रकार ऐसी ही होतीहै- जो सिर औरगर्दन

के नीचे निकलतीहैं – वह बहुतसी निकलती हैं- और पीडाअन्न सें अधिक होतीहै ॥

पांचवी प्रकार वह है–जो छोटी और कड़ी और पीडा रहित हों और देर तकरहें- और एक जगह से जाके दूसरी जगह निकल आवें ॥

इन सब में मवाद के अनुसार मवाद को निकालें- और लेप लगावें– और सिर और गर्दन की फुंसियों में रोगनवनफ़शा स्त्रीके दूधमें मिलाके नाक में टपकावें- और सिरपै मलें ॥

८ आक्ला फरंग ~ यह रंग बरंग के दाने होतेहैं- जिस मवाद की अधिकता हो उसी को निकालें ॥

दूसरा बाब ~

खालके रोगोंके विषयमें

—— ~ ❀ ~ ——

१ सफेद दाग ~ यह गाढ़ी सफेदी होती है जो खालपर होती है- और सम्पूर्ण शरीर पर भी होजातीहै ॥

२ छीप ~ हलकी सफेदी खाल पर होती है - अंतर इन दोनों में यह है कि पहिली में चमक होतीहै – और दिन प्रति दिन खालके भीतर फैलती जाती है- और सुई चुभोने से रुधिर नहीं निकलता और छीप बहुधा गोल होती है – और अचानक उत्पन्न होजाती है- और सुईसे रुधिर निकलताहै ॥

३ कालीछीप ~ और दाग ~ से खाल उपड़ती है –

परंतु छीप की पत ली होती है – और दाग़ की मोटी – जैसे मछली के छिलके – सफ़ेद छीप और दाग़ में कफ़का मवाद निकालें और कालेमें सौदा का फिर तुरुमुस और मूलीके बीज सिरके में पीसकर सफ़ेद छीपमें लगावें ॥

और कालीछीप और दाग़में काली कुटकी सिरकेमें पीसकर लगावें ॥

सफ़ेद दाग़ – अर्थात कोढ़में काले सांप का रुधिर लगाना लाभ कारकहै ॥

झांई – जो मुंहपर पडतीहै इसमें और कालीछीप में यह भेद है कि छीप खुदेडी होतीहै – और यह साफ़ होती है ॥

तमश – मुंह पर और शरीर पर लाल बूंदें होतीहैं ॥

वरया – वैसीही काली बूंदेंहै ॥

इनमें रेवंद चीनी शहद में पीस के लेपकरें – और पीला हरताल हरे धनिये के पानी में पीसके लगावें – जोइस से भी लाभ न होतो सब शरीर का मवाद निकालें – फिर लेप लगावें – और औषधि लगाने से पहिली उस स्थानको गरम पानी से सेकें – और औषधि भी गरम करकेही लगावें ॥

तिल – काले और नीले होतेहै – इनका वह उपाय है जो झांईकाहै ॥

चोटपड़ने या दबने से रग फटजावे और खालके नीचे ठंडा होके नीला होजाताहै – जब पीडाजाती रहै तो करम्ब के पतों या पोदीनेका लेपकरें ॥

नीला गोदा – जो स्त्रियों के होताहै उस के

मिटाने का उपाय यहहै - कि चतरून और गरम पानी से उस जगह को मलें - और फिर इक्लकुल वतम शहद में पीसके कई वार लगावें - जो इससे न मिटे तो अस्ल वलादर लगाके सुई की नोंक से कोंचें कि घाव पड़के नीलाहट वह जावे ॥

वादशनाम - सुरखी हाथ पांव और मुंह पर पड़तीहै - और विशेष करके ठंडमें - इसमें फस्द खोलें और हड़को औटाके जुल्लाबदें - और जो घाव होतो लालमरहम लगावें और उसी जगहका रुधिर निकालें - और सावन लगावें - जबव हसूख जावे तो गरम पानी से धोकर फिर लगावें - और इसीप्रकार कईवार करें ॥

धूपमें फिरने या कमज़ोरी यागरम औषधें खाने या किसी मवाद की अधिकता से शरीर का रंग वदलजावे तो कारण को रोकें और मवाद निकालें - और ढोक और पुरुकेरे और वाकलेके आटे से मुंहधोडालें ॥

सिरसे भूसी भड़े तो रोग़न मलें - और चुकन्दर के पानी में नमक डालके सिर धोवें - जो इस से लाभ न होतो कफ़ और रुधिर और सौदा का मवाद निकालें ॥

हाथ पांव आदि जो हवा की गरमी या ठंड से फटेंतो मोमरोग़न मलें - और जो भीतर के विगाड़ से होंतो तर औषधें काम में लावें जैसे दूध आदि - और मवाद को निकालें ॥

जो खाल कड़ी होजावे पाउतरने लगे तो मवाद को निकालें - और तररोग़न मलें ॥

जो खाल छिलजावे तो मुर्दासंग गुलाबमें घिस कर मलें- जो सूजन का डर होतो फस्द खोलें- और कपड़ाप नीमें भिगोकर रक्खें- परन्तु जो पट्टेके किनारे परहोतो भीग कपड़ा न रक्खें ॥

तीसरा पाठ ३

बालोंके रोगों के विषयमें

कभी बाल झड़जाते हैं और खाल नहीं उतरती और कभी दोनों बातें होतीहैं- यह खालका विगाड़है- इसमें मवादको निकालें ॥

जो विना विगाड़ के बाल झड़ें और टूटें तो कारण के अनुसार उपाय करें ॥

जो सिरके बाल झड़के खाल नरमहोजावेतोज लदी जलदी सिर मुड़ाया करें-और आस और आमलेका तेल नित्य सिरपर मलाकरें ॥

जोचंदियाके बाल उतर आवेंतो उसकाभी यही उपायहै - परंतु जो बुढ़ापे सेहोतो अच्छा कदापि नहीं होस कताहै ॥

जो बाल खुश्की से फटने लगेंतो तर औषधें और रोगन लगावें ॥

जो सिरकी खाल चिकनी होजावे तो इतरीफलसे मवाद को निकालें ॥

जो बुढ़ापे से पहिले बाल सफ़ेद होजावें तो सवेरे नित्य एक हड़का मुरब्बा खावें - और महीने में सात दिनइ तरीफल सग़ीर खाया करें - औरदो महीने पीछे कफ़का जुल्लाव लिया करें - और खट्टी वस्तुओं और फ़स्द और विषय की अधिकता से बचें ॥

जो चाहेकि बाल काले रहें - तो लादन और आ सका तैल मलाकरें - और बालों को लम्बा करने के लिये आ मलेको पानी में भिगोके आस और गुलाब के फूल छानके उ सपानी में मिलाके सिर धोलें ॥

बालोंतयन्त्र करने के लिये पुराना रोग़न ज़ैतले कर उससे में सूस की राख और समन्दर फेन मिलाकर मलें - और जो उपाय बाल झड़ने काहे वहीकरें ॥

और बालों को उतारना चाहें तो चूना और हर ताल लगावें - इसको नूरा कहते हैं - परंतु पेड़के बाल उस्तरे से मुंडना अच्छाहै - इससे विषय की चाहना अधिक होती है - और वहां नूरालगाने सेहानि है ॥

और जो चाहेकि बाल न निकलें तो वनजनौ र अफ़ीम और शूकरान सिरके में पीसकर मलें - और साहूरी र कछुयेका रुधिर और चेंटी के अंडे मलना भी यही लाभ देताहै ॥

और घूंघर वाले और घने बाल होने के लिये बेरी के पत्ते और साहू और मेथीके बीज पानी मेंडालके उस पानी से सिर को धोवें ॥

और बालों को पतला करने के लिये हल्दी की राख नूरे में मिलाके गोलीबनावें - सूखे बालों पर दिन

भरमें कई वार सूखी गोली फेरा करें- परंतु एक जगह परन्हप वें नहीं तो वाल झड़जावेंगे॥

वालों के सीधाकरने के लिये कि उलझें नहींतेल कोपानी में मिलाके गुन गुना मलें॥

खिज़ाव के लिये मुर्दा संग- वुझाहुआचूना-और मुलतानी मिट्टी- तीनों वरावर लेकर पानी में पीसकरे वालों पर लगावें- और अरंड का पत्ता ऊपर वांधें- पहर भर पीछे खोलकर पानी से धोडालें- और लगाने से पहिले धोलेंकि मैल न रहै- और न कोई रोग़न सिवाय रोग़न गुल के लगावें॥

और वालों को लाल पीला पन लियेहुये करने के लिये मइंदी शराव की तलछट, रतीनन्ज मिलाके पानीमें पीसें- और फिटकरी और हरताल मिलाके मलें॥

और वालों के लाल करने के लिये-सौंद और कुंदुरको ओटाके धोवें॥

वनूसाश को पीसके सिरके में मिलाके लगाना वालोंको सफ़ेद करताहै॥

चौथापारह ४

नाखूनों के रोगोंके विषयमें

नाखून सफ़ेद होजावें तो मेथी और अळसीकेवी जकूटके शहद में मिलाके लेपकरें - और जो इससे लाभनहो तो मवाद निकालें ॥

जो पीले पड़जावें तो जरजीर के बीज सिरके में पी सके लगावें और पित का मवाद निकालें ॥

जो उनमें पीडा होतो आसके पत्ते और सरोंकेप ते कूटके मलें ॥

जो नाखूनों की जड़ें मोटी और कुरूप होजावेतो सौदा का मवाद निकालें - और मरहम दाखलियून और, मोमरोग़न लगावें ॥

जो नाखून फटते होंतो तरी पहुंचाना चाहिये और सौदा का मवाद निकालें - और वतख की और मुर्ग़ी की चर्बी मेथी के लुआब में मिलाके मलें ॥

जो नाखून कफ़ के कारण ढीले होके गिरते हों तो पीडा न होगी - कफ़का मवाद निकालें - और जो रुधिरकी तेज़ीसे होतो फ़स्द साफ़िन खोलें और पिंडली पर पछने लगावें जो हाथके नाखूनों में होतो फ़स्द बासलीक़ और जो पांवके नाखूनों में होतो शरबत उन्नाब पिलावें ॥

जो नाखूनों में खुजली होतो नदी के पानी से धोवें और इंजीर कूटके लगावें ॥

जो नाखून कुचल जावेंतो आदि में आसऔरअ नार के पत्ते कूटके बांधें - फिर गेहूंका आटा जैत में मिलाके बांधें ॥

जो नाखून अबरक की प्रकार सफ़ेद और चमकी ले और सुर सुरे होजावेंतो माउल उसूल और गुलकंद ओमसिकंज

भरमें कई वार सूखी गोली फेरा करें- परंतु एक जगह परठहरा वें- नहीं तो वाल रुड़ जावेंगे ॥

चालों के सीधा करने के लिये कि उलझें नहीं तेल को पानी में मिलाके गुनगुना मलें ॥

खिज़ाव के लिये मुर्दा संग-बुझाहुआ चूना-और मुलतानी मिट्टी- तीनों बराबर लेकर पानी में पीसकर वालों पर लगावें- और अरंड का पत्ता ऊपर बांधें- पहर भर पीछे खोलकर पानी से धोडालें- और लगाने से पहिले धोलें कि मैल न रहे - और न कोई रोग़न सिवाय रोग़न गुल के लगावें ॥

और वालों को लाल पीला पन लियेहुये कर नेके लिये महंदी शराव की तलछट, रतीनज मिलाके पानीमें पीसें- और फिटकरी और हरताल मिलाके मलें ॥

और वालों के लाल करने के लिये-सौंद और कुंदुरको ओटाके धोवें ॥

वजूसाश को पीसके सिरके में मिलावे लगाना वालोंको सफ़ेद करताहै ॥

चौथापार ४

नाखूनों के रोगोंके विषयमें

नाखून सफ़ेद होजावें तो मेथी और अलसीकेबी कूटके शहद में मिलाके लेपकरें - और जो इससे लाभनहो तो मवाद निकालें ॥

जो पीले पड़ जावें तो जरजीर के बीज सिरके में घिसके लगावें और पित का मवाद निकालें ॥

जो उनमें पीड़ा होतो आसके पत्ते और सरोकेप ते कूटके मलें ॥

जोनाखूनोंकी जड़ें मोटी और कुरूप होजावेतो सौदा का मवाद निकालें - और मरहम दाखलियून और गुलरोगन लगावें ॥

जोनाखून फटते होंतो तरी पहुंचाना चाहिये और सौदा का मवाद निकालें - और बतख की और मुर्गीकी चरबी मेथी के लुआब में मिलाके मलें ॥

जो नाखून कफ़ के कारण ढीले होके गिरते हों तो पीडा न होगी - कफ़का मवाद निकालें - और जो रुधिरकी तेजी से होतो फ़स्द साफ़िन खोलें और पिंडली पर पछने लगावें जो हाथके नाखूनों में होतो फ़स्द बासलीक और जो पांवके नाखूनों में होतो शरबत उन्नाब पिलावें ॥

जो नाखूनों में खुजली होतो नदी के पानी से धोवें और इंजीर कूटके लगावें ॥

जो नाखून कुचल जावैतो आदि में आसऔरअ नार के पत्ते कूटके बांधे - फिर गेंहूंका आटा जैत में मिलाके बांधें ॥

जो नाखून अबरक की प्रकार सफ़ेद और चमकी ले और सुरखुरे होजावेंतो माउल उसूल और गुलकंद औरसिकंज

बीन रोगन बादाम मिलाके दें जब मवाद पकचुकेतोइसीस गौराके पिलावें और बकरी की पीठका मैल चर्बी और बादाम मिलाके लगावें ॥

नाखून पर चोट लगने से रुधिरनीचे जम जावे तो जिफ्त लगावें- और जरजीरके बीज सिरके में पीसकर मले और दिन में कई बार मुंहमें उंगली डालकर चूंसे यह अतिल भदायक हैं॥

जो नाखून की उरवेड़ना होतो हरताल और जा वशीर कड़ुये बादामके तेलमें मिलाके मलें- और जो प हिले मरहम दाखलियून लगाले तो शीघ्र लाभ होगा॥

पांचवां पार०

—— ⁂ ——

अलग अलग रोगोंके विषैसें

जूंये और लीखें और अक चाहें सिर में या कहीं और पडेतो खारी पानी से स्नान करें और जल्दी जल्दी उजले कपडे बदला करें- और गोहकी बीट और नौशादर सिरकेमें घोलकर मलें- जो पसीना बहुत आवें अधिक खाने सेतो भूखा रक्खें- और जो कमजोरीसे होतो पुष्ट करें- और माजू पीसके मलें और आसके पत्ते जलाके धूनी लें- और ऐसे भी जन खिलावें जिनसे गाढा रुधिर उत्पन्न हो और पसीना रुक जावे- और नंगा रहना- और हलके कपडे पहनना- और हवा में बैठना- और पसीने का न पोंछना लाभकारक है-

और यह रोग़न पसीने को रोकता है - और दिल को पुष्ट करता है - और मूर्च्छा को लाभकारक है - सेव और बिही का पानी और गुलाब रोग़न गुल में मिलाके आग पर जलावें कि रोग़न रहजावें ॥

बुहरान के दिन जो पसीना विशेष निकले तो उसे बन्द न करें - जब तक कि मूर्च्छा और कमज़ोरी का डर नहो ॥

जो पसीने में रुधिर निकले तो फ़स्द खोलें - और जुल्लाब दें - और वह औषधें पिलावें जो रुधिर की गर्मी को बुझाती हैं - फिर ऐसी औषधें शरीर पर मलें जो उसके छिद्रों को बंद करें - जैसे अनार के छिलके और आसके पते पाइनके पानी से स्नान करें ॥

- खरने - अधिक दुबला पन और सुरापा भी एक रोग है - सोरा का उपाय यह है कि पहिले उसके कारण को दूर करें - फिर वह भोजन और औषधें समय के अनुसार दें - जो शरीर को ताज़ा करें - और यह औषधि अति लाभकारक है तोदरी सफेद - तोदरी लाल - खशखाश - सफ़ेद बादाम - हब्बुस्सनोवर - हब्बुस्समना - बुन्दुक़ - हब्बतुलखिज़रा सब को बराबर लेके कूट छान के गाय के घी में चिकनाय के हलुआ बनावें - और सबेरे और सांझको जितना उचित हो खिलावें - और भोजन ऐसा दें जो अच्छा और गाढ़ा और तर रुधिर उत्पन्न करें ॥

और दुबला करने का उपाय यह है कि जुल्लाब दें - और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें - और भोजन और पानी थोड़ा दें - और सोये और कूट का तेल मलें - १

और इतरीफल और कसूनी खिलावें - और काड़ी जगह पर सुलावें - और यह औषधि शरीर को दुवला करती है-घोई हुई लाख ३॥ माशे सिरके में पीसकर नहार मुंह खिलावें ॥

सिर और माथे की खाल खिचने में वनफशे या कद्दू और काहू का तेल - और स्त्री का दूध मलें - और भेजेका मवाद निकाले - और जो जन्म से होतो अच्छा नहीं हो सकता ॥

जो सिर वड़ा हो जावे तौ चमड़े की टोपी बनाकर पहनावें - जो वहुत तंग हो - और पांव और पिंडलियां मलेंऔर भोजन थोडादें ॥

जो सर्दी की समय उंगलियां फूलें और खुजलावेंतो खारी पानी या चुकन्दर के औटे हुए पानी से धोवें ॥

जो हड्डी घायल और लाल हो जावें तो आदि में वेंदने और चितलेटने से रोकें - और रसोत - गिलेअर्मनी - अकाकिया - और गुलनार आदि लगावें - और घावों पर सफेदेकामरहम लगावें ॥

जो शरीर से दुर्गंधि आती हो तो मवाद निकाले फिर मुरदा संग गुलाव में घिसकर मलें और नौशादारू खिलावे ॥ +२०(७१।११५।३ -

जो ठंड से हाथ पांव काले और विगड़ जावे तो सूजन होने से पहिले रोगनजैत या कोई और गरम रोगनमले और जव सूजन होतो आदि में नारंगी और सोया और मेथी अलसी आदि को औटाके हाथ पांव उसमें रक्खे और जव उससे निकालें तो रोगन गुल मले - और पिसी हुई मसूर को औटाके

और जब कालक आजावे गहरे पछने लगावें रक्खें और रुधिर को बहने दें- कि आप बंद होजावे- तो गिले अरमनी पानी और शहद और सिरके में पीसेकर लगावें- और थोडी देर पीछे पानी और सिरके से वोई वा रधोवें ॥

जो आगसे जल जावे और फफोला न पडा होतो कपडा वरफ़ पर ठंडा करके जली हुई जगह पर रक्खें-और हर घडी बदलें- और गिले अरमनी पानी और सिरके में मलके और मसूर उसमें पकाके लेप करें- और काजल गोंद में घोट के लगाना- और अंडेकी सफेदी लगाना और दही और दूधमलना लाभकारक है- और जब छाला पडेतो फस्द खोलें- और सफेदे और चूने का मरहम लगावें ॥

जलते हुये तेल से जल जाने में वही उपाय करें- जो आग से जल जाने का है- परन्तु अन्डे की सफेदी तेल में घोलकर सफ़ेदा मिलाके लगाना अति लाभकारक है ॥

खोलते हुए पानी से जल जाने में गौ की राख अंडे की ज़र्दी में मिलाकर लगावें ॥

बिजली से जल जाने का उपाय वही है जो भागका है ॥

धूप से जलने से काफूर और सिरके के मरहम मलें ॥

मिलावे के चेप लगने से जलन होतो पछने लगाके सींगी लगावें- फिर सिरके का मरहम लगावें ॥

और उबकाई और हिचकी उसमें बराबर रहती है- छाती का घाव भी ऐसाही है- उससे हवा निकलती है- छाती के पर्दों का घाव बुराहै उसमें दम रुकता है- और सेदे का घाव भी बुरा है- पेट का खाना उसमें से निकल आता है- सिवाय इनके जहां घाव हो तो कुछ डरन करें- जो सीधा हो तो टांके लगावें - और कोई हड्डी का टुकड़ा हो उसे निकालडालें- जराह बुद्धि मान और दस्तकार चाहिये॥

जो कोई वस्तु चुभजावे तो पहिले उसे निकालें- फिर मुर और कुन्दर घाव पर छिड़कें॥

सातवांपाठ

कुरह के विषयमें

इसकी प्रकारें भी वहुत हैं- यहभी जराही से संबंध रखताहै- जो थोडाहो तो आपसे आप अच्छा होजाताहै- और जो वहुत हो तो वह मरहम लगावें जो बडी पुस्तकों में लिखे गये हैं- और नीव के पत्ते कूटके शहद में मिलाके बांधें और परहेज और मवाद निकालना अति लाभ दायक है- और नासूर को पहिले गुलाब से जिसमें अंगूर की लकड़ी की राख पड़ी हो भली भांति धोवे और समुद्र के पानी से या साबुन के पानी से जिसमें थोड़ी हरताल और नोशादर मिलाहो धोना अति लाभकारक है- और फिर पुरानी रुई गुलाब या माउल असल में भिगोके इंजरूत- सलुआ- मुर-

जो पान खाने से चूने के कारण जीभ फट जावे तो लुभाव अस्पगोल आदि से कुल्ली करें- और बादाम यफल का तेल मलें, और खोपरा चबावें॥

छटापाठ

॥ ६॥



घाव के बिषय में

मांस के फटने को घाव कहते हैं- जब उसमें पीप पड़े तो उसका नाम कुरहा है- उसकी प्रकारें बहुत हैं- उनका बर्णन निब्ब अकबर आदि बड़ी पुस्तकों में देखें यह जर्राही से सम्बन्ध रखता है- परन्तु थोड़ा सा ज्ञान लेना चाहिये दिलको घाव की सहार नहीं उससे मनुष्य तुरन्त मरजाता है- और भेजा भी नहीं सहार सकता- लक्षण उसके घावका बुद्धि का बिगड़ जाना है- और गुरदे और मसाने और आंत का घाव भी ऐसा ही जानो- और पहिचान मसाने के घाव की यह है कि मूत्र उसी में से निकलेगा- और जो आंत में होतो पैखाना निकलेगा- जिगर का घाव भी बुरा है- परंतु अच्छा हो सकता है- और पट्टे आदि का घाव भी बुरा है- उसमें रंग बदलता है- और मूर्च्छा और खिंचाव होता है- और रान का घाव आगे को ओर होतो बचने की आस कम है तर पेट का घाव जो भली भांति लगा हो भयानक है-

नवां पाठ ९



कोडे की चोटके विषयमें

जो खाल के नीचे मास टुकडे२ होगया हो तो
से दवाके और मलके इकट्ठा करे–और फिर बकरी की खालउ
सी से गरम गरम उधेड के बाधे–औरजब वह सूख जावे तो
से खोले–इस उपाय से एक राति दिन में अच्छा होजाता है
और जो खाल के नीचे रुधिर सिमट आयाहो तो रोटी का गूदा
और सूली मले॥

दसवां पाठ १०

हडडी के टूटने और उखडने और खिसल नेके विषयमें

और [illegible]
इसका [illegible]
ने में आसके पते कुचल [illegible]
की जरदी

दमंमुल अखवैन – कुन्दुर – अफ़ीम – केसर – पीस के मिला वे – और घाव पै रक्खें – जब तक अच्छा न हो और जो इस से लाभ न हो तो जहां तक हो सके बुरा मांस काटडालें – फिर उसके भरने का उपाय करें ॥

आठवां पाद

८

—:⁕:—

मारने और गिरपड़ने से चोट लगने के विषय में

जो सूजन और तपन हो तो गिले अरमनी और अंडे की सफेदी आदि का लेप करें – और जो सूजन और तप हो तो फ़स्द और पछने लगाके ऐसी ठंढी औषधें लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें – और जो शरीर के किसी बड़े स्थान पर लगी हो तो उसे पुष्ट करें – और उनके की चोट पे प हिले पीड़ा को दूर करना चाहिये ॥

बारहवां पाठ१२

विषेले जानवरों के काटने या डंक मारनेके उपायमें

इसका उपाय छः प्रकारसे हो सकता है-जैसा उचित समझे वैसा करें ॥

पहिले वह औषधदें कि असली गरमी को उभारें और भीतर के स्थानों को पुष्ट करें और विष को दूर करें-जैसा तिरियाक़ कबीर-और लोवत वरवरी-ज़िदवार आदि॥

दूसरे वह औषधदें जो शरीर से तरीको निकालें-उलटी या जुल्लाव से परन्तु फस्द न खोलें-और जरासा विच्छूके डंक मारने में या ऐसे साप के काटने में जिन से शरीर के हर छिद्र से रुधिर निकलने लगता है-फस्द खोल सकते हैं ॥

तीसरे ज़हर मुहरा और तिरियाक़ जो उसी विष के दूर करने को हो दें-जैसे घड़ियाल के काटने में उसीका मांस और सांपके काटने में उसीका मांस खिला देना अतिसहायक है॥ :सांप

चौथे वह औषधदें जो उस विषैले जानवरके मिज़ाज से विपरीत हो जैसे झोंक बिच्छूके लिये-और इसी प्रकार से जो हो ॥

पांचमें वह दवा या उपाय करें-जो मवाद को हि

ग्यारहवाँपाठ११

विषके उपायमें

गुन गुना पानी या तिली का तेल या मक्खन बहुत सा पिलावे तुरंत उलटी करावें- और जो इससे उलटीभली भांति न हो तो सोये के बीज और नमक पानी में औटाके और तिली का तेल बहुत सा मिलादें - और उलटी के लिये जो कुछ दें बहुत सा दें - जब भली भांति उलटी हो चुके तो गौ का ताजा दूध जितना पिया जावे पिलावें - और जो यह भी उलटी में निकल जावे तो बहुत अच्छा है - और मक्खन और घी पिघला के दूध की जगह दे सकते हैं - और तिरियाक बहुत लाभकारक है - और विष खाने वाले को सोने न दें- और जो भूखा हो तो उचित भोजन पेट भरके खिलावें- और जब उस विष का नाम मालूम होजावे तो वही औषधें दें जो उसे दूर करती है॥

जब विष खाने वाले को मूर्च्छा आजावे और आंखोकी पुतलियां फिर जावे या आंखें लाल हों और नाडी बंद होजावे और जीभ बाहर निकल आवे और ठंडा पसीना निकलने लगे तो जानो कि अब न बचेगा॥

होताहै जो कुत्ते के काटने मेंहोताहै - चाहिये कि उससेभीवचे
कुत्ते का काटा हुआ पानी से वहुत डरता है - और पानी पीना
छोडदेता है इसीसे सताताहै - उसे पानी पिलाने का उपाय यह
है कि एक नरकुल वहुत लम्वा लेके एक सिरा उसके मुंह मेंडा
लें और वहुत दूर से दूसरे सिरे में पानी छोडें कि वह पानीको
देखने न पावे - और कहते हैं कि जव कुत्ता काटे उसी समय
रुधिर उस का लेके थोडा सा पानी में मिलाके पिलादें - और
छह महीने तक रोज़ एक माशे मुशक खिलावें और तीन महीने
तक घावको वहने दें और जिस कुत्तेने काटाहो उसीकाक
लेजा भून के खिलाना अति लाभ दायक है ॥

समाप्तोयग्रन्थः

छाके विषको खाल की ओर बहादें - जैसे दवा या दौड़ने से पसी ना निकाल ना परन्तु इसमें डर है ॥

छटे विषको फैलने न दें इस प्रकार से कि जिस जगह कांटा या डंक माराहै जो हो सके तो उस स्थान को तुरंत ही काटडालें - और दागदें - या ऊपर को छटके कसकर बांधे कि विष आगे न चढ़ने पावे - और टंडी व सुस्त करने वाली औषधें लगावें और उस जगह सींगी लगाना और मुंह से चूसना लाभदायक है - परंतु चूसनेवाले का पेट भरा हो और रोगन गुल से उसे कुल्ली करादें - जो उसे हानि न हो ॥

लारिया एक पेड़ है जिस में से दूध निकलता है उसका दूध सांप के काटे हुये को लाभ कारक है - और तुरंज के बीज २ माशे सब जान वरों के विष को लाभ देते हैं और किस्का ताज़ा फल भी अति लाभ कारक है - नियोले का भेजा और पट मवाद धोकर धनियां लगाकर भूनना और सुखाके खिलाना और बकरी की मेंगनी जलाकर खिलाना और लेप करना और सातर खाना और लेप करना अति लाभ दायक है और पक्का या कच्चा दूध घी के साथ उस स्थान पर लगाना भी अच्छा है ॥

भिड़ और चेंटी और शहद की मक्खी के काटने में तीन हथेली भर धनियां फांके ॥

बावले कुत्ते के काटे को चालीस दिनतक भच्छा न होने दें - जो घाव भरने लगे तो ऐसी औषधि लगादें जिससे वह बहे - और सौदा का मवाद निकालने में बहुत लगे रहें - इसका विष बरषों के पीछे जोर करता है - और जिस किसी को कुत्ते ने काटा हो उसके काटने में भी वही अवगुण

नाड़ीपरीक्षा

—— ❦ ——

दिलकीसाके चलनेकोनाड़ीकहतेहैं

वह दिलके खुलने और वंदहोनेसे चलतीहै खुलनेसेहवारवे
भीतरजातीहै जिससे रूहहैवानीजो दिलमेंहै आरामपातीहै और
गरमहवाकेदूर करने के लिये दिलवंद होताहै इन दोनोंसेमनुष्यके
शरीरकाहाल और उसके रोग और आराममालूमहोतेहैं इसप्रकारसेशरी
रकाहालजानाजाताहै ॥

एकतो यह कि कितनी खुलतीहै और कितनी वंदहोजातीहै
इसकीनौसूरतेहैं क्योंकि नाडीमें लम्बाई और चौडाई और गहराईहै और
हरएक इनतीन में सेयावहुत अधिकहै याकमहै यामध्यमहै नव इनतीन
से इनतीनकोगुणाकरोगेतो ९ तियानी होंगेवहनौयहहैं तवील अर्थात
अधिकलम्बी - २ क़सीर वहुत कमलम्बी - ३ मोत दिल अर्थात न लम्बी न
छोटी जितनीलम्बी जितनी किचाहिये ४ अरीज़ अधिक चौडी ५ जैयक़ कम
चौडी ६ मोतदिल उतनी चौडी जितनी किचाहिये ७ मुशरिफ़ अधिक उभरी
हुई ८ मुनख़फ़िज़ दवीहुई ९ मोत दिल न वहुत उभरी न दवी ॥

तवील से जितनाकि चाहिये वह रोग अधिकमालूम
होतीहै - कारण इसका गरमी की अधिकताहै ॥

२ क़सीर में कम मालूम होतीहै उससे जितना किचाहिये
कारण इसका गरमी कमीहै ॥

३ मोत दिल में या उतनी मालूम होतीहै जितनी किचा
हियें इसमें मिजाज की गरमी ठीक २ होतीहै ॥

औरतीनक़ुत्तरकेलेनेकीरीति जिसकोसलासीकहतेहैं अकारोंकोएकहीरक्खे औरतीसरीअकारबदलतीरहें॥

नक़शासलासीका

त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.
क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो
मुश.	मुन.	मो.	मुश	मुन.	मो.	मुश.	मुन	मो.
मो	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.

प्रकटहोकिऊपरकेदोनोंनकशोंमें (त) सेतवील और (अ) से अरीज़ और (क) सेक़सीर औरमोसे मोतदिल और (ज) सेज़ैयक़ और (मुश) सेमुशरिफ़ और (मुन) से मुनख़फ़िज़जानो।

दूसरीप्रकारज़ोरऔरकमज़ोरीजाननाहै वह यहहै जोनाड़ीज़ोर सेलगेदेखनेवालेकी उंगलियोंकेमांसपरतो उसकोपुष्टकहतेहैं ऐसेंदिलभीपुष्टहोताहै औरजोहोलेसे लगेतोवहकमज़ोर वेगीयहपहिंचानहै दिलकीकमज़ोरीका।

औरतीसरीमोतदिलहै जिससेज़ोरहै वालीका दिलमेंठीक होनापायाजाताहै॥

तीसरीप्रकारनाड़ीकीचालकासमयदेखनाहै जोवह

४ अरीज़में उसकाचौडान जितना कि चाहिये उससे अधिक होतीहै इसमें तरीकी अधिकताहोगी ॥

५ ज़ैयक़ में चौडानकमहोताहै इसमें तरीकमहोतीहै ।

६ मोतदिलमें जितनीचाहिये उतनी चौडाईहोगी उसमें तरीठीक ठीकहोतीहै।

७ मुशरिफ़में वहरंगअधिकउभरतीहै यहभीगरमीकाकारणहै

८ मुनख़फ़िज़में हदसेकमउभरतीहै गरमीकीकमीहोगी।

९ मोतदिलमें उतना उभारहोगा जितनाकिचाहिये इसमेंगर्मी भीठीक रहोगी-यहनोप्रकारएक २कुतरकीहैं- लम्बाई औरचौडाई औरगहराईको यहांपरकुत्तरकहतेहैं-जबदो यातीनकुत्तरोंको मिलाओतोदो प्रकारसत्ताईस २की निकलेंगीजैसाकि आगेकेदो नकशोंमें लिखागयाहै परन्तुदो कुत्तरों के लेनेकी रीति जिसको सनाईकहतेहैं यहहै कि लम्बाईकीतीन प्रकारोंको चौडाईकीतीन प्रकारोंकेसाथलेंतोनोहोंगी फिरलम्बाईहीकीतीनप्रकारोंकोगहराईकीतीनप्रकारोंकेसाथलें यहभीनोहोंगी- फिर चौडाईकीतीनप्रकारोंको गहराईकीतीनप्रकारोंके साथलें यहभीनोहोंगी-यहसबमिलकरसत्ताईसहुई॥

नकशासनाईका

त. अ.	त. ज.	त. मो.	क. अ.	क. ज.	क. मो.	मो. अ.	मो. ज.	मो. मो.
त. मुश.	त. मुन.	त. मो.	क. मुश.	क. मुन	क. मो.	मो. मुश.	मो. मुन.	मो. मो.
अ. मुश.	अ. मुन.	अ. मो.	ज. मुश	ज. मुन.	ज. मो.	मो. मुश.	मो. मुन	मो. मो.

अलग२ तो उसको मुस्तवी फिलवाज़ और मुख्तलिफ़ फिलवाज़क हतेहैं इसमें हाल बुरा होगा-जोहरनवज़े के टुकड़े सब हालों में एक से पाये जावें और जो सब नवज़े अलग हों तो उसे मुस्तवी मुतलक़ डोंकी राह से कहेंगे-और जो अलग२ होंतो मुख्तलिफ़ मुतलक़ दु

की राहसे कहेंगे यह दोनों बुरे हाल के चिन्ह हैं मस्तवी और मुख्तलिफ़ में अधिक-और जो नवज़े के हर टुकड़े के एकटु कड़े में मुस्तवी और मुख्तलिफ़ देखें अर्थात जो टुकड़ा नाड़ी का एक ढंग लीतले हो उसके आदि और अंत और मध्य में दूसवार्य इ खितलाफ़ होतो उसे मुस्तवी मुतलक़ और मुख्तलिफ़

-और इसी प्रकार से मुस्तवी फिलवाज़ और वाज़ जानो यह भी हाल के बुरा होने और कमज़ोरी की अधिकता और सवाद के भारी होने का लक्षण है परंतु मस्तवी में थोड़ा और मुख्तलिफ़ में अधिक ॥

नवीं प्रकार मुख्तलिफ़ नाड़ी में

दौरा नवज़े का एक प्रकार का अंतर रक्खें तो उसको मुख्तलिफ़ मुंतज़म कहते हैं-और जो एकसा न रहे तो मुख्तलिफ़ ग़ैर मुंतज़म यह बहुत बुरे हाल का लक्षण है ॥

दसवीं प्रकार नाड़ी की तोल देखना है-तोल कहते हैं एक वस्तु को दूसरी वस्तु से अंदाजा करने को-इसलिये उ नाड़ी होती है उसको जैय्यदुल वज़न कहेंगे-और जो इससे विपरीत हो उसे रदीउल वज़न कहेंगे-इसकी तीन सूरतें हैं पहिली मुजावि

वह है कि एक अवस्था वाले की नाड़ी मिलती हो उसके पास वाली अवस्था की नाड़ी से जैसे कि लड़के की नाड़ी जवान की की बुड्ढे की सी हो दूसरी मुवाइज़ुल वज़न वह है कि जो दूर की अवस्था वाले से मिलती हो जैसे लड़के

तीसरीरवारिजुलवजनवहहै कि किसी अवस्थाकी सीनहोजैसेकां पतीहुईनाडी जोवहुतबुरीहै औरइससे ऊपरकी दोनोंभीवुरीहै परंतु इससेकम।

नाड़ीरद्द और असली गरमीको आरामदेतीहै जबगरमीकी अधिकताहो औरनाडीमें किसीप्रकारकी कडापननहो औरजोरमें होतोनाड़ी अज़ीमहोगी अर्थात् तीनोंकुतरोंपर वढ़ीहुई औरजोइस सेकुछभीलाभनहोतो सरीहोजावेगी औरजोइससे गर्मीवढे औरल भनहोतो मुतवातिरहोजावेगी औरजोनाडीमेंकडापनहोतोसग़ीर होगी अर्थाततीनोंकुतरोंमें घटीहुई औरजोनाडी नरमहो परंतुउस मेंज़ोरनहोतो सरीहोगी औरजो उससेलाभनहोतो मुतवातिरहोजा वेगी औरजोकमजोरीवहुतहोतोकामजल्दीनकरसकेगी औरस गीरहोजावेगी।

जबमवादयाभोजनकेजोरकेवोझसेनाडीदब जावे औरउभ रनसकेतो कुछसग़ीरहोजातीहै जैसाकितपके आदिमेंवारियोंके अन्दर होताहै चाहेंजोरहो तरीसेनाडीनरमहोजातीहै औरखुश्कीसे कडीपरंतुवुहरानोंमें कुछकडी पाईजातीहै।

मवादकेवोझसे याकमज़ोरीकी अधिकतासेनाडीमेंइख्ति लाफ़पडजाताहै औरजवकमजोरीवहुत वढ़जावीहै तोइन्तिज़ाम नाड़ीका जातारहताहै उचितवज़नभीनहींहोता।

नाड़ीकी मिलीहुईप्रकारें

अज़ीमउसनाडीको कहतेहैं जोतीनोंकुतरोंमें वढ़ीहुई हो।
सग़ीरवहहै जोतीनों कुतरोंमें घटीहुईहो।
गलीज़वहहै जोचोड़ाई और गहराई में वढीहो औरलक्षणहै मवा दकी अधिकताका।

सूत्रपरीक्षा



जानना चाहिये कि मूत्र यह ही पानी पियाहुआहै-पहिले मेदे में भोजन के साथ मिलता है कि उसे पतला करके कैलूसबना के फिर मासारीका में होता हुआ जिगरसें पकताहै वहां से गुरदे में होके मसाने में इकट्ठा होता है और जो कुछ रुधिर से मिलाहुआ जिगरसे रहजाताहै वह रगों की राहसे सारे शरीर में पहुंचके कुछ पसीने में निकलजाताहै और कुछ फिर गुरदे में होताहुआ मसानेमें गिरताहै इसी लिये मूत्र रंगीन होजाताहै जिसको पसीना वहुत आताहै उसे पेशाव कम होताहै और पसीना कम आने वाले को पेशाव अधिक होताहै - जब मसाने में इकट्ठा होजाताहै तो पेशाव लगताहै इसी लिये सारे शरीर का हाल इससे जाना जाताहै यहां से दो बातें मालूम हुई-एक यह कि पेशाव में दो वस्तुहैं एक पानी और दूसरे भारीपन ॥

दूसरे पेशावसे जिगर और मसानेका हाल भली भांति जाना जाताहै ॥

मूत्रके रंगकावर्णन

असल रंग पांच हैं- पीला-लाल-हरा-काला औरसफेद और सिवाय इनके जो हों वह इन्हीं के साथहैं ॥

पीले रंगकी पांच प्रकारहैं -

तिर्यनी- उस पानीकासा रंगहोताहै जिसमें भूसा भिगोयाहै अर्थात पीलाहोताहै-सपेदी लियेहुये यह लक्षणहै मिजाजकीठंडका क्योंकि यातो पानीकी अधिकता होगी या पित्तोंकीकमी य हदोनों ठंडसे होतेहैं परंतु पित्तों की सरसाम में भी मूत्रकारंगऐसा होजाता है ॥

उतरुजी - अर्थातहलका पीला रंगजैसे तुरंजके छिलकेकाहोताहै-इसमें पीलापन तिर्यनी से अधिकहोताहै यहलक्षणहै मिज़ाज के ठीक होनेका और भली भांति पचाव होनेका।

अशकर-यह पीला रंगहै लाली लियेहुए मिज़ाज मेंगरमीहोने का लक्षणहै ॥

नारी- यह रंग वहहै जिसमें पीलेपन से लाली अधिक होतीहै और चमक आग कीसी होती है-इससे अशकरसे अधिक गरमीहोतीहै ॥

अहमरनासे- इसमें नारीसे लाली अधिकहोतीहै औरगरमीभी उससे अधिकहोगी॥ + + + +

दूसरा रंग लालहै वह चारप्रकार काहोताहै ॥

असहव- थोडीलालीहो और सफेदी भारे पतले रुधिरसे ॥

वरदा- गुलाबी रंगको कहतेहैं इसमें लाली असहव से अधिक होतीहै और गाढ़े रुधिरसे पायाजाता है।

कानी-यह बहुत लाल होताहै उसरुधिरसे जिस्में गरमी बढीहो-॥

अक़तम- लालहो कालापन ... रुधिरकी गरमी से ॥

यह चारों रुधिर और गरमी की अधिकता के लक्षणहै

एक दूसरे से अधिक और कभी ठंडे रोगों में भिन्न लाल रंग होजाता है जैसे फालिज और सूजन किनीओं में क्योंकि जिगर की कमज़ोरी से रुधिर पानी से भली भांति अलग नहीं होसकता और रुधिर पेशाब में मिला आता है ॥

तीसरा रंग गहरा है - यह भी चार प्रकार का है ॥

फिसतकी अर्थात पिसतई रंग यह ठंडका चिन्ह है क्योंकि पित्तों और सौदा के मिलने से होता है परंतु वह सौदा जो ठंड से बना हो कुरशी ने कहा है कि यह रंग पित्तों के जलने का लक्षण है क्योंकि इसमें पीले पन की झलक होती है जो ठंडे सौदा से होता तो काला पन होता ॥

नीलनजी - जैसे नील पानी में घुला हो इसमें फिसतकी से भी अधिक ठंड होती है - यह दोनों रंग जो बच्चों के मूत्र में होतो फालिज या तशन्नुज होने का डर है ॥

ज़नज़ारी अर्थात जंगार का सा इसका कारण गरमी की अधिकता और पित्तों का जलना है ॥

कुररासी गंदने का सा रंग यह भी पित्तों के जलने का लक्षण है परंतु ज़नज़ारी से कम ॥

चौथा रंग काला है इसे कई कारण है ॥

एक जलना इस प्रकार से कि पहिले शरीर में गरम पित्त हो और वह जलादे मूत्र के मवाद को और रंग उसका काला होजाने परंतु उसमें पीले पन की झलक होगी और पहिले से मूत्र में गंध होगी या लाल आवेगा ॥

दूसरा कारण जमना है - इसी प्रकार से शरीर में ठंडा मवाद हो जो मूत्र के मवाद को जमादे और काला करदे इस से पहिले सेहरा मूत्र विना गंध के या खट्टी गंध लिये हुए आवेगा ॥

तीसरा कारण सौदा का मूत्रमें निकलना है यह सौदा कीत्तियें और बुहरान के दिन आवेगा इससे पहिले मवाद के पकने के लक्षण पाये जावेंगे और पीछे रोग में कमी होगी ॥

चौथा कारण किसी रंगीन वस्तु का खाना है जैसे कालोशराव आदि जो वह वस्तु जैसी की तैसी मूत्रमें निकले तो जानलो कि जिगर का ज़ोर जाता रहा और डरावना है और जो अधिक खालेने से होते कुछ डर नहीं ॥

पांचवां रंग सफेद यह दो प्रकार का होता है ॥

एक दूधकासा गाढ़ा यह कफ़ की अधिकता और मिज़ाज की ठंड या हड्डियों और पट्ठों के और चर्बी के पिघलने का लक्षण है जैसे कि दिक के अन्त में होता है – कारण इसका अधिक गरमी है इसमें चिकनाई सफेदी के साथ होगी और शरीर दुबला और प्रति दिन पिघलता जावेगा ॥

दूसरे पानी कासा रंग यह लक्षण है जिगर के पचाव न होने का ठंड की अधिकता से या मूत्र के रस्ते में सुद्दा पड़ने से कि रंगीन वस्तु नहीं निकलती और निरा पानी निकल आता है ॥

मूत्र का गाढ़ा और पतला होना

मोतदिल वह है जो न बहुत गाढ़ा हो न पतला जैसा कि चंगे पने में होता है और लक्षण है पचाव और भलि भांति पकने का ॥

गाढ़ा होना लक्षण है न पकने का क्योंकि बिना पचा हुआ फोक मूत्रमें मिलके उसे गाढ़ा करदेता है और कभी चिन्ह होता है गाढ़े मवाद के पकने का पहिंचान उसकी यह है कि पकने से पहिले मूत्र बहुत गाढ़ा आवे और पकने के पीछे कम गाढ़ा आवे ॥

कभी बहुत पानी पीने से मूत्र पतला आता है और कभी मे

राले में भी सुद्दा पड़ने से भी पतला आताहै पहिचान उसकी यहहै कि सुद्दे की जगह बोझ और तनाव पाया जावेगा और कभी मवादके न पकने से भी पतला होजाताहै—जबकि मवाद ऐसा कच्चाहै कि निकल न सके जैसाकि कफ़की तपों मे होताहै ॥

मूत्रका साफ़ और गदलाहोना

साफ़ वहहै कि सफ़साहो और वारपार उसमें से दीख पड़े जैसे पानी-चाहे गारा हो जैसा अंडे की सफेदी ॥

और गदला यहहै जिसमें वार पार न दीख पड़े ॥

साफ़ सूत्र चिन्हहै मवाद के पकने और ठहरनेका ॥

और गदलाहोना चिन्हहै मवाद केन पकने और औटनेका और कभी ज़ोर जाते रहने से और शरीरके अंदर की सूजन से मूत्र थोड़ा गदला होजाताहै ॥

मूत्रकीगंध

जब तक कि सूत्र में जितनी चाहिये उतनी ही गंधहो तो जानो कि मिजाज ठीक और मवाद पकाहुआहै और जब उससे बढ़जावे तो दो बातें होंगी याती मवाद अधिक सड़ा होगा जैसाकि सड़ी हुई तपों में या सूत्रके सस्थानों में खुजली और घाव होगा ऐसा बहुधा मसाने के घाव से होता है क्योंकि वहां सूत्र देर तक ठहरता है और घाव में पीड़ा पाई जायगी और सूत्र में पीप और छेछड़े घाव से निकलेंगे और मवाद के सड़ने में यह बातें न होंगी ॥

सूत्र में गंध बिलकुल नहोना चिन्हहै मवाद केकच्चा होने और जमजाने का और कभी ज़ोर जाते रहने से भी ऐसा

रसूव मज़मूर्न दहहै जिसमें रसूवमहमूद की वातें न पाई जावें - इसकी भी तीन प्रकारहै सब से अच्छी ग़मसाम फिर मुतअल्लिक़ फिर शसिव जवकि ऊपरठहरना तलछट का गरमी से हो ॥

रसूवरदी - यातो तरीसे उत्पन्न होतीहै या शरीर से - शरीर की रसूव जो असल स्थानों सेहो उसे खरशती कहते हैं और जो उन से नहो और चिकनाई उसमें पाईजावे तो वसमी कहते है - और जो चिकनाई नहोतो लहमीहै ॥

खरशती जो ऊपर से आवेतो कशूरी कहेंगे - और जो भीतर से आवे तो टुकड़े उसके बड़े और चौडे सफेदी या लालहो तो सफायही कहेंगे - सफेद चिन्हहै मसाने के छिलनेका - और लाल गुरदे या जिगर के छिलने का ॥

जो टुकड़े वड़े चौडे नहोतो - लालहो कुरसनी कहेंगे और नहीं तो न खाली ॥

तलछट जो तरी सेहो उनमें से जो लाली लिये हुयेहो चिन्हहै रुधिर के जलनेका और कभी कफ़के गलने का और जो पिलाई हो तो पित्तो की अधिकताका और काली सोदा के जलनेका ॥

जो मूत्र विना तलछट केहो उसके कई कारणहैं एक मवाद का न पकना - दूसरे सुद्दा - तीसरे मवाद की कमी - चंगे मनुष्यों के मूत्र में तलछट बहुत थोड़ो होतीहै - और जो होती भीहै तोबिना पचे हुये भोजनके फोकसे ॥

दुवले मनुष्य के और मिहनत करने वाले के मूत्रमें तलछट बहुत कम होतीहै - और जो रोगी मोटा और आराम चाहने वाला हो उसके मूत्रमें बहुत आतीहै - जिस तलछट का फोक पीप हो उसे मदी कहतेहैं - और जिसका फोक गाढ़ा और कच्चा मवाद हो वह मुरवाती है - यह बहुत करके अरक़ुंनिसा और वजैमुफ़ासिल

के रोगों से आतीहै-इन दोनो की सूरत एक सी होतीहै परंतु अंतर यहहै कि मद्दी में दुरगंधिहोतीहै और सूजन या घावके फूटनेके पीछे निकलतीहै-और हिलाने सेजलदी फैलजातीहै औरजल दी इकट्ठा होजातीहै और सुस्वाती में यह बातें नहीं होती ॥

मूत्रका थोड़ा औरघनाहोना

सूत्रके घने होने के बहुत कारणहैं एकपानी बहुत पानी अकेला या कोई वस्तु मिलाके या तर मेवोंका खाना-दूसरे शरीर का पिघलना जैसाकि गरम तपों में होताहै-तीसरे रुके हुए मवाद का निकलना जैसाकि बुहरान इदरारी होताहै ॥ जुलानी।

बुहरानी और जुलानी में यह अंतर है कि बुहरानी में जोश होताहै और मवाद के निकलने के पीछे रोगी को आराम होताहै और जुलानी में कमजोरी होतीहै उसमें पुष्टगर्मी पाई जातीहै और गंधितेज़ होती है और बुहरान के दिन नहीं होता-

बुरा सूत्र जैसे कोल्हा और गाढा इसमें अच्छा वहहै कि बहुत आवे और रुक २ के न आवे इसमें जोर होताहै और जो कमज़ोरी होगी तो रुकके आवेगा ॥

मूत्र के थोड़ा होने के कारण भी बहुतहैं-एक तरी का अधिक पचना दूसरे शरीर में तरी का न रहना गरमी की अधिकता से तीसरे सुद्दा पड़ना उनरस्तों में जिनसे कि तरी मसाने में जाती है चौथे अधिक दस्त या पसीना आना-इससे जो तरी मूत्र में आतीथी वह दस्त और पसीने में निकल जावेगी ॥

पचाव के कमहोने पर भी जो मूत्र बहुत थोड़ा आवे तो जलंधर होजाने काडरहै ॥

बुहरानकावर्णन



रोगकीलड़ाई जो मिज़ाज के साथहोतीहै उसे बुहरानकहतेहैं ॥

जो मिज़ाज जीते और रोग एकबारगी जातारहै उसे बुहरान महमूद या कामिल कहतेहैं- और जो रोग जीते और रोगी एकबारगी मरजावे तो बुहरान रदीताम है-यह दोनो गरम रोगों में होते २ हैं ॥

जो रोग अच्छा होने को हो परंतु देर में-इसे तहल्लुलकहतेहैं यह बहुधा पुराने रोगों और ठंडे मवाद में होताहै ॥

और जो इसी प्रकारसे रोग मारडालने को होतोज़ूबान भी रखतूल कहतेहैं ॥

चंगाहोने के लक्षण यातो एक बारगी मालूम होवें २ परंतु देर में अच्छाहों और मवाद थोड़ा २ निकलै या पहिले मिज़ाज का ज़ोर कुछ न मालूमहो परंतु मवाद की कुछ २ निकाल के एक बारगी जीत जावेतो बुहरान जैयद नाक़िस कहतेहैं- जो रोगजीते कुछ २ ज़ोर को घटादे या पहिले रोग का ज़ोर मालूम नहो परंतुकुछ २ शरीर के ज़ोर को घटातारहै और एक बारगी मारडाले उसे बुहरान रदी नाक़िस कहतेहैं-इन चार पिछलों का नाम बुहरान मुरक्कब है ॥

इन आठों सूरतों में रोग छः प्रकारसे बदलतेहैं यानी एकबारगी चंगा होने की ओर या एक बारगी मरने की ओर या थोड़ा २ चंगा होने की ओर या थोड़ा २ मरने की ओर या दोनों ओर हो और रोगी चंगा

होजावे या दोनो हों और भरजावे ॥

नववहुरान में मवाद एक वार दूर नहो सके तो वड़े स्थानों से दूसरी ओर चलाजाता है इसे वहुरान इंतकाली कहते हैं कुछ रोग जैयद हैं-जैसे यरकान,खुजली, दाद और कुछ रदी हैं जैसे बौद, खुनाक- आकिला-दुबैला-आदि ॥

वुहरान इंतकाली नहीं होता-परंतु जबकि कमजोरी हो और मवाद गाढा हो ॥

वहुरान होने से पहिले उसके लक्षण पाये जाते हैं अर्थात जो वह दिनको होतो पहिली रातको और जो रातिको जातो दिनको वह चिन्ह होंगे कभी गरम रोगों में तीन दिन तक वह रहते हैं चिन्ह जिस दिन अधिकतर हो वही दिन वहुरान का जानों ॥

जिस वहुरान में मवाद दूर हो वह पांचप्रकार का होता है नकसीर-उलटी-दस्त-मूत्र-और पसीना ॥

मूत्र और पसीने का वुहरान वहुधा नाक़िस होता है-नकसीरका वुहरान सब से अच्छा है-फिर दस्तों का फिर उलटी का-फिर मूत्रका फिर पसीनेका फिर खुराजात का अब हर वुहरानके चिन्ह अलग २ लिखेजाते हैं ॥

नकसीर के वुहरान के चिन्ह यह हैं-कानों का सुनहोना आवाज आना सिर जलना चमकती हुई वस्तु आंखों के सामने दिखाई देना-नाक खुजलाना सिरकी रगों धमकना आंखें और मुंह लाल होना ॥

उलटी वाले के चिन्ह यह हैं-दस्त फूलना-मतली-मिचलाहट-मुंहकडवा होना-फड़कना-कौडी की पीड़ा-आंखों के नीचे अंधेरा होना-नाडी का बंद होना-और नीचे का होठ फडकना ॥

दस्त के लक्षण यह हैं-पेट की पीड़ा शरीर का बोझल होना

पक्कियों का तन्ना-पेट फूलना-पीठकी पीड़ा-दस्त रंगीनहोना बातो का बोलना- और नाड़ी का सगीर-और कवी-औरसत्वहोना और किसी वुहरानके लक्षण नहोना॥

और मूत्रके लक्षण यहहैं-मसाने का बोझल होना-औरमूत्रका बहुत और गाढाहोना- और मवाद का दूर नहोना-यह बहुधाजाड़ों में होता है॥

पसीने के चिन्ह यहहैं-मुंहका फूलना चौथे दिन मूत्ररंग होजावेगा- और सातवें दिन गाढा होना और रोगी स्वप्नमें-हम्माम और नदी और मेह बरसता देखेगा-औरजब उसके शरीरपर देरतक हाथ रक्खेंगे तो गरमी अधिक मालूम होगी॥

वुहरान दंतकाली के लक्षण यहहैं- नफ्का जोर औरसार का न निकलना और सारे शरीरमें या एक जगह पीड़ा होना और कोई डरकी बात नहोनी और जोर और नाड़ी का ठीक होना॥

कान बहना और चीपड़ और आंसू और रेंट सिरके रोगों के वुहरान की पहिंचान है-और राल बहना छाती के रोगोंकी और बवासीर का रुधिर बहुत से रोगों का वुहरान जैयद है कभीगरमी के चिन्ह मालूम होतेहैं और रोगी अच्छा होजाता है और कभीगरमी को होता है और रोग घट जाता है उस समय नाड़ी नर्मली या बंद होजाती है॥

वुहरान जैयद की पहिंचान यहहै कि मवाद अच्छापका होगा और वह भलि भांति निकलेगा औरनाड़ी ठीक और पुष्टहोगी वुहरान रदी इसके विपरीत है-वुहरान के दिन कोई रसी औषध नदें जो मवादको निकालें इस वास्ते जुल्लाब आदि नदेनाचाहिये- जो हो सके तो भोजन भी नदें और नहीं तो हलका भोजन

देना चाहिये- और लक्षणों को देखके मिजाज की मदद करें- जोम
वाद नकसीर से निकाला चाहिये हो
ण उसे न निकाल सकता हो तो मदद दें-
रम रक्खें और गरम पानी से तरेड़ा दें- जो उलटी
टीकरावें और जुल्लाव चाहती हो तो मुलैय्यन
भी जानो जब मालूम हो कि बुहरान इंतकाली है और मवाद कि
सी जगह गिरके उसे बिगाड़ेगा तो मवाद को उधर गिरावें
कुछ हानि न हो- जैसे कि जो जगह उसके बराबर हो उसे कसके

हो तो बायें हाथ से कोई कड़ा काम न करें या
उड़ावें जो मवाद
पिंडलियां टखनों तक
सें- और जो मेदे में हो और छाती की ओर आवे तो बाहें और रानको
मूत्र में पसीना निकालें और पसीने में मूत्र उलटी में दस्त और दस्त
में उलटी जब तक अधिक आवश्यकता न हो बुहरान से मवाद नि
कालना बन्द न करें और उसे शरीर की किसी उत्तम और कमजोरी
जगह पर न गिरावें रोग के आदि में बुहरान बहुत बुरा है- बहुत से
हकीम जो रोग दो पहर से पहिले उत्पन्न हुआ हो उस दिन को हि
साब में गिनते हैं- और जो दो पहर के पीछे हो उसे छोड़ देते हैं- उस
के पीछे जो तय हो उसी समय से गिनी जावेगी- रोग में कुछ दिन
बुहरान के दिन हैं- उन्हें बाहुरीया कहते हैं- और कुछ यामुलअ
नज़ार अर्थात खबर देने वाले और कुछ न बुहरान के हैं न खबर दे
नेवाले परंतु कभी २ बुहरान उनमें होजाता है- उन्हें वाके फिलवस्त
कहते हैं जैसा कि आगे के नकशे में लिखा जावेगा- बुहरान का जोर
और कड़ापन आखें दिन तक रहता है फिर घटजाता है॥

जिन दिनों में बुहरान बहुत करके होताहै और अच्छा होताहै
वह ग्यारह दिनहैं उनकी जगह हमने एकका अंक नकशे में लिखा
है- और जिन दिनों में बुहरान रदी और बुरा होताहै वह आठ दिन हैं उ
नकी जगह दोका अंक लिखाहै- और जिन दिनों में बुहरान नहीं
होता वह तेरह दिनहैं उनकी जगह तीन का अंक लिखाहै और उ
नमें जुल्लाव भी देसकतेहैं वे खटके होकर और छः दिनवाले
फिलवस्तहैं- उनकीजगह ४का अंक लिखाहै॥

दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल
१	बुहरान	११	४	२१	१	३१	१
२	खिलाफी	१२	२	२२	३	३२	३
३	४	१३	४	२३	३	३३	३
४	१	१४	१	२४	१	३४	१
५	४	१५	२	२५	३	३५	३
६	२	१६	२	२६	३	३६	३
७	१	१७	४	२७	१	३७	१
८	२	१८	२	२८	३	३८	३
९	४	१९	२	२९	३	३९	३
१०	२	२०	१	३०	३	४०	१

कभी देखने में रोग मालूम नहीं होता - छठे दिन बुहरान
जैयद होजाताहै तो वह दिन सातवां होताहै- क्योंकि बुहरानजैय

इछदे दिन बहुते कम होताहै ॥

नकशे में जो दिन लिखे गयेहैं उनमें गरम रोगों का बुहरान होताहै- और पुराने रोगों में महीना और वरस दिन कीजगह हैं जैसाकि कफ़की और सौदाकी रुवा में सात महीने गिब्बकी सात बारियों के बराबरहैं-इसलिये बुहरान १२० दिन या सात महीने या सातवर्ष याचौदह याइक्कीसवर्ष पीछेहो ॥

वारी वाली तप में वारीके दिन बुहरान होता है- उसदिन पेटभरा न रक्खें ॥

बुहरान में बहुत बुरे बुरे लक्षण होना मरने की पहिचानहै ॥

इतिश्रीबुहरानका

वर्णनसमाप्त

१	बुहरान	११	. .	२१		३१	
२	रबिलासी	१२	. .	२२		३२	
३	बुहरान	१३	. .	२३		३३	
४	बुहरान	१४	. . .	२४		३४	
५	[illegible]	१५	.	२५		३५	
६	बुहरानकी	१६	. . .	२६		३६	
७	कुमहस्र	१७	. . . . .	२७		३७	
८	रोजुमुथ	१८	. . . .	२८		३८	
९	. . .	१९	. . . .	२९		३९	
१०		२०	. . .	३०		४०	

मिलीहुई औषधियोंकेबना नेकी विधि

इस पुस्तक में जो बनी हुई औषधें रोगी को देने के लिये बताई गई हैं उनके बनाने की रीति अब लिखते हैं और जिस पृष्ठ में उसका नाम आगयाहै उस पृष्ठ का अंक भी उसके आगे लिखाहै ॥

इतरीफ़लधनियांका

तीनोंहड़ें- बहेड़ा- छिलेहुये आमले- धनियां- उस्तखुद्दूस- सुंडी- बनफशे के फूल- प्रत्येक २ तोले तीन तोले रोगन बादाम में मिलाके तिगुने शहद के कवाम में मिलाके चालीस दिन तक जौ के अंदर रक्खें और उसमें से एक तोले या दो तोले खावें ॥

इतरीफ़लग़ुददी

उस्तखुद्दूस- ग़ुद्द जो बकरीके गले में होतेहै उन्हें सुखाके- विसफायज- प्रत्येक १७॥ मासे- हड- आमला- तुरबुद- प्रत्येक २४॥ मासे- इफ़ीमून ३॥ मासे- अनीसून- मस्तगी

लोंग- तज प्रत्येक सातमाशे- नौशादर-शैतरज-नरकचूर-रूमी कून-प्रत्येक ७०॥ माशे कूट छानके इसी प्रकार से शहद मेंबनाले और १७॥ माशे खावें ॥

अयारिजफ़ीकरा

वालछड़-दारचीनी- तज-हब्बुविलसान - ऊदबिलसान- मस्तगी- आसारोन- केसर- प्रत्येक एक तोला- एलुआ दो तोले या तीन तोले सब को कूट छान के फंकी बनावें उसमें से सात माशे पेट खाली होने पर शहद और गरम पानी के साथदें ॥

असानासिया

मुरमक्की- अफ़ीम- वजफल्लवजन- केसर- जुन्द वेदस्तर- कूट- करदमाना- खशखाश- गाफिस- वफूरीकादहन सींगजलाहुआ- भेडिये का कलेजा सुखायाहुआ- सबकोबराबर लेके कूट छान के घोलने की दवा घोलके शहदमें मिलालें और छः महीने पीछे ३॥ माशे कासनी के पानी या शहद के पानीके। साथदें ॥

बासलीकून

चांदीका मैल- समन्दर फैन प्रत्येक २२॥ माशे- सफ़ेदा कलाई- जोर- नमक तुरकी- कालीसिरचें- नौशादर- दारफिलफिल- प्रत्येक ४॥ माशे- जलाहुआ तांबा ३१॥ माशे- लोंग- छडीला प्रत्येक १॥ माशे- कपूर ८ रत्ती- तेज पात- जुन्दवेदस्तर वालछड- सुरमा- प्रत्येक ३॥ माशे इन सब को पीसकर सुरमा

बनाले ॥

बरूदबनफसजी

बनफशेके फूल-धनिया-बबूलका गोंद-कतीरा प्रत्येक ३॥ मासे। निशास्ता१०॥मासे कूट छानके पांचबार सिरके में भिगोके छायामें सुखावे फिर सुरमा बनाले ॥

बनादिकुलकुर

खरबूजे और ककडी के बीज प्रत्येक १७॥ मासे-क हू-कुल्फे-और खेरू के बीज-सफेद वजरुलबनज-बादाम कतीरा-निशास्ता-मुलहटीकासत-खस्खाशसफेद-गिलेअ मनी-कपासके बीज-प्रत्येक ७ मासे कूट छानके बीदानेके लुआ बसे कुर्स बनावे और १० मासे खावें ॥

तिरयाक

गोलमिर्चे सफेद-सुरमक्की-प्रत्येक १॥ मासे-जित यानी ३॥ मासे-जराबन्द मुदहरज-७॥ मासे हुरमुलके बीज-कलोंजी-जीरा-प्रत्येक ७ मासे कूटछानकर गुलाब में गूंधले औरबाकलेके बराबर खावें ॥

सोंठकी माजून

सोंठ ७० मासे-बबूलका गोंद-इलायचीके दाने-प्रत्ये क ७ मासे-लोंग-दालचीनी-प्रत्येक १७॥ मासे-जायफल-केस र-प्रत्येक ३॥ मासे-बसवासा १४ मासे कूटछानके ४०५ मासे मि श्रीकीचाशनीमें मिलादें ॥

मिलावेकीमाजून

कालीमिर्चे-दारफिलफिल-कालीहड़-बहेड़ा-आमला-जुंदबेदस्तर-प्रत्येक १४मासे-सोया१७॥मासे-कूट-अस्लबलादुर-बिरंगकाबिली-शकरतबरजद-हब्बुलगार-प्रत्येक ४२०मासेकूटछानके दुगने शहद और अस्लबलादुर को चाशनी करके मिलावें और छः महीने पीछे खावें॥

जवारिशजालीनूस

बालछड़-लोंग-इलायची-तज-दारचीनी-सोंठ-कुलीजन-केसर-सफेद मिरचें-दारफिलफिल-रूमीकूट-मोथा-असविलसान-हब्बुलआस-आसारोन-सीगचिरायता प्रत्येक तोलेभर मस्तगी ५ तोले- और सबके बराबर शक्कर-दुगने शहद में माजून बनावें और सात दिन पीछे ९ मासे खावें॥

ऊदकीमाजून

जो पचाव को ठीक करती है और भूख लगाती है और तरी और कफको मेदे से दूर करती है॥

केसर-सोंठ-दारफिलफिल-जायफल-प्रत्येक ३॥मासे-बालछड-इलायची के दाने-बसवासा-प्रत्येक ७ मासे-लोंग-मस्तगी प्रत्येक १०॥मासे-कचचाजद-तज-प्रत्येक १७॥ मासे कूटछानके दो सेर शक्कर में चाशनी करलें॥

जवारिशखोजी

कन्दुर-अजवायन-मस्तगी-मोथा-बालछड प्रत्येक १४॥

मासे- और मुनक्के को रिस्के में भिगोकर निकालके मूनलें और पीसकार उसमेंसे १०५ मासे- हब्बुल आस २१० मासे सबको कूट छानके पुराने शहद औरक़न्दकी चाश्नी करके दवाओंको मिला दें- और १०॥ मासेसे १४ मासेतक खावें ॥

हब्ब कोकाया ॥

फीकरा ३॥ मासे- तरबुद सफ़ेद- मुनाहुआसकमूनियां- उस्तखदूस- प्रत्येक १॥ मासे- बकायन २ रत्ती कूटछानके सोंफके पानी में गोलियां बनावें यह सब एक बार के खाने को है ॥

हब्बुलमिस्क

कालियां- लोंग- अक़रक़रा- प्रत्येक ३॥ मासे- गुलाब के फूल- सफेद चन्दन- ऊद प्रत्येक ७ मासे- वंसलोचन १॥ मासे मुश्क- कपूर प्रत्येक १ दांग कूटछानके गुलाब और पानके अर्कमें गोलियांबनावें ॥

हब्बेरावन्द

रावंद १॥ मासे- ग़ारीक़ून ३॥ मासे- तुर्बुद ७ मासे- जरावन्द दोदांग- गूगल १॥ मासे- अनीसून १ दांग- कूटछानके गोलियांबनावें- यह दोबारके खानेको है ॥

हब्बसिकबीनज

सिकबीनज- एलुआ- ग़ारीक़ून- गूगल- बराबर लेके गोलियांबनावें और ७ मासेसे १०॥ मासेतक खावें ॥

हब्बरवीजरान

भुनाहु आसकमूनियां. जावशीर. प्रत्येक ४॥ माशे. व
कायन ५॥ माशे. नोशादर ७ माशे. गारीकून ८॥ माशे. अयारि
जफीकरा १०॥ माशे. इंजरूत. १९ माशे. तुरबुद १४॥ माशे.
कूट छान के रांदने के पानी में गोलियां बनावें और ३॥ माशे
खावें॥

हब्बवासली

वालछड़. तज. हब्ब और गार दिरलसान आसारोन. म
स्तगी. दारचीनी. केसर. प्रत्येक ३॥ माशे नूरवा ७ माशे. भुनी
सकमूनियां. १४ माशे उस्तखुदूस. वकायन प्रत्येक १७॥ म
तुरबुद २४॥ माशे एलुआ ५६ माशे. कूट छान के पानी में गोलि
बनावें और १४ माशे खावे॥

हब्बसिब्र

भुनीहुई सकमूनियां ७ रत्ती. उसारा गाफ़िस ९। रत्ती.
गारीकून १८॥ रत्ती. सिब्र ३॥ माशे. कूट छान के
नीमें गोलियां बनाले यह एक बार खावें॥

हब्बइफतीमून

उस्तखुदूस धदांग. कालीकुटकी. नमक प्रत्येक १॥
माशे. बिसफायज. गारीकून. प्रत्येक ३॥ माशे अयारिज.
३। माशे गोलियां बनाले यह सबको बारया ३ बार खाने को हैं।

दिवालमिश्क

मस्तगी. कचचाजद. तुरंजके छिलके. दारचीनी. लौंग.
बालछड. मुश्क. जायफल. कवाबा. बड़ी और छोटी इलायचीके
दाने. सोया. सरकंडेकीजड़. जंगलीतुलसी. फिरंजमुश्क. तुखम
म. और बाल्तुगूके बीज. दौनामरुवा. बिनाविंधेमोती. सुद. क
हरुवा शमई. कचचारेशमका दाहुआ. सफेद और लालवहमन
प्रत्येक ३५माशे. मुश्क १७॥माशे. इहको मुरब्बे के शीरेमें गूंध
के माजून बनालें ॥

दवायतुर्बुद

तुर्बुदसफेद छिलाहुआसाफ कियाहुआ ३५ माशे. सोंठ
मस्तगी. प्रत्येक १७॥माशे. कंदइन सबके बराबर कूट छानके फां
कीवनावें और ४॥माशे खावें ॥

दवा उलकरकम

केसर ५॥माशे. आसारोन इद्बु. अनीसून फितरासालय्यू
न. रेवन्द. मुरमकी प्रत्येक १४माशे. बालछड २१माशे. सींगकूट
तजफ़िकाह. सरकंडेकी जड. हब्बबिलसान प्रत्येक ७माशे. मुले
ठी. जोंद. मस्तगी. गाफिस. प्रत्येक १०॥माशे. बिलसानका तेल ७
माशे कूटछानके शहदमें मिलाके माजून बनालें और माउल्लअस्ल
के साथ ३॥माशे खावें ॥

दवाउलतुरंजवेत

तुरंजबीन सफेद साफ करके १०५ माशे डेढ़ सेर दूधमें औटावें जब गाढ़ीहोजावे तो १३॥ माशे खावें ॥

जरूर असफर

इजरूत. सतुआ. रसोत. प्रत्येक ७ माशे. केसर. सुर. प्रत्येक ३॥ माशे. पीसछानके आंखमें लगावें ॥

मस्तगीकातेल

मस्तगी ३५ माशे. रोगन गुल १७५ माशे. एक शीशीमें डालके गरम पानीमें उसे रक्खें और उसकेनीचे आगनलावे यहां तक कि वह मस्तगी तेलमें पिघलजावे. फिर उसे निकाल लें ॥

कूटकातेल

कूट ३५ माशे. काली मिर्चें. फारफियून. प्रत्येक १०॥ माशे. अकारकरा १४ माशे. जुन्दबेदस्तर ७॥ माशे. जैतकातेल १७५ माशे कूट और अकारकरे और मिरचोंको ३५० माशे पानीमें ३ रातदिन भिगोवें. फिर औटावें कि आधा नजावे. फिरजैतकातेल मिलाके औटावें. कि निरातेल रहजावे. फिरजुन्दबेदस्तर और फरफियूनको कूटछानके आगपरसे उतारके डालदें ॥

केसरकातेल

मुरमक्की ११॥ माशे. चिरायता १७॥ माशे. केसर. कैदमाना. प्रत्येक २१ माशे. चिरायते और केसरको अलग और मुरमक्कीको अलग सिरकेमें भिगोवें. पांच दिन तक और छटे दिन १

कर्दमाना को भी सिरके में भिगोवें. एक दिन सात व रोज़ छानके तिलीका तेल मिलाके औटावे कि सिरका जलजावे और तेल रह जावे ॥

बिच्छूकातेल

नरावंद सुदहरज. जिन्तियाना-मोथा-कारनेकी जड़की छाल प्रत्येक ३ तोले कूटकर शीशेमें भरे-और ४०५ माशे कडुयेबा दाम या तिल्लीका तेल उसमें डालदे और उसका मुंहबंद करकेधूप में रखदे-गरमीमें सात दिन और जाडों मे चोदह दिन-फिर उसद वाको उसतेलमें भली भांति घोलें-और दो बडे बिच्छू जीते उसमे छोडदे फिर मुंहबंदकरकें चौदह दिन और धूप में रक्खें फिरछा नलें ॥

सुहागकातेल

हरे सुहागका अर्क ६ तोले. तिल्लीयाज़ैतके तेल में जो ३ तोलेहो औटावे कि पानी जलजावे ॥

चास्दीनकातेल

चिरायता-वरकुलगार-सोदकूफी-अद बिल्सान लाख-हेजेपोत-आसके पत्ते-चास्दीन-सरकन्डेकी जड़-रासन गवहल-कर्दमाना-दौनामरुवा बराबर लेके कुचलके १ रात दिन गुलाब और पानीमें भिगोवें फिरछानके तिल्लीकातेल मि लाके औटावें कि निरातेल रहजावे ॥

रोग़नमोर्चो

काले चेंटे जो क़बरोंमें होतेहैं-१००पकड़े-और एक शीशेमें जिसमें चमेलीका तेल पड़ाहो जीते डालें और गर्मीकी धूपमें सात दिन तक फिर साफ़ करलें ॥

आसकातेल

हब्बुलआस कूट कर तिलीकेतेलमें औटावें-फिर छलें ॥

रोग़न आमला

छिलेहुए आमले- आसके पत्ते- सनोबरके नख लबराबर लेकर कूटके पानी में औटावें-कि गलजावें फिरछान के उतनातेल मिलाके पानीको जलावेंकि निरातेल रहजावें ॥

सोयेकातेल

सोयेके बीज छाया में सुखाके तीन तोले ले औरतिली तेल ५७॥। तोले शीशेमेंभरके धूपमें २०दिन तक रक्खे फिरछानले ॥

गोखरूकातेल

हरेगोखरूको कूटके पानीउसका तिलीके तेल में मि आगपरजलावें कि निरातेल रहजावें ॥

गेहूंकातेल

इसकेबनानेकी दोरीतेहैं - एक यह कि गेहूं को आतिशी शीशे में भरके ऊपर से कपडेोतीकरें और उसके मुंहमेंरेशे किसी छाल के या तिनके भरदें कि गेहूं गिरनेनपावें - फिर उसको किसी वर्तन में कि नीचे उसकेछेद हो उलटा रखके ऊपर इसके अर्नेउपले चुनें और आगलगादें औरतेल१ वरतन में रखदें कि तेलउसमें टपकाकरें ॥

दूसरी रीतियह है कि गेहूंको किसी साफ पत्थरपर रखके ऊपर से कोई लोहेकीवस्तु गरम करके ज़ोरसे दबामेतेल निकल आताहै ॥

सुर्मारोशनाई

नुहासजलेहुआ - शादना - प्रत्येक १७॥ माशे - गोलमिर्चे - दारफिलफिल - केसर - चकायन १॥ माशे - जंगार - सलुअ नमक अर्मनी प्रत्येक ३॥ माशे - इकलीमिया - ७माशे पीसके सुरमाबनालें ॥

माजूनजरऔनी

कालीमिर्चें - दारफिलफिल - सोंठ - तज - दारचीनी - लौंग - कुलीजनप्रत्येक तोलेभर - दोनोंतोदरी - औरबहमने - चूजीदांलोलिसानुलअसाफीर - मीराकुट - मोथा - बालछड़ - प्रत्येक ३तोले कूटछानके शहद से माजूनबनालें ॥

सिरकेकी सिकंजबीन

सिरका और शक्कर दोनों बराबर लेकर बनालें॥

सिकंजबीन बज़ूरी गर्म

उसारा गाफिस. रेवन्द चीनी. प्रत्येक ७ माशे. कर्फ़स का सनी. और कुथूसके बीज. सोंफ़. अनीसून प्रत्येक १७॥ माशे. बिज्र. और सोंफ और कर्फसके जड की छाल २४॥ माशे. सबको कुच लके १२१५ माशे पानी मे भिगोवें और पानी से चौथाई सिरका उसमें डालें. १रात दिन उसे भीगा रक्खें फिर औटाके साफ़ करलें और ६७। तोले कंद में चाशनी करलें॥

सिकंजबीन अनसिली

अनसिल ७ छटांक लकडी की छुरी बनाके काटें. छोटे छोटे टुकडे और पुराना सिरका १०२५ माशे डालें और औटावें कि बिलकुल गलजावे और सिरका पांचवां हिस्सा रहजावे. फिर उसमें १॥ गुणा कंद मिलाके धीमी आंचसे पकावें. और कफ़ उसके अर्थात झाग निकालते जावें यहांतक कि चाशनी पर१ आजावे॥

सिकंजबीन इफ़तीमून

उस्तखूदूस. सौंफ़. शाहतरा प्रत्येक १७॥ माशे. इफ़तीमून बिषफायज. सनाय. काबिली हड प्रत्येक ३५ माशे. इनसबको १७५ माशे सिरके में भिगोके औटाके छानलें और ६॥ आधसेर कंद में चाशनी बनावें॥

सिकंजबीनसफ़रजली

खट्टी बिही ताजी कूटके पानी उसका १ सेर लें और १ पाव भर सिरका मिलाके ओटावे- फिर सेर खांड डालके किवाम शर्बत चाशनीबनालेंऔर जो सिरके के वदले नीबूका अर्क़ मिलालेतो अति लाभकारक होगा ॥

सुफ़ूफ़चारतुख्म

ईसवगोल- तुख्मरेहां- कनौचे और वारतंगके बीज- बराबर लेके किसी मिट्टीके वरतन में भूनें- और गरम पानी ऊपर डालके छान करें और थोडासा रोगन गुल यावादाम डालके खिलावें ॥

सुफ़ूफ़हब्बुलरुम्मां

खट्टे अनारके दाने भुनेहुये ७० मासे- करौया- धनियां प्रत्येक १४ मासे- माज- खरनूब निवती प्रत्येक ७ मासे- गुलनार- गर्दसिमाक प्रत्येक १०॥ मासे- करौया और धनियेको सिरके में भिगोके सुखाके भूनें फिर सबको कूटछानके फंकी बनावें और ७ मासे खावें ॥

सुफ़ूफ़ मिकलियासा

ईसवगोल ७० मासे- रेहां- वारतंग मरूके बीज- बबूलका गोंद- गिलेअर्मनी- खशखाश प्रत्येक ५२॥ मासे- चूके और कुल्फ़े के बीज- निशास्ता- प्रत्येक २४॥ मासे- बीजोंको भूनके और बाकी सबको कूटके मिलादें- और ठंडे पानीके साथ फ़कावें ॥

सुफ़ूफ़तीन

ईसबगोल्-मस्तू औरखेहांके बीज-निशास्ता-मुनेहूसेचुकेकेबीज-गिलेअर्मनी-वंसलोचन-वबूलका गोंद-सबको सिवाय अस्पगोलके कूटके मिलावे १॥माशेरोग़न गुल्यावादामसे चिकनाकरके गुलाबके साथ फंकावे॥

सुफ़ूफ़तेरातेज़क

तेरातेज़क को एक रातिदिन अंगूरके सिरकेमें भिगोवे और थोडासा जौका आटा उसमें मिलाकर गूंधे और धीमी आंचमें तन्नूर में रोटी उसकी पकावे कि जलन जावे और फिर उस रोटीमें से १८० माशेले- और संभालूके बीज- इसबगोल कन्दरीयून-बिजके जडकीछाल-अजवायनप्रत्येक १॥ माशे- गन्दने के बीज-जीरा-चिरमांजी- कि रातकराते सिरकेमें भिगोके सून लियाहो प्रत्येक २॥ माशे सबको कूटछानके फंकी बनाले॥

मंजनदांतोंकापुष्टकरने वाला

गुलनार- फिटकरी-आमला-अक़ाकिया-बराबरलेके मंजनबनावे॥

दूसरामंजन यहहै-मुर-तूतिया-फिटकरीगर्द सिमाक-गुलाबके फूल-खड़े अनारके छिलके-आमलेका उसारा-माजू-गुलनारफ़ाज-बराबर लेके कूटछानके मंजनबनावे॥

कूटके तेलकी दूसरी रीति

तेज २१माशे-सुरमक्की-सारचोवा प्रत्येक १४० माशे-कडुआकूट ३५० माशे-सबको कुचलके गुलाबमें एक रातिदिन भिगोवें फिर औटाके और छानके तिलोंया जैत के तेलमें जो पानीसे तिगुनाहो मिलाके औटावें कि निरा तेल रहजावें ॥

सुरतीजान

खट्टे और मीठे अनार के छिलके प्रत्येक १०५ माशे-माजू-गुलनार-फिटकरी-जलाहुआ कागज- अकरकरा-प्रत्येक ३५ माशे- सिमाक़ ५२।। माशे-नमक-नौशादर प्रत्येक १७।। माशे-कूट छान के इन्बुल आसके सिर्के में गूंधके टिकिया बनाके सुखा रक्खें ॥

शर्बतवर्द मुकर्रर

गुलाबके फूल ताज़े खुशबूदार ज़ीरा और सब्ज़ी निकाल के १सेर भरलें और पांचसेर पानीमें ओटावें-यहांतक कि रंग और स्वाद और गंध उसकी पानीमें आजावे-फिर मलके उसका फोक निकाल डालें और उतनेही नये फूलडालके ओटावें-और उसकाभी फोक निकालडालें-इसीप्रकारसे जितनीवार चाहें नये फूल बदल तेजावें-फिर छानके पानीके बराबर शक्कर मिलाके क़िवाम करलें और १या२ तोले पीवें ॥

शर्बतइफसंतीन

इफसंतीनरूमी १७॥मासे-गुलाबके फूल २५मासे-३५ हरपानीमें भिगोके ओटावें जब चौथाई रहजावे तो-मलके-छान केशकर मिलाके क़िवामकरें ॥

शर्बतगूफा

सूरखागूफाइंडल निंकालके २०३मासेलें-ओर ३ससेदुग नेपानीमें भिगोवें-फिर ओटाके १०२मासेकंद ओर ४०५मासेश हदडालके क़िवामकरलें ॥

शर्बतखशखाश

पोस्तखशखाशदानोंसमेत १००लें-उन्हें कुचलके२ सेर पानीमें ओटावें फिर १॥सेरकंद मिलाके क़िवामकरलें ॥

शर्बत पोदीना

खट्टे अनारका रसएक हिस्सालें-ओरहरेपोदीनेका रसच हके आधा हिस्सालें फिरदोनोंको मिलाके ओटावें ओरउसकेबरा बरकंद डालके क़िवामकरलें ॥

शर्बतदीनार

रेवंद १५मासे-कुशूसकेबीज १७॥मासे-गुलाबकेफूल ५२॥मासे-कासनीकेबीज २५मासे-कासनीकी जड़ १०॥ मासे-रे वंदको कुचलके पोटली में बांधके ओर औषधोंके साथ भिगो दें ओर हलकी आंचपर ओटावें फिरछान के कंद सपेद ४०५मा शेडालके क़िवामकरलें-ओर३५मासे-से ४५मासे-ओर५२॥ मासे-तक पीवें ॥

शर्वतहब्बुलआस

हब्बुल आसहरा ४०५ माशेकुचलके औरहरामानूं३सके बराबरकुचलके मिलाके ७ दिन तक पानीमें भिगोवें-फिर औटाके बराबर क़न्द डालकें क़िवामकरलें॥

शर्वतअंजवार

अंजवारकीजड़ और छिलके औरडाली६तोलेसे ७तो लेतकलें औरकुचलके एक रात दिन गरम पानीमें भिगोवें और हल्की आंचपर औटावें और मलके छानके ४०५ माशे क़न्दमें मिलाके किवाम करें और चाहेंतो १॥ तोले खट्टे अनार के दाने भी मिलालें॥

शर्वतगावज़ुवां

हरीगावज़ुवांकारस निकालके औरक़न्द सफैद मत्ये का १सेरभरलेके और मिलाके औटावें और कफ़ अर्थात झाग निकालडालें फिर गुलाव ९०माशेडालकें क़िवामकरलें॥

शर्वतवालंगू

वालंगूके हरेपत्ते कूटके रस निकालें-एक हिस्सालेके दुगनीक़न्द डालके क़िवामवनालें॥

शर्वतनीलोफ़र

नीलोफ़रके फूलहरे २०३ माशेचौगुने पानीमें १रातदिन भिगोवें फिर औटावें जब तिहाई रहजावे तोमलके साफ़करलें

और २०३ माशे कन्द मिलाके क़िवाम करलें ॥
यही रीति शर्वत वनफशा वनाने कीहै ॥

शर्वत सन्दल

सफेद चन्दन काचूरा खुशवूदार नवके ९० माशे लेके ४०५ माशे गुलाव में दो राति दिन भिगोवें फिर गुलाव अलग निकाल लें और चन्दन में थोड़ा पानी डाल के औटावे फिर वह पानी और गुलाव मिलाके ८१० माशे कंदसे क़िवाम करलें ॥

शर्वत उन्नाव

उन्नाव एक हिस्से चार हिस्से पानी में भिगोके औटावें जव चौथाई जल जावे तो दुगनी शक्कर डालके क़िवाम वनालें ॥

शर्वत के वड़े कीभी यही रीति है-उसकी वाल को औटानाचाहिये ॥

शर्वत फिंजनोश

कचचे अंगूरका रस ४३० माशे-सिमाक-माजू-गुलनार-गुलावके फूल-कुन्दुर-सातर-मोथा-प्रत्येक ३५ माशे-केसर फिटकरी प्रत्येक ३॥ माशे-लोहेकामैल १३५ माशे-दवाओंको कूटके अंगूरके रसमें औटावें-जव तिहाई रहजाय तोमाफ़ करके रखछोड़े॥

शियाफ़कुन्दुर

कुंदुर ३५मासे-अशक-इंजरूतप्रत्येक १७॥मासे-केसर७मासे-मेथीके लुआब में शियाफ़ बनावें-औरजबअवश्यहोतो उसे टपकावें-औरजो घाव और फुंसियोंको पकानाहोतो पट्टीसीवांधें॥

शियाफ़अबियज़कुन्दुरी

कतीरा-बबूलकागोंद प्रत्येक १०॥मासे-निशास्ता३॥मासे-कुन्दुर-५जो पीसछानके ईसबगोलके लुआबमेंबनावें॥

शियाफ़अहमरलीन

धुलाहुआशादना २५मासे-जलाहुआतांबा २५मासे-बबूलका गोंद-कतीरा-सुरमक्की प्रत्येक ७मासे-बुसुद-बाहरवा-मोती-तेलपातप्रत्येक १५मासे-दम्मुल अखवैन-केसरप्रत्येक ३॥मासे इसीप्रकारसेबनालें॥

शियाफ़ज़ंगार

ज़ंगार-बबुलकागोंद-सफेदाप्रत्येक ७मासे-पीसकेबनालें॥

शियाफ़गर्ब

सलुआ-कुन्दुर-इंजरूत-दम्मुल अखवैन-गुलनार-सुरमा-फिटकरी-प्रत्येक १ तोला ज़ंगार-३मासे पीसकेबनालें॥

कुर्समाज़रीयून

माज़रीयूनं सुर्दव्हूर-पीलीहड़के छिलके-गौका आम बराबर लैके शकर मिलाके कुर्स बनावें ओर ४॥ माशे शर्बत गुल के साथ खावें ॥

कुर्सअनीसून

इज़्ख़र-तीन रूमी-आसारोन-करफ़सके बीज-बादाम-अनीसून-कूटछान के पानीसें गूंधके बनावें और सिकंजबीनके साथ दें ॥

कुर्सकिब्र

ज़रावंद तवील ७ माशे किब्रके जड़की छाल उशक प्रत्येक १४ माशे-सभालूकेबीज-गोलमिरचें प्रत्येक २१ माशे उशकको पुराने सिरकेमें घोलके और औषधोंको कूटछानके मिलादें और ४॥ माशे सिकंजबीनके साथ खावें ॥

कुर्सकौकब

बालछड़-जुन्दबेदस्तर-तज-तीतुल्लवहीग-बैरखके छिलके-मुरमक्को प्रत्येक १४ माशे अफ़ीम-केसर-मीठाकूट-जलाहुआ भलरक प्रत्येक १७॥ माशे-सफेद खशखाश दूकू-अनीसून-सीसालियूस-खुरासानी अजवायन-सुरवामीमा करफसके बीज प्रत्येक २१ माशे-गोंदोंको पानीमें घोलके औ रसब औषधोंको पीसछानके शहदसे गूंधके कुर्सबनाके काममें सुखावें ॥

कुर्ससुम्बुल

वालछड़- फित्राह -सरकंडेकीजड़- तज- जरावन्द त वील- दारचीनी- चिरायता- प्रत्येक १०॥ मासे- केसर- अनीसून- सुरमक्की- कडुवाकूट- कालीमिर्चें- प्रत्येक ३॥ मासे- गूगल- मस्तगी- प्रत्येक ७ मासे- उशक ११॥ मासे- पहिले गूगल को गुला बमें घोलें फिर और औषधों को कूट छानके मिलावें और सात मासे खावें॥

कुर्सएलाउस

कासनी के बीज- अनीसून प्रत्येक ५२॥ मासे- इफसंती न ७ मासे- तज- ७ मासे- सुरमक्की- काली मिरचें- गुन्दं- अफीम प्रत्येक ५॥ मासे- सबको कूटछानके पानीमें कुर्सबनावें और ५ मासे खावें॥

कुर्सकुहल

सुरमा- धोयाहुआ- शादना- दम्मुल अखवैन प्रत्येक १०॥ मासे- गुलनार- माजू- प्रत्येक ७ मासे- गैंडेका सींग जलाहुआ अकाकिया प्रत्येक ३॥ मासे- छादन के सर प्रत्येक १॥ मासे- इं सराज ५॥ मासे- कूटछानके हरे बारतंग के पानीमें गूंथ के बना वें- और ३॥ मासे बार तंग और कुलफे के पानी के साथ खावें

कुर्सगुल

वंसलोचन- इफसंतीन- बालछड़ प्रत्येक ७ मासे तुरंजवीन १०॥ मासे- गुलाब के फूल- मुलेठी- प्रत्येक १० मासे

छान के गुलाव में बनावें. और ३ माशे या उससे अधिक ॥

कुर्सकहरुवा

कहरुवा-बुसुद-मोती-जलीहुईकोड़ी-कासीगजलाहुआ-धोयाहुआशादना-प्रत्येक १०॥ माशे-गुलाबके फूल-कुलफेके बीज-धनियां-सिमाक-भुनाहुआनिशास्ता और बबूलका गोंद-गुलनार-प्रत्येक १७॥ माशे-वंसलोचन अक़ाक़िया-बरगद की डाढ़ीका उसारा प्रत्येक ७ माशे-कूट छानके चार तंग के पानी में मूंघ के गोलियां बनावें और ७मा शेखावें ॥

-५ नीर-

कुर्सकाकनज

ककड़ीके बीज ३५माशे-काकनज १०॥ माशे-कर्पासके बीज-भंग गिलेअर्मनी-बबूलका गोंद-दम्मुल अखवेन बजरुलबनज प्रत्येक ७ माशे-अफीम-३॥ माशे-कूटछानके बनावें और १॥ माशे खावें ॥

कुर्सज़ियाबितुस

वंसलोचन-मुलहटीकासत प्रत्येक १७॥ माशे-कुलफे और काहूके बीज-गुलाबके फूल-गिले अर्मनी-प्रत्येक ५२॥ माशे-धनियां-चूकेके बीज-प्रत्येक १०॥ माशे-सफेदचंदन-गुलनार-सिमाक़-बबूलकागोंद प्रत्येक ७ माशे-कपूर १॥ माशे कूटछानके कुलफे और काहूके पानी में बनावें ॥

कुर्सवौलुद्दम

ककडीके बीज ३४ माशे. निशास्ता. कतीरा. गुलनार गुल. दम्मुल अखवैन. बबूलका गोंद प्रत्येक ३॥ माशे. कूटछान कर कुलफे. या बारतंगके बीजमें बनावें ॥

कुर्सनफसुद्दम

गिलें अर्मनी. काहरुवा. बबूलका गोंद. दम्मुल अखवैन. वंसलोचन. निशास्ता. कतीरा. अकाकिया. गुलनार. बरगद की डाढी. बराबर लेके बारतंग और कुलफे के पानी में गूंधके बनावें ॥

कुर्सतबाशीर मुलय्यन

निशास्ता. बबूलका गोंद. सफेद खशखाश. कतीरा प्रत्येक ३॥ माशे. खीरे ककडी कद्दूके बीज प्रत्येक ९ माशे तुरंजबीन १॥ माशे. सफेद वंसलोचन १४ माशे कूटछानके ई सब गोलके गुलाबमें बनावें और ४॥ माशे खावें ॥

कुर्सतबाशीर काबिज

वंसलोचन १४ माशे. कुलफेके बीज भुनेहुये ७ माशे गुलाबके फूल २४॥ माशे. सफेद चन्दन. बबूलका गोंद. कतीरा निशास्ता. शाहबलूत. चूकेके बीज सब भुनेहुये. मुलहठी. अकासत. जरिशक प्रत्येक ७ माशे गुलनार अकाकिया १

प्रत्येक ३॥ माशे कूट छानके सेवयाज़ारिश्कके पानीमें बनावें और ४॥ माशे खावें ॥

कुर्सकाफ़ूर

कपूर २ माशे- गुलाबके फूल- तुरंजबीन- प्रत्येक २१ माशे- खीरे ककड़ीके बीज- बंसलोचन- मुलहटी प्रत्येक १४ माशे- काहूके बीज- २८ माशे- कुलफेके बीज २१ माशे- कासनी के बीज ७ माशे- कद्दूके बीज १४ माशे- मुलहटी का सत ११ माशे- कूट छानके ईसबगोलके लुआबमें बनावें और ७ माशे तक खावें ॥

कमूनी

ज़ीरा- सदाब- सुहागा- सौंठ- काली मिर्चें- नमक अर्मनीको शहदसे मिलाके माजून बनाले ॥

कोहलुलजवाहिर

इसकी दो रीतें हैं- एक यह कि लाल फीरोज़ा- मारक शीशा- सफेदा- निशास्ता- प्रत्येक ७ माशे- धोयाहुआ आशादना रसोत- शियाफ़ मामीसा- केंकड़े जलेहुये- इक़लीमिया- प्रत्येक ३॥ माशे- तूतिया- बंसलोचन- दहनाफरंग- प्रत्येक ४॥ माशे- दंजरूत १४ माशे- सुरमा ७० माशे- कपूर- सोंठ प्रत्येक १६ नो १७॥ माशे वाचके अंगूरके रसमें घोटें ॥

दूसरी रीति यह है- सुरमा २४॥ माशे- मार्क शीशी १७॥ माशे- इक़लीमियाज़हबी धुलीहुई- बुसुद- मोती प्रत्येक

माशे. शादना ७माशे. केसर १॥माशे. सुरमाबनावें॥

कुहलअजीनी

+ जलाहुआसुरमा १७॥माशे. सोने औरचांदीकीइक्लीमिया. शादना. तूतिया. जलाहुआतांवा प्रत्येक ७माशे.पीलीहड़के छिलके. तेजपात. काली मिरचें. दारफ़िलफ़िल. नोशादर. मलुआ. रसोत. केसर. केंकड़ाप्रत्येक ३॥माशे. सोंठ १॥माशे कपूर ८ जौ. मुश्क तीनजौ. लौंग बत्तीसजौ. पीसके सुरमा बनावें॥

कलकलानजगरम

+ रेवन्द. उसारा माशे गाफ़िस. अनीसून. वालछड़. प्रत्येक सात मासो. ईरसा १०॥माशे. माज़रीयून सुदव्वर. ग़ारीकून. पीलीहड़. सिकबीनज प्रत्येक १७॥माशे. कूट छान के शहदसें मिलाके माजून बनावें. और १०॥माशे.से चौदह माशेत कखावें॥

कलकलानजठंडी

+ गुलावके फूल. मुलैठी. कासनी औरककड़ीकेबीज मुलहटीकासतप्रत्येक ७माशे. उसारा‌ऽफ़संतीन १०॥माशे. माज़रीयून सुदव्वर. पीलीहड़प्रत्येक १७॥माशे. तुरंजबीन. अमलतास. सफ़ेदकन्द प्रत्येक ५२॥माशे. माजून बनावें औरसातमाशेसे १०॥माशेतक खावें॥

लाजवर्दके धोनेकीरीति

लाजवर्दको पीसके सुरमाकरलें- ओर पानीमेंडो टालें- ओरथोडासा ज़ैतूनकातेल डालें फिर नितारें फिरबहुत सापानी डालके होले होले धोलें- ओर रंगीन पानी अलग बर्तन में निकालके ढक दें घडीभरपीछे तलछट बैठजायगी वही तलछट कामकी है- इसप्रकार से फिर उसपहिले लाजवर्द को बहुत सा पानी डालके वैंगलें यही तलछट सुरमाके काममें लावें ॥

माजूनफिलासफा

काली मिरचें. दारफिलफिल. सोंठ. दारचीनी. आमला बहेडा. शैतरज हिंदी. ज़रावन्दमुदहरज. खुसियतुस्सालिब. चिलगोजेके बीज. वावूनेकीजड. दरयाईनारियल प्रत्येक ३॥ मासे बाबूनेके बीज १७॥ मासे. मुनक्के १०५ मासे. दुगने शहदके क़िवाममें माजूनबनावें और १ दिन पीछे खावें ॥

माजूनजुजाह

काबिलीहडके छिलके. कालीहड. बहेडेकेछिलके छिलेहुए आमले प्रत्येक ३५ मासे. तुरबुद सफेद. बिसफायजड़ फ़ीसून. उस्तखुद्दूस प्रत्येक १७॥ मासे. जूटछानके दुगने शहदके क़िवाममें माजूनबनावें ॥

लोहेकेमैलकीमाजून

कालीहड़-आमला-कालीमिरचें-सोंठ-दारफिलफिल-मौथा-शैतरज-बालछड़-प्रत्येक २५मासे-गंदने औरसोयेकेबीज प्रत्येक १४मासे-लोहेका मैल धुलाहुआ-३५०मासे-कूटछानके मग़ज़बादाम मिलाके शहदमें मिलावें फिरमुश्क ७मासेमिला केचीनीके बर्तनमेंरक्खें॥

लोहेके मैलकेधोनेकी

रीति

मैलको १४दिन अंगूरकेसिरके में भिगोवें-औरमिट्टीउसमें न गिरनेंदें- फिर उसे सुखाके काममें लावें॥

माजूनलबूब

बादाम-अखरोट-हब्बुलकतम-हब्बुलबतम-हब्बेसुनोबर-हब्बेज़लम-फिन्दक-पिस्ता-नारियलताज़ा-हब्बफिलफिल इनसबकी मींगी-खशखाशसफैद-दोनोंतोदरी औरबहमनें-छिलेहुएतिल-खरबूज़े-मिर्ज़ोर-पियाज़-शल्यम-रतवा-फ़िलफ़िल-इनसबकेबीज-औरसोंठ-दारफिलफिल-कबाबा-तज-दारचीनी शकाकुल-कुलींजनसबकोबराबरलेके कूटछानके-तिगुनेशहदमें माजून बनावें॥

माजूनबुजूर

गाजर-शलगम-पियाज़-मूली-हिलयून-रतंव-
बीज-हव्व सुनोवर-हव्वफिलफिल-लालतोदरी-
-पीलीतोदरीकेबीज-लिसानुल असाफ़ीर-शकाकु
-बहमन-चूबीदस्ता मीठाकूट-सोंठ-दारफिलफिल-हींग-
सववरावरलेके शहद मेंबनावें और १०॥ माशेताज़ेदूधके
॥

बिच्छूकीमाजून

जलाहुआबिच्छू १२॥ माशे-जिन्तयाना ५॥ माशे-सोंठ-
३॥ माशे-दारफिलफिल-कालीमिर्चें प्रत्येक ७ माशे-काकनज १९॥
-जुन्दवेदस्तर १४ माशे-कूटछानके शहद में
और १६ जौखावें-और लडकेको ८ जौदें ॥

बिच्छूकेजलानेकीरीति

मोटाशाशाकपडौतीकरके-बिच्छूको उसमेंछोडदें-
करके गरम तनूर में एकरात उसे रक्खें- और सवेरे निकाले
॥

माजूनहजरुलयहूद

कद्दू-खीरेककडी और खरबूज़ेके बीजोंकी
११॥ माशे-हजरुलयहूद गसील १७५ माशे-कूटछानके शहद
मिलावें-और ७ माशे से १०॥ माशेतकखावें॥

माजूनकमीला

कमीला आंवलीहड़-वहेडा-आमला-तुरबुद-सोंठ-
बराबरलेके कूटछानके तिगुने शहद मेंयाकंदके किवाममेंमि
लाके बनावें और सातमाशेखावें॥

सतबूस्व मुलय्यन

उन्नाव-लहसोडे-नीलोपर-खैरूके बीज-बनफ़शे औ
रबाबूनेके फूल-अमलतास काशीरा-तुरंजबीन-रोगनबादामपा
नीमें औटाके मलके छानके पिलावें॥

मुफ़र्र हसरीर

गावजुवां-मूंगेकीजड़-धनियां-मोती-सफ़ैद बहमन धुरं
गके छिलके-कहरुवा-रेशम सफ़ेद जलाहुआ-कुलफेके बीज
२ तोले-कापूर ६ माशे-कूटछानके हड़के मुरब्बेके औरे शेसंगून
बनावें और ७ माशे खावें॥

मुफ़र्रहदिलकुशा

मूंगेकीजड़-कहरुवा-जरकचूर-दरोनज-प्रत्येक ३॥
माशे-कचरा मद ६॥ माशे-काविलीहड़-और पिस्ते और तुरंजके
छिलके कच्चा रेशम कटाहुआ-मोती प्रत्येक ७ माशे-धनियां
वंसलोचन-प्रत्येक १०॥ माशे-दोनोंवहमने प्रत्येक १७॥ माशे-
गावजुवां-शाहतरा-बालंगू-सबको कूटछानके-अनार-चूका-
और जरिशक का पानी प्रत्येक ३५ माशे लेकर सफ़ेद कन्द शर्बत

वनफ़शाप्रत्येक ४०५माशे मिलाके क़िवाम बनावें-फिर डालके माजून बनावें ॥

मुलय्यनमुबारिक

अमलतास-इमली-कासनीकेपानीयाजौंकेपानीमें पिलावें-औरथोड़ासाजोरोग़नबादाम या रोग़नगुलेमि लालेंतो अतिलाभदायकहोगा॥

मरहमबासलीकून

रातीनज-ज़िफ़्त चर्बीबराबरलेके-देवक ॥

मरहमरसुल

जावशीर-जंगार-गन्दाविरोजा-मुरसक्की- व ७माशे-कुन्दुर-जरावंद तवील-प्रत्येक १०॥माशे- -१५॥माशे-उश्क२४॥माशे-गूगल-सफ़ेदमोस-रातीनज १४माशे-गूगलको सिरकेमें घोलके औरबाक़ी तेलमें जो ६०८माशेहो पिघलाके सबको मिलाके ॥

चूनेकामरहम

चूनेको पानीसें घोले-फिर नितारके दूसरा इसीप्रकार ७ बार करें-फिर सुखाके रोग़नगुल याति तेलमें मिलाके मुलतानी मिट्टी डालके मरहम बनावें॥

मरहमकापूर

सफैदेके मरहम मेंकपूर मिलादेनेसे वनजाताहै ॥

सिरकेकामरहम

मुर्दासंग१॥तोले पीसके ८तोले अंगूरके सिरके औरदो तोलेजैतून के पुराने तेल मेंडाल केहल्की आगपर पकावें और घोंटतेरहें कि मुरदासंगजमनेनपावे-जब वह जलके कालाहो जावे और मरहम का किवाम ठीकहोतो उसे निकालें॥

मरहमसफैदा

रोगन गुल ४तोले-मोम एकतोले पिघलाके थोड़ा सा सफैदा मिलावें इतना किरोगन और मोमको उड़ालें-फिर अंडेकी सफैदी मिलावें-और कभी थोड़ासाकपूरभी मिलाले तेहैं ॥

दूसरी रीति इसकी यहहै- कि सफैदा और सफैदमोम रोगन गुल मिलाके मरहम बनालें॥

मसूरकामरहम

मसूर-बाबूनेके फूल-नागूना-खेरू-सबको पानीमें औटावें जब गाढ़ाहोजावेतो अंडेकीजरदी और मुरगीकी चर्बीमि लाके मरहमबनावें ॥

मुरदासंगकामरहम

मुरदासंग-सफेदा-केसर-फिटकरीपीसके रोगनबादाममें मोम पिघलाके वह औषधें मिलावें ॥

कालामरहम

जैतकातेल १२१५ माशेलेंउसमें मुरदासंग २तोलेपीसके मिलावें और औटावें किकालाहोजावे-फिरकुंदुर-दम्मुलअखवैन-इंजरूत-प्रत्येक ४माशे-पीसके मिलावें ॥

मरहमजंगार

इंजरूत-उशक प्रत्येक ६माशे-जंगारतोलाभर-सिरकेमें पीसके शहद मिलावें ॥

नोशदारू

गुलाबके फूल २१माशे-सौंदकूफी १२॥माशे-लोंग-मस्तगी-तगर-बालछड़ प्रत्येक १०॥माशे-नरम्य-बसबासा-छोटी औरबड़ी इलायचीके दाने-जायफल-तंज-केसर-प्रत्येक ७माशे कूटछानके अलगरक्खें और ताजे आमले दूधमेंतीन रातदिन भिगोवें और हररोज दूध बदल डालाकरे-फिर पानीसे धोके ताजे पानीसे औटावें-जब भलीभांति गलजावें तोकपड़ेमें बांधके सारापानी निचोड़डालें-और भलीभांति

पीसके उनमें से एक सेर भरले फिर दोसेर शहद याक़न्दके वि
वाम में मिलाके पकावें फिरवह ओषधें पिसीछनी हुई उसमें मिला
वें ओरचीनीयाचांदीके वरतनमें रक्खे- ओर४० दिनतक रखछोड़े
फिर३॥माशेसे१०॥मा तक खावें ओरइसकादोवर्षतक रहताहै।
जवतक नहीं विगड़ता॥

नकूहासिज़

बनफ़शेके फूल १७॥माशे. इमली छिलीहुई २५ माशेनी
लफूलनीलोफ़रके- सातवड़े आलू. पीले आलू ओर उननाव मत्ये
क १५ पानीमें भिगोके छानके पिलावें॥

बनीहुईओषधेंसमा

प्तहुई

औषधियोंकीकैफियत

— ❦ —

अब हम तुम्हें कैफियत उन औषधोंकी बतलाते हैं- जो इस पुस्तकमें बहुत काम आईहैं- परंतु तुम्हें इतना समझ लेना चाहिये कि औषधकी कैफियत वही औषधकी गरमी ठंड और तरी खुश्की हैं- हकीमोंने इन चारोंके चार दरजे ठहराये हैं ॥

जो पीछे पीने से कुछ न मालूम हो परंतु बार बार याअधिक खाने से गरमी ठंड आदि मालूम हो तो यह पहिला दरजा है इसकी जगह हमने १ का अंक लिखा है ॥

और जो असर मालूम हो परंतु मनुष्य के किसी काममें हानि न करें- वह दूसरा दरजा है- उसकी जगह २ का अंक लिखा हैं ॥

और जो मनुष्यके कामों में हानि हो परंतु मार न डाले यह तीसरा दरजा है- इसकी जगह ३ का अंक लिखा है ॥

जो कामों में हानि हो और मार भी डाले तो चौथा दरजा है इसकी जगह ४ का अंक लिखा है ॥

और हर दरजे में तीन २ रुतबे हैं- आदि- मध्यम- अन्त- परंतु हर औषध में इन रुतबोंको जानना कठिन है- और जो औषधें बाहर लगाई जाती हैं- उनमें तो अत्यंत ही कठिन हैं ॥

तर औषधोंकी गरमी पहिले दरजे से नहीं बढ़ती क्योंकि

जो गरमी अधिक होजावेगी तो तरीजाती रहेगी- और यहभीध्यान रखनाचाहिये कि दरजे और रुतबे जो ऊपरलिखे गयेहैं-उनमें हकीमलोग आपससें कुछ अंतरभी रखतेहैं॥

हिन्दीवैद्योंने औषधोंके दोही दरजे ठहरायेहैं-पहिला स्थल जिसमें पहिला और दूसरा दरजा आगया॥

और दूसरा महा जिसमें- तीसरा और चौथा दरजा आ जाताहै॥

हमने आगे गरमकी जगह (ग) और ठंडेकी जगह-(ठ) और तर कीजगह (त) और खुश्ककी जगह (ख) लिखाहै॥

पहिलेदरजेकीगरमऔषधें

चना- लादन- सारव- चौडीजंगली- शाहतरा- सत्तुवा- इफ़संतीन- बावूना- तेंदुआ- कतांकेबीज- आदि॥

दूसरेदरजेकीगरमऔषधें

कारफस- कुंदुर- मस्तगी- गर्बकीजड़- सफेद- औरकाली माज़रीयून की जड- बादरूज- जरावंदतवील और मुदहरजमाइद- चिरायता- केसर- अनसल- सोया- बिरंजासफ़- नमक- फ़ासियून- गंधक- सैलारस- शहदकेछत्तेकामैल- इसकाकास- विलसान- उटंगनकेबीज- मेथी- कुर्गउल छिदारको असारा- तुलके पेडकीछाल- आदि॥

सान·सुरावंद·ग्रिस्त गैलम·शाहदानज·चिरायता·कारसना·वरस्व·मकड़ीकाजाला·जावशीरकादूध·आदि ॥

तीसरेदरजेकीखुश्कऔषधें

लहसन·अनीसून·इफ़ीमून·तगर·जलनार·हींग·चना·चूफा·तज·सद्दैनामस्तवा·जामन·जायफल·सातर·बुलूत·अकाक़िया·इफसंतीन·असल·माज़रीयूनकीजड़·बिलसान·नमक·हाशा·चूका·उतरूज·दारशीशआन·नतरूखरी·मूलीकातेल·जलाहुआकौंकड़ा·सरसा·वासीसुद्दाब·जलीहुई फिटकरी·कलोंजी·जलेहुयेबाल·एलुआ·सिकाकाफादानिया·बैसूर·करोया·बच·सशकत्तरामसी·अजवायन·आदि ॥

चौथेदरजेकीखुश्कऔषधें

राई·सुदावबरी·गन्दना·अफ़रीबीयून·कुतरान·अफ़ीम·धतूरकाफल आदि ॥

पहिलेदरजेकीतरऔषधें

रोगनगुल·काहू·पालक·गावजवां·खुसयतुस्सालिब·शफ़तालू·बनफ़शेके पते·चिरोंजी·इंनीरआदम·तोदरी·सीसनका उसारा ॥

दूसरेदरजेकीतर औषधें

कुल्फ़ा- लोनिया- तरबूज- कद्दू- मिशमिश- अस्पगोल पलवल॥

अ, इ, उ,

अस्पगोल ~ ठ-२- त-२- पित्तोंकोठीककरताहै।
अनीसून ~ ग-२- ख-२- कफ़कोठीककरताहै।
मुलहठी ~ ग-१- ख-१- कफ़कोठीककरताहै।
इंजीर ~ ग-१- त- २- सौदाकोठीककरताहै।
इस्फ़ंज- ~ ग-१- ख-२-
इज़खर ~ ग-२ अंत-ख-२ आदिमें।
अक़ाकिया ~ ठ० २- ख- २या- ठ- १ख- २ रुधिरकेदस्तोंको लाभकरताहै॥
उस्तखुद्दूस ~ ग-१- ख-१- सौदाकाजुल्लावहै।
इफ़्संतीन ~ ग-१- ख-२ पित्तोंकाजुल्लावहै।
इज्जास ~ ठ-१- त-२ पित्तोंकाजुल्लावहै।
इस्रीसून ~ ग-२- ख-२ सौदाकाजुल्लावहै।
आमला ~ ठ-२ख- २ आदिमें- सौदाकाजुल्लावहै।
इसफानाख़ अर्थात पालक ~ ठ-१- त-१ आदिमें- उलटीमें पित्तोंकोनिकालताहै
अवहल ~ ग-२- ख- २

बाबिरंग- गर- खर अंतमें।
बारुज्ञव- अर्थात गोहकीवीट- गर खर (१७)

प.

परसियावशो अर्थात हंसराज- मौतदिल- गरख (१)

त.

तुख्मकुशूस- ग.१ ख-२ सड़ेहुये कफ़को रगों से निकालता है

{ तुख्म बीजको कहते हैं- इसकी जगह तु० लिखा है }
तु- खरबूजा- ग१- तर सौदाको ठीककरताहै।
तु- सरू- ग२- तर- सौदाको ठीककरताहै।
तु- सोया- ग३ अन्त ख२ आदि- उलटीसे कफको निकालता है
तु- गाजा- ग-२- त-२
तु- मूली- ग३- ख२ उलटीमें कफ़को निकालताहै।
तुरुबुद- ग२ आदि- ख-३ अंतमें कफ़को जुल्लाबहै।
तमर हिन्दी अर्थात इमली- ठ.१- ख-२ पित्तो का जुल्लाब है.

तुरनवीन- ग१- त१-
तम्बोल अर्थात पान- ग२- ख२
तरबूज- ठ१ आदि- ग२ अंत (११)

ज.च.

जुदबेदस्तर अर्थात दरयाई कुत्तेका फोता- ग३ अंत ख-२

जौ-ग१- खर२ आदि।
जलनार अर्थात गुलनार-ठर-खर आदिमे।
जदवार अर्थात निरबिसी-गर-खर आदिमें दिलको पुष्ट औ
{रप्रसन्नकरतीहै
जायफल-गर अंत-ख२ जिगरको पुष्टकरताहै।
जाफरान अर्थात केसर-गर-ख१
जूफासूखा गर-खर अंतमें
जंजवील अर्थात सोंठ-गर-खर
जरम्बाद अर्थात नरकचूर-गर खर अंत-दिलको पुष्ट और
प्रसन्नकरताहै
जाक-ग-३-ख२
जिस्त-ग-ख
जरीनज अर्थात हरताल पीली-ग३-ख-३- और लाल
ग४-ख४ {११}
चिनार-ठ-त

ह

हुजज अर्थात रसौत-गरमी और ठंडमें मोत दिल है
ख२
हिलती अर्थात हींग ग४ आदि ख२ अंत
हब्बुल मुलूक दूध उसका ग३ ख३ और पत्ते और दाने उस
को-ग२ ख३ अंतमे
हब्बुलनील अर्थात कालादाना-ग३-ख२ कफका जुल्लाब
वहै।
हुरमुल अर्थात इस्पंद-ग-२ ख-२ कफका जुल्लाबहै॥

हजरलाजवर्द - ग१ खर सौदाकाजुल्लावहै।
हजरअरमनी - गर खर सौदाकाजुल्लावहै।
हस्सासा - ग३ - खर जिगरकोपुष्टकरताहै।
हब्बविलसान - ग२ - खर - अन्तमें जिगरको पुष्ट करता है
हजरुलयहूद - ग१ - खर
हलैलाजर्द - त१ अंत - खर पित्तोंकाजुल्लावहै।
हलैलाकाविली - मोत दिल मेंह में - ख - १ - सौदाकाजुल्लावहै
हलैलाकाली - त१ मध्य - खर सौदाकाजुल्लाव है - हलेलाहडकीकहतेहैं। (१२)

ख.

खुरफा अर्थात कुलफा - त - २ - त - २ - पित्तोंको ठीकाकरताहै
ख्यारैन अर्थात खीरिककडीकेबीज - त - २ त - २ पित्तोंको ठीककरताहै
खरबक अर्थात कुटकी - ग - ३ - ख३
खिश्त अर्थात ईंट - ग२ - ख४
ख्यारशम्बर अर्थात अमलतास - ग १ त - १
(२) खिसकदानाअर्थातकडु - ग - २ ख१ अंत में कफ़ काजुल्लावहै
खैरू - त - त -
खिसक अर्थात गोखरू - ग - ख - या - त - ख - या मोतदिल॥

खूबकला- ग-त-१

द.

दरूमुल अरवबेन- ठ२ स्व-२
दमागजानवरोंका- ठ-त-भेजेकोपुष्टकरताहै
दुरराज अर्थात तीतर-ग- स्व१भेजेको पुष्टकरताहै
दरोनज-ग२स्व२ दिलकोपुष्ट औरप्रसन्नकरतीहै (४)

र.

रैहाँ (तुलसीयातानवो) ग१-स्व२
रेत-स्व-२
रोगनकेसर-ग-२- स्व-१भेजेकोपुष्टकरताहै
रैवास-ठ२स्व२ दिलकोपुष्ट औरप्रसन्नकरताहै
रोगनजर्द (घी) ग-१त-१ अंतमें पुराने में खुश्की आजातीहै (५)

स.

सुम्बुलुततीब (बालछड़) ग२स्व-२ अंत- कफकोटीकाकर {तीहै}

सिपिस्तां (लहसोड़ा) सोतदिल गरमी और रंडमें- त-१ सौदाको (टीकाकरताहै।

सबूस (भूसी) ग१-स्व१
सिरका-ठ२- स्व२
सुरंजान-ग२- स्व२
सोद (मोथा) ग२-स्व२

सक़ामूनियाँ- ग-२- ख२ अंत- पित्तोंकाजुल्लावहै।
सनायमक्की- ग२ अंत- ख१ सौदाकाजुल्लाबहै।
सुद्दाव- ग-२- ख२
सलीरवा (तज) ग-२-ख-२- अन्त- जिगरको पुष्ट करती है
साज़िज (तेजपात) ग२- ख२ मेदेको पुष्टकरताहै।
सफाल- ख४- ग१
सरेश- ग२- ख२
सरतां- (केंकडा) ठ-२- तर
संगायशम- ग२- ख२
सरो- ग१- ख२
सल्ख़ड़ैया (केंचली) ग२- ख२ अंत
सन्दल- सफ़ेद और पीला- ग२- ख२ और लाल ठ२- ख२ पित्तोंकीकरताहै।
सिब्र- (एलुआ) ग- ख
सातर- ग२- ख२ अंत
समग़ (ववूलकागोंद) ग- ख२
सावन ग-२- ख२
वंसलोचन- ठ-२- ख३- दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है {२२}

श.

शूनीज़ (कलौंजी) ग२- ख२
शिब (फिटकरी) ग२- ख२
शाहतरा- ग- ख-२

शफ़ाई-गर-खर
शीरखिश्त-ग१ अंत और मोत दिल-त-ख
शहमेंकायल-ग४-खर कफ़ का जुल्लाबहै
शकर-ग१-त१ अंतमें और पुरानी-ख
शीरभेड़-ग-त भेजेको पुष्टकरताहै
शक़ाकुल-ग-१-त-२- दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है

शादना-ठ-१ अंत-खर

ग.

ग़ारीक़ून-ग६-खर कफ़ का जुल्लाबहै
ग़ालिया-ग-ख भेजेको पुष्टकरताहै
ग़ाफ़िस-ग१-ख२ जिगरको पुष्टकरताहै
गावज़बां-ग१-ख सोदाको ठीक करतीहै
गुलबनफ़शा-ठ१-त१
गुलाब: स्याग
गुलाबके फूल-ठ१-खर भेजेको पुष्टकरताहै
गज़मानॅज (भाऊ) ठ१ खर
गाबरस (बाजरा) ठ१-खर
गुलनीलोफ़र-ठ१-तर
गिलमख़्तूम-ठ-२-ख-२ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करती है
गिलसुल्तानी-ग-ख

फ.

फिरंजमुश्क (रामतुलसी) गर-खर दिलको पुष्ट औरप्रसन्न
(करतीहै

फंदानिया -गरम- दिलकोपुष्ट औरप्रसन्नकरताहै
फ़रफ़ियून- गर-खर
फिंजन किश्त (संभालू) गर-खर

क.

क़ाक़ला (इलायची) वडी ग-१-खर-छोटी-गर-खरकफ
(कोटीकाकरतीहै।

क़रनफ़ल (लोंग) गर-खर
कुस्त (कूट) गर-खर
क़ल्क़तार- गर-खर
काफूरीयून-वडी-गर अंत-खर-छोटी गर-खर कफकानुक़
(वहै

क़शर उतरुज (छिलके बिजौडेके) ग१-खर दिलको पुष्ट औरप्र
(सन्नकरताहै

क़ुसाउल हिमार-जुल्लावकी औषधहै
कमीला- गर-खर
कासनी-उर-खर पित्तोंकोटीकाकरतीहै
किशनीज़-(धनिया) उर-खर पित्तोंकोठीककरतीहै
कहू-उर-खर अंत पित्तोंकोटीकरताहै
कमून (ज़ीरा) गर-खर कफकोटीककरतीहै
क़ुन्दुर- ग१-ख१

१८
कुन्दुरा-गर-खर अन्त
काहू-तर-तर
कावीचन-तर-खर
कवावा-गर-खर
कहरुवा-मोतदिल गरमी और ठरड में-ख-दिलको पुष्टऔर प्रसन्नकरतीहै
(२०)

कारुव-ग१-खर
करोया.गर-खर मेदेको पुष्टकरताहै

ल.

१९
लवलाव-तर-खर पितोंकाजुल्लावहै
लोबिया-लाल-ग१ अंत-तर
लोबियासफेद-मोतदिल गरमी औरठडमें
लाख-गरखर-या-ग१-खर
लागिया-ग-४-ख४
लोवतवरबरी-गर-खर

म.

मामीरा-गर-खर अंत
मुनक्का-गरत१ कफकोठीककरतीहै
मुश्क-गर-खर
मुर-गरअन्त-खरअन्त
मारजनजोश-(दौनामरुवा) गरअन्त-ख१
माहीजहरज-गर-खर कफकाजुल्लावहै-इसमेंसंकालवांघ जातीहै॥

मस्तगी- ग२- स्वं२ अंत

मिलह निफ़्ती-(नमककेदुर्गंधवाला) ग२-स्व३वाफ़औरसौद (कोनिकालताहै

मोम- ग२आदिमें

मोती-उ२- स्व२ अन्त-दिल और भेजेको पुष्ट और प्रसन्न कर (तेहैं

मुर्ग़-ग१अंत- मोतदिलतरोमें भेजेको पुष्टकरताहै

मिशक़तरामशी (पहाडीपोदीना) ग२ अन्त- मेदेको पुष्टक (रताहै

मुरदासंग- ग३ - स्व३ विषहै- ऊपर लगाने से अच्छा मांसउ (तपन्नहोता

न-

नमक- ग२-स्व३

नानकुलाग़ (खुव्याज़ी) ट१-त१

नानखाह-(अजवायन) ग३ -स्व३ आदि में

नारंज-पीले छिलके और फूलउसके- ग२-स्व२

नारंजकी खटाई-उ२ अन्त स्व१

नारंजके छिलके और बीज- उ-२-स्व-२ भेजेको पुष्ट कर (ताहै

नारदीन- ग१-स्व२ जिगरको पुष्ट करताहै।

नौशादर- ग३- स्व३ भोजन को पचाताहै- और मेदे और आंतोंसे सवाद निकालताहै।

व.

वरक़ चांदीके- त-१- ख१- दिलको पुष्ट और प्रसन्न कर (तेहै

वरक़ सोनेके- मोत दिल और गर्मी भी रखतेहैं- दिलकोपुष्ट औरप्रसन्नकरतेहैं।

य.

याकूत- मोत दिल गर्मी और ठंडमें-खर- दिलकोपुष्टऔर प्रसन्नकरताहै।

इतिसम्पूर्णम्

दवादेनेकावर्णन

रोगीके हाल रुतु और शरीरके स्थानके अनुसार औष
धदेनी चाहिये- और जो वस्तु भोजन में खानेके योग्य हो उन्हें
भोजन में खानाचाहिये- और जो दवा की तरह पर खाने पीने
और लगाने के लिये हो उन्हें उसी प्रकार से काम
में अर्थात जो औषध खाने कीहो- उसको लगाने से कुछ ला
नहोगा॥

वह औषधेंजो रुधिरके विगाड़कोदीफे करें॥

चाहै वह विगाड़ केवल रुधिरमेंहो-या किसी औरर
सके मिलने सेहो॥

रुधिरके औटनेकोरोकनेवाली औषधें

कासनी औरकाहूके वीज-धनियां गुलावके फू
लकारस- सिकंजवीन-उन्नाव चन्दन और केवड़ेकाअ

गाढ़ेरुधिरको पतलाकरनेवाली औषधें

आलूबुखारेका पानी-सौंफका अर्क-शाहतरेव
सिकंजवीन-माउलअस्ल॥

पतले रुधिरको गाढ़ा करनेवाली औषधें

विल्लीलोटन-रेहांके बीज-इंसराज-काविलीहड़-औ रवाकी औषधें रुधिरकी ठीक करने वाली यहहैं- विर्मिडंडी-आ बनूस और शीशम की लकड़ी-नीमके फूल और पत्ते-नीलोफर गोस्वनफ़शेके फूल-गाजरका शर्बत-मुन्डी-मेंहदी-कचनाल नीलूकंटी॥

पित्तोंकी ठीक करनेवाली औषधें

ईसबगोल-बीदाना-कुलफा-कासनी-खीरे ककड़ी केबीज-धनियां-सफ़ेदचन्दन-कापूर-काहूके बीज-बनफ़शे गालूनीलोफर और चन्दनका शर्बत-कुर्सकाफ़ूर-कुर्सतबाशी रगुलय्यन-कुर्सतबाशीर काबिज॥

कफकी ठीक करनेवाली औषधें

सौंफ-अनीसून-छिलीहुई मुलहटी-जीरा-दारचीनी-सु गन्धो-बालछड़-रेवंद-खुल्वानी-इलायची-बिरंजासफ़-म जून सीर-माजून फिलासफ़ा-सोंठकी माजून-जवारि शनाली नूस॥ (१५)

सौदाकी ठीक करनेवाली औषधें

लहसोडा-गावजवां-खरबूजेके बीज-मुलहटी-इंजीर मुनक्के-इफतीमून-कानौंचेके बीज-सिकंजबीन-इफतीमून माजूनसुक़रात-याकूतीव भली-नोशदारू-मुफर्रह दिलकुशा शर्बत बालंगू-शर्बत गावजुवां॥ (१५)

गाढ़ेमवादको पतलाकरनेवाली औषधें

अवहल-हुसकील-चूका-सिरका-उस्तखुदूस-हुब्ब विलसान-उकहवान-इंजीर-जुन्दवेदस्तर-राई-करतम लहसन-सरकंडेकीजड़-संभालू-बावूना-दारचीनी-सोधजाद़ा-वज-सूरवाजूफा-कूट-सातर-पोदीना-ज़रावन्द-अजवायन-उटंगन-शोरा-शकरकारा सिकावीनज-सुद्दाव-नम्माम-ईरसा-हुर्मुल-हुर्फ-मशकत्तरामशी-विल्लीलोटन-करदमाना-कमाज़रीयूस ॥

मुन्झिशें.

वह औषधेहैं-जो विगड़ेहुये मवादको पकाके निकालनेके योग्यकरदें-अर्थात पतलेको गाढ़ाकरें-जैसेखशखाश औरकाहूकेबीज-या गाढ़ेको पतलाकरें-जैसे सूरवेजूफ़ा और हाशाका जुशांदा-याकड़े औरजमेहुयेकोनरमकरें-जैसे अलसी और मेथीकेलेपसेकफ़ा औरसौदाकी सूजननरम होजातीहै ॥

पित्तोंकी मुन्झिशें.

उन्नाव-गुलाबके फूल-नरफशे और नीलोफरके फूल-शाहतरा-कासनीके बीज औरजड़-मकोह-सिकंजबीन-तुरंजबीन-लालशकर-शर्वत आलू-गुलकान्द आफतावी ॥

कफकी मुन्झिशें.

मुनक्के-खेरूकेबीज-सोंफ़-अनीसूँ-मुलहटी-

हंसरान-शकाई-पीलाइंजीर-गुलाब के फूल-गुलकन्द-सिकंजबीन॥

सौदाकीमुंजिशें

लहसोड़ा-उन्नाव-गावजवां-बिल्लीलोटन-छिलीइई-मुलहटी-हंसराज-उस्तखुद्दूस-शाहतरा-शकाई-बादावर्द-सौंफ़-तुरंजबीन-गुलकन्द॥

जुल्लाबोंकीऔषधें

यह औषधेंबुरेमवादको पैखाने से निकालदेतीहैं

पित्तोंकेजुल्लाब.

इमली-आलूबुखारा-तुरंजबीन-शीरखिश्त-सनाय के पत्ते-पोलीहड़-बनफ़शे और गुलाबके फूल-कुसूसकेबीज असलतास-इफ़संतीन-सकमूनियां-शाहतरा-सत्तुआ-लवलाब-शिवरस-सानरीयून॥

कफ़केजुल्लाब.

बकायन-कन्तूरीयून-माहीज़हरज-गारीकून-कालादाना-तुर्बुदइर्सुल-खिसकादाना-बिसफायज-कलौंजी-शकाई-सौगिसुरंजान-रेवन्दचीनी-सोंठ-मूसल-बेदइंजीरकेवीजोंकी गिरी और तेल-असलतास-हब्बअयारिज़-हब्बुसलातीन-फ़रफ़ियून-माहूदाना-कुसाउलहिमार॥

सौदाकेजुल्लाब

इफ़तीमून-उस्तखुद्दूस-चिल्कीलोटन-आमला-अजवदे-हजर अर्मनी-काबिलीहड़-कालीहड़-सनासक्की-कुशूस-बिसफायज-गारीकून-कालादाना-अयारिज फ़ीकरा-रेवन्दखताई ॥

मूत्रलानेवालीओषधें

यह औषधें पतले और बुरे मवादको मूत्र में निकालतीहैं ॥

ठंडी.

खीरे ककड़ी और कुलफेकेबीज-खैरूके फूल-खारखिसक-कद्दूककड़ी और तरबूजकापानी-खरबूजे और चिरचिरेकेबीज-भलसीकेबीज-आशनो-कासनीकापानी और बीनगौस्जड़ काकानज-नीबूका अर्क मिलाहुआ-शोरा-सिकंजबीन ॥

गरम

कारफसकेबीज-सौंफ़-अनीसून-इज़िंजास्फ़-सूखा जूफा-कबाबा-अजवायन-सुदाब-गाजरकेबीज-हंसराज-बालछड़-असलतास-सीगाकूट-केसर-तज-तगर-अदविलसान-अवहल-कद्दूकेबीजोंकी मींगी-कलौंजी-पोदीना-खुब्बाजी-चनोंकापानी ॥

मोतदिल.

हंसराज- खरबूजेके बीज- गरम और ठंढी औषधको मिलाके पीना॥

हैज़ बहाने वाली औषधें

तज- कलौंजी- अवहल- हुर्रंमुल- मुन्दवेदस्तर- वाविडंग- विरंजासफ़- कुर्दमाना- बाबूना- मीठाकूट- कबाबचीनी- हंसराज- फरासीयून- अंर्द- फादानियां- जिन्तयाना- अजवायन- जावशीर- जादा- सुहाव- केसर- तगर- नम्माम- सूखा सूफ़ा- करफस- दोनासरुवा- कमाज़रीयूस- सुन- मशकतरामशी- चनोंका पानी- अमलतासके छिलके- मोथा- तुरमुस ॥

वीर्यनिकालनेवाली औषधें

करफस- इफ़संतीन- सौंफ़- तुर्मुस- हरमनातुरकी सुदाब ॥

उलटीलानेवाली औषधें

{जो मेदे और उसके आसपाससे मवादके उल्टीमें निकालतीहैं}

मूली- सोये- कडुवे बादाम का पानी और बीज- खरबूजेकी गड़- विनौ छिली मुलहटी- शहद- सिकंजबीन- लालशकर- नमक- गरम पानी- अजवीरके बीज- कुन्दुश- सनोज़ग़ साउलअस्ल- भेडकादूध- माज़रीयूनके बीज- लाललोबिय अशतरग़ार ॥

उलटीलानेवालीपुष्टऔषधें

कुटकी-राई-नौंमुलवी-कंवारज़द-ज़िविलहक़॥

भेजेकी पुष्टकरनेवाली औषधें

(ठंढी और तर)

मोती-आमला-विहीसेव और अमरूदके ताज़े फूल-गुलाब और गुलाबके फूल-नारंज॥

गरम

बलादुर-फिन्दक़-बिल्लीलोटन-सोंठ-सोया-वालछड़-मुश्क-ऊद-अम्बर-ग़ालिया-लोंग-कुन्दुर-रोग़न अनहर-जानवरोंके भेजे-मुर्ग़ी-तीतर-भेड़कादूध॥

× और बाक़ी यह हैं-इड़का मुरब्बा-सेब-बिही-अमरूद-नाशपाती-फिरंजमुश्क-जायफल-केसर-उस्त खुद्दूस-चमेली-कद्दू और कद्दूके बीज-सफ़ेद चन्दन-बादाम-कवा-शतरंज॥

दिलकीपुष्ट औरप्रसन्नकरनेवालीऔ०

(ठंढी)

अमरूद-नाशपाती-अनार-आमला-इमली-सेव-चंदन-वंसलोचन गिलेमख्तूम-रैवास-बुसुद-कहरुवा-कपूर-गावजुवां-धनियां-गुलाबके फूल-मोती-नीलोफर-

हड़-याकूत-चांदीके वर्क ॥

(गरम)

सोनेके वर्क-उतरुजके छिलके-उस्तखुद्दूस-रेशम-
वहमनें-विसफायज-बिल्लीलोटन-बादरूज-जदवार-दा
रचीनी-नरकचूर-दरोनज-केसर-सुम्बुल-मोथा-तज-शकाकु
ल-अदरगकी-अम्बर-फिरंजमुशक-पादानियां-इलायची-
लाजवरद-नाना ॥

बाकीयह हैं-छडीला-इजफारुत्तीव-आलू-धनि
यां-मूंगा-मूंगेकीजड़-नीलोफर-बजरुलहुम्मास-पान-हड़-
सोसन-कद्-अम्बर-याकूत-फिरंजमुश्क-मुश्क ॥

जिगरकी पुष्टकरनेवाली औषधें

(ठंढी)

कासनी-नरिस्क-अनार-और इनकेपानी-लुआब-
ईसब-गोल-शर्वत सन्दल-सिकंजबीन ॥

(गरम)

छडीला-इजफारुत्तीव-जायफल-हम्मामा-इज्वखि
लसान-दारचीनी-गाफिस-लोंग-तज-कुश्तूस-रूमीमस्तगी-
नारदीन-सौंफ-कर्फसकेबीज-गुलकन्द असली-असारासिय
दवा उलकरकम ॥

और बाकी यह हैं-इजखरबीन-नरकचूर-सोया

दरौनज- तगर- इलायची- पिस्ते- ज़रावंद- बिल्लीलोटन- सुन
-गुलाबके फूल- निशास्ता- मेहकाम्रानी- अदरिन्दी॥

मेदेकीपुष्टकरनेवालीऔषधें

(ठंढी)

आमला- अनारदाना- सिमाक़- बहेडा-
- बिहीवंसलोचन- गुलाबकेफूल॥

(गरम)

सरकंडेकीनड़- तुरंजके छिलके- बिल्लीलोटन-
- दारचीनी- नरकचूर- सोया- तज- तेजपात- लोंग-
- कुन्दुर- करोया- रूमीमस्तगी- मशकतरामशी
- अदरारकी॥
बाकी यहहैं- कचचेआलू- नागन- तगर- गोलमि
रच- गंदिनीकादूध- छडीला- कचनाल- पोदीना- अदरिन्दी
संगदानमुर्ग़- दही- हम्मासा॥

जिगरकोहानिकारकऔषधें

ठंढापानी- नारंगी- छुआरा- इंजीरतर- इंजीर
- सिरका नितखाना- जाडेकाशहद- कालीहड
- हब्बुलबान- दारशीशआन॥

मेदेकी हानिकारक औषधें

तिल्ली-मसूर-माउश्शईर-द्वालसकेबीज-मीठे आलू-उन्नाव-अलसीके बीज-मुअसफरके फूल-अदरक-बोरक-इंजीर-साफ़स्यिा-जादा-हसरम-हम्मामा-पुराना पनीर-गरम पानी -गौकाघी-मिठाई॥

मेदेकी ढीलाकरनेवाली औषधें

हब्बुलबान-हजर अर्मनी-पेठेके बीज-सज्जी-लोबियेका सार-नारियलका दूध॥

भेजेकी हानिकारक और पीडाउत्पन्न करनेवाली

इज़फारुत्तीबकी धूनी-बज़रुलबनज-कुन्दुर-गंदना-सोया-लहसन-पियाज़-गेरूके फूल सूंघना-मसूर-मेथी-अलसीके बीज-बैंगन-मूली-खूबकला-तुरंज-तूत-इफसंतीन-पालक-संभालू-सरकंडेकी जड-तदर्व-कुलूल-आंदा-सुलूर-जायफल-लुबान-पैवन्द्मरियम-हींग-खश्खाश-इस्फारअस्तरगार-काविलीहड-तम्बाकू-सरशफ॥

पेटकी नरम करनेवाली औषधें

मूली-पालक-करेव-बिनौला-चुकन्दर-गन्नेका

रस-शाहदंकाग्र समेत-शफ़तालू- सिरका अंसिली-हब्बुस्सम ना-चुल्फ़े और बथुयेका साग- भेडकादूध-बकरीकादूध मक्खनबहुत खाना- तरी- सौंफ़-इड-सना-इमली-गुलाब तुरंजबीन-सौंफकीजड़ और भर्की-गुलकन्द ॥

पेटबन्दकरनेवाली औषधें

बकरी और भेड़का कलेजाभुनाहुआ-भुनाहुआबा कला-अंगवारकी जड़-जौकासत्तू-कल्लेपाये भुनेहुये-कव लोल-ज़ीरा-सिमाक़-रेहांकेबीज-ईसबगोल-कनोचा-वार तंग-बेलगिरी-हब्बुलआस-इलायची-सौंफ़-अनीसून-निश स्ता-गिलेअर्मनी-ज़हरमुहरा ॥

सुद्दा और बायदूरकरनेवाली औषधें

सरकन्डेकीजड़-शाहतरा-गारीकून-सौंफ़-अफ़ीम-फ़ुफ़संतीन-सातर-बसर्बसा-संभालू-नारदेशीर-कर्फ़स-उस्त खुद्दूस-क़ुफ़तीसून-जिन्तियाना-जीराकिरमानी-ईरसा-अज वायन-हालों-गानस्केबीज-सौंठ-दारफिल्फिल-सुहाग-दारचीनी-केसर-दोनामकवा-जरावन्द-काबावचीनी-कुस्त सादेसंद-अनीसून-अद-तुरमुस-हाशा-सलारस-कंतूरीयून करसना ॥

कब्ज़करनेवाली औषधें

तुरंजके छिलके- संगदानमुर्गी
पिस्तेके वाहरके छिलके- ज़रिश्क-हब्बुलआस
सलोचन- दम्मुल अरववेन- गुलनार- कुसुद- अरवरा
क-मसूर- वारतग- सरकन्डेकीजड़- सरोंकेफल- जामुनग
आमकी गुठली कीमींगी- मस्तगी- चना- चांवल- माई- माजू-
कुंदुर- तीनमरवतूस-ईसवगोल भुनाहुआ- सोनेकेवर्क- अम
रूद- कहरुवा- रैहांकेवीज- निशास्ता- नारून-गावरस- नार
वीनें- कुनारकी गुठलीकीमींगी ॥

नींदलानेवालीऔषधें

ख़शख़ाश और पोस्तका वरेडा- ख़शख़ाशके फूल सूं
घना- सोया सिरहाने रखना- केसर- सुर्अंसफावके फूल- कलप
शेके फूल- हराधनियां- आशगो- वादामका शीरा- और रोगन-
रोगनगुल- रोगननीलोफ़र- हाथपांव मलना- पानीकी आवाज़
ाना- हवासे पत्तोंके हिलनेकी आवाज़- काहूका साग- कद्दूकी
मिट्टी सोतेहुये आदमीके मुंहपर छिड़कना- अफीम- तुर्फाह-
हस्मांसा- वावूना ॥

नींदखोनेवालीऔषधें

पोदीना- सिरका- राई- लौंग- सिरऔर माथे और क
नपटीपर लगाना- गोलमिर्चें मुश्कनमक सिरका कपूर और
गुलावके फूल सूंघना- अयारिजफीकरा सेकुल्लीकरना- फ़ा
ख़ताया विमगाड्डकीवीट सिरपर बांधना- चाय और कुनपीन

पोसते मोने की सलाई से लगाना-चंद्रमाकी ओरदेखना-सिरका ॥

वह औषधें जोमवाद को आंख परन गिरनेदें ॥

तरबूजके छिलके-काफुर-कारनुलईवलदवीक-आबचूम-बगरात्लवनज-केसरइस्त्रीकेदूधमें मिलीहुई-जफ़रान-खुसल्लाब-छालियां-तिग्याकफारूका-इजरूत-मकोह-मिट्टी-मसूर-बादरूज-सफेदसंदल-बकायन-फिटकरी-अनार-अकाकिया-जौ-सिमाक-अमरूद-बुसुद-तूतिया-रसौत-कुरसेन ॥

दृष्टिकीहानिकारक

खारीभोजन-गरमपानी सिरपरडालना-सूरजकोदेखना-वैरी अर्थात्शत्रुकोदेखाकरना-मसूर-कुलथा-चूकाखस-काहु-चिरचिरा-गन्दना-विषयकी अधिकता-धूपमें और आगके पास बैठना-चमकीलीवस्तुदेखना ॥

विषयकीचाहना को पुष्टकरनेवाली औषधें।

स्वादर्श्याकू-अंडेकाउचरा-मुर्गी-तीतर-रच्छकी-बल्ले-चिड़िया-सलजम-गाजर-मूली-प्याज-गोश्त ॥

-गाय और भेड का दूध- गायकाघी- खीर- छुआर- फिन्दक़- हब्बुरसमना- पिस्ता- चिलगोजा- सालव- कुलीजन- बूज़ीदान- गोखरू- बहमन- तोदरी- तिली- हालों- चिरचिरेकेबीज- केवांचकेबीजोंकी मिंगी- मूसलीअकरकरा- मस्तगी- गादनेकेलीज- दार पिल फ़िल- खशखाशसफेद- सोंठ- उशना- तगर- न- वाकली- इन्द्रजो- लौंहेकामैल- रेगमाही- माहीरोबि- माही सक़नकूर- मुश्क- मोती- चिड़ियाऔर अन्डे उसके- शरूर- जरफस- बसवासा- कतीरा- अखरोट- पनीर- मायीशह- जिरजीर- हब्बुलग़लम- हींग- सुरंजान- फ़िस्तक- तन- भेडकेबच्चेकाभेजा- हिलयूनकेबीज- लोबिया- नागिरी- इंजीर॥

कीचाहना की खोनेवाली औरहा निवारक औषधें

पिरंजमुश्क- कासनी- कोहू- उन्नाब- ईरसा- सडोडफली- धनियां- मकोह- कचचालहसन- कालीखशखाश- कपूर- पानी पीछे पानी पीना- खटाई- इमली- आलूबुखारा- व्याय तोडने वाली वस्तु- चूका- वकालाय मानि॥

पीसके मांने की सलाई से लगाना-चंद्रमाकी ओरदेखना-सिरका ॥

वह औषधें जोसवाद को आंख परसे गिरादें ॥

तरबूज के छिलके-कुन्दुर-कारनुल इंबलदवीक-शाबनूस-वज़रुल बनज-केसर इस्त्रीके दूधमें मिली हुई-अफ़शरा-रूसलोब-छालियां-तिग्याकोपारुका-इनरूत-मकोह-मिट्टी-मसूर-बादरूज-सफेद संदल-बकायन-फितव-नरजिस-अक़ाक़िया-जौ-सिमाक-अमरूद-बुंदुक-तूतिया-रसौत-कुरासान ॥

दृष्टिकीहानिकारक

खारी भोजन-गरम पानी सिरपर डालना-सूरजको देखना-वैरी अर्थात शत्रुको देखाकरना-मसूर-कुलफा-चूकारग्र-काहू-चिरचिरा-बन्दना-विषयकी अधिकता-धूपमें और आगके पास बैठना-चमकीलीवस्तु देखना ॥

विषयकी चाहना को पुष्टकरनेवाली औषधें।

स्वादपूर्वक भोजन-चना-मुर्ग-तीतर-मछली-बच्चे-चिड़िया-बत्तख-गाजर-मूली-प्याज़-औरउन-

लिंगकोबढ़ानेवालीऔषधें

कैंचुये- अकोरकारा-सफेद कनेर कीजड कीछाल-घोडेके सुम- लौंग- जायफल-दारचीनी-केसर-रोग़नगैत मि तमलना- कपैसके पानीसेकई वार धोना-बकरीके घीसेकई वार चिकलाना- कैंचुये औरजोंक सूखेहुये सौसन के तेलमें पीसकेमलना ॥

भगकोतंगकरनेवालीऔषधें

मकायल और अनारकी छाल-मौलसिरीकीछाल कोपीसके कपडेमें लगाके रखना-माजूफल- औरकपूर और शहद मिलाके भगमें लगाना-बबूल-इसफंज-कालीतिली गोरवरू- इसलीकेबीज- बीरबहुटी ॥

नीचेलिखीहुई औषधोंसेबच्चाजल्दी जनाजाताहै.

गूगल- नत्र- गुलनार-बकायनकीछाल-नीलोफर कीजड -मोथा-बारतंग और मकोहका रसा- कालीखरखा मलमाना-चुम्बक पत्थरका बडा टुकड़ा उलटे हाथमें पकड़ना खुसुद सीधी जांघपर बांधना-दारचीनी-स्वाला-तिलीका तेल गलसीके लुआबमें मिलाके भगमेंलगाना ॥

पोस्‍ती

...ये उत्पन्नकरनेवालीऔषधें

गन्दनेकोबीज- आकाकुल- मीठासुरंजान- काड़को
...गोंकीसींगी- पियाज- गौकोदूध- कंटनीकादूधबूरा मिल
हुआ- वतख- मुर्ग- हब्बुल्कुलम- कूलीदान- बहमन- बादा
म- पिस्ता- सलजम- छालो- चना- इन्द्रजौ- सुरास- चारिय
ल- तोदरी- अलसीकेबीज- छडीला- तुरंजबीन- सोंठ- मुस्क
केसूर॥

बिषयकरनेमें अधिकठहरानेवाली औषधें

अफीम- जायफल- बीरबहुटी- गूगल- धतूरेकेबी
ज- भौरपत्ते- खुरासानी अजवायन- लौंग- कालीमिर्च- बस
वासा- केसर- मस्तगी- दारचीनी- सोंठ- कपूर- मुस्क- अकर
करा- बबूलकेफूल- गौमाकेबीज- गिलोयसत्व॥

बिषयकरनेमेंमज़ादेनेवालीऔषधें

लौंग- दारचीनी- कबाबा- अकरकरा- सबोजनकुच
लकेऔर सोंठशहद से भिगोकेथूकके साथ लिंगपर मलकेबि
षयकरना। सिरकेबाल पीसके चमेलीके तेलमें मिलाके लिं
गपरमलके बिषयकरना- बीरबहुटी- पारा- केसर- कपूर-
कबूतरकीबीट॥

लिंगकोबढ़ानेवाली औषधें

केंचुये- अकरकरा- सफेद कनेर कीजड़ कीछाल- घोड़ेके सुम- लोंग- जायफल- दारचीनी- केसर- रोगनजैतून मिलना- कफसके पानी सेकई बार धोना- बकरीके घीसे कई बार चिकनाना- केंचुये औरजोंक सूखेहुये सोसन के तेलमें पीसके मलना॥

भगकी तंगकरनेवाली औषधें

बकायन और अनारकी छाल- मौलसिरी कीछाल कोपीसके कपड़ेमें लगाके रखना- माजूफल- औरकपूर और शहद मिलाके भगमें लगाना- बबूल- इसफंज- कालीतिली गोखरू- इमलीकेबीज- बीरबहुटी॥

नीचे लिखीहुई औषधों सेबच्चाजल्दी जनाजाताहै-

गूगल- तज- गुलनार- बकायनकीछाल- नीलोफर कीजड़ - मोया- बारतंग औरमकोहका उसारा- काली रसरखा मलगाना- चुम्बक पत्थरका बड़ाटुकड़ा उलटेहाथमेंपकड़ना बुसद सीधी जांघपर बांधना- दारचीनी- खाना- तिलीका तेल गलसीके लुआबमें मिलाके भगमेंलगाना॥

मरेहुयेबच्चेकोनिकालनेवालीऔ०

जरावन्द- अवहल- अलसी- तज- गोलमिरच- बूजीदान- हंसराज- कालीकुटकी- कालाज़ीरा- माजूपीसके पीना- कलौंजी- हरीमहंदीकीछाल- बांसके पत्ते औटाकेपीना- पीपलामूलऔरकालीकुटकी पीसके विरोज़ा मिलाके टूंडीपर लेपकरना- पिसाहुआ कुन्दुश शहद में मिलाकेटूंडी यापेडूपरलेपकरना॥

मशीमाकीनिकालनेवालीऔ०

हंसराज- करम्बकेबीज- कबूतरकीबीट- तज- कलौंजी- बिरंजासफ़- कुन्दवेदस्तर- ईरसा- पिसाहुआ अवहलरहम में टपकाना- और पीना- बावूना- हव्वुलकली॥

मसाने औरगुरदेकी पथरीकोतोड़ने वालीऔषधें.

तगर- बिरंजासफ़- समग़ आलू- खरबूज़ेके बीज- गोखरू- हंसराज- सौंफ़- कालेचने- हजरुल यहूद- संगसरमही- हब्बुल किल्त- कडुवाबादाम- सोया- सिकबीनज- बिच्छूकीराख॥

सूजनकीटपकानेवालीऔषधें

कमाज़रीयूस- गाज-हाशा-ज़रावन्द-नारखूना
वन-खरज़हरा-हज़ारजिशान-जादा-जाबगीर-उशाकहस
राज-जंगली पियाज़-बाबूना-विरंजास्फ़-सरवान्देवीजड़-
वाक़ला-तगर- उकहवान-खैरू-जिफ़-बतमकागोंद-ल
वन-नन्माम-मुलहटी-तुरमुस-कुसाउलठिमार-दोनाम
वा-ग़ाफिस- चिनना-फोदना-खुरु-जुन्दबेदस्तर-राई-
दारहल्द-खैरी-दारचीनी- केंवाड़ा-सोया-सलुआ॥

सूजनकीनरमकरनेवालीऔ.

गोंद- वैतून-वजफलबनज-गूगल-सोया-वेद
इंजीरऔर बिनौला और खुरूकातेल- बतककीचर्बी-नली
कागूदा-ईसबगोल-खैरूऔर वनौच-जिस-इकलुलमलत
म-ईरसा-सलारस-नारखूना-कारस्व- अम्बर-मोम-मुर-
लादन-सुक- अलसी- मिंहदी-॥

सूजनकीपकानेवालीऔषधें

नारखूना-ईरसा-कारस्व-बतमकागोंद- अम्बर
लादन-सलारस-मोम-खैरूके बीज-मुर-सुक॥

सूजनकीफोड़नेवालीऔषधें

जंगलीपियाज़- गंधक-हरीज़ाज़- हुर्फ़-पेडोंकादूध कबूतरकीबीट- चना-कूट- फरफ़ियून- साबन- क़ल्क़ता स-गन्नार- ज़रारीह॥

बुरेमांसकोगलादेनेवालीऔषधें

इंजिरूत- उशनान- नमक- सुरदासंग- तांबेकाबु रादह- रसपौदा- सैन्दूर-जलीहुईसीपी- जंगार- तूतिया- चून

साफ़करनेवालीऔषधें

अवहल- ज़िफ़ा- सोंग- नमक मिसरी- आबकास ईरसा- शहद- गंधक- हब्बनिलसान- इंजरूत॥

कीडेमारनेवालीऔषधें

बाबिडंग- इफ़सन्तीन- जादा- सूरंजानूफ़ा- करो या- हुर्फ़- पोदीना- कलौंजी- सीह- कलौंजी- शफ़तालूकेप ते- तुरमुस॥

घावकीभरनेवाली

सुर्मा- समग़अालू- इंजरूत- इस्फ़ंज- वर्कबुलूत दम्मुलअखवैन ज़िफ़ अंजवन्द- बारंग- कालाज़ीरा- ईरसा सलूआ गिलेमखतूम संगजिराहत- राल- कतीरा गुलनार सफेदकनेर सफेदमोम- गौकादूध धोयाहुआ-

लिसानुलहमलकापानी ॥

घावकीसुखानेवाली

जलीहुईसीपीऔरछुआराऔरघोड़ेगधेकासुम-इंज़िरूत-छडीला-मुरदासंग-सलुआ-धोयाहुआचूना-तू तिया-सुन्दरूस ॥

नाकमुंहऔरदस्तोंकेरुधिरकोरोकनेवालीऔ-

दम्मुलअखवैन-मस्तगी-कान्तूरीयून-सरोकेफल धनियां-ज़रिश्क-वुसुद-रसौत-ज़ीरा-कापूर-गंजवारकील डु-पोदीना-गेरू-वादरूज-सुरमा-वुल्त-वारतंग-काहरु वा-निशास्ता-अजरालवनन-शादना-गुलनार-कुन्दुर-मा जू-गिलेअर्मनी-वरगदकीडाढ़ी-पत्थर-रेवन्दचीनी-माज़ कापल-पेठेकेबीज ॥

जुन्दवेदस्तर-साफ़ासिया-मवादकीरवेचनेवा लीहैं ॥

नूरा-गंधकसपैद-रासकापानी-वालउडानेवा लीहैं ॥

मोम-निशास्ता-काहरुबा-कतीरा-जमानेवालीहैं इंज़रूत-छडीला-धुलाचूना-तूतिया-सलुआ-ज लीहुईसीपी-साफ़करनेवालीहैं ॥

मकोय इसबगोल-गुलनार-छालियां-धनियां-मवा दकोगोरमीजगहनहीं गिरनेदेती ॥

अफ़ीम-अफरीबीयून-बछनाग-निफ़-मारडालने वालीहै ॥

राई-फोदनज-इंजीर-लालाचीनानी-खालकरने वालेहैं ॥

अफीम-इस्पन्द-कुचला-ज़र्वकीजड़-शाहतरेकी जड़-तम्बाकूकेपत्ते औरबीज-कुन्दुर-शूकरान-लोग-धतू रेकाफल-बनरुलबन्ज-कावतज-यवरूजुस्सनम-सुनक रनेवालीहै ॥

अफीम-वतखकीचरबी-यबरूजुस्सनमकीजड़-अंडेकीसफेदी-निशास्ता-कतीरा-बबूलकागोंद-पीडाके रोकनेवाले हैं ॥

उकहुवान-इसतरक-इस्मासा-केसर-सोया-श कायक-काहू-लफ़ाह-शाहसफ़रम-सुलानेवाले और सुनकरनेवालेहैं ॥

तगर-हब्बुलकिल्त-हाशा-शाहतरा-बादावर्द-बनफ़शेकीजड़-इजरुलगाफातीस-फेफड़ेकोहानिदेतीहैं

तम्बाकू-नकछिकनी-छींकलानेवालीहैं ॥

बबूलकागोंद-निशास्ता-कतीरा-धोयाचूना-चिपक नेवाली और सुद्दा उत्पन्नकरनेवालीहैं ॥

अनीसून-इज़ीसून-बसबासा-गाजरकेबीज-समा त्रू-जावशीर-इस्मासा-दारफिलफिल-कालीमिरच-जीरा क़ारदमामा-सोंठ-नरकचूर-ज़रावन्द-सुद्दाव-सोया-सातर कुन्दुर-कारफ़स-अजवायन-पेटफूलने औरवायुको लाभ